Version 001: Updates at http://www.AtmaDharma.com & http://www.AtmaDharma.org

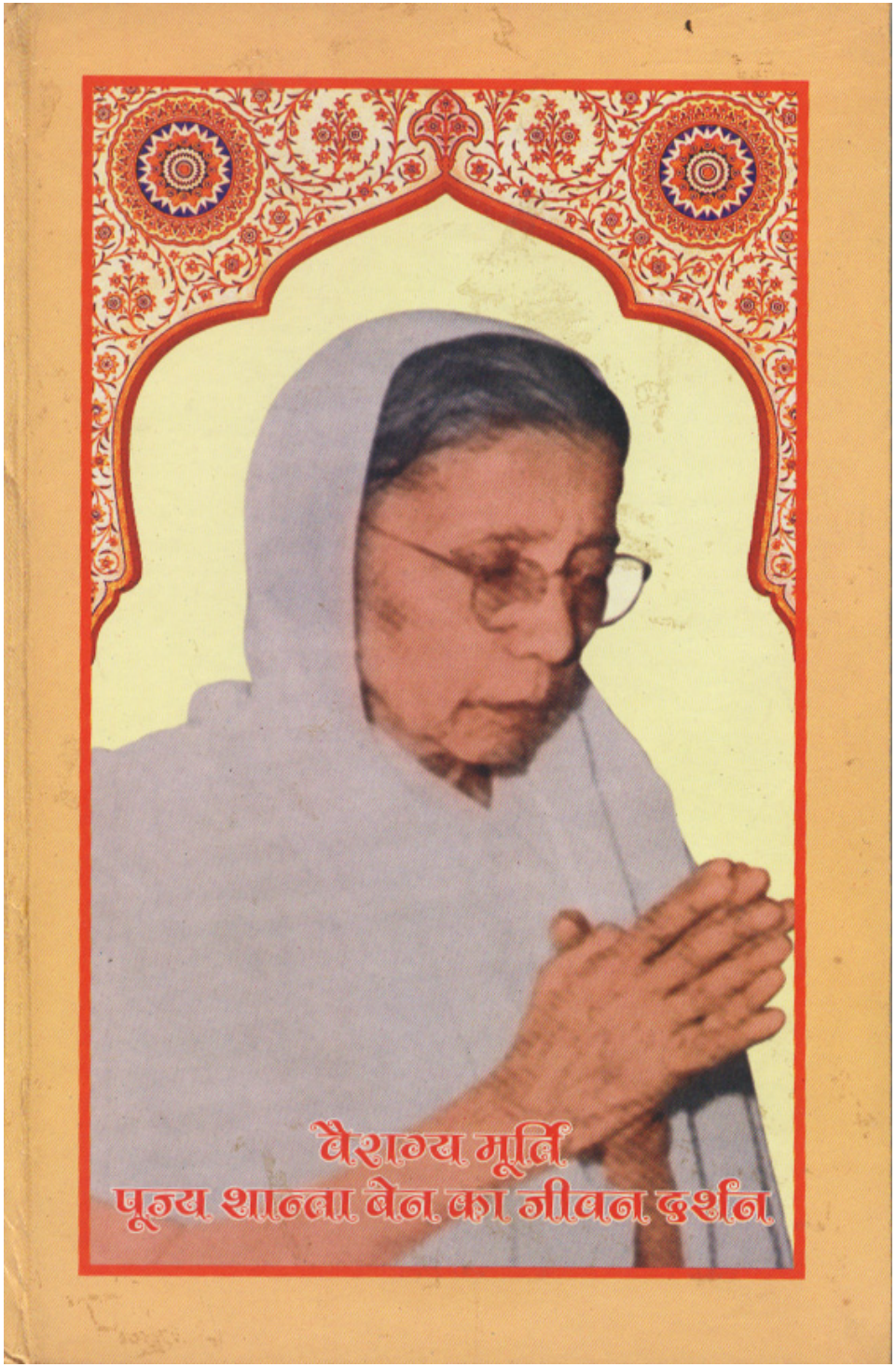

Please report errors to Ramaben Parekh: WhatsApp +91 90115 91078 or email ramabenparekh45@gmail.com

Version 001: Updates at http://www.AtmaDharma.com & http://www.AtmaDharma.org

卐 श्री परमात्मने नमः 卐

वैराग्यमूर्ति
पूज्य शान्ताबेन का जीवन दर्शन

:: हिन्दी अनुवाद ::

बा.ब्र. विमलाबेन, जबलपुर

Please report errors to Ramaben Parekh: WhatsApp +91 90115 91078 or email ramabenparekh45@gmail.com

Version 001: Updates at http://www.AtmaDharma.com & http://www.AtmaDharma.org

आत्मा के कल्याण का ध्येय हमेशा रखना।

आत्मतत्त्व की जिज्ञासा खूब वृद्धिंगत हो तो
आत्मप्राप्ति के समीप होता है।

इस भव में आत्मतत्त्व के संस्कार अतिदृढ़ हों, वही प्रयत्न करना।

प्रथम आवृत्ति : ५००
फाल्गुन शुक्ला--११
विक्रम सम्वत् : २०६०
दिनांक : २-३-०४

:: प्रकाशक ::
पूज्य श्री कानजी स्वामी स्मारक ट्रस्ट, देवलाली
नासिक (महाराष्ट्र)

Please report errors to Ramaben Parekh: WhatsApp +91 90115 91078 or email ramabenparekh45@gmail.com

Version 001: Updates at http://www.AtmaDharma.com & http://www.AtmaDharma.org

प्रकाशकीय निवेदन

हे सीमंधर भगवान, महावीर भगवान, कुन्दकुन्द स्वामी, आदि पंचपरमेष्ठी भगवंत! आप का परम उपकार है, आप का मंगल जीवन हमारे लिये आदर्श है एवं आप का वीतराग शासन कल्याणकारी है तथा महान उपकार है।

मंगलकारी कहान गुरुजी का जिनने तीर्थंकर भगवानों एवं वीतराग नग्न दिगंवर संतों की परम महिमा को जानकर शुद्ध वीतराग दिगंवर जैनधर्म स्वीकार किया तथा उनके द्वारा उपदिष्ट शुद्धात्म तत्त्व की निरंतर आराधना करके शुद्धात्मानुभूति पूर्वक सम्यग्दर्शन जैसी महान निधि को स्वयं प्राप्त करके ४५ वर्षो तक उस शुद्धातम तत्त्व का चिंतन और आराधना का उपदेश देकर लाखों भव्य जीवों को आचार्य कुंदकुंद के शुद्ध दिगंवर जैनधर्म में परिवर्तित किया तथा इस दुःखम पंचमकाल में चतुर्थ काल के जैसे निश्चय--व्यवहार मोक्षमार्ग का वास्तविक स्वरूप आपने स्वयं की अमृत वरसाने वाली वाणी द्वारा प्रकाशित किया।

इस युग में आत्मार्थी जीवों को पू. कहान गुरुदेव की मंगलवाणी द्वारा दिगंवर धर्म में परिवर्तित दो अनमोल धर्मरत्न मातायें मिली हैं, उन्होंने पूज्य गुरुदेव श्री के शासन प्रभावना को दिव्यरूप से शोभाया है, वे दोनों मातायेह्न पू. वेन श्री चंपावेन एवं पू.बेनश्री शांतावेन।

सोनगढ (सौराष्ट्र) में विराजमान पू. वेन श्री--चंपावेन और पू. बेनश्री शांतावेन भगवती आत्मानुभूति सम्पन्न महिला रत्न थे।

यहाँ स्वर्गीय महिला रत्न पू. वेन श्री शांतावेन के कुछ संस्मरणों का उल्लेख कर रहे हैं।

Please report errors to Ramaben Parekh: WhatsApp +91 90115 91078 or email ramabenparekh45@gmail.com

Version 001: Updates at http://www.AtmaDharma.com & http://www.AtmaDharma.org

जीवन के अनेक अटपटे प्रसंगों में बोधरूप चर्चा

जब घबराहट हो तब श्री तीर्थंकर भगवंतों के जीवन को याद करना, एवं उन्हें श्री जीवनसाथीदार बनाना, उन अरहंत और सिद्ध भगवानों ने मोक्ष के लिये क्या किया? उन्होंने अपने आत्मा में क्या रखा और क्या छोड़ा? उसका विचार करके तुम भी उसी प्रमाण करना अर्थात् तेरी कहीं भूल नहीं रहना चाहिए। घबराहट मिट जायेगी। तेरा चित्त शांत हो जायेगा और मोक्ष की साधना सुगमता से होगी। तुझे बहुमान आयेगा कि--वाह! धन्य है उन महात्माओं का ज्ञानमय वीतरागी जीवन।

पूज्य शांताबेन ने वि.सं. २०४४ (ई.स. १९८८) में जेष्ठ सुद दशमीं, दिन शुक्रवार राजकोट शहर में इस नश्वर देह का त्याग किया, पूज्य गुरुदेव श्री के पास जाने के लिये यहाँ से प्रस्थान किया। इस पवित्र आत्मा के जीवन काल में अत्यंत याद रखने लायक अनेक प्रसंग बने, पू. गुरुदेव श्री के उपकार महिमावंत कितने ही वचन, पू. बेन श्री को लिखे गये पत्र पू. गुरुदेव श्री द्वारा पूछे गये पाँच प्रश्न, और उस समय विशेष शास्त्र अभ्यास न होने पर भी अंतरंग से अद्भूत उत्तरों का व्यवस्थित संकलन तथा पू. बेनह्नशांताबेन को पू. गुरुदेव श्री का मंगलकारी समागम जब से हुआ तब से अंत तक सान्निध्य रहा। यह सब अपरिचित लोगों की जानकारी हेतु यह संकलन किया गया है।

वैराग्य मूर्ति पू. बेन शांताबेन का जीवन--दर्शन हिन्दी में प्रसिद्ध करते हुए हमें अत्यंत हर्ष हो रहा है कि यह पुस्तक आत्मार्थी जीवों को सन्मार्ग में शीघ्रता से आगे बढ़ने में कारण बने और पू. शांताबेन ने अल्पवय में प्राप्त किया सम्यग्दर्शन का मार्ग जो सरलता से प्राप्त किया उसी प्रकार सरलतापूर्वक मुमुक्षु जीवों को प्राप्त होने में निमित्तभूत हो ऐसी शुभ भावना है।

प्रकाशक,
पूज्य श्री कानजी स्वामी स्मारक ट्रस्ट, देवलाली
नासिक (महाराष्ट्र)

Please report errors to Ramaben Parekh: WhatsApp +91 90115 91078 or email ramabenparekh45@gmail.com

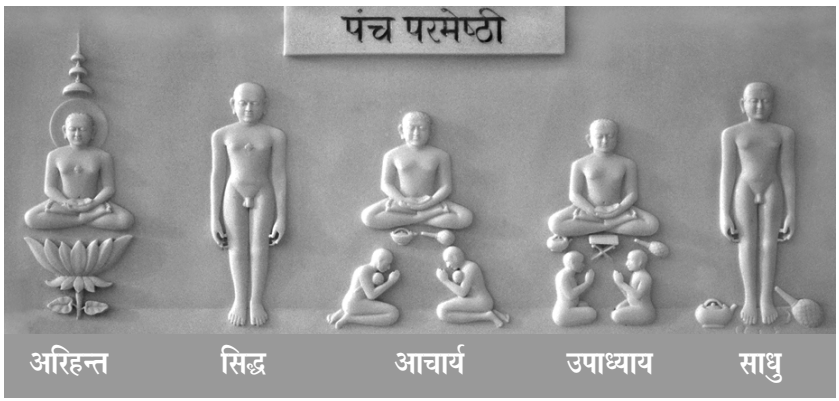

ॐ नमः

परमपूज्य पंचपरमेष्ठी भगवान के प्रति पूज्य बेन की हार्दिक भावना

अहो! पंच परमेष्ठी भगवान! शुद्ध चैतन्य भावरूप हुए अनंतसिद्ध भगवान! केवलज्ञान--परम आनंद--आदि सर्व गुण संपन्न! अहो, अरहंत भगवान! अहो, शुद्ध रत्नत्रय को साधने वाले कुंदकुंद भगवान आदि आचार्य भगवान उपाध्याय भगवान, सर्व साधु भगवान।

आपने शुद्धरत्नत्रय का स्वाश्रय मार्ग हमें बताया है, अहो! आपके द्वारा दर्शाया गया परम शुद्ध चैतन्यभाव, अनंत आनंदादि वैभव से भरा हमारा आत्म स्वभाव, उसकी आराधना करने रूप जैनमार्ग.....ऐसा जैनधर्म है! हे पंच परमेष्ठी भगवान! आप के परम प्रसाद से हमें प्राप्त हुआ। आप के परम प्रसाद से हमारे आतमा का महान अपूर्व कल्याण हो ऐसा परम पवित्र मार्ग हमें प्राप्त हुआ, उसके लिये हे पंच परमेष्ठी भगवान! आप के वास्तविक स्वरूप की पहचान कराने वाले संतस्वरूप, यहाँ हमको हमारे गुरु मिले हैं उनका भी हमारे ऊपर अति उपकार है, इसलिए हमारे गुरुओं नमस्कार हो।

Please report errors to Ramaben Parekh: WhatsApp +91 90115 91078 or email ramabenparekh45@gmail.com

Version 001: Updates at http://www.AtmaDharma.com & http://www.AtmaDharma.org

अहो प्रभो! आपके द्वारा बताया गया आत्मा, अनंत चैतन्य स्वभाव से मेरा आत्म स्वभाव, कितना महान है! सुन्दर है! कितना गंभीर है! कितना शांत है! अहो, जब--जब इसका चिंतवन करते हैं, इसे याद करते हैं, तब तब ऐसा होता है कि वाह प्रभो! ऐसा अद्भूत अचिंत्य सुख से भरा आत्मा, आप ने मुझे बताया..... आप की कितनी महिमा करूं? आत्मा का परम अद्भुत महिमा करते ही दुनिया के समस्त संकल्प--विकल्प दूर हो जाते हैं, ऐसा अद्भुत महिमावंत आत्मा, हे भगवान! आप के प्रताप से, आप के आत्मा को पहचानते ही, हमें पहचान हुई; इस प्रकार हमें आप का सम्यक्मार्ग प्राप्त हुआ.....अहो प्रभो! हम भी आप समान शूरवीर होकर आप के मार्ग पर आ रहे हैं।

हे भगवान! आपने बताया शुद्धात्मा--वह मात्र ज्ञान स्वरूप ही है, राग का अंश भी समाता नहीं--ऐसा आत्मा अद्भूत सुन्दर है, जगत में सबसे सुन्दर वैभव सम्पन्न आत्मा, उसे आपने अपने निजवैभव से हमें बताया; जिसे देखते ही महा आनंद होता है, महान प्रसन्नता होती है एवं उसके दर्शन अनादि संसार के भयंकर दुःखों को भुला देते है तथा परम शांति का अनुभव होता है--ऐसा आत्मा आप ने ही मुझे कहा कि हे जीव! हे भव्य! तेरे सुख के लिये तू सदा ऐसे आत्मा की प्रीति कर :---

इसमें सदा प्रीतिवंत बन, इसमें सदा संतुष्ट हो।
इसमें ही हो तू तृप्त, तुझको सुख अहो उत्तम हो॥

अहो, वीतरागी संतों! अहो गुरुवरो! अहो जिनवाणी माता! आप सभी के प्रताप से ऐसी तृप्ति देने वाला आत्मा हमें प्राप्त हुआ है, यह आप का कोई अचिंत्य परम उपकार है, उस उपकार के लिये मैं परम भक्ति से नमस्कार करता हूँ.....नमस्कार करता हूँ।

अज्ञानी जीवों को पर के दोष ग्रहण करने से हर्ष होता है; मेरे दोष ग्रहण करके दिन जीवों को हर्ष होता है तो मुझे यही लाभ है कि मैं उनका सुख का कारण हुआ, ऐसा मन में विचारकर गुस्सा छोड़ो।

—श्री परमात्मप्रकाश

Please report errors to Ramaben Parekh: WhatsApp +91 90115 91078 or email ramabenparekh45@gmail.com

Version 001: Updates at http://www.AtmaDharma.com & http://www.AtmaDharma.org

श्री कहान गुरुदेव के प्रति
पूज्य शांताबेन के
हस्ताक्षर में लिखे हुए शब्दों

मंगलाचरण

श्री सर्वज्ञ देव, श्री परम कृपावंत वीतरागी गुरुदेव, श्री परमागम शास्त्र जी को अत्यंत भक्ति के नमस्कार हो।

श्री कहान गुरुदेव के परम उपकार के प्रति अत्यंत भक्ति से नमस्कार हो।

श्री कहान गुरुदेव ने आत्मा का सच्चा स्वरूप समझाया है, वह स्वरूप चैतन्य आत्मा का है। आत्मा स्वयं ज्ञान का पिंड है, ज्ञान शरीरी है, उसे ही लक्षमेंह्नज्ञान में लेने से सच्चा अलौकिक सुख प्रगट होता है, तो आत्मा स्वयं प्रत्यक्ष अपने ही पास है, स्वयं का ज्ञानानंदज हाजराहजूर है, उसे ही निहारनाह्ननिरखना, उसकी ही रुचि बढ़ाने जैसी है। आत्मा की उत्कंठा, लगन बढ़ाने जैसी है। अपना स्वरूप ही है, अपने पास ही है, अहो! स्वयं ही है, इसलिए तो ज्ञायक ज्योति को लक्ष में लेने का प्रयत्न कराया है, यही कल्याणरूप है, सुखरूप है।

Please report errors to Ramaben Parekh: WhatsApp +91 90115 91078 or email ramabenparekh45@gmail.com

Version 001: Updates at http://www.AtmaDharma.com & http://www.AtmaDharma.org

परम उपकारी पूज्य गुरुदेव श्री की जन्म जयंति के प्रसंग पर पूज्य बेन शांताबेन के हृदय उद्‌गार हस्ताक्षरों में

अहो! उपकार जिनवरनो, कुन्दनो ध्वनि दिव्यनो।

जिन कुन्दध्वनि आप्यो, अहो ते गुरु कहाननो।।

अहो! आज अपने परम तारणहार श्री कहान गुरुदेव का महा--मंगलमय सोनेरी जन्मदिन है। वैशाख सुदी दोज के दिन पूज्य गुरुदेव का जन्म हुआ था, उस दिन तो सूर्य भी अतिशय जगमगाता जगमग करता हुआ उदित हुआ होगा। अपने सभी भक्तों के महाभाग्य से ऐसे महापुरुष का मिलाप हुआ।

महापुरुष का मिलन हुआ यह महाभाग्य है, उनकी तत्त्व से भरपूर भरी वात सुनने मिली यह भी महा--महा भाग्य है, अपन ने उनकी वाणी में के गये तत्त्व को ग्रहण किया यह महान--महान भाग्य। अहो! गुरुदेव ने तो अपने ऊपर परम--परम उपकार किया है। श्री जिनेश्वर देव का अद्‌भुत स्वरूप समझाया, इतना ही नहीं परंतु साक्षात् श्री जिनेश्वर देव की भेंट भी कराई। बनारसीदासजी कहते हैं--नीके कहत बनारसी, अलप भवथिति जाकी सोई जिनप्रतिमा प्रमाणी जिनसारखी। ऐसे साक्षात् जिनेश्वर के दर्शन कराये, अपने को ऐसा ही लगता है कि अपने सभी साक्षात् जिनेश्वर देव के चरणों में आये हैं।

दिव्यध्वनि में आये हुए भावों से शास्त्र भरे थे तो चारों अनुयोग के सूक्ष्म भाव अनोखी रीत सेह्नअपूर्व रीति से समझाये, निर्ग्रन्थ दिगम्बर गुरुओं का स्वरूप समझाया, इसप्रकार अपने को देव, शास्त्र, गुरुओं का स्वरूप पूज्य गुरुदेव ने अति करुणा (करके समझाया) गुरुदेव ने हृदय के भाव खोलकर वताये। पूज्य गुरुदेव का धन्य उपकार कभी भी भुलाया नहीं जा सकता।

पूज्य गुरुदेव का भेदज्ञान तो इतना अधिक तीक्ष्ण थाआ कि जिसे वह तीक्ष्ण घाव लगे उसका मिथ्यात्व चूर चूर हो जाय। जिसकी सुवास सारे भारत में फैल गई। भेदज्ञान ही सच्चा धर्म है, यही वास्तविक तरने का उपाय है, अन्य कोई उपाय नहीं है, ऐसा गुरुदेव ने खोलकर, ठोक--ठोक कर नगाड़ा

Please report errors to Ramaben Parekh: WhatsApp +91 90115 91078 or email ramabenparekh45@gmail.com

बजाया, गुरुदेव ने भेदज्ञान द्वारा आत्मा का अमृत सरोवर उछाला, अमृतरस पिया और अपने को भी अमृतरस पिलाया। पू. गुरुदेव का आत्मानुभव उनकी वाणी में झलकता था। आत्मार्थी जीव गुरुदेव का निर्विकल्प अनुभव देख सकते थे, आत्मअनुभव उनकी आँखो में झलकता था तो वे प्रखर आत्मानुभवी पुरुष थे। वे देव गुरु की भक्ति और उनके द्वारा बताया गया चैतन्य आत्मा की आराधना में सदा जाग्रत रहेंगे तो उनका प्रताप फलीभूत होगा, बस यही भावना।

सद्गुरुदेव की जय हो, जन्म जयन्ति महोत्सव की जय हो।

उत्पत्ति, स्थिति और लय की परिपाटी को समझनेवाले गुणीजनों का शोक तो स्वयं नष्ट हो जाता है। मध्यम बुद्धिमान का शोक आँख से दो--चार आसूँ बहाने से शांत हो जाता है; परंतु जघन्य मतिमान का शोक तो मृत्यु के साथ ही जाता है।

—श्री सुभाषित रत्नसंदोह

यदि कभी एक दिन भोजन नहीं मिलता अथवा रात्रि को नींद नहीं आती तो शरीर निश्चय से निकटवर्ती अग्नि से संतप्त हुए कमल--पत्र की भाँति म्लान हो जाता है तथा जो अस्त्र, रोग और जल आदि द्वार अकस्मात नष्ट हो जाता है, उस शरीर के विषय में हे भाई! स्थिरता की बुद्धि कहाँ से हो सकती है? और उसका नाश हो जाय उसमें आश्चर्य ही क्या है? अर्थात् उसे न तो स्थिर समझना चाहिये और न ही उसके नष्ट होने पर कोई आश्चर्य होना चाहिये।

—श्री पद्मनन्दीपंचविंशति

Please report errors to Ramaben Parekh: WhatsApp +91 90115 91078 or email ramabenparekh45@gmail.com

प्रशांत स्वरूपी

पूज्य शांताबेन का जीवन दर्पण

पावन तुझ उज्ज्वल जीवन
झूका रहे हमारे सीर,
मात तुझ पवित्र चरणों में नमनकर
मुक्तिरमा वरने के कारण

जन्म और बाल्यावस्था

पूज्य शांताबेन का जन्म उनके मामाजी के यहाँ
ढला ढोलरवा (अमरेली के बाजु में) ग्राम
विक्रम संवत १९६६ (ई.स. १९१०)
फागुन सुधी ग्यारस के शुभदिन
पिता श्री मणीलालभाई तथा माताजी दिवाली माताजी
के यहाँ प्रातः काल में हुआ था।
खारा परिवार में यह दीपक प्रकाशित हुआ,
जिससे वह कुल धन्य बन गया,
कुटुम्ब में सबसे बड़े पूज्य बेन थे
उनकी चार बहनें तथा एक
भाई मुकुंदभाई हैं, बाल्यपन
से उनका जीवन वैराग्यमय
और आदर्श था।
पू. शांताबेन का चमचमाता जीवन

जिसने चैतन्य का स्वाद चखा, उसे संसार असार लगता है।

Please report errors to Ramaben Parekh: WhatsApp +91 90115 91078 or email ramabenparekh45@gmail.com

Version 001: Updates at http://www.AtmaDharma.com & http://www.AtmaDharma.org

सामान्य परिचय

पूज्य वेन देखने में एकदम रूपवान, तेजस्वी, वीर्यवान, सौम्य मुद्रा और वात्सल्ययुक्त थे, बालपन से ही आप विचारशील तथा जो भी कार्य करते थे तो व्यवस्थित ही करते थे। स्वयं जो काम करने का ठान लें तो उसे पूर्ण करके ही शांति लेते थे, ऐसी उनकी तीव्र लगन/रुचि थी।

बाल्यपन से ही वैरागी थे एवं तीक्ष्णबुद्धि होने से पू. वेन के प्रति कुटुम्बी जनों में बहुत सन्मान था, छोटी सी उम्र होने पर भी सभी जन उनसे सलाह लेकर ही काम करते और उनके पिता श्री को तो पूज्य वेन के प्रति अथाह प्रेम था, इसी कारण बचपन से ही उन्हें वेन कहकर संबोधन करके ही बुलाते थे।

पू. वेन ने कलकत्ता में थोड़े समय अभ्यास किया, फिर उनके मूल ग्राम अमरेली में थोड़े समय रहे, उनको बचपन से ही धार्मिक रुचि विशेष थी इस कारण प्रतिदिन उपाश्रय में जाते थे और सामायिक, प्रतिक्रमण कराते और शास्त्रों का अभ्यास करते। तीक्ष्णबुद्धि होने से हजारों श्लोक कंठस्थ थे। सिर्फ एक बार पढ़ते ही उन्हें कंठस्थ हो जाता था। स्वयं भक्ति तथा वैरागी भजन बना बनाकर गाते थे। कंठ एकदम सुरीला और मधुर होने से सभी उनसे गवाते थे। व्यवस्थित गूंथना, मोती के तोरण बनाने में भी वे निपुण थे।

व्रत–तपरूप नियम संयमी थे, उपवास, एकासन स्वयं करते और कराने में अनुमोदना भी वात्सल्यपूर्वक करते। उपवास के दिन आरंभ परिग्रह का त्याग करके उपाश्रय में रहते, साधर्मिओं के साथ वांचन–मनन–भक्ति सहित समय निकालते थे, दूसरे दिन साधर्मीओं को पारणा कराने में बहुत प्रेम था। तथा सभी को अपने घर बुलाकर उत्साहपूर्वक पारणा कराते थे, ऐसी वात्सल्य मूर्ति वेन बचपन से ही थे।

Please report errors to Ramaben Parekh: WhatsApp +91 90115 91078 or email ramabenparekh45@gmail.com

Version 001: Updates at http://www.AtmaDharma.com & http://www.AtmaDharma.org

पूज्य श्री कहान गुरुदेव का प्रथम दर्शन

पूज्य बेन को मात्र १६ वर्ष की उम्र में ही संसार के प्रति उदासीनता आ गई, इसलिए संसार मोह छोड़कर दीक्षा ग्रहण करने के भाव जागृत हुए और दीक्षा ग्रहण करने का हेतु एक ही था कि मुझे अपने आत्मा का कल्याण करना है, इस कारण पूज्य गुरुदेव के दर्शन करने की उत्कंठा बहुत ही थी। उनके पिताश्री ने संप्रदाय में गुरुपने से कहानगुरु को ही स्वीकारा था। पिताश्री को विचार आया कि बेन के साथ अपन सभी पूज्य गुरुदेव के दर्शन करने चलें। संवत १९८१ की साल में (ई.स. १९२५) पूज्य गुरुदेव का चातुर्मास गढडा ग्राम में था तब कुटुम्ब के लगभग १०० मनुष्यों सहित पूज्य गुरुदेव के दर्शन करने गये।

पूज्य गुरुदेव श्री को प्रथम बार देखकर अति भावपूर्वक दर्शन किये और मन में ऐसा विचार आया कि जरुर इससें मेरा कल्याण होगा। इस भावना से जीवन में शांति हुई, पूरा जीवन ही पलट गया। जहाँ पू. गुरुदेव का चातुर्मास होता वहाँ वहाँ जाना ऐसा निर्णय दर्शन करते ही कर लिया। गढ़डा में पूज्य गुरुदेव को उनके पिताश्री ने कहा कि हे गुरुदेव! बेन को दीक्षा लेनी है, तो आप समझाईएगा, दीक्षा लेने के लिए एकदम तैयार हैं, उनकी माँ तो रोती है, घर में भोजन पात्र भी आ गये हैं, तथा उनसे छोटी बहन कान्तावेन को पात्र में भोजन लेने जाना यह प्रतिदिन सिखाती है।

पूज्य गुरुदेव ने अति करूणापूर्वक दीक्षा का स्वरूप समझाया और कहा कि आत्मा के अनुभव के सिवाय जीवन धन्य नहीं होता। अनुभव सिवाय दीक्षार्थी जीवन सार्थक नहीं होता आदि आदि बहुत कुछ कहा, वह सुनकर मन में एकदम पलटा गया एवं दोनों हाथ जोड़कर कहा कि प्रभु! अब मुझे दीक्षा नहीं लेना, परंतु आप ने जो भेदज्ञान का स्वरूप बताया वैसा भेदज्ञान शीघ्र प्राप्त करना है। पूज्य गुरुदेव की वाणी सुनकर आने के बाद पू. बेन ने अपने पिता जी को कहा कि आज मैं कोई अन्य साधुओं के प्रवचन सुनने नहीं जाऊँगी। पू. गुरुदेव के प्रवचनों में से भेदज्ञान की बात ही ग्रहण करना है, क्योंकि; आत्मा की रुचि होने से और भेदज्ञान की तीव्र लगन होने से वही बात रुचती थी। पूज्य गुरुदेव को चातुर्मास १९८२ (ई.स. १९२६) वढ़वाण शहर में होने से वहाँ जाने की उनकी बहुत ही भावना थी, परंतु जा नहीं सके इसलिए मन में क्षोभ बना रहता था।

Please report errors to Ramaben Parekh: WhatsApp +91 90115 91078 or email ramabenparekh45@gmail.com

Version 001: Updates at http://www.AtmaDharma.com & http://www.AtmaDharma.org

पूज्य गुरुदेव के चातुर्मास में लिया लाभ

विक्रम सं. १९८३ (ई.स. १९२७) में पू. गुरुदेव का चातुर्मास दामनगर में था, वहाँ जाने की बहुत भावना थी, इस कारण उनके पिताश्री उन्हें दामनगर में छोड़ आये। पूज्य बेन को ब्रह्मचर्य का बहुत ही रंग था, वह मन–वचन–काय से अखण्ड पल जाय उसकी चिंता उन्हें निरंतर रहती थी। जैसे आत्मप्राप्ति की रटन रहती थी वैसे ही ब्रह्मचर्य अखंड बना रहे ऐसे, विचार रहते थे।

दामनगर में तीन माह चातुर्मास तक पूज्य गुरुदेव की वाणी का लाभ मिला। प्रथम ही वाणी सुनने के लाभ से स्वयं को भी बहुत लाभ हुआ। जब जब पू. गुरुदेव भेदज्ञान का स्वरूप समझाते और कहते कि आत्मा ऐसा (एकदम) भिन्न पड़ जाता है कि जैसे पर्वत पर बिजली पड़ने से दो फाड/टुकड़े हो जाते पुनः वह पर्वत पर के साथ नहीं मिलता है। वैसे ही आत्मा के भेदज्ञान रूपी/प्रज्ञारूपी बिजली पड़ी कि पर से भिन्न–भिन्न पड़ गया अब पुनः पर के साथ एकत्वबुद्धि से एकमेक नहीं होगा। तथा दूसरी बात पू. गुरुदेव यह कहते थे कि आत्मा, मन वचन–काय से पहले पार है। मन–वचन–काया से आत्मा का स्वरूप नहीं जान सकते। ऐसी बात सुनकर अन्तर में बहुत उल्लास होते ही हृदय उछल जाता कि ऐसा आत्मा कहाँ होगा? उसे खोजने की दिन–रात धुन लगी रहती थी एवं ऐसा स्वरूप शीघ्र प्राप्त करूँ, ऐसी जिज्ञासा और पुरुषार्थ चालू हो गया।

पूज्य गुरुदेव के प्रति बहुमान आता था और लगता था कि यह पुरुष मानो पूर्व का परिचित न हो! ऐसा हृदय में होता रहता था और स्वप्न में बहुत बार आते थे।

वि.सं. १९८४ (ई.स. १९२८) में एक माह अपने गाँव में (अमरेली) पूज्य गुरुदेव पधारे, तो हृदय में आनंद समाता नहीं था। वहाँ की लाईब्रेरी में दिगंबर शास्त्र वांचने की बहुत धुन थी उनमें से व्याख्यान भी करते तो भी आत्मा के भेदज्ञान की बात ही करते पू. बेन को तो भेदज्ञान की बात सुनते ही चैतन्य पूर का पूर उछल जाता–अनंत गुण उछल पड़ते थे, ऐसा उत्साह आता था।

Please report errors to Ramaben Parekh: WhatsApp +91 90115 91078 or email ramabenparekh45@gmail.com

अमरेली से पू. गुरुदेव चातुर्मास करने के लिये राणपुर पधारे। वहाँ पू. वेन भी गये और चार महिने रहे। चौमासे में पू. गुरुदेव छह द्रव्य और नौ तत्त्वों की बहुत अच्छी चर्चा करते थे। किस गुणस्थान में पाँच भावों में से कौन कौन से भाव होते हैं.....सामायिक में छह द्रव्यों में से कौनसा द्रव्य होता है और नौ तत्त्वों में से कौनसा तत्त्व होता है, ऐसे प्रश्न पू. गुरुदेव श्री सभी से पूछते, असमें पू. वेन ही मुख्य जवाव देती थीं और घर आकर तुरंत लिख लेती थीं।

पू. गुरुदेव का १९८५ (ई.स. १९२९) में लाठी में चातुर्मास हुआ वहाँ भी पू. वेन ने लाभ लिया और पुरुषार्थ में वृद्धि हुई और मन में निर्णय करते कि पू. गुरुदेव के साथ–साथ में ही आत्मसाधना सधना है तथा भविष्य में आत्म कल्याण करके उनके साथ ही सिद्धपद प्राप्त करना है। ऐसे महान संत के प्रति उनको बहुत बहुमान आता था और यही सच्चे संत हैं ऐसा दृढ़ निश्चय कर लिया।

पू. गुरुदेव श्री ने वि.सं. १९८६ (ई.स. १९३०) में पुनः चातुर्मास अमरेली में/अपने गाँव में हुआ, साथ में नाराणभाई होने से तत्त्व की रेलमछेल मची रहती थी। बाहर गाँव से बहुत मुमुक्षु आये थे, इस कारण पू. गुरुदेव को बहुत उत्साह था, तत्त्व चर्चा नाराणभाई के साथ होने से आनंदमय दिन पू. वेन के धर्म में जाते थे।

वहाँ से पू. गुरुदेव वींछिया पधारे वहाँ भी पू. वेन दर्शन करने गये थे। तव पू. वेन श्री चंपावेन भी दर्शन करने आये थे, वहाँ दोनों वहनों का प्रथम मिलन हुआ। तव पू. वेन श्री को देखते ही पू. वेन का मन उनके प्रति आकर्षित हुआ और ऐसा लगा कि मानों पूर्व के संवंधी हों, ऐसा उनके प्रति हृदय एकता की तरह खिंच गया, एक–दूसरे आमने–सामने टकटकी लगाकर देखते रहे। वाद में भी विशेष परिचय नहीं हुआ, इसप्रकार वींछिया में पू. गुरुदेव तथा पू. दोनों वहनों का संगम हुआ और महाविदेह का विखराव यहाँ पुनः त्रिपूटी एकत्रित हो गई। पू. वेन को भेदज्ञान की तीव्र आकांक्षा होने से जहाँ जहाँ पू. गुरुदेव पधारें वहाँ वहाँ स्वयं भी जाते थे।

Please report errors to Ramaben Parekh: WhatsApp +91 90115 91078 or email ramabenparekh45@gmail.com

पू. गुरुदेव का वि.सं. १९८८ (ई.स. १९३१) में जामनगर में चातुर्मास हुआ था वहाँ भी स्वयं गई थीं, पू. गुरुदेव की वाणी में आया कि भेदज्ञान/सम्यग्दर्शन के बिना सर्व ही व्यर्थ है, पहले से ही ऐसी पुरुषार्थ प्रेरक पू. गुरुदेव की वाणी थी।

पू. गुरुदेव का वि.स. १९८८ (ई.स. १९३२) में जामनगर में चातुर्मास हुआ वहाँ भी पू. बेन गये, पू. गुरुदेव के प्रवचन भी अपूर्व होते थे। स्वयं को तीव्र आत्मप्राप्ति की आकांक्षा होने से नींद भी नहीं आती, खाने–पीने का रस भी छूट गया और एक ही लगनी कि कब में आत्मा का असली स्वरूप पाऊँ। वहाँ पू. गुरुदेव का स्वास्थ्य ठीक न होने से उनको ऐसा हुआ कि पू. गुरुदेव की हाजरी में ही सम्यग्दर्शन प्राप्त कर लेना है। वहाँ से माता–पिता से बात करी कि मुझे तो इस भव में ही ऐसा काम करना है कि स्त्रीपर्याय का छेद हो जाय। मेरी चिंता करना नहीं, मुझे तो अपने आत्मा का ही कार्य करना है, ऐसे गुरु मिले हैं उनके द्वारा मेरे आत्मा का हित होगा ही ऐसी निशंकता थी।

Please report errors to Ramaben Parekh: WhatsApp +91 90115 91078 or email ramabenparekh45@gmail.com

Version 001: Updates at http://www.AtmaDharma.com & http://www.AtmaDharma.org

पूज्य चंपाबेन का परिचय और उनके द्वारा हुआ लाभ

पूज्य गुरुदेव का वि. सं. १९८९ (ई.स. १९३३) में राजकोट शहर में चातुर्मास था, तब तक आश्चर्यकारी प्रसंग बना कि पू. चंपाबेन सम्यग्दर्शन प्राप्त करके पधारे, तब उनको देखकर पूज्य बेन को ऐसा हुआ कि पूज्य गुरुदेव के अल्प परिचय में भी पुरुषार्थ करके सम्यग्दर्शन प्राप्त कर लिया, अहो धन्य दशा!

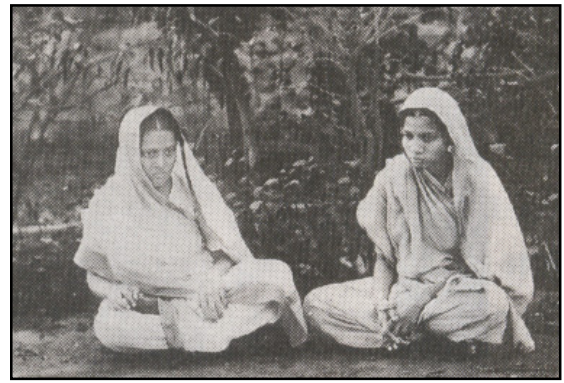

उस समय पू. गुरुदेव, पू. बेन शांताबेन को बुलाकर कृपादृष्टि से कहा कि आप को इन चंपाबेन का परिचय करने जैसा है, ऐसा आदेश था। पू. बेन को पूर्वभव की प्रीति और अपने आत्मा की तैयारी के बाद क्या कमी रहती है! अति हर्ष उमंग पूर्वक परिचय किया, मानो दोनों सखियाँ मिलीं हों इस तरह अंतर की बातें एक–दूसरे ने शुरू कर दीं। पू. चंपाबेन कहते कि मुझे भी ऐसे ही विचार आते थे कि मैं पू. गुरुदेव के चौमासे में रहकर वहाँ शांताबेन का सहवास करूँगी। इस तरह पू. चंपाबेन को भी पू. बेन के प्रति बहुत कृपा थी। ऐसा सहवास करने के बाद पू. चंपाबेन को लगा कि पू. बेन को जैसा कहते हैं वैसा उनका द्रव्य परिणमन करता है इतनी उनमें कोमलता और पात्रता है। इसलिए बेन श्री अनुभव के सूक्ष्म अति सूक्ष्म सदस्य बताते थे, स्वसन्मुख विचारधारा में प्रोत्साहन देते थे और मार्ग सुगम करके देते थे। पू. चंपाबेन के सानिध्य में पू. बेन का पुरुषार्थ, आत्मा के प्रति लगन, जोरदार वृद्धि पाई कि कहीं चेन न पड़े, खाने–पीने में उदासीनता वर्तती, नींद आती नहीं और एकांत में बैठकर तीन तीन घंटे तक आत्मा की शोध–खोज किया करें। कोई बार उनकी माताश्री आते तो भी सामने न देखें तब उनकी माताश्री कहतीं कि बेन! तुम्हें क्या हो गया है कि हमारे सामने भी नहीं देखते,

Please report errors to Ramaben Parekh: WhatsApp +91 90115 91078 or email ramabenparekh45@gmail.com

ऐसा कहकर वो रोने लगती थी। पू. बेन इतना ही जवाब देते कि मुझे मेरा काम करने दो।

एक बार श्रीमद् राजचंद्र की पुस्तक वांचते वांचते ऐसा विचार आया कि इस शास्त्र में कहा है वैसी परिणति मेरी कब होगी। तब अंतरंग शोध खोज करते और वांचना वहीं रुक जाता, पू. गुरुदेव श्री के प्रवचन में क्षमा का स्वरूप आवे या समता का स्वरूप आये कि सच्ची क्षमा और समता तो आत्मा का स्वभाव है, वह बात तो इतनी प्यारी लगी कि ऐसे स्वभाव रूप मेरी परिणति कब होगी! मुझे तो ऐसा क्षमा स्वभाव ही चाहिये। यह ऊपर–ऊपर की शुभाशुभ रूपी क्षमा के भाव से मुझे संतोष नहीं होता। यह स्वभावभाव प्रगट करने के लिये तो इतना अधिक वेदन होता था कि जिसका वर्णन हो सकता नहीं। यह तो वेदन करने वाला स्वयं ही जानता है। आत्मा के वेदन के आगे कुछ भी रुचता नहीं है।

पू. गुरुदेवश्री का वि.सं. १९९० (ई.स. १९३४) में चातुर्मास राजकोट सदर में था। वहीं पू. बेन श्री तथा पू. बेन गये थे। उस समय गुरुदेव एक बार ही प्रवचन करते थे तो निवृति अधिक मिलती इसलिए सुबह एकांत में स्वाध्याय करते थे और पू. बेनश्री के समागम से भी पुरुषार्थ वृद्धिंगत हो ऐसी अच्छी चर्चा होती थी।

एक बार दोनों बहनें घूमने जा रहे थे तब पू. बेन श्री ने कहा राग के समय भी आत्मा को किस तरह देखना उसका दृष्टांत दिया कि जैसे स्फटिकमणी स्वभाव से तो निर्मल ही है, परंतु उसके सामने यह जवापुष्प रख देने से वह लाल दिखने लगा फिर भी उस ललाई के समय में भी स्फटिक तो निर्मल ही है। वैसे ही शुद्धात्मा को स्वभाव से देखा जाय तो शुद्ध ही है, परंतु उसमें होने वाली राग–द्वेष की परिणति के कारण वर्तमान में अशुद्ध दिखता है, परंतु उसकी अशुद्धपरिणति के समय उसकी तरफ न देखने से शुद्ध चैतन्य तरफ दृष्टि करने से शुद्धात्मा शुद्ध ही दिखता है।

Please report errors to Ramaben Parekh: WhatsApp +91 90115 91078 or email ramabenparekh45@gmail.com

Version 001: Updates at http://www.AtmaDharma.com & http://www.AtmaDharma.org

पूज्य बेन को निर्विकल्पदशा में शुद्धात्मा कैसा जानने में आया पर उनके ही हस्ताक्षरों में

१९९० रात्रि में आसो (कुंवार मास) वदी ४ को शुक्रवार के लगभग रात के १० बजते ही एकदम उपयोग पर से छूटकर ज्ञायक आत्मा में लीन हुआ और अद्‌भुत आत्मा का निर्विकल्प अनुभव हुआ। आनंद अनुभव में आया चैतन्य के अनुपम स्वरूप का अनुभवन हुआ आत्मा का वास्तविक स्वरूप अनुभव में आया।

खरा आनंद अनुभव में आया, साक्षात् चैतन्य स्वरूप अनुभव में आया, अनंत अनंत गुण उछल पड़े। अनंत गुण स्वरूप चैतन्य अनुभव में आया, सच्चा आनंद अनुभव में आया, वास्तव में समभाव स्वरूप, समाधि स्वरूप ज्ञायक आत्मा अनुभव में आया। जाज्वल्यमान चैतन्य ज्योति जागृत रूप दैदीप्यमान होकर अनुभव में आया, साक्षात् ज्ञायक, ज्ञायकरूप से अनुपम परिणमन करता हुआ अनुभव में आया।

वाह! चैतन्य वाह! तेरा स्वरूप तो वास्तव में अद्‌भुत है। इसप्रकार साक्षात् चैतन्य का अनुभव होते ही ज्ञायक की धारा दृढ़ रूप से परिणमन करने लगी, उपयोग बाहर में आवे तो ऐसा होता था कि जिसके लिये वेदन होता था, जिसके लिये प्रयत्न था वह स्वरूप प्राप्त हुआ। यह स्वरूप प्राप्त हुआ आत्मा ही स्वयं की पूर्ण दशा प्राप्त करके पूर्णता को पहुँच सकता है।

तब से भेदज्ञान की धारा बराबर चलने लगी। ज्ञानधारा मुख्य रहने लगी और उदयधारा गौण रूप से रहने लगी, दोनों धारायें एक साथ परिणमन करती हैं। उसके बाद आत्मा का ध्यान करने बैठते हैं, तब ध्यान में लीनता भी अच्छी होती थी, थोड़े थोड़े दिन के अन्तर से निर्विकल्प दशा भी आ जाती थी, आत्मअनुभव किसी-किसी समय प्रगट होता ही रहता था। सविकल्प दशा में भी ज्ञायक की स्थिरता अच्छी रहती थी, ज्ञाता-ज्ञाता रहकर जो विकल्प आते हैं उन्हें ज्ञेय रूप से जानते हैं, साक्षी रूप से ज्ञाता रहकर विकल्प को भिन्न रूप जानता है, विकल्प आते हैं सही परंतु वो दुःख रूप और उपाधिरूप लगते हैं, ज्ञायक में लीन होने की भावना रहती है, विकल्पों को

Please report errors to Ramaben Parekh: WhatsApp +91 90115 91078 or email ramabenparekh45@gmail.com

हेय बुद्धि से जानने में आते हैं।

जो पुरुषार्थ से सम्यग्दर्शन प्राप्त हुआ वह ऐसी विशेषता पूर्वक प्राप्त हुआ है कि जिस सम्यग्दर्शन के फल में केवलज्ञान प्राप्त होगा। ऐसी अप्रितिहत धारा रूप सम्यग्दर्शन प्राप्त हुआ है।

वि. स. १९९० (ई.स. १९३४) का चातुर्मास पूरा करके थोड़ा गाँवों में विहार करके पू. गुरुदेव वि.स. १९९१ (ई.स. १९३५) में सोनगढ़ पधारे।

१९९१ के फागुन वदी तीज को पू. गुरुदेव सोनगढ़ पधारे। पू. गुरुदेव ने अन्तर ज्ञान से और दिगंबर शास्त्रों द्वारा निर्णय किया कि यह दिगंबर धर्म ही सच्चा धर्म है। अनादि से ही धर्म चला आ रहा है, अनन्ते तीर्थंकरों ने इसी दिगम्बर मार्ग में चलकर मोक्ष प्राप्त किया और अनंत तीर्थंकरों ने इस दिगम्बर मार्ग की ही स्थापना की है। ऐसा पू. गुरुदेव का दृढ़ निर्णय होने से उन्होंने स्थानकवासी का चिन्ह जो मुहपट्टी उसका त्याग यहाँ सोनगढ़ में चैतसुदी १३ के महामंगल महावीर जिनेश्वर के जन्म कल्याणक के दिन मुँहपट्टी का त्याग किया और मैं ब्रह्मचारी हूँ। ऐसा स्वयं का पद दिगंबर धर्म अनुसार जाहिर किया, ऐसा सम्प्रदाय का बड़ा फेरफार तो पुरुषार्थ सिंह पू. गुरुदेव ही कर सकते हैं।

पू. गुरुदेव के प्रताप से सत्यधर्म का फैलाव कोई अद्‌भुत हुआ है, छोटे बालकों से लेकर वृद्ध तक सभी भाई बहन सत्यधर्म का आदर करने वाले और सत्यधर्म की रुचिवंत हो गये। इस पंचम काल में इस वीतरागी सत्य धर्म का विस्तार यह अद्वितीय पुरुष द्वारा ही हुआ, सामान्य मनुष्यों का यह काम नहीं है। यह परम पुरुष पूज्य गुरुदेव के प्रताप से इस आत्मा ने अनंतकाल में जिस आत्मा को जाना नहीं था, उस आत्मा का आत्मा जागृत होकर जाना, अनुभव किया जिसमें भवभ्रमण का नाश हुआ उसे मुक्ति नजीक में हो गई। जो साक्षात् तीर्थंकर के योग में भी आत्मप्राप्ति नहीं हुई वह इन सद्‌गुरु के परमप्रताप से हुई उन गुरुदेव को अत्यंत भक्ति से नमस्कार हो, नमस्कार हो।

Please report errors to Ramaben Parekh: WhatsApp +91 90115 91078 or email ramabenparekh45@gmail.com

पूज्य गुरुदेव श्री के द्वारा दोनों बहनों से पूछे हुए पाँच प्रश्न :–

(लेखन में)

(१) अगुरुलघु की व्याख्या किस प्रकार कर सकते हो?

(२) ज्ञान सविकल्प है तो अनुभव के समय सविकल्प किस प्रकार से है, उसे घटित करने का क्या प्रकार है?

(३) सर्वज्ञ की व्याख्या अपनी भाषा में किस प्रकार हो सकती है?

(४) अन्य वेदान्तादि की अपेक्षा जीव का भिन्नपना मुख्य मुद्दा सहित किस मान्यता में है?

(५) आत्मानंद और निर्विकल्पता में भेद अथवा काल का अन्तर क्या है?

ये प्रश्न पढ़कर तुरंत जवाव देना और लिखना। सर्वोत्कृष्ट रूप से अपनी भाषा में किसप्रकार करते हो। दोनों जन भिन्न–भिन्न लिखना।

पू. गुरुदेव ने भी हम दोनों वहनों से वहुत प्रश्न पूंछकर परीक्षा की है। परम कृपावंत गुरुदेव के परम उपकार को अत्यंत भक्ति से नमस्कार हो।

पहले प्रश्न का उत्तर :—द्रव्य की जो हानि वृद्धि स्वरूप पर्याय परिणमती है, फिर भी यह मूल स्वरूप में हानि वृद्धि रूप नहीं होती उसमें जो एकाकारपना स्थित है वह अगुरुलघु स्वभाव है।

बाकी अगुरुलघु स्वभाव की विशेष स्पष्ट व्याख्या करे की ओर लक्ष नहीं पहुँचता। अनुभव में ज्ञान सविकल्प किस प्रकार से है, उसकी जो व्याख्या आती है, उसमें अगुरुलघु स्वभाव की व्याख्या समा जाती है, परंतु उसमें जो अगुरुलघु की व्याख्या विशेष स्पष्ट भिन्न करने की ओर लक्ष पहुँचता नहीं।

परमपुरुष श्री सद्गुरु को और उनके परम उपकार को वारंवार नमस्कार हो।

Please report errors to Ramaben Parekh: WhatsApp +91 90115 91078 or email ramabenparekh45@gmail.com

Version 001: Updates at http://www.AtmaDharma.com & http://www.AtmaDharma.org

दूसरे प्रश्न का उत्तर :—अनुभव के समय ज्ञान सविकल्प किस तरह होता है? उसका उत्तर—आत्मा के निर्विकल्प अनुभव के समय ज्ञायक, ज्ञायक स्वरूप से प्रगट उपयोगपने सहज परिणमता है। उस समय ज्ञाता द्रव्य में प्रगट रूप से कोई अचिंत्य और अद्भुताओं से भिन्न–भिन्न जाति के स्वभाव स्वरूप भिन्न भिन्न अवस्था में भिन्न भिन्न तरंगों में भिन्न भिन्न रमत (खेल) स्वरूप कोई अद्भुतता में आत्म द्रव्य परिणम रहा है उन सभी स्वभावों को अवस्थाओं रूप तरंगों को ज्ञान जानता है वह ज्ञान की सविकल्पता है।

अन्तर्मुहूर्त की अनुभव स्थिति में ज्ञायक द्रव्य में ऊपर लिखे अनुसार भिन्न भिन्न प्रकार की अवस्था की तरंगे क्षण–क्षण में परिणम रही हैं, उन सभी अवस्था को जाननस्वरूप ज्ञान में ज्ञान की नई नई अवस्थायें सहज परिणमती हैं। वह ज्ञान की सविकल्पता, ज्ञान की अवस्था और दूसरे सभी गुणों की अवस्था एक साथ ही परिणति है। अनुभव में कर्त्ता, क्रिया और कर्म जो कि स्वयं का है उसमें ज्ञानगुण की सविकल्पता है। अपने ज्ञान की नई अवस्था और दूसरे गुणों की नई अवस्था जानने रूप जो ज्ञान का कार्य होता है वह ज्ञान की सविकल्पता है।

सर्वज्ञ की व्याख्या

तीसरे प्रश्न का उत्तर :—ज्ञान उपयोग का परलक्षी परिणमन सबसे सर्वप्रकार से छूटकर ज्ञान उपयोग का ज्ञान उपयोगपने अखंड सहज प्रगट प्रत्यक्ष स्वरूप से परिणम जाना वह सर्वज्ञपना अथवा जाज्वल्यमान ज्योतिस्वरूप अखंड ज्ञाता द्रव्य को, उनके सर्व भावों को प्रत्यक्षपने एक ही साथ प्रगट रूप से जानना अनुभव करने रूप सहज ज्ञान उपयोग का परिणमना वह सर्वज्ञता है।

चौथे प्रश्न का उत्तर :—चौथा प्रश्न का उत्तर इसप्रकार लिखते हैं—

जैन छह द्रव्यों को ही मानता है और उसके निमित्त–नैमित्तिक संबंध रूप भावों को भी मानता है। जबकि वेदांत एक ही द्रव्य को मानता है, निमित्त–नैमित्तिक संबंध रूप भावों का निषेध हो जाता है, उसका निषेध होते ही नैमित्तिक रूप जो द्रव्य उसके स्वभाव का निषेध होता है और स्वभाव

Please report errors to Ramaben Parekh: WhatsApp +91 90115 91078 or email ramabenparekh45@gmail.com

का निषेध होने से द्रव्य वस्तु का ही निषेध हो जाता है अर्थात् जैन के अभिप्राय में वस्तु/द्रव्य का अखंड अस्तित्व रहता है, जबकि वेदांत के अभिप्राय अपेक्षा द्रव्य की स्वाधीनता वगैरह सभी उड़ जाती हैं।

अर्थात् वस्तु स्वभाव की कोई भी व्यवस्था या मर्यादा नहीं रहती उसी तरह परद्रव्य का निमित्त पाकर आत्मद्रव्य की पर्याय विकार रूप परिणमती है। उसे भी वेदांत नहीं मानता एवं विकार को अविकार रूप मानता है अर्थात् अविकारी पर्याय रूप परिणमन करने का उसका पुरुषार्थ हो सकता नहीं, अर्थात् उसके अभिप्राय उपेक्षा उसे संपूर्ण कार्य सिद्ध हो सकते नहीं और वह संपूर्ण सुख का अनुभव भी नहीं कर सकता।

और जैन परद्रव्य के निमित्त से आत्मद्रव्य की जिसको जितनी अंशों में विकार पर्याय होती है उसे प्रमाण उसे मानता है अर्थात् अविकारी पर्याय रूप परिणमन का उसको पुरुषार्थ हो सकता है, अर्थात् वह सर्व कार्य सिद्धि को प्राप्त भी कर सकता है और वह संपूर्ण सुख का अनुभव भी कर सकता है इसलिए जैन का अभिप्राय सत्य है और वेदांत का अभिप्राय सत्य नहीं, इस तरह वेदांत और जैन भिन्न पड़ जाते हैं। वेदांत आत्मा को सर्वथा शुद्ध मानता है तथा जैन भी द्रव्य दृष्टि अपेक्षा सर्वथा शुद्ध मानते हैं। अर्थात् इस अपेक्षा से साधारणपने दोनों एक हैं ऐसा कहा जा सकता। परंतु व वेदांत शुद्ध का यथार्थ स्वरूप समझे बिना शुद्ध मानते हैं, जबकि जैन तो, यथार्थ स्वरूप समझ कर शुद्ध मानते हैं, इसलिए इस तरह भी जैन और वेदांत भिन्न पड़ जाते हैं।

यह प्रश्न बांचकर तुरंत लिखा गया है। सोमवार के सुबह पाँच बजे लिखना प्रारंभ किया, उसमें सबसे पहले यह प्रश्न लिखा गया है।

प्रश्न पाँच का उत्तर :—जिस समय उपयोग परलक्ष छोड़कर निज ज्ञायक में एकाकार निर्विकल्प उपयोग का परिणमन होता है उसी समय ही वास्तविक आनंद अनुभव आता है।

उपयोग का निर्विकल्प रूप परिणमना और आनंद का अनुभव होना वे दोनों एक ही समय होते हैं, उसमें काल का अन्तर कुछ भी जानने में

Please report errors to Ramaben Parekh: WhatsApp +91 90115 91078 or email ramabenparekh45@gmail.com

Version 001: Updates at http://www.AtmaDharma.com & http://www.AtmaDharma.org

नहीं आता।

आत्मा का उपयोग जब निर्विकल्प रूप होता है तब ही सच्चा आनंद और सच्चा सुख वेदन में आता है सच्चा आनंद और सच्चा सुख तभी (कहलाता है) कि जब आत्मा का उपयोग निर्विकल्परूप हो, तब उसमें भेद तो क्या कहना, परंतु उसमें स्वभाव भेद अपेक्षा से भेद लें तो ले सकते हैं। बाकी तो अभेद एकाकार परिणमन उसमें भेद क्या कहना।

इन पाँचों प्रश्नों के उत्तर श्री सद्गुरु प्रताप से यथाशक्ति प्रमाण में लिखे हैं।

वि.सं. १९९४ की साल में पूज्य गुरुदेव के व्याख्यान में से पूज्य शांता बेन ने की हुई नोंध

''दीगंबरपना यही सत्य है तथा वस्त्र रहित दिगंबर दशा आये बिना केवलज्ञान नहीं होगा, यह यथार्थ ही है।''

सम्यग्दर्शन होने के बद जहाँ तक देह पर वस्त्रों का संबंध दिखता है वह वस्त्र रागवृत्ति के अवलंब कर होता है तथा जहाँ तक राग नहीं छूटता वहाँ तक केवलज्ञान भी नहीं होता–यह सचोट सिद्धांत है। तथा वस्तु स्वरूप भी ऐसा ही है। अर्थात् जहाँ राग छूटा वहाँ वस्त्र भी छूट ही जाता है और वह दिगंबर दशा होती है उस दिगंबर दशा होने के बाद ही केवलज्ञान के लिए श्रेणी मांडते हैं।

वस्त्र रहितपने की
जो द्रव्य–भाव दशा हुई वही मुनिपना है।

Please report errors to Ramaben Parekh: WhatsApp +91 90115 91078 or email ramabenparekh45@gmail.com

सुवर्णपुरी में स्वाध्याय मंदिर, जिनमंदिर की स्थापना

वि.सं. १९९४ (ई.स. १९३८) की साल में स्वाध्याय मंदिर की स्थापना हुई उसके बाद पू. गुरुदेव का मन स्थिर सिद्धांत हुआ और ऐसा लगा कि मानो अपने मूल स्थान में आ गये हों एवं स्वाध्याय मंदिर में जिनवाणी की स्थापना हुई उसके बाद पू. गुरुदेव के श्रीमुख से सनातन दिगंबर जैनधर्म का प्रचार प्रारंभ हुआ।

वि.सं. १९९५ (ई.स. १९३९) में पू. गुरुदेवश्री संघ सहित शत्रुंजय तीर्थ की यात्रा के लिये पधारे, वहाँ पालीताणा में जिनमंदिर के भगवान के दर्शन किये और दर्शन करते समय दोनों बहनों ने ऐसी भावना आई कि साक्षात् भगवान का तो विरह पड़ गया, और अपन जहाँ रहते हैं वहाँ प्रतिमाजी का दर्शन भी नही है, दोनों बहनों की यह भावना पू. गुरुदेव के पास पहुँचाई गई, इसलिए पू. गुरुदेव ने कहा बात सत्य है, भावना भाओ।

वि.स. १९९५ (ई.स. १९३९) पू. गुरुदेव ने राजकोट से पधारने के पहले श्री गिरनार गिरि तीर्थधाम की यात्रा का प्रोग्राम बनाया था, संघ सहित पू. गुरुदेव और पू. माताओं ने अति भक्तिपूर्वक यात्रा की थी। श्री बाल ब्रह्मचारी तीर्थंकर नेमिनाथ भगवान के तीन कल्याणक हुए। महापवित्र भूमि की यात्रा करते पू. गुरुदेव को अपूर्व भाव जाग उठे तो सहेसावन में पू. गुरुदेव को अपूर्वभाव आ जाने से साष्टांग नमस्कार किया था। यात्रा करते समय पू. बेन के रोम–रोम उछल पड़ते थे, ऐसी अपूर्व गिरनारजी की यात्रा करते समय पू. गुरुदेव सोनगढ़ पधारे, सोनगढ़ पधारे तब उसी वर्ष में श्रावण सुदी १३ के दिन श्री नानालाल भाई द्वारा श्री जिनमंदिर का पाया शिलान्यास कार्य पूर्ण हुआ और अल्प समय में ही जिनमंदिर तैयार हो गया।

Please report errors to Ramaben Parekh: WhatsApp +91 90115 91078 or email ramabenparekh45@gmail.com

Version 001: Updates at http://www.AtmaDharma.com & http://www.AtmaDharma.org

यहाँ ये तीनों प्रतिमायें तैयार ही थीं, अभी सोनगढ़ मंदिर में विराजमान हैं, उसमें श्री सीमंधरनाथ, शांतिनाथ और पद्मप्रभ ये तीनों प्रतिमाजी वहाँ तैयार थीं, उन प्रतिमाजी को लेकर हम सोनगढ़ आये, प्रतिमाजी को साथ लाते समय हमारे दिल में इतना आनंद हुआ कि हम भगवान के साथ में आये कि भगवान का मिलन हुआ इससे अंतर में अति प्रमोद हुआ।

साक्षात् तीर्थंकर देव–वीतरागी देव का विरह तो था ही, परंतु वीतराग भाव की पुष्टि के निमित्त वीतरागी प्रतिमाजी को देखकर भी अंतर में शांति हुई, प्रफुल्लता आ गई, संतोष हुआ।

पू. गुरुदेव भी प्रतिमाजी को देखर थोड़ी देर स्तब्ध हो गये, उन्हें भाव आये कि वाह! वीतराग तेरी मुद्रा वाह। पू. गुरुदेव के उद्धार निकले कि हे नाथ! तुम्हारे साक्षात् दर्शन का विरह तो पड़ा ही था। अब आपकी प्रतिमा के दर्शन के संतोष मानेंगे और आराधना करके आपके साक्षात् दर्शन पायेंगे। उसके बाद सीमंधर आदि भगवंतों का पंचकल्याणक हुआ और फागुन सुधी महा मंगल दोज के दिन श्री सीमंधर भगवान, शांतिनाथ, पद्मप्रभ, नेमिनाथ आदि भगवानों को मंदिर में विराजमान किये। १९९७ की फागुन सुदी दोज थी।

भगवान के पंचकल्याणक हो रहे थे, तब हम दोनों बहनों एवं पू. गुरुदेवश्री को ऐसे भाव आते थे कि मानों साक्षात् भगवान के कल्याणक हो रहे हों, तभी अन्य कोई आदि बोलते थे कि पधारो भगवान पधारो तब पू. गुरुदेव को ऐसे भाव आये के श्री सीमंधर मंदिर जी के दरवाजे में श्री सीमंधर भगवान पधार रहे थे, उनके सामने साष्टांग नमस्कार पूरे लोटकर किये और नेत्रों में से (आनंद) के आँसू बहते जाते तथा पाँच मिनिट तक ऐसा ही रहा था। इसप्रकार श्री सीमंधर भगवान की प्रतिमा को पधारते समय पू. गुरुदेव को भगवान के प्रति ऐसे भाव आये थे। सभी मुमुक्षु समाज के आनंद के आँसू बहे।

Please report errors to Ramaben Parekh: WhatsApp +91 90115 91078 or email ramabenparekh45@gmail.com

अमृतभरी मूर्ति रची रे, उपमा न मिली कोय,

शान्त सुधा रस झोलती रे, निरखत तृप्ति न होय।

सीमंधर जिन देखे लोचन से आज.....

मेरे सिद्ध हुए वांछित काज..... सीमंधर जिन.....

पू. बेन कहते थे कि इन वीतरागी भगवान का बहुत आदर हो रहा है और अपने वीतरागी भाव के समीप आते हैं, ऐसे भाव स्फुरित होते थे, श्री सीमंधर जिनालय में पू. गुरुदेवश्री की हाजरी में हम दोनों बहनें प्रतिदिन भक्ति कराते थे, दोनों बहनें भक्ति में उछलते थे कि मानो साक्षात् भगवान की भेंट हुई हो, ऐसे प्रभु में तल्लीन हो जाते। बहनों को देख देव–शास्त्र–गुरु की पूजा रचकर सामूहिक पूजा कराते थे। ''सन्मार्गदर्शी, बोधिदाता.....कृपा अति वरसावो।''

प्रतिष्ठा के समय अंकुरारोपण विधि ऐसी फली–फूली वह यह सूचित करती थी। जगह–जगह जिनमंदिर बने। दोनों बहनों गाँव गाँव में सूचना भेजते थे कि एक छोटा सा हॉल किराये से लेकर छोटी सी वेदी बनाकर के एक भगवान विराजमान करो और स्वाध्याय नियमित करो, फिर बाद में बड़ा मंदिर बन जायेगा। ऐसा मार्गदर्शन देने वाले और भक्ति का मार्ग स्थापनारी दोनों बहनें मंदिर का कामकाज कोई गाँव में किसी कारणवश ढील पाती तो वहाँ मंदिर किसप्रकार पूर्ण हो, उसकी व्यवस्था वगैरह बहनें करती थी।

काल आने पर वर्षा होती है, काल आने पर वृक्ष खिलते हैं, काल आने पर चन्द्रमा का उदय होता है, पशु भी समय आने पर घर आते हैं, स्वाति नक्षत्र के काल में सीप में पानी बूँद पड़ने से मोती बनता है, वैसे ही उत्तम देवगुरु के महान योग–काल में तू आया और पूज्य पदार्थ अनुभव में न आये वह अजब तमाशा है। —दृष्टि के निधान

Please report errors to Ramaben Parekh: WhatsApp +91 90115 91078 or email ramabenparekh45@gmail.com

Version 001: Updates at http://www.AtmaDharma.com & http://www.AtmaDharma.org

पूज्य गुरुदेव का परम हितकारी उपदेश

पूज्य गुरुदेव नित्य–नियम अनुसार व्याख्यान में श्री समयसार, प्रवचनसार, नियमसार, अष्टपाहुड, पंचास्तिकाय, पंचध्यायी, द्रव्यसंग्रह, मोक्षमार्गप्रकाशक, कार्तिकेयानुप्रेक्षा, पद्मनंदी पंचविशंतिका, भक्तामर स्तोत्र, परमात्मप्रकाश, छहढाला, योगसार आदि दिगंबर आचार्यों के शास्त्र पर प्रवचन करते थे। आचार्यों के हृदय के गंभीर रहस्य खोलकर बताते थे तथा सच्ची रुचि हो तब ऐसा लगता है कि आचार्य भगवंतने कितना लिखा, मोक्षमार्ग बताया है, एकदम जड़–चैतन्य भिन्न एवं एकदम भेदज्ञान की बात स्पष्ट दीपक समान बताई है। अभी इस काल में तो पू. गुरुदेव ने तीर्थंकर का मार्ग एकदम स्पष्ट दीपक के समान प्रकाशित किया है। इतनी दीपक समान स्पष्ट वाणी जिसे सुनने मिली उसका तो सद्भाग्य है। परंतु उस वाणी को जिसने सुनकर उस रूप परिणमन अनुभव किया उसका तो भव का अल्प काल आ गया, वह अल्प काल में साक्षात् मोक्षसुख को–सिद्धपद को प्राप्त कर लेगा।

पूज्य गुरुदेवश्री के साक्षात् प्रवचन सुनते ही पू. दोनों माताओं ने समयसार के जीव–अजीव, कर्ता–कर्म अधिकार के ऊपर पू. गुरुदेव के प्रवचन नोट किये थे। वे प्रवचन शुरुआत में ही छपकर बाहार आ गये हैं।

पूज्य गुरुदेव के व्याख्यान में से चैतन्य आनंद का घूटन सुनकर सुबह में प्रतिदिन मंदिर में दोनों मातायें बैठती थीं। तब ध्यान में एकदम लीन हो जाती थी। श्री जिनेन्द्र देव की ध्यानस्थ मुद्रा की छत्रछाया में चैतन्य स्वरूप में लीन हो जाते थे। घर आकर पू. बेन कहती थी कि ज्ञायक आत्मा में ही लीन रहने से सुख और शांति लगती है, ज्ञायक के अलाव अन्य विकल्पों में रंचमात्र भी सुख भासित नहीं होता, दुःख ही लगता है। उसमें सुख कहाँ से भासित हो। जितनी–जितनी ज्ञायक की लीनता बढ़ती है, त्यों–त्यों ज्ञायक की तीव्रता होती जाती है। ज्ञायक की तीव्रता ही रुचिकर लगती है। हमारा ज्ञायक गाढा होता जाता है।

Please report errors to Ramaben Parekh: WhatsApp +91 90115 91078 or email ramabenparekh45@gmail.com

Version 001: Updates at http://www.AtmaDharma.com & http://www.AtmaDharma.org

ब्रह्मचर्य आश्रम

वि.सं. २००७ (ई.स. १९५१) में कलकत्ता के सेठ श्री वच्छराजजी गंगवाल सोनगढ़ प्रथम वार आये, पू. गुरुदेव के ४ दिन के परिचय से और पूज्य वेनश्री वेन का जीवन देखकर वे इतने प्रभावित हुए कि तुरंत ही जिनमंदिर के पास विशाल जगह खरीद कर लगभग १ लाख रुपये खर्च कर भव्य आश्रम का निर्माण किया तथा 'श्री दिगंवर जैन गोगीदेवी ब्रह्मचर्य आश्रम' का उद्घाटन सेठ जी के हस्ते वि.सं. २००८ (ई.स. १९५२) के माघ सुदी पंचमी को किइया। अहा, पू. गुरुदेव के मंगल आशीर्वाद पूर्वक हुआ उद्घटन का महोत्सव अति आनंदकारी था, उस दिन श्री महावीर प्रभु की प्रतिमा जी को पूरे दिनभर आश्रम में विराजमान कर रखीं थी, पू. गुरुदेव का प्रवचन भी आश्रम में हुआ था। आज पूरे दिन और रात भक्ति–उल्लास/हर्ष का वातावरण व्याप गया था एवं पू. वेनश्री वेन की हितकारी छाया में लगभग १६ ब्रह्मचारी वहनों ने आश्रम में वास किया था। पीछे तो अनुक्रम से बढ़ते वहनों की संख्या ६० हो गई। इस प्रकार मंदिर के निकट और भगवान के पडौसी हो गये तथा आश्रम में आने के वाद दोनों का दिल एकदम स्थिर हो गया और ऐसा लगा कि अपन जव अपने स्थान पर आ गये हैं।

पू. दोनों वहनों में ब्रह्मचर्य की इतनी दृढ़ता थी कि प्रत्येक ब्रह्मचारी वहन को जीवन पर्यंत अखंड ब्रह्मचर्य कैसे सधा रहे उस संवंधी शिक्षा वारंवार देते थे तथा विहार के प्रसंगों पर मुख्यरूप से द्रव्य, क्षेत्र, काल के अनुसार वर्तन करना तथा वात्सल्यपूर्वक सभी वहनें हिलमिल कर रहना–ऐसा आदेश वारंवार देते थे। तथा ब्रह्मचारी के पंचकल्याणक हुए, उसमें विधिनायक ब्रह्मचारी भगवान नेमिनाथ थे। उन ब्रह्मचारी नेमिनाथ मुनिराज का आहारदान ब्रह्मचारी गोगीदेवी आश्रम में हुआ। उस समय पू. वेनश्री–वेन के आँगन में फिर क्या कुछ कमी हो सकती है? आहारदान पूर्ण होने के वाद पू. वेनश्री-वेन ने भक्ति की रेलमछेल मचा दी थी, इस मानस्तंभ की ऊँचाई ६३ फुट है और तभी पू. गुरुदेव का भी ६३ वाँ वर्ष चल रहा था और वे ६३ शलाका पुरुष इसकी सूचना भी बताते हैं।

Please report errors to Ramaben Parekh: WhatsApp +91 90115 91078 or email ramabenparekh45@gmail.com

Version 001: Updates at http://www.AtmaDharma.com & http://www.AtmaDharma.org

पूज्य बेनश्री-बेन की शाश्वत सिद्धिधाम की प्रथम यात्रा

पू. कृपावंत गुरुदेव के परम प्रताप से शाश्वतधाम श्री सम्मेदशिखरजी की प्रथम यात्रा करते हुए दोनों बहनों के रोम–रोम उल्लसित हो जाते थे, मानो कि सिद्ध भगवान के पवित्र धाम में आये हों और साक्षात् सिद्ध भगवान से भेंट हुई हो–ऐसा उत्साह आता था और खूब आनंद होता था। सिद्धिधाम के दर्शन करते–करते ऐसा लगता कि **मेरे चारों सिद्ध भगवान ही बिराजते हैं।** और पहाड़ ऊपर चढ़ते ही मुनिवरों की याद आती थी कि धन्यदशा धन्यदशा मुनिवरों की अपने को कब यह प्राप्त होंगी? ऐसी दोनों बहनें भावना भाते परस्पर में चर्चा करते कि अरे बेन अपन अभी भी यहीं आर्यिका बनीये और त्यागी बनकर आत्मा के चारित्र की आराधना करिये। वन से पीछे फिरना यह तो कायरता है। अपने सर्व उपाधि से मुक्त होकर आत्मसमाधि में लीन होकर संयमभाव प्राप्त करके आत्म साधना साधीये ऐसी वारंबार भावना भाते थे। अहो ऐसा सुअवसर कब आयेगा ऐसी दशा निकट भविष्य में प्राप्त होनेवाली है, इसलिए ऐसा मंथन दोनों बहने करते थे।

पूज्य गुरुदेव के हस्ताक्षर तथा हृदयोद्गार

पूज्य गुरुदेव अति ही प्रमोद से कहते–बहनों को ज्ञान का आराधन बहुत है। दोनों को धर्म प्राप्त हैं, फिर भी ज्ञान की आराधना का कितना रस है!! थोडे समय में ही दोनों का ज्ञान बढ़ जायेगा, चारित्र भी बढ़ जायेगा और अल्प काल में आत्माराधना पूरी करके मोक्ष पा लेंगे।

(वैशाख सुदी–१३, वि.सं. २०२७)

Please report errors to Ramaben Parekh: WhatsApp +91 90115 91078 or email ramabenparekh45@gmail.com

Version 001: Updates at http://www.AtmaDharma.com & http://www.AtmaDharma.org

पूज्य गुरुदेव के साथ दूसरी बार सिद्धधाम की तथा अनेक तीर्थों की यात्रा

पूज्य गुरुदेव ने हजारों यात्रियों के साथ भारत के महान तीर्थों की उत्साह और भक्तिपूर्वक यात्रा करके जैन शासन में एक अद्वितीय इतिहास रचा है। यह सम्मेदशिखर, पावापुर, राजगृही, चंपापुरी, गिरनारगिरि, सिद्धवरकूट, ऊँचे–ऊँचे अडोल योगीराज ये बाहुबली और पावनधाम पोन्नूर वगैरह..... अहा! कैसे–कैसे ये तीर्थ हैं!!! और कैसी है यह भावभरी यात्रा!! इनका स्मरण भी साधक संतो के प्रतिम और साधनाभूमियों के प्रति कैसी आनंदमयी हिलोरे जगातीं हैं। वाह रे वाह संतो! आपकी आत्मसाधना! वाह आपकी तीर्थभूमि! और धन्य इनकी यात्रा! और धन्य ये गुरुदेव के भाव!

भक्ति के भावभरे दृश्य

यात्रा में पूज्य गुरुदेव का स्वास्थ्य ठीक रहे, उसके संबंध में दोनों बहनें बहुत ध्यान रखतीं थी कि पूज्य गुरुदेव की वाणी पूरे शासन की शोभा है तथा भोजन बनाने वाली सभी ब्रह्मचारी बहनों को स्वच्छतापूर्वक और सावधानीपूर्वक भोजन बनाने की शिक्षा देती थीं।

दोनों बहनें बारंबार गाती थी कि—

समयसार आदि में से निकाला मावा

कि खिलाया प्रेम से रे लाल

श्री सद्गुरुजी की महिमा अपार के

मैं क्या कह सकती हूँ रे लाल.....

पूज्य गुरुदेव यात्रा करके पधारे, बाद में देश–परदेश में ठोर–ठोर जिनमंदिरों की प्रतिष्ठा पंचकल्याणक और वेदी प्रतिष्ठा भी कराई थी।

Please report errors to Ramaben Parekh: WhatsApp +91 90115 91078 or email ramabenparekh45@gmail.com

Version 001: Updates at http://www.AtmaDharma.com & http://www.AtmaDharma.org

पूज्य बेन शांताबेन की आबु तीर्थयात्रा में बने वैराग्य प्रसंग पर चर्चा

अहमदाबाद से सोनगढ़ पधारे तब पूछे गये प्रश्नों के उत्तर पूज्य बेन के मुखारविंद से ही उस समय जो भाव आये थे और कहे थे उनका संकलन किया है। संवत २०३२–पूज्य विज्ञानघन स्वभाव में रमणता कराने वाले बेन जब आबु में ता. २.६.१९७६ के दिन सुबह ११ बजे गिर पड़े, उस समय तथा उसके बाद चलती हुई अभूतपूर्व विचारधारा उनके श्री श्रीमुख से—

प्रश्न :—आप जब आबु में गिर पड़े थे तब आप को कैसे विचार आते थे?

उत्तर :—तब अन्य तो कुछ नहीं आये, परंतु यह विचार आया कि सोनगढ़ जाना है, गिर जाने से जो पैर चलेगा तभी जाना होगा, तब तक खबर नहीं थी कि पैर में क्या हो गया है? अहमदाबाद आकर फोटो कराई तब खबर पड़ी, अपने को देखते रहना है क्या होता है। तब तो सभी विकल्प छोड़ दिये थे कि जो होना है वही होगा। बाद में आप सभी (बालक) आये, अर्थात् मैंने कहा कि मेरे तो पैर चलेगा नहीं, उठाकर मोटर में मुझे बैठा दो। ''इस शरीर में दर्द होता होगा, उसे देखना–जानना'' तथा पीड़ा से ही ख्याल आ गया था कि हड्डी टूटी है। मैंने तो भाभी को ही यही कहा था। बाद में मोटर में बैठकर अहमदाबाद पहुँच गये, उस समय कुछ हर्ष या शोक नहीं था, ''ज्ञाता रूप रहना–वास्तव में तो ज्ञायक–स्वभाव में ही ज्ञातापने रहा है, क्योंकि वास्तविकपने तो ज्ञायक ही वेदन में आ रहा था। व्यवहार से ऐसा होता कहा जाता कि इस पीड़ा की वेदना को मैं जानता हूँ।

प्रश्न :—आबू में जब आप गिर पड़ने से सभी घबरा गये थे तब क्या विचार आते थे?

उत्तर :—सभी को घबराया हुआ देखकर ऐसा हुआ कि कैसे जायेंगे? कोई भोजन करने भी नहीं बैठते, इसलिए कहा कि सभी भोजन कर लो, इस में कुछ होना नहीं है, जो होना सो होगा। वो लोग लीलाबेन को फोन

Please report errors to Ramaben Parekh: WhatsApp +91 90115 91078 or email ramabenparekh45@gmail.com

Version 001: Updates at http://www.AtmaDharma.com & http://www.AtmaDharma.org

करने जाते थे तो कहा कि मत जाओ, क्योंकि अभी छुट्टियाँ चल रही हैं कुछ होगा नहीं, सभी आते थे उन सबको जवाब दिय और कहा कि सुबह छोकराओं से पूछा था कि आवें? तो कहा था कि तीन बजे आना, इसके पहले कोई नहीं आया, पंकज, प्रदीप वगैरह तुम्हारी बहुत राह देख रहे होंगे, परंतु टाईम के पहले कहाँ से आवें, चेतन साथ में है और प्रवीणा अहमदाबाद में है।

इतना विघ्न नहीं आयेगा, अहमदाबाद गये तो पीछे तो सीधे तुरंत हॉस्पिटल में ही ले गये। अपने को देखते ही रहना, स्व–पर प्रकाशक ज्ञान ने काम कर लिया है।

प्रश्न :—बेन! ऑपरेशन के दिन में तो सुहव से आप का घोलन दिखता था, तो उस समय आप के क्या भाव चलते थे?

उत्तर :—ऑपरेशन के दिन तो सुबह से ही दो–तीन बार वह गाथा याद आती थी कि—

छेदाव वा भेदाव–कोई लई जाय नष्ट बनो भले।
या कोई अन्य रीते जाव आ शरीर मात्र मारुं नथी।।

इस तरह गौणरूप से ये विचार चलते ही थे। मुख्य रूप से तो ज्ञायक ही वेदन में आता था। सुबह में ऐसा हुआ कि आज इसका ऑपरेशन है, कमजोरी बहुत थी, देहांत भी कदाचित हो जाय, कमजोरी के कारण इसका जो होना है वह होगा। अपने को अपना कार्य कर लेना। ज्ञाता का तीव्र पुरुषार्थ जागृत ही था अर्थात् अपने तो ज्ञाता की उग्रता में ही रहते हैं। फिर शरीर का जो होना होगा वह होगा, क्योंकि ऐसा होता था कि देह भी छुट जाय, परंतु उसमें हर्ष या शोक नहीं था। अपने को अपने पुरुषार्थ में कमी नहीं रखना है। किसी के ऊपर ध्यान ही नहीं देना। अपने को दूसरे कोई विकल्प ही नहीं आते। लक्ष ही तो आत्मा का करना ऐसी दृढ़ता थी। पहले से ही तैयारी पूरी–पूरी थी। एकदम अपने को तो अपनी स्थिरता रखनी है। उपयोग को स्वभाव में स्थिर करके अंत तक अति स्थिरता रखनी है,

Please report errors to Ramaben Parekh: WhatsApp +91 90115 91078 or email ramabenparekh45@gmail.com

किसी के ऊपर दृष्टि ही नहीं की, कौन कहाँ खड़ा है उसकी कुछ खबर नहीं थी। इस शरीर का ऑपरेशन होना था तो उसका कोई खेद नहीं था, भय भी नहीं था, चिंता भी नहीं थी, उस संबंधी कोई संकल्प–विकल्प भी नहीं था।

ऐसी पूज्य बेन के आत्मा की मस्ती देखकर श्री बाबूभाई गोपालदासभाई का लड़का रोमेशभाई ने कहा कि वास्तविक सम्यग्दृष्टि की दशा देखना हो तो तू अभी ही पूज्य बेन के पास जा। पूज्य बेन ने कहा कि जिसकी स्वभाव के साथ एक बार एकाकारपना हो गया है, उसे शरीर के साथ एकत्वपना कैसे होगा? शरीर टिके कि न टिके, परंतु अपने को तो ज्ञान और ज्ञायक की परिणति में एकाकार होकर उसमें लीन हो गये थे। सारी जिंदगी जो पुरुषार्थ करके आराधना की थी वह मरण के समय काम न आवे जो वह क्या काम की? अर्थात् अपने तो ऐसा ही समझकर समाधि की पूरी पूरी तैयारी कर रखी थी, उस समय ऐसी शांति और समाधि थी कि रंचमात्र भी आकुलता या पीड़ा का वेदन नहीं था।

ऑपरेशन के समय परिणति से पूछा था कि आज इस शरीर का ऑपरेशन है तो उसका तुझे खेद/दुःख है? भय है? चिंता है? तो परिणति ने जवाब दिया कि मुझे दुःख नहीं, चिंता नहीं, भय नहीं एवं किसी की परवाह भी नहीं। शरीर से भिन्न मुझे मेरा स्वभाव ही वेदन में आ रहा है। अनंतबार ऐसे शरीर धारण किये और छोड़े, अब जो एक–दो भव हैं, उसमें अपनी आराधना पूरी करके अशरीरी दशा को पाऊँगी। मात्र शरीर तरफ देखते ही ऐसा वेदन हुआ कि यह ठीक है, उसका वह स्वभाव है तो होगा? इसमें क्या?

आंशिक सिद्ध समान ही अनुभव था अर्थात् किंचित सिद्ध समान ही दशा थी। उसमें यह शरीर है ऐसा लगता ही नहीं था, अब तो उनकी/सिद्धों की जात में मिल गये हैं। आत्मा तो इतना अच्छा (सरस) आनंदस्वरूप वेदन में आता था। आनंद आता था।

मुनिदशा की भरपूर भावना भाते थे और ऐसा होता था कि मुनिराज

Please report errors to Ramaben Parekh: WhatsApp +91 90115 91078 or email ramabenparekh45@gmail.com

जब प्रायोपगमन संन्यास करते तब इच्छापूर्वक लेट जाते तथा हाथ–पैर भी नहीं हिलाते, उन जैसा अपने को भी मुनि बनना है, इसलिए वैसी ही तैयारी भी अर्थात् वैसे ही विचार आते थे।

प्रश्न :—ऑपरेशन के दिन जब रात में गला सूख जाता था तब कैसे विचार आते थे?

उत्तर :—ऑपरेशन के दो दिन पहले भी पानी कम पिलाया था, उससे अधिक गला सूख गया था, इसलिए तो पूछा कि कितने बजे हैं? तुमने कहा कि तीन बजे हैं, मुझे तीन बजे पानी नहीं पीना, साडे छह बजेंगे तब पीऊँगी। इतने दिन निकल गये तो तीन घंटे भी निकल जायेंगे। तब हमने आप को कहा कि बेन! आज ऑपरेशन हुआ है, इसलिए गला अधिक सूखता है तो कृपा करके आज के दिन पानी पी लो।

पूज्य बेन ने जवाब दिया कि–मैंने तो देव, शास्त्र, गुरु की पास से यह प्रतिज्ञा ली है और प्रतिज्ञा प्राण निकलते समय तक अखंड पालूँगी। मैं रात्रि में बिलकुल पानी पीने वाली नहीं। मैंने तो भगवान के सामने प्रतिज्ञा ली है। दिन ऊगने के पहले पानी लेना ही नहीं। प्राण छूटे तो भी प्रतिज्ञा अखंड ही रहेगी और रखना है। प्रतिज्ञा हो तो उसे अखंड रूप से रखना ही चाहिए। इसमें क्या? शरीर में शोषण पडे तो उससे क्या हो जाने वाला है, और गला सूखे तो भले सूखे।

ज्ञायकस्वभाव में आत्मा में पानी की प्यास कहाँ दिखती है? आत्मा के अमृत रस के वेदन में पानी की प्यास अखरती नहीं है, वैसे भी तीन दिन से नहीं पिया, उसकी अपेक्षा तीन घंटे तो सहज ही निकल जायेंगे, उसमें क्या तकलीफ है? आत्मा के ज्ञानामृत पर दृष्टि रखकर पड़े हैं। इसमें तीन घंटे क्या, तीन दिन चले गये तो भी कोई विघ्न/तकलीफ नहीं हुई और जो होना होगा भले हो, परंतु मैंने जो प्रतिज्ञा ली है, उसे तो पालूँगी ही।

जीभ सूख गई थी? आत्मा तो कुछ सूखता नहीं है न? आत्मा तो ज्ञान से भरपूर भरा ही है, उससे तृप्त थे, आत्मा को तो प्यास नहीं लगती।

Please report errors to Ramaben Parekh: WhatsApp +91 90115 91078 or email ramabenparekh45@gmail.com

आत्मा के समीप जाकर देखने पर तृषा कहीं दिखी ही नहीं। अपने स्वरूप सन्मुख नजर करे तो दृढ़ता आती ही है।

अहमदावाद ता. १६-६-७६ को हॉस्पिटल में से विदाई लेते समय अहमदाबाद के मुमुक्षु मंडल की तरफ से विनंती करने आते थे कि आपकी तबियत अब अच्छी है और यहाँ से जा रहे हो तो कुछ दो शब्द बोलिये। तब लेटे–लेटे पूज्य बेन के द्वारा कहे गये अमृत वचन—

सर्वोत्कृष्ट पद अरहंत और सिद्ध हैं। अरहंत और सिद्धों का स्वरूप परमकृपावंत श्री सद्गुरुदेव ने बताया है। अरहंत का स्वरूप कैसा होता है? अरहंत भगवान के चौतीस अतिशय होते हैं। समवशरण की रचना होती है, वह अरहंत का स्वरूप नहीं है। परंतु अरहंत परमात्मा का चैतन्य आत्मा पूर्णता को प्राप्त है, यह अरहंत के स्वरूप में आता है। सिद्ध का स्वरूप तो अशरीरी दशा है। पूर्ण आनंद सिद्ध ने प्राप्त कर लिया है। ऐसे अरहंत और सिद्ध के स्वरूप को जो मानता है, वह अपने आत्मा को जानता है।

प्रवचनसार की ८० वीं गाथा—

जो जाणदि अरहंतं दव्वत्तगुणत्तपज्जयत्तेहिं।
सो जाणदि अप्पाणं मोहो खलु जादि तस्सं लयं॥

जो अरहंत के द्रव्य, गुण, पर्याय को जानता है वह अपनी आत्मा के द्रव्य, गुण, पर्याय को जानता है। 'णमो अरिहंताणं' ऐसा सभी श्रावक जैन नामधारी प्रतिदिन बोलते हैं, परंतु अरहंत का स्वरूप समझे तो बेडा पार हो जाय। अरहंत का स्वरूप समझेगा तो वह अपने आत्मस्वरूप को समझेगा ही। सद्गुरुदेव ने जो अरहंत का, सिद्धों का, पंच परमेष्ठी का तथा शुद्धात्मा का स्वरूप बताया है। इस भारत भूमि पर यदि कोई आत्मा का स्वरूप बताने वाले हैं तो वे एक महापुरुष पूज्य सद्गुरुदेव ही है। सद्गुरुदेव का जितना उपकार माने उतना कम है। आत्मा का कल्याण करना हो, जन्म–मरण का अंत करना हो तो वह आत्मस्वरूप समझे बिना नहीं होता। ऐसा अद्भुत स्वरूप बताने वाले हों तो वे भी सद्गुरुदेव कानजी स्वामी ही हैं। उनका ही परमप्रताप

Please report errors to Ramaben Parekh: WhatsApp +91 90115 91078 or email ramabenparekh45@gmail.com

Version 001: Updates at http://www.AtmaDharma.com & http://www.AtmaDharma.org

वर्तता है, इस भारतभूमि में उनका महा उपकार वर्त रहा है।

आचार्य भगवान कुन्दकुन्ददेव भी कहते हैं—

अबद्ध स्पृष्ट, अनन्य ने जे नियत देखे आत्म ने।
अविशेष अणसंयुक्त तेने शुद्ध नय तुं जान ले॥१४॥ स.गा.

अवद्ध अर्थात् आत्मा वंधा नहीं है, कोई भी द्रव्य–भाव, नोकर्म से वंधा नहीं है। आत्मा अवद्ध है। लोक को वंधा हुआ लगता है, वंध ऊपर जिसकी दृष्टि है उसे वंधा हुआ लगता है। परंतु आत्मा तो छूटा ही है इस पर जिसकी दृष्टि है उसे आत्मा छूटा हुआ ही दिखता है। भगवान कुंदकुंद आचार्यदेव ने बहुत अच्छा स्पष्टीकरण किया है, समझाया है कि आत्मा किसी पदार्थ से वंधा नहीं है, अवद्ध ही है।

अस्पष्ट है–आत्मा तो चैतन्य स्वयं, स्वयं के स्वरूप से स्पर्शित है। आत्मा पर पदार्थ से स्पर्शित हो तो कभी भी उससे छूट सकता ही नहीं, इसलिए आत्मा सदा के लिये छूटा का छूटा ही है। ज्ञानी समकित धर्मात्मा स्वयं को अवद्धस्पृष्ट ही अनुभवते हैं। आत्मा का अनुभव कर सिद्धदशा को प्राप्त होते हैं।

अनन्य अर्थात् अन्यरूप आतम हुआ नहीं, चार गति में सभी भव इस जीव ने धारण किये, परंतु कभी एक परमाणु रूप भी आत्मा नहीं हुआ। आत्मा नित्य है, क्योंकि आत्मा कभी भी अनित्यस्वरूप हुआ नहीं, आत्मा बदलता नहीं, आत्मा तीनों काल शाश्वत ही है। ऐसा ध्रुव स्वयं अपने सामने मौजूद है। आत्मसन्मुख दृष्टि करने से आत्मा सुखरूप जानने में आता है। जैसे कामधेनु गाय में से जब चाहिए तब लोग दूध निकाल लेते हैं, वैसे ही आत्मा में सुख भरा है, उसमें जब उपयोग लगाओ तब स्वयं का सुख मिल जाता है। शरीर में कैसी भी व्याधि क्यों न हो, उपाधि हो, बाहर में प्रतिकूल संयोग हो तो भी इस चैतन्य आत्मा के आनंद को रोकने में समर्थ नहीं। आत्मा का सुख, आनंद और शांति अपने सन्मुख दृष्टि करने से मिलता है। ऐसा अद्भुत स्वरूप चैतन्य पदार्थ है, ऐसे स्वरूप को दिखाने वाले श्री सद्गुरुदेव ही है। गुरुदेव

Please report errors to Ramaben Parekh: WhatsApp +91 90115 91078 or email ramabenparekh45@gmail.com

Version 001: Updates at http://www.AtmaDharma.com & http://www.AtmaDharma.org

का परम परम उपकार वर्त रहा है।

असंयुक्त अर्थात् आत्मा सर्व संयोगों से रहित ही है। संयोगदृष्टि वाले को संयोग ही दिखते हैं और असंयोगी दृष्टि वाले को असंयोगी ही दिखता है। आत्मा हमेशा साक्षात्, असंयोगी, आनंदस्वरूप पूर्ण सुख से भरा चैतन्य पदार्थ स्वयं अपने समक्ष विराज रहा है।

'निज नैनों की आलस से निरखा नहीं हरि'

परंतु आलस छोड़ दे तो इसमें ऐसा कोई प्रयत्न नहीं है, जो न हो सके। स्वयं चैतन्य स्वरूप ही है। साक्षात् विद्यमान चैतन्यज्योति, चैतन्यसत्तारूप साक्षात् विराजमान है, उसे जब समझना चाहे तब हाजरा–हजूर देव स्वयं विराजमन है। इस देहमंदिर में/देहालय में यह चैतन्यदेव स्वयं प्रत्यक्ष ही विराज रहा है। उस देव में अनंत सुख और अनंत आनंद भरा है, वह सभी प्रगट करने योग्य है, ऐसा श्री गुरुदेव का परम–परम उपदेश है।

शांति और समताधारी पू. बेन को गाँव के लोग हॉस्पिटल में देखने आते थे, एक बार स्थानकवासी संप्रदाय के छोटेलालजी साधु पू. बेन को मिलने आये थे तो दोनों हाथ जोड़कर तीन बार मस्तक झुकाकर नमस्कार करके दर्शन किये। ऐसा दृश्य देखकर सभी स्तब्ध हो गये। जब कोई आकर पूछते कि बेन! पीड़ा कैसी है? तब वे कहती थी कि मुझे तो मेरा ज्ञायक स्वभाव ही वेदन में आ रहा है, शरीर की पीड़ा वेदन में नहीं आती। वे कहती थीं कि समता तो हमारी कुल देवी है, हमारा कुल मंदिर ही समता है। यह कैसी है समता कि उसे देखने स्थानकवासी और श्वेतांबर के मुखिया आते और शरीर से भिन्न पड़ा हुआ आत्मा कैसा है, यह प्रत्यक्ष देखकर आश्चर्यचकित हो जाते।

उस समय अहमदाबाद का मुमुक्षु मंडल सदा हाजिर रहते थे एवं पू. बेन की तन, मन, धन से सेवा की थी। इस गाँव में कोई कुटुम्बीजन नहीं थे, परंतु सच्चा रे 'साथीदार/संबंधी' साधर्मीओं था।'

Please report errors to Ramaben Parekh: WhatsApp +91 90115 91078 or email ramabenparekh45@gmail.com

वास्तव में देखा जाये तो ऐसे ज्ञानिओं की सेवा के लाभ से कौन चूके? ऐसा लाभ मिलना वह भी महाभाग्य को मिलता है तथा जिसे इस संसार के जन्म–मरण शरमजनक लगते हैं, वो ही इनके समीप में रहकर निज हित साध लेते हैं। यह तो अनंत सुख प्राप्त करने का और अनंत दुःख नाश करने का समय आया है। उसके लिए ध्येय निश्चित करके उस दिशा तरफ सबको हिलमिलकर उस पावन पथ पर गमन करना है। इस भरतभूमि पर ज्ञानिओं की बलहारी है।

ऐसा अहमदाबाद में अंतिम दिन ७ मिनट अमृत का धोध बहाकर सोनगढ़ आने को प्रयाण किया, रास्ते में खाडिया जिनमंदिर में विराजमान आदिनाथ भगवान के दर्शन किये, फिर ट्रेन के डिव्वे से निकलकर १७-६-७६ से सुबह ५.४५ बजे भगवंतों के धाम सोनगढ़ में पधारे।

पू. बेन सोनगढ़ पधारते तब पू. गुरुदेव के पू. बेन श्री के दर्शन करते तथा वाणी सुनते ही उसके मुखारविंद से निकले उद्‌गार।

प्रश्न :—जब आप सोनगढ़ पधारे और पू. गुरुदेव के दर्शन हुए तब आप को क्या भाव आते थे?

उत्तर :—पू. गुरुदेवश्री को देखकर तो आनंद होता था और दर्शन करते समय तो दर्शन ही करते होंगे।

प्रश्न :—वह आनंद कैसा था?

उत्तर :—वह आनंद प्रशस्त ही होगा न! कहीं स्वाभाविक आनंद नहीं था। परंतु ऐसा होता था कि हे नाथ! आप के प्रताप से सोनगढ़ तो पहुँच गये, गुरुदेव के दर्शन से हर्ष हुआ, आनंद आता! हर्ष से आँ भी आ जाते, नहीं तो ऐसा लगता था कि अपने को पू. गुरुदेव के और बेनश्री के विरह पड़ गया। जब तो इस धाम में पहुँच गये, शरीर का जो होना होगा वो होगा, अहमदाबाद में कहाँ दूर–दूर में पड़े थे, आज २५–२६ दिन में गुरुदेवश्री के दर्शन हुए उस समय तो आनंद–आनंद होता था। पैर का दर्द है ऐसा कुछ लगता ही नहीं था।

Please report errors to Ramaben Parekh: WhatsApp +91 90115 91078 or email ramabenparekh45@gmail.com

Version 001: Updates at http://www.AtmaDharma.com & http://www.AtmaDharma.org

प्रश्न :—यहाँ आने के बाद पहले एक–दो दिन आप सबको क्या कहते थे?

उत्तर :—शरीर है वहाँ तक यह सब होगा, जिसने शरीर धारण किया ही नहीं उसे क्या? तथा अपने को भी अशरीरी दशा धारण करना है। शरीर है तब तक ये सब उपाधियाँ आयेंगी। अशरीरी दशा में कहाँ कोई उपाधि है! अपन अशरीरी दशा के लिये आराधना कर रहे हैं। अब शरीर में भले जो कुछ आधि–व्याधि होनी हो सो होगी। अपन तो उसे देखते रहे।

प्रश्न :—बेन! आप तब नाड़ी को क्यों देखते थे?

उत्तर :—नाड़ी तो इसलिए देखते थे कि शरीर की क्या स्थिति है ऐसा जानने के लिये। नाड़ी बराबर चल रही है या धीरे चल रही है। कमजोरी बहुत लगती थी, अभी शरीर की क्या स्थिति है उसे जान लेना इसलिए, उस समय सावधानी तो थी ही, क्योंकि **आत्मा की नाड़ी तो ज्ञान में जानन में आती थी। ज्ञान में स्वयं को अपनी नाड़ी जानने में, वेदन में आवे।**

प्रश्न :—पहला प्रवचन जब सुनने को मिला तब बेन आप को क्या होता था?

उत्तर :—तब आनंद आता था कि यह अच्छा हुआ कि गुरुदेव के प्रवचन घर बैठे–बैठे सुनने मिलेंगे, नहीं तो निरंतर विरह जैसा लगा रहा था।

पू. बेन को प्रवचन सुनने मिलते हैं, यह सुनकर पू. गुरुदेव के हृदयोद्‌गार।

पू. गुरुदेव पधारे.....

यह बहुत अच्छा हुआ, वहाँ तो पड़े तो पड़े ही थे, परंतु दो–दो माह बिस्तर में रहे। यहाँ आ सकते नहीं, परंतु यहाँ बैठे–बैठे सुन सकते हैं, वहाँ से बिजली का तार बाहर है। तब रामजी बापूजी ने कहा कि साहब! आचार्यों ने बिजली की कोई शोध–खोज नहीं की।

तब पू. गुरुदेव ने कहा कि आचार्यो के समान तो किसीने शोध नहीं करी, कि बिना सुने, बिना पढ़े स्वयं ने अपनी त्रिकाली वस्तु अनुभव में आवे

Please report errors to Ramaben Parekh: WhatsApp +91 90115 91078 or email ramabenparekh45@gmail.com

Version 001: Updates at http://www.AtmaDharma.com & http://www.AtmaDharma.org

ऐसी शोध की है। इसप्रकार पू. धर्म–माता ने भी अति ही प्रमोद व्यक्त किया था।

पू. गुरुदेव ने पू. बेन से पूछा कि–कैसा है? बेनने कहा–ठीक है, बाद में कहा कि गुरुदेव प्रवचन में बहुत अच्छी बातें आती हैं?

पू. गुरुदेवने कहा—बराबर सुनने में आता है? बेन ने कहा–हाँ जी बराबर अक्षर–अक्षर सुनाता है। गुरुदेव आप तो इतने आत्मरस में मग्न होकर बांचते हो। तब गुरुदेव को प्रमोद हुआ कि वाह रे वाह! बेन कहते हैं कि बहुत रस आता है। बहुत ही अच्छा आता है मानो कृतार्थ हो गये ऐसा लगता है। गुरुदेव ने पुनः पूछा बराबर सुनाता है।

पू. गुरुदेव ने कहा–कल आना था, परंतु थोड़ी बरसात आ गई और लडके आ गये तो भूल गये। पू. बेन ने कहा–बहुत अच्छे प्रवचन आते हैं। इतना रस पड़ता है कि आप कितनी अच्छी तरह से वांचते हो। अन्दर से गुरुदेव कहते हैं, ये सुविधा अच्छी हो गई। बेन कहते हैं—बहुत आनंद होता है।

पधारना! साहेब!! फिर पधारना!!!

फिर १० दिन बाद पधारे तब

पूज्य गुरुदेव पधारो, तब पधारो साहेब पधारो, करुणासागर पधारो। पू. गुरुदेव ने पूछा कि–कैसा है? दर्द कुछ कम हुआ? १९ ता. को प्लास्टर खोलना। पू. बेन ने कहा–कर्त्ताकर्म अधिकार में तो आप हृदय रंग बहाते हो, बहुत ही सरस व्याख्यान आते हैं। पधारना, साहेब पधारना।

करुणासागर श्री सद्गुरुदेवव की जय हो।

आनंददाता श्री सद्गुरुदेव की जय हो।

प्रश्न :—आज से चार–पाँच दिन पहले पू. गुरुदेव के प्रवचन में आया था कि आत्मा हेय है तो ऐसा कहने का क्या तात्पर्य है?

उत्तर :—अभेदस्वरूप आत्मा है उसके ऊपर जिसकी दृष्टि है और वीतराग परमरस रूप समाधि में लीन हैं, उन्हें आत्मा उपादेय है और जिसकी

Please report errors to Ramaben Parekh: WhatsApp +91 90115 91078 or email ramabenparekh45@gmail.com

पर्याय ऊपर दृष्टि है, उसे आत्मा हेय है। जिसकी दृष्टि में आत्मा ही सन्मुखस्वरूप से विराज रहा है उसे आत्मा उपादेय है और जिसकी दृष्टि पर्याय और शरीर सन्मुख है उसे आत्मा हेय है।

मोह अरि पर विजय पाकर, आतम ज्योति जगाऊँ मैं

यह बात जब भक्ति में आती है तब मुझे बहुत रंग चढ़ता है, बहुत मजा आती है कि मोहरूपी शत्रु ऊपर आत्मज्योति/ज्ञानज्योति द्वारा विजय प्राप्त करूँ और विजय ध्वजा फहराऊँ। सभी को सदा यही पुरुषार्थ करने का है कि शरीर में कुछ भी हो पीड़ा हो, परंतु अपने को अपनी आत्मा की जागृति चूकना नहीं तथा कभी भी हो ऐसा ही है। नरक में नारकी इतने दुःखों की पीड़ा के बीच में भी उसे सम्यग्दर्शन हो जाता है। अंतिम समय में भी पुरुषार्थ जागृत हो तो भी स्वयं का अनुभव कर लेना है, वस्तु कोई अपने से भिन्न नहीं है।

प्रश्न :—व्यवहार ऐसा कहता है कि शरीर और आत्मा एक ही है और निश्चय कहता है कि शरीर और आत्मा भिन्न है तो ऐसा व्यवहार निश्चय का प्रतिपादक कैसे है?

उत्तर :—ऐसा व्यवहार तीन काल में भी निश्चय का प्रतिपादक नहीं है। आत्मा ज्ञायक शरीरी अभेद वस्तु है। ज्ञानस्वरूप–दर्शनस्वरूप–चारित्रस्वरूप आत्मा है, ऐसा भेद करना उसका नम व्यवहार है और ये व्यवहार–निश्चयका प्रतिपादक है, जो व्यवहार निश्चय के अनुकूल हो वह व्यवहार है, जो प्रतिकूल हो वह नहीं।

प्रश्न :—पर्याय आत्मा को जाहिर किसप्रकार होती है?

उत्तर :—पर्याय का भी महान सामर्थ्य है, जिसप्रकार अनंत आकाश में एक नक्षत्र उसी तरह केवलज्ञान की पर्याय सम्पूर्ण लोकालोक एक नक्षत्र समान है; इतनी शक्ति तो इस पर्याय की है। वह स्वयं का जैसा स्वभाव है, वैसा अनुभवता है। भले पूरा द्रव्य पर्याय में आता नहीं, परंतु उसका अनुभव यथार्थ ही होता है। जैसा सिद्ध भगवान अनुभव करते हैं वैसा ही आंशिक अनुभव समकिती भी करता है।

Please report errors to Ramaben Parekh: WhatsApp +91 90115 91078 or email ramabenparekh45@gmail.com

Version 001: Updates at http://www.AtmaDharma.com & http://www.AtmaDharma.org

प्रश्न :—दुःख का कारण आत्मा नहीं और दुःख का कार्य भी आत्मा नहीं तो फिर समकित का कार्य–कारण भी आत्मा नहीं न?

उत्तर :—'ज्ञानी जैसा कहते हैं, वैसा समझना।

ज्ञानी जो कहते हैं वह सत्य ही कहते हैं, उनकी अपेक्षा समझना चाहिए। द्रव्य और पर्याय दोनों सत् हैं, सत् अहेतुक है, इसलिए वह सत्–पर्यायका कारण भी आत्मा नहीं तथा दूसरी अपेक्षा से कहें तो कारण आत्मा ही है। क्योंकि आनंद आता है वह स्वयं का ही है। आत्मा ही उसका कारण–कार्य है।

प्रश्न :—कभी ऐसा कहते हो और कभी ऐसा कहते हो तो उसका कारण क्या?

उत्तर :—वस्तु का स्वरूप ही अनेकांत रूप है अर्थात् जिस समय जैसा कहे वैसा समझना चाहिए। ज्ञानीओं की ही सर्व अपेक्षायें यथार्थ होती है।

प्रश्न :—कथंचित व्यवहार सत और कथंचित निश्चय सत ऐसा अनेकांत हुआ न?

उत्तर :—न, ऐसा अनेकांत है ही नहीं, निश्चय सर्वथा सत है सत्य है और व्यवहार किसी अपेक्षा से, उसकी मौजूदगी होने से सत है।

इसप्रकार शरीर में अति–अति भयंकर व्याधियाँ आई थी, फिर भी चेतन देव के प्रताप से ही शांति से समय निकल गया।

प्रश्न :—सम्यग्दर्शन प्राप्त करने के पहले बहुत पुरुषार्थ किया होगा, तो वह पुरुषार्थ किस प्रकार का था?

उत्तर :—पुरुषार्थ तो बहुत किया, शांति से नींद भी नहीं ली। नींद आती ही नहीं थी। नींद आवे तो ऊठकर बैठ जाते थे। 'मेरा ज्ञायक' मेरा ज्ञायक ऐसा होता था, परंतु यह दशा जब आई तब एकदम सब भिन्न भिन्न प्रकार का हो गया (अरहंत भगवान का स्वरूप पहले बोलते थे पर वह स्वरूप आज आ जाना–पहले मात्र बोलने जितना ही था, आज उनका स्वरूप जाना णमो सिद्धाणं बोलते थे पर सिद्ध भगवंतो का स्वरूप आज ही जाना। मोक्षमार्ग

Please report errors to Ramaben Parekh: WhatsApp +91 90115 91078 or email ramabenparekh45@gmail.com

Version 001: Updates at http://www.AtmaDharma.com & http://www.AtmaDharma.org

का दरवाजा बंद था वह आज खुल गया और रास्ता सीधा हो गया, पूरी दिशा ही पलट गयी। अंधकार में से उलाजा हुआ। लाईट चली जाय और फिर आती है तब कैसा लगता है, यह तो कुछ दिखता नहीं, फिर भी अन्दर में जाज्वल्यमान ज्योति प्रकाशित है।

बहुत मुमुक्षु लोग प्रश्न पूछते हैं कि चैतन्य के स्वरूप की खबर पड़ती है या नहीं? भाई खबर न पड़े!! यह जागती ज्योत की पूरी दशा ही पलट जाती है तो खबर न पड़े ऐसा कैसा बनेगा। सच्ची बात तो यह है कि स्वयं का आत्मा जानने में आने पर ही सभी को आत्माएँ कैसी परिणमती हैं, यह जानने में आता है। एक को जानते ही सब जानने में आ जाता है।

पू. गुरुदेव का आत्मा भी किस प्रकार से परिणमता है, किस तरह से विद्यमान है वह आज जानने में आता है।

जैसे कोई रास्ते पर चल रहा हो और सड़क न मिले तो कैसी घबराहट होती है। उसमें से सड़क मिल जाय तो कितना आनंद होता है। वह मोक्षमार्ग की सड़क मिल गई, हाथ में डोर आ गई फिर फिकर नहीं।

प्रश्न :—पुरुषार्थ जागृत कराने के लिये क्या करना?

उत्तर :—लगन लगाना, भगवान के दर्शन का समय निकालते हो। स्वाध्याय का समय निकालते हो, उसी तरह मंथन का समय भी निकालना चाहिए। पंच परमेष्ठी भगवान को नमस्कार हो।

आत्मा ज्ञान का अवतार है, ज्ञानपिंड है, समता–स्वरूप है, आत्मा आनंद स्वरूप इत्यादि अनंत गुण स्वरूप है, आत्मा स्वयं पर से निरपेक्ष स्वरूप है। पर की अपेक्षा तो आत्मा को कलंकरूप है। स्वयं अपने गुणों से भरपूर है तब फिर पर की अपेक्षा इसमें कहाँ है? ऐसे निरपेक्ष स्वरूप को निहारते ही शांति, समता, आनंद उछलता है।

Please report errors to Ramaben Parekh: WhatsApp +91 90115 91078 or email ramabenparekh45@gmail.com

Version 001: Updates at http://www.AtmaDharma.com & http://www.AtmaDharma.org

पूज्य बेन के द्वारा पूछे प्रश्न और उनका उत्तर

प्रश्न :—उपयोग को स्थिर करने के लिये क्या करना?

उत्तर :—उपयोग को स्थिर रखने के लिये बारंबार उसका अभ्यास करना कि यह मैं जाननेवाला तत्त्व हूँ, यह सब जानने में आ रहा है वह मैं नहीं, उपयोग बंदर जैसा चंचल है, परंतु बारंबार अभ्यास करने से आदत पड़ जायेगी, बारंबार उसे उलाहना देना कि तू किसलिये बाहर भटकता है, फिर सहज हो जायेगा, फिर धीरे–धीरे ज्ञायक तरफ पहुँचेगा। सविकल्प दशा में राग से भिन्न आत्मा जानने में आया कि मैं आत्मा हूँ। ''आज से ही मोक्ष का दरवाजा खुल गया।''

प्रवचनसार ८० वीं गाथा में भी यही आता है, उसी तरह समयसार में आचार्य देव कहते हैं—ऊपर–ऊपर तैरता है और वैसा ही तैर रहा है, श्री अरहंतदेव, श्री सिद्ध भगवान के समान आत्मा है वैसा अंश प्रगट हुआ है। वो पूर्ण दशा को प्राप्त हो गयें हैं, उनको समान ही अंश प्रगट हुआ। उसने अपने आत्मा को जाना तब ही भगवान के आत्मा को पहचाना।

प्रश्न :—सविकल्प दशा में और निर्विकल्प दशा में आनंद का क्या अन्तर है?

उत्तर :—बहुत फेर/अन्तर है। निर्विकल्पदशा में आनंद की बहुत ही वृद्धि होती है। निर्विकल्प दशा में एकदम स्पष्ट और अभेद दृष्टि से वृद्धि होती है, उसकी जाति में कोई अंतर नहीं। अभेद परिणति की अति ही वृद्धि होती है।

सविकल्प दशा में आनंद कम आता है, परंतु निर्णय पक्का हुआ, मोक्षमार्ग देखा, अपना सुख और शांति का घर देख लिया।

निर्विकल्पदशा में अति ही आनंद हुआ एवं अपने स्वरूप रूपी घर में प्रवेश हुआ तब। अभेद एक चैतन्य रस का ही आनंद आता है।

सविकल्प दशा में शुरुवात में निर्विकल्प दशा के लिये बहुत पुरुषार्थ करना पड़ता है, बाद में सहज हो जाता है, अब गाढ़ हो गया है। ऐसे सुन्दर आत्मा के पास विकल्प आते हैं तो बोध जैसे लगते हैं।

Please report errors to Ramaben Parekh: WhatsApp +91 90115 91078 or email ramabenparekh45@gmail.com

Version 001: Updates at http://www.AtmaDharma.com & http://www.AtmaDharma.org

शास्त्र अभ्यास से गहन और कठिन शास्त्र भी सरल और सुगम लगते हैं, उसीप्रकार ध्यान के निरंतर अभ्यास से ध्यान प्रथम थोड़ा अस्थिर होता है, परंतु तुरंत स्थिर होते ही उसके चमत्कार प्रगट होते हैं, इसलिए शिथिल या हतोत्साहित नहीं होना, श्रद्धा सहित वृद्धि करनी।

जैसे सिद्ध भगवान सबको जानते–देखते हैं, फिर राग–द्वेष नहीं होता उसी तरह यह आत्मा भी सिद्धस्वरूप ही है, जानना तेरा स्वभाव है, स्वभाव में राग–द्वेष का अभाव ही है।

प्रतिकूल संयोगो में अकंप ज्ञानी

संसार में जीवों को सदा अनुकूल प्रसंगों की प्राप्ति नहीं होती, उत्तम मनुष्य भव में भी अनेक प्रकार के दुःख भरे हैं। पूर्व कर्म के उदय के अनुसार कभी जीव को साता का उदय मुख्यरूप से होता है और कभी असाता का उदय भी मुख्यरू से होता है, सदा एक स्थिति नहीं होती, धर्मी जीवों को भी अनेक प्रकार के प्रतिकूल संयोग आ जाते हैं। दृष्टान्त रूप सीता जी, सती अंजना जैसे धर्मात्माओं पर भी कंपायमान कर देने वाले कठोर असाता का उदय आये हैं, फिर भी धर्मात्मा की परिणति अकंपरूप ही रहती है।

चाहे जैसा कठोर असाता के संयोग समय में भी धर्मात्मा ऐसा विचारते है कि इनमें तो वास्तव में सत्ता में पड़ा हुआ असाता कर्म निर्जर जाते हैं और अपने स्वभाव सन्मुखता की वृद्धि होती है, उदासीन वृत्ति से रहते हैं, इसलिए बाहर में प्रतिकूलता आने पर भी वास्तव में तो प्रतिकूलता टल जाती है तथा जितना असात कर्म खिरा उतने ऋण से तो मुक्त हो गये, इस प्रसंग ने मेरा क्या इष्ट–अनिष्ट किया है—'कुछ भी नहीं।''

ऐसे प्रसंगों में धर्मी जीव कर्म–निर्जरा का पुरुषार्थ करते हैं, ज्ञानी परिणति से धैर्य और शांति–समाधान रख रहे हैं।

तथा प्रतिकूलता के प्रसंग में अज्ञानी क्या नहीं करता? अज्ञानी की दृष्टि ही अज्ञानरूप है इसलिये अज्ञानता में कषाय के वश हो जाता है और कषाय का जंजाल वढाता है। **अहो धन्य है आपकी अकंप दशा को**

Please report errors to Ramaben Parekh: WhatsApp +91 90115 91078 or email ramabenparekh45@gmail.com

Version 001: Updates at http://www.AtmaDharma.com & http://www.AtmaDharma.org

प्रश्न :—सम्यग्दर्शन होता है तब सम्यग्ज्ञान भी होता है?

उत्तर :—हाँ सम्यग्दर्शन होता तब सम्यग्ज्ञान भी होता है, दोनों साथ में ही होते हैं।

प्रश्न :—अनुभव करने के लिए क्या करना चाहिए?

उत्तर :—अनुभव करने के लिए तीव्र जिज्ञासा, पुरुषार्थ, धीरजपूर्वक पुरुषार्थ करके आगे बढ़ता जाता है। बढ़ते–बढ़ते पहले ज्ञान में प्रथम भूमिका को पकड़े। ज्ञायक रूप सत्ताभूमि में से प्रगट हुआ निर्णय ज्ञान यह हूँ ऐसा सम्यग्ज्ञान का निर्णय होता है, इसप्रकार का निर्णय सम्यग्दर्शन प्राप्त करने के पहले होता है। बाद में बारंबार अन्दर जाने के लिये प्रयत्न करता है। खूब जिज्ञासा शीघ्रतापूर्वक उसके पीछे लग जाता है। लौकिक में भी कहते हैं कि जिसके पीछे लग जाय तो उसको मूल से उखाड़ देता है। वैसे ही यह निर्णय सत्ताभूमि से ज्ञायक को पकड़ने/अनुभव करने के लिये जाता है और मिथ्यात्व को मूल से उखाड़ फैंकता है।

प्रश्न :—सम्यग्ज्ञान होने के पहले क्या दिखता है?

उत्तर :—अज्ञान में तो पहले अंधाधुंधी दिखती थी, अनुभव में अनंत गुण स्वरूप ज्ञान प्रकाश में आया तो विश्वास हो गया, अपना स्वरूप देखा। सिद्ध भगवान ने पूर्ण किया है वैसा ही मुझे आंशिक प्रगट हुआ, इतना मोक्ष हो गया।

प्रश्न :—ज्ञान का प्रकाश पुंज कैसा दिखा था?

उत्तर :—अकेला ज्ञान नहीं, परंतु अनंत गुण भी उछले/प्रगट हुए, वे सभी स्वयं को जानने में आते हैं, जब अनुभव करता है तब तो वेदन ही होता है–अनुभव ही करता है। विकल्प में आने के बाद ख्याल में आता है। अहा! ऐसा मेरा स्वरूप!! ऐसा मैं अकेले आनंदस्वरूप हूँ। खाते–पीते सभी काम करते हुए दिखने पर भी आनंद में ही परिणति काम करती है।

प्रश्न :—परिणति में गुण जानने में आते हैं?

उत्तर :—हाँ, अनुभव के समय भी गुण वेदन में आते हैं, इसलिए परिणति में सभी गुण जानने में आते हैं–ऐसा कहा जाता है।

Please report errors to Ramaben Parekh: WhatsApp +91 90115 91078 or email ramabenparekh45@gmail.com

Version 001: Updates at http://www.AtmaDharma.com & http://www.AtmaDharma.org

प्रश्न :—दूसरा भी कोई मोक्षमार्ग होता है?

उत्तर :—ना, एक ही मार्ग से पूर्ण होते हैं, स्वरूप स्थिरता बढ़ते–बढ़ते पूर्ण होते हैं। क्योंकि समयसाररूपी डोर हाथ में व्यवहार से आ जाती है, यह व्यवहार निश्चय को लाता ही है। निर्णय में आत्मा कारण में पक्का ख्याल में आ जाता है कि यह मैं ही हूँ, अपना अनुभव अपने को ही (होता) है तब फिर किससे पूछने जाना? पर की अपेक्षा बिना अपने में से उछला है। उसे दूसरों से पूछने का रहता ही कहाँ है? क्योंकि सम्यग्दर्शन किसे कहते हैं–सविकल्प कहते हैं, ऐसा किसी को पहले होता है।

किसी को सब साथ में हो जाता है, जैसी जीवों की योग्यता, इस कारण सम्यग्दर्शन ऐसे को कार्य लावे ही–निर्विकल्पता आयेगी ही, सच्ची भावना उठा जीव है वह सविकल्प में संतोष पाकर अटकता नहीं वह तो निर्विकल्पता को प्राप्त करके ही रहेगा।

छद्मस्थ के हृदय में आत्मा ही विराजता है, उपयोग अन्दर में जाता है तब मन का सहारा गौणरूप से रहता है और निर्विकल्प दशा में मन का संबंध जो अबुद्धिपूर्वक का है वह छूट जाता है। अनुभव के बाद स्वयं की परिणति दृढ़तापूर्वक काम करती है एवं निःशंक हो जाती है, प्रति समय आराधना करता जाता है।

प्रश्न :—क्या चौथे गुणस्थान में परिणति में एकदम स्थिरता बढ़ सकती है?

उत्तर :—चौथे गुणस्थान में ऐसा बन सकता है कि उपयोग की लीनता बढ़ जाये तो सीधे चौथे से अप्रमत्त गुणस्थान में जा सकता है (परंतु वही व्यक्ति पहले से ही नग्न दिगंबर भेष लिये हुए होना चाहिए, तब बन सकता है।) गुरु के पास भी न जाना पडे, (यह महापुरुषों को लागू होता है, शेष व्यक्तियों को तो गुरु के पास जाना ही पड़ता है।) एकदम उपयोग आत्मा में लीन हो जाय, देखो बाहुबली को एकदम वैराग्य आया तो चौथे गुणस्थान में सीधे सातवे में आ गये, भरत जी को एकदम घर में ही वैराग्य आया वे बाहर भी वहीं जा पाये नहीं बगीचा में मुनिपना, केवलज्ञान और मोक्ष पा लिया।

Please report errors to Ramaben Parekh: WhatsApp +91 90115 91078 or email ramabenparekh45@gmail.com

Version 001: Updates at http://www.AtmaDharma.com & http://www.AtmaDharma.org

बाहुबलीजी १२ महिने एक आसन में खड़े ही रहे। परिणति में प्रगाढ़ता हो तो उपयोग अधिक लीन रहे और मंदता हो तो वैसा काम होगा। यदि पुरुषार्थ में प्रगाढ़ता हो तो उपयोग शीघ्र–शीघ्र अन्दर चला जाता है और पुरुषार्थ में मंदता हो तो उपयोग अधिक समय में अन्दर जाता है। ऐसे चौथे गुणस्थान वालों के अनेक प्रकार हैं, पाँचवे के भी अनेक प्रकार हैं। यह सब केवली गम्य है।

प्रश्न :—परिणति जोरदार काम करती है कि उपयोग?

उत्तर :—उपयोग जोरदार काम करता है, मेरा उपयोग ही जोरदार काम करता है। शुद्ध परिणति को लाने का काम उपयोग ही करता है।

प्रश्न :—एक समय की पर्याय किसकी?

उत्तर :—उपयोग की ही पर्याय है, वही चैतन्य की मशीन चलाती है–ज्ञान ही मशीन चलाता है।

प्रश्न :—सम्यगज्ञान पहले कैसे परिणाम से होता है?

उत्तर :—सम्यग्ज्ञान होने के पहले के परिणामो में बाहर में उदासीनता हो, सरलता हो, स्वरूप तरफ की रुचि जोरदार हो, आत्मप्राप्ति के तरफ का रस अधिक हो, और बाहर का रस कम हो जाता है।

प्रश्न :—सम्यक्त्व प्राप्त होने के पहले घबराहट होती है क्या?

उत्तर :—घबराहट हो तो घबराहट टालने का रास्ता कर लो, घबराना नहीं, परंतु घबराहट मिट जाये, ऐसा विवेक का मार्ग शोध लो, किसी को अनित्यता दिखाई दे तो बाहर से वैराग्य की ओर मुड जाना।

प्रश्न :—दूसरा कोई राजमार्ग होगा क्या?

उत्तर :—कोई जीव देव–शास्त्र–गुरु का बहुमान और महिमा आते ही प्राप्त कर लेते हैं, फिर भी मुख्य रूप से ज्ञान के स्वरूप का चिंतन अधिक रहाआ करता है, वह निकट का कारण है, यही राजमार्ग है, अपने स्वरूप का चिंतवन करना यही राजमार्ग है।

Please report errors to Ramaben Parekh: WhatsApp +91 90115 91078 or email ramabenparekh45@gmail.com

Version 001: Updates at http://www.AtmaDharma.com & http://www.AtmaDharma.org

पूज्य बेन की शत्रुंजयगिरि की यात्रा

पूज्य बेन के पैर का फैक्चर हुआ था, उस पैर के अच्छे होते ही सबसे पहले मंदिर में पधारे, उसके बाद शत्रुंजय गिरी पास में होने से पूज्य बेन की यात्रा करने की भावना थी, इस कारण वहाँ बहुत से मुमुक्षु साथ में पधारे और तलहटी में पांडव मुनिवरों को याद कर करके ऐसा अवसर कब आयेगा। मुनिपद प्राप्त हो ऐसी भावना सहित भक्ति–पूजन किया और फिर शत्रुंजय तीर्थ के ऊपर बैठे–बैठे लिखा।

आज की यात्रा का दिन

अनंत अनंत भक्तिपूर्वक शांतिनाथ भगवान को नमस्कार हो, नमस्कार हो!

श्री शत्रुंजय तीर्थ पर पांडव आदि महा मुनिराजों ने उपसर्ग, परिषहजय प्राप्त करके पूर्ण ज्ञान, आनंद प्राप्त करके आत्मा की पूर्णसिद्धि को इस शत्रुंजय तीर्थ से प्राप्त की, उन आठ करोड़ महा मुनिराजों के अत्यंत भक्ति पूर्वक नमस्कार हो, बारंबार नमस्कार हो।

पूज्य बेन ने अपने जीवन में बहुत उतार–चढ़ाव के प्रसंग देखे हैं, फिर भी कोई भी प्रसंग में लिप्त नहीं होते और चाहे जैसे कठोर प्रसंगों में भी आनंद में मस्त रहते और योग्यता पर विश्वास रखते। कई बार कहते कि चौथे काल में महामुनियों एवं सतिओं पर भी भयंकर उपसर्गों के प्रसंग आते थे तो अपने को इस काल में आवें इसमें कुछ आश्चर्य नहीं।

पूज्य बेन कहते है कि पूज्य गुरुदेव के प्रताप से जो आत्मदर्शन प्राप्त हुआ है वह अप्रतिहत धारा से हुआ है और भविष्य में यह धारा वृद्धिंगत होकर पूर्णता को प्राप्त होगी। प्रसंगवश पूज्य बेन ने अपने में शांति तथा समता अधिक ही रखी थी।

इसलिए उनको अति लाभ के कारण होते थे तथा ज्ञायक देव (शुद्धता) वृद्धि को प्राप्त होते।

Please report errors to Ramaben Parekh: WhatsApp +91 90115 91078 or email ramabenparekh45@gmail.com

Version 001: Updates at http://www.AtmaDharma.com & http://www.AtmaDharma.org

पूज्य गुरुदेव के अंतिम समय में पहले से हाजिर रहे पूज्य बेन (वि.सं. २०३७ ई.स. १९८०)

पूज्य बेन शांतावेन पूज्य गुरुदेव की अनन्य और अंतेवासी भक्त थी। पूज्य श्री गुरुदेव सोनगढ़ पधारे तब वे साथ ही साथ थे। पूज्य गुरुदेवश्री की अंतिम स्थिति के समय भी वहाँ हाजिर थीं, उस समय की परिस्थिति का वर्णन पूज्य बेन के हृदयोद्‌गार टेप से उतारे हैं, वे नीचे लिखे हैं—

(एक मुमुक्षु ने पूज्य गुरुदेव की उपस्थिति के संबंध में पूछा—उनका उत्तर पूज्य बेन ने दिया)

मैंने तो सब सुना कि ऑपरेशन बुधवार को होगा, मैं तो रविवार की रात में ही मुंबई जाने के लिए तैयार हो गई। गुरुदेव के दर्शन मंगलवार के सुबह १० बजे करने गये। किसी ने गुरुदेव से कहा कि बेन आई हैं, शांतावेन आई हैं। यहाँ आई है शांतावेन? वे अभी हॉस्पीटल में आ रही है।

ऐसा है! पूज्य गुरुदेव आश्चर्य से बोले, खूब प्रीति और प्रेम से बोले थे कि तुरंत ही बेन अन्दर आ गयी। दर्शन किये और बेन ने पूछा गुरुदेव, आप की तबियत कैसी है? तो गुरुदेव एकदम हँसे तब तबियत ठीक थी तब हँसते–हँसते सामने खड़े डोक्टर चंदुभाई की ओर देखकर कहने लगे कि इन डॉक्टरों के हाथ आ पड़े हैं, अभी तो डॉक्टरों के हाथ में ही हैं। बाद में बेन से पूछते हैं कि किसमें आये हो आप लोग? बेन ने कहा कि रेल में आये हैं साहब! बाद में बेन से पूंछते हैं कैसा है? तो मैंने कहा जैसा था वैसा ही है, बाद में मैंने कहा साहब आपके ऑपरेशन का सुना तो मेरे से रहा नहीं गया, इसलिए मैं तो आ गई। तो गुरुदेव ने कहा अच्छा आ गये.....अच्छे आ गये, एकदम संतोष हुआ और तीन–चार बार बोले, खूब प्रमोद व्यक्त किया। मैं एक बार हॉस्पीटल जाती थी, दूसरों को नहीं जाने देते थे, परंतु एकबार तो मैं जाऊँ तबियत की खबर पूँछ लूँ। दूसरे दिन तो ऑपरेशन होना था। बुधवार को ९ बजे ऑपरेशन हुआ, हम ९.३० बजे

Please report errors to Ramaben Parekh: WhatsApp +91 90115 91078 or email ramabenparekh45@gmail.com

पहुँते तो ऑपरेशन हो गया था, अच्छा हुआ मुझे तो ऑपरेशन के बाद ही गुरुदेव को देखना था। बाद में तबियत कैसी रहती है यही मुझे देखना था। तब चंदुभाई डॉक्टर ने कहा कि पूज्य बेन आई हैं और आप की खबर पूंछ रही हैं। पूज्य गुरुदेव को कमजोरी तो थी ही इसलिए सोते–सोते मेरे सामने हाथ से ईशारा किया कि ठीक है। फिर तो मैं रोज जाती थी, कभी सोते हों तो कभी बैठे हों, थोड़े दिन बाद अर्थात् शुक्रवार को चार दिन पहले पूज्य गुरुदेव को कमजोरी बहुत लग रही थी मैं गई तब मठा पी रहे थे, मेरे सामने देखकर मेरे से कहा कि यह छाँछ मुझे नहीं पीना, मुझे कुछ नहीं पीना, मुझे तो समाधि करनी है बेन! मुझे संन्यास करना है। ग्लास नीचे रख दियाआ और कहा मुझे कुछ नहीं पीना। मुझे भूख नहीं लगती और शरीर में भी कुछ शक्ति नहीं। अब तो मुझे संन्यास करना है ऐसा कहते ही संन्यास धारण कर लिया। इस बात के लिये हाँ तो कौन पाड़ेगा? मैंने कहा गुरुदेव आपकी तबियत ठीक हो जायेगी। पूज्य बेन शांताबेन ने पूज्य गुरुदेवश्री की बात को प्रोत्साहित किया। बाद में चंदुभाई डॉक्टर थे उनने गुरुदेव की गोद में सिर रख लिया और कहा कि गुरुदेव छाँछ पी लो आप ऐसा मत करो, आप ठीक हो जाओगे। सभी कहने लगे तो गुरुदेव कुछ बोले नहीं और छाँछ पी ली।

अंतिम गुरुवार की शाम को ४ बजे पूज्य गुरुदेव के पास हॉस्पीटल में गई तो देखा कि गुरुदेव के मुख पर बुखार का जोर था। यह देखकर एकदम धक्का लगा कि अब इन गुरुदेव की अंतिम दशा है। जब पास में जाकर देखा तो श्वास में नाभी से शुरु हो गया था, फिर पूंछा कि बुखार कितना है? बहुत था, शाम को घर आ गये, परंतु कही चैन नहीं पड़ती, बारंबार फोन से समाचार पूंछने की भाई से कही, तब रात में २ बजे फोन आया कि ठीक नहीं है इसलिए मुकुंदभाई तो रात में ही चले गये, परंतु मुझे खबर नहीं दी। शुक्रवार को सुबह जाकर देखा तो स्थिति कल जैसी थी वैसी ही थी, पाँच–पाँच मिनिट में रूम में जाऊँ परंतु क्या करूँ? जैसी तबियत दिख रही थी, उसे देखकर उसका ज्ञान करूँ। सभी के साथ–साथ कान में

Please report errors to Ramaben Parekh: WhatsApp +91 90115 91078 or email ramabenparekh45@gmail.com

Version 001: Updates at http://www.AtmaDharma.com & http://www.AtmaDharma.org

णमोकार मंत्र सुनाया। अंतिम श्वासोच्छवास थी, तब तक वहाँ कि वहाँ खड़ी रही, बस ७ बज के ५ मिनिट पर गुरुदेव चले गये। अपन सभी के नाथ, रक्षणहार, भक्तों के भगवान देवलोक में चले गये। गुरुदेव श्री भी एकदम भगवान के धाम में पहुँच गये, वहाँ उनको सब अच्छा मिल गया, लेकिन अपने को तो विरह पड़ गया। ये विरह तो धीर–धीरे भूलेंगे, इतना अधिक सद्गुरु ऊपर प्रेम यह कैसे भूलें?

प्रश्न :—पूज्य गुरुदेवश्री की देह छूटी तब आप को एकदम शांति रही थी?

उत्तर :—शांति रखी पर रोना आ गया और आँखों में से अश्रु की धारा भी वह नीकली, रहा नही गया, एकदम उदासीनता और वैराग्य आ गया कि जगत का ऐसा ही अनित्य स्वरूप है। इसलिए जगत से उदासीनता आ जाती है तथा अनित्यता का प्रसंग अपने सद्गुरु पर ही निमित्त रूप से आया उसे देखकर वैराग्य आ जाता है ये प्रसंग तो भारतभर में अति ही वैराग्यमय और दुःखदायी है, इसलिए सबको अब वैराग्य पूर्वक आत्मा का कार्य कर लेने जैसा है। इन गुरु का विरह कैसे सहा जायगा? जिनकी शरण में पूरा जीवन बिताया, इन गुरु का उपकार भव–भव तक नहीं भूल सकते आत्मा की आराधना करके जल्दी उनके चरणों में चलें यही भावना है।

प्रश्न :—हमें ऐसा आघात सहन करने के लिये कोई मंत्र या शक्ति दीजियेगा?

उत्तर :—पूज्य बेन ने कहा कि यह मनुष्य जीवन थोड़ा है तो जीतना जीवन शेष हैं, उसमें आत्मा की आराधना खूब करना तो भगवान के धाम में पहुँच जायेंगे तो गुरुदेव मिल जायेंगे।

जैसे म्यान में तलवार भिन्न है, वैसे ही इस शरीररूपी म्यान से चैतन्यज्योति बिलकुल भिन्न है।

Please report errors to Ramaben Parekh: WhatsApp +91 90115 91078 or email ramabenparekh45@gmail.com

Version 001: Updates at http://www.AtmaDharma.com & http://www.AtmaDharma.org

पूज्य शांताबेन द्वारा लिखित
पूज्य गुरुदेव को दी गई श्रद्धांजली

अहो उपकार गुरुदेव का.....

आज पूज्य गुरुदेव का समाधि दिन है, गुरुदेव की तो समाधि हुई, परंतु अपन भक्त जनों को तो विरह पड़ गया। विरह का बहुत धक्का लगा है, गुरुदेव की बहुत याद आती है, गुरुदेव थे तब ऐसा होता था कि गुरुदेव की ही छाया में अपन कायम रहेंगे और गुरुदेव की हाजरी में अपन भी समाधि करेंगे, परंतु अपने विचार अनसार कुछ होता नहीं। पूज्य गुरुदेव अपन सभी भक्तों को छोड़कर चले गये और अपन आज उनके विरह में रह रहे हैं। अपन भावना भावें कि पूज्य गुरुदेव जो चैतन्य चमत्कार आत्म को साक्षात् बता गये हैं, उस चैतन्य चमत्कारी आत्मा का स्वरूप आत्मा की खूब आराधना करके अपन गुरुदेव के साथ ही मुक्ति में पहुँचेंगे और शाश्वत आनंद में रहेंगे, गुरुदेव का उपकार तो अमाप है, उनके उपकार को तो मोक्ष पावें तब तक नहीं भुला सकते पूज्य गुरुदेव ने तत्त्वज्ञान को खूब फैलाया है सम्पूर्ण भारतभर में गुरुदेव का प्रताप वर्त रहा है, आज बालक से लेकर वृद्धों मुमुक्षुओं तक तत्त्व के प्रति इतना उल्लास बताते हैं, यह सब प्रताप पूज्य गुरुदेव का है। गुरुदेव तो चेतन आत्मा की आराधना कर ही रहे हैं। अपने को चेतन की पूर्ण आराधना करके उनके साथ शाश्वतधाम में रहे यही भावना है।

अपने ऊपर कोई आपत्ति आ पड़ने से मनुष्य जिसप्रकार दुःखी होता है, उसी प्रकार दूसरों पर आ पड़ी आपत्ति को अपनी आपत्ति समझकर दुःख का अनुभव करना वह दयालुपना है।

—श्री क्षत्रचूड़ामणि

Please report errors to Ramaben Parekh: WhatsApp +91 90115 91078 or email ramabenparekh45@gmail.com

Version 001: Updates at http://www.AtmaDharma.com & http://www.AtmaDharma.org

पूज्य गुरुदेव के अनुपम उपकार के प्रति पूज्य बेन के व्यक्त किये गये भाव

पूज्य गुरुदेव ने तो इतना उपकार किया है। इतना अध्यात्मज्ञान दिया है कि गुरुदेव को तो अपनी जिंदगीभर अपनी अंतिम शाश्वास तक भूल नहीं सकते, इतना उनका परम–परम उपकार है। ऐसा महापुरुष इस पृथ्वी पर सभी भक्तों के पुण्य के कारण विचरण किया। सम्पूर्ण हिन्दुस्तान में घूमें, इतना वात्सल्य प्रेम, इतना धर्मप्रेम कि वे अध्यात्म से ओतप्रोत हो गये थे। एकदम अध्यात्म के रंग में रंग गये थे। जगत की उपेक्षा, एक मात्र आत्मा की अपेक्षा और कोई अपेक्षा नहीं, इतने निस्पृह पुरुष थे। एकदम निरालसता, सरलता, मृदुता–कोमल हृदय, ज्ञान की इतनी तीक्ष्णता। ऐसे पुरुष का इतना प्रभाव कि मनुष्य उनकी वाणी में मुग्ध हो जाय। वाणी सुनते ही रहे, तृप्त ही नहीं होती, ऐसी वाणी में मधुरता वह भी तत्त्वज्ञान सहित मधुरता। इसलिए उनके प्रताप से लाखों जीव तत्त्व के अंदर से प्रेमी हो गये, बालक से लेकर वृद्ध सभी गुरुदेव.....गुरुदेव करते सभी के हृदय में इतने अंतः स्थल में पेठ गये थे/उतर गये थे। पूज्य गुरुदेव ९१ वर्ष तक अमृत ही बरसाया। सभी के हृदय उस अमृतवाणी को याद कर के अपने आत्मा को भी ऐसा उज्वल बनाकर स्वयं आत्मा का कल्याण करके जीवन सफल करे यह उनके उपदेश का फल है। उनके उपदेश को निमित्त बनाकर जीवन में आराधना सबको करना। उनके उपदेश में खराखरा दिगंबर सनातन मार्ग आया है। श्री कुंदकुंदाचार्य देव के हृदय में बस गये थे, वहाँ (स्वर्ग में) अभी मिले होंगे। गुरुदेव को तो अभी सभी अच्छे संयोग मिल गये हैं। अच्छे देव हुए हैं न। तीर्थंकर की वाणी सुनते हैं और आनंदमंगल करते हैं। यह तो अपने ज्ञान से अपन जान सकते हैं। वे तो आनंदमंगल कर रहे हैं और अपने को तो यहाँ विरह पड़ गया। विरह में भी अपन उदासीन भाव से आत्मकल्याण करें।

कषाय की मंदता करके आत्मा का सेवन करना यह अपने को दे गये हैं, वैसी आत्मा की आराधना करनी। गुरुदेव को तो जितने–जितने शब्दों से याद करें। तो भी तृप्ति नहीं होती, इतना उनका उपकार है,

Please report errors to Ramaben Parekh: WhatsApp +91 90115 91078 or email ramabenparekh45@gmail.com

Version 001: Updates at http://www.AtmaDharma.com & http://www.AtmaDharma.org

उपकार का कोई पार नहीं। स्वयं अपने आत्मा की शुद्धि करते गये अंत–अंत में कहते थे कि मेरी तरफ से किसी को दुःख हुआ हो तो क्षमा माँगता हूँ। मेरे सभी मित्र हैं, मेरे कोई विरोधी नहीं। सभी आत्मा हैं, मेरा चैतन्य प्रभु है ऐसे ही सभी प्रभु हैं, प्रभु कहकर ही सबको बुलाते थे। 'सभी भगवान हैं'—ऐसा कहकर अपने ऊपर अति–अति उपकार किया है। उनके तो जितना गुणगान गाया जाय/वर्णन किया जाय उतना कम ही है। उनका वर्णन करने की अपनी वाणी में ताकत भी नहीं है। इतनी ज्ञान की तीक्ष्णता, इतनी ज्ञान कीई विचक्षणता कि समयसारादि शास्त्रों में आचार्यों ने क्या कहा है वह ज्ञान की तीक्ष्णता से निकाला है। अपने–आप उनको कोई गुरु नहीं थे, कोई मार्ग बताने वाले नहीं थे, नहीं कोई श्रुतकेवली मिले कि कोई अध्यात्मप्रेमी।

श्रीमद् राजचंद्रजी भी नहीं मिले। आत्मा की रुचि और सच्चा मार्ग याने की धगस के बल से स्वयं ने सच्चा मार्ग शोध लिया शास्त्रों में सत्य क्या है–उसे शोधनी के लगनी जगी, ऐसी सच्ची लगन थी इसलिए सच्चा (धर्म) मिल गया। सत्य को भी अपने सम्यग्ज्ञान, जिज्ञासा और तीक्ष्णता द्वारा आचार्यों का हृदय जान लिया। अपन सभी को तो तैयार माल दिया है कि दिगंवर धर्म ही सच्चा है, अनादि का है और आत्मा का धर्म है। ऐसा पुकार करके भक्तों को इतना दृढ़ किया, उनकी ऐसी दृढ़ता की छाप लाखों भक्तों पर पड़ गई।

वाह.....वाह गुरुदेव! आप कहते को वह सत्य है। भक्त भी ऐसे अडिग हो गये, उस अडिगता का मूल कारण गुरुदेव हैं। उनमें एक ऐसी अद्भुत शक्ति थी, प्रभावना थी कि तीर्थंकर तुल्य तो अभी नहीं थे, परंतु तीर्थंकर का एक अंश उनमें अभी था, तीर्थंकर जैसा एक अतिशय उनमें था कि जो आते वो उनके प्रभाव में एकदम लीन हो जाते और सत्य ही ग्रहण करते और सत्य ही कहते। उनके हृदय में कुछ और बाहर में कुछ और ऐसा तो उनके हृदय में कभी आया ही नहीं सीधी सरल बात हृदय में रहती थी वही बाहर आती थी, ऐसा स्फटिक समान उनका हृदय था, उनके आत्मा का जोरदार असर भक्तों में आ गया, ऐसा गुरुदेव के निमित्त

Please report errors to Ramaben Parekh: WhatsApp +91 90115 91078 or email ramabenparekh45@gmail.com

Version 001: Updates at http://www.AtmaDharma.com & http://www.AtmaDharma.org

में प्रबलता थी। ऐसा महापुरुष तो अभी इस पृथ्वी पर देखा नहीं और कब होंगे ये तो केवलज्ञानी भगवान ही जाने।

अपने तो वर्तमान में गुरुदेव हुए उनके जीवन से लेकर अभी तक सब कुछ देखते और जानते हैं। अपने को तो महान आत्मलाभ हुआ अपने आत्मा का उद्धार किया, अपने भव का अंत करने की ऐसी ज्ञान ज्योति गुरुदेव के प्रताप से प्रगट हुई इसलिए उनका महा–महा उपकार है, उस उपकार को कभी भुलाया नहीं जा सकता, अपनी जिंदगी की अंतिम श्वास तक गुरुदेव को भूल नहीं सकते। बारंबार याद आते हैं, ऐसे गुरुदेव के तो अभी गुणगान करना ही सुहाता है। ऐसे महापुरुष थे। ऐसे गुरुदेव इस पृथ्वी पर से चले गये अंधकार हो गया, वहाँ देवलोक में प्रकाश हो गया। उनकी वाणी से आज प्रकाश हो रहा है। ऐसा ही दिखता है। मानो साक्षात् ही बोल रहे हों ऐसी वाणी है, थोड़ी देर तो उनका विरह भी भूल जाते हैं, ऐसी वाणी है। उनका परम परम उपकार अपने हृदय में सदा के लिये बसे तथा उनका स्मरण करके अपने आत्मा की आराधना करें और उन्हीं के पथ पर चलकर उनके चरणों में जल्दी पहुँच जाएँ—ऐसी सभी को भावना करनी।

हे आत्मन्! तुझे लोक का क्या प्रयोजन है? पराश्रय का क्या प्रयोजन है? द्रव्य का क्या प्रयोजन है? शरीर का क्या प्रयोजन है? वचनों का क्या प्रयोजन है? इन्द्रियों का क्या प्रयोजन है? प्राणों का क्या प्रयोजन है? तथा उन विकल्पों का भी तुझे क्या प्रयोजन है? अर्थात् इन सबका तुझे कोई प्रयोजन नहीं है; क्योंकि ये सब पुद्गल की पर्यायें है और इसलिये तुझसे भिन्न हैं। तू प्रमाद के वश होकर व्यर्थ इन विकल्पों द्वारा क्यों अतिशय बंधन का आश्रय करता है?

—श्री पद्मनन्दि पंचविंशतिका

Please report errors to Ramaben Parekh: WhatsApp +91 90115 91078 or email ramabenparekh45@gmail.com

पूज्य शान्ता बेन के द्वारा रचा गया गुरु विरह गीत

अहो गुरु भानु भारत ना अंधेरा जगत मां कीधा।
वीत्या मास आठ तोये ना दर्शन अमने जरा दीधा।।१।।

स्वानुभूति थी झलकेला चैतन्य तेजे थी चमकेला।
आतम तेज थी दीपेला गया क्यां कहानगुरु बहाला।।२।।

हिंद मां गुरु हता मोटा जड़े नहीं क्यांय तुझ जोटा।
गुरु विरह पड्या मोटा जई ने स्वर्ग मां बैठा।।३।।

गुरु तमे ज्ञान गंभीरा उछाल्ला श्रुत ना दरिया।
अचिंत्य गुण थी भरिया सेवक तुझ भक्ति ना रसिया।।४।।

गुरु गुरु झंखना थाये गुरु बिन चेन न पाये।
गुरु बिन रात–दिन जाये मड़ी शूं शाश्वत धामे।।५।।

गुरु नुं नाम अमर होजो गुरु नुं धाम अमर होजो।
तमारी साधना ज्यां हो अमारो वास त्यां होजो।।६।।

चैतन्य आनंद देनारी ज्ञायक साक्षात् करनारी।
प्रज्ञाक्षेणी मां ज रमनारी अहो अहो गुरु कहान नी वाणी।।७।।

चैतन्यो तल स्पर्शती वाणी सेवक ने पाय है पाणी।
मुमुक्षु मुग्ध करनारी जय–जय गुरु कहान नी वाणी।।८।।

मुनिवर महिमा गुरु गाता संयम नी भावना भाता।
जिनेश्वर मारगे जाता थशे गुरु ध्यान ना ध्याता।।९।।

गुरुवर बोध ने पामी दृष्टि चैतन्य मां जामी।
शाश्वत ये धाम ने पामी थशुं आनंद ना धामी।।१०।।

Please report errors to Ramaben Parekh: WhatsApp +91 90115 91078 or email ramabenparekh45@gmail.com

Version 001: Updates at http://www.AtmaDharma.com & http://www.AtmaDharma.org

शाश्वत तीर्थराज सम्मेदशिखरजी वगैरह तीर्थसंबंधी पूज्य बेन ने लिखे भाव

पूज्य बेन संघ सहित कहान गुरुदेव की स्मृति में विदिशा से ट्रेन द्वारा शाश्वत तीर्थधाम सम्मेदशिखरजी की यात्रा करने पधारे।

भरत क्षेत्र में अध्यात्म पिपासु, जिनका परम–परम उपकार इन भव्यों पर वर्त रहा है, ऐसे अध्यात्म योगी कहान गुरु ने भव्य जनों को आत्मा बताया और आत्मा की पूर्णता प्राप्त हुए ऐसे बीस तीर्थंकर, जिन्होंने शाश्वत सिद्धिधाम शिखरजी से पूर्णता प्राप्त की है, इस धाम के दर्शन से तथा पूर्णता को प्राप्त तीर्थंकरों के स्मरण हेतु तीर्थवंदना और अनेक तीर्थों की संघसहित सभी को यात्रा कराते हैं।

कहान गुरुदेव ने संघसहित वि.सं. २०१३ में शाश्वत तीर्थधाम सम्मेदशिखरजी आदि तीर्थों की यात्रा तीन माह तक की थी।

उस समय के आनंद का क्या वर्णन करना? आज भी याद करते ही रोम–रोम उल्लसित हो जाते हैं! उन्होंने अंतर–बाह्य तीर्थों के निज वैभव की स्थापना की और सभी यात्रियों को मंत्र–मुग्ध करके आनंद लुटाते थे।

आज कहान गुरुदेव की स्मृति में ये शीतलनाथ भगवान की यात्रा का विकल्प आया और भक्तों ने अभूतपूर्व स्पेश्यल ट्रेन से यात्रा का आनंद लिया। हमारी ट्रेन पद–पद पर कहान गुरु–कहान गुरु का गुंजार कर रही थी। ट्रेन में चारों तरफ कहान गुरुदेव के मनोहर स्टीकर लगे हुए थे। ट्रेन भी मलकती मलकती सभी को आनंद देती थी और प्रत्येक तीर्थ की यात्रा/दर्शन कराके आनंद देती थी।

विदिशा—''विदिशा नगरी महाभाग्यशाली, शीतलप्रभुना चरणकमल में बसी है।''

आसो सुदी तीज के दिन मध्याह्न के दो बजे कहान गुरु की जय जयकार करते हुए बेन्ड–बाजा सहित आनंद मंगल पूर्वक बाबुभाई द्वारा हरी झंडी फहराते हुए ट्रेन विदिशा से प्रारंभ हुई एवं विदिशा के भक्तों ने आनंद से विदाई दी।

Please report errors to Ramaben Parekh: WhatsApp +91 90115 91078 or email ramabenparekh45@gmail.com

Version 001: Updates at http://www.AtmaDharma.com & http://www.AtmaDharma.org

उसमें महाभाग्य की बात तो यह कि ट्रेन में साथ–साथ महाविदेहवासी श्री सीमंधर भगवान गंधकुटी सहित विराजमान थे, सभी को प्रतिदिन दर्शन–पूजन–भक्ति का लाभ मिलता। भगवान के प्रताप से स्टेशन के प्लेटफोर्म पर भी नगर के समान रचना हो जाती थी। भगवान के दर्शन से भक्तजन आनंद से प्रमुदित हो जाते थे भगवान को देखकर अन्य सामान्य जनसमाज भी देखती रह जाती थी।

शाश्वत तीर्थाधिराज सम्मेदशिखर

शाश्वत तीर्थाधिराज सम्मेदशिखरजी हमारा प्रथम यात्रा धाम बना, शिख जी को देखते ही मन आनंद से नाच उठा कि कहाँ यह शिखरजी के दर्शन! अनेक तीर्थंकर, अनेक मुनिवरों का निर्वाणधाम!

आसो सुदी ८ को श्री शीतलनाथ भगवान की निर्वाण भूमि शिखरजी की यात्रा की। समश्रेणी में विराजमान शीतलनाथ भगवान की पूजन करते हम सभी ने निर्वाणलाडू शीतलनाथ भगवान की विद्युतवरटूंक पर आनंद–भक्ति के साथ चढ़ाये। शाश्वतधाम के दर्शन का प्रसंग अद्‌भुत आनंददायी था, इस धाम का कण–कण प्रभु के चरणों से पवित्र है। तीर्थधाम में अनंत सिद्ध भगवान के दर्शन से तो अपने सिद्ध स्वरूप के स्मरण बारंबार आते हैं। अनंत तीर्थंकरों का सिद्धिधाम, अनंत मुनिश्वरों का सिद्धिधाम ऐसे तीर्थाधिराज को बारंबार वंदन हो, नमस्कार हो।

चंपापुरी में वासुपूज्य भगवान

चंपापुरी यह बालब्रह्मचारी श्री वासुपूज्य भगवान की पंचकल्याणक की पावनभूमि है। क्या इस धाम की शोभा का वर्णन करूँ? मंदिरों की अद्‌भुत रचना! उनमें सुन्दर सुशोभित विराजमान श्री वासुपूज्य भगवान की मनोहर मूर्ति मन को हर लेती है। वहाँ भगवान का अभिषेक हुआ था। भगवान को देखते ही भक्तजन आनंदविभोर हो जाते हैं। महावीर भगवान, शांतिनाथ भगवान मनोहर विशाल हैं, चौवीसी भगवान भी विराजमान हैं, वहाँ से मंदारगिरि वासुपूज्य भगवान के तपकल्याणक, केवलज्ञानकल्याणक, निर्वाणकल्याणक भूमि की वंदना की।

Please report errors to Ramaben Parekh: WhatsApp +91 90115 91078 or email ramabenparekh45@gmail.com

Version 001: Updates at http://www.AtmaDharma.com & http://www.AtmaDharma.org

शासननायक भगवान महावीर की निर्वाणभूमि पावापुरी !

पावापुरी में आते ही हे वीरा! हे वीरा! से सम्पूर्ण पावापुरी नगरी गूँजने लगी। पावापुरी की शोभा देखते ही मन बोल उठा कि हे नाथ! आप हमें छोड़कर कैसे चल गये? हमें भी अपने सिद्धिधाम में ले चलो ना!! संघसहित भक्तजन आनंदविभोर होकर पूजा–भक्ति कर रहे हैं।

सुशोभित जलमंदिर में प्रत्येक भक्त जोर–जोर से बोल रहे थे कि– हे वीर, हे वीर पावापुरी में, भक्त करें तुझे आवाज वीर प्रभु सिद्ध हुए हैं।

पंचशैल राजगृही नगरी

राजगृही नगरी अर्थात् श्रेणिकराजा की राजधानी, वह नगरी भव्य है। विपुलाचल पर्वत के शिखर ऊपर भगवान महावीर का समवशरण आया था, यहाँ से ही प्रथमवार अपन सभी को दिव्यध्वनि का बोध मिला। राजगृही नगरी में स्थित जिनेन्द्र भगवन्तों की पूजा–भक्ति सहित पंचशैल की यात्रा खूब आनंद से करी।

बनारस नगरी

बनारस नगरी की महाशोभा है श्री पार्श्वनाथ भगवान की जन्मभूमि, श्री श्रेयांसनाथ भगवान की जन्मभूमि, चंद्रप्रभु भगवान की जन्मभूमि चंद्रपुरी और सुपार्श्वनाथ भगवान की जन्मभूमि। भगवान के जन्म से ही भूमि पवित्र है। इस जन्मभूमि की यात्रा आनंद–मंगल पूर्वक की।

शाश्वत तीर्थधाम अयोध्या नगरी

अयोध्या नगरी की क्या महिमा! यह तो शाश्वत जन्मधाम! इस चौबीसी में से पाँच तीर्थंकरो का जन्मधाम। आदिनाथ भगवान के दर्शन अद्भुत, महिमावंत। आदिनाथ भगवान विशालकाय यहाँ विराजते हैं। हम तो दर्शन करते–करते पुलकित हो गये। संघसहित आनंद से पूजा–भक्ति की और भक्तजनों ने आनंद से भगवान का अभिषेक किया। ऐसे मनोहर दर्शन मानो कहीं नहीं हुए हों। अयोध्या में स्थित भगवान को प्रतिदिन याद करते हैं।

Please report errors to Ramaben Parekh: WhatsApp +91 90115 91078 or email ramabenparekh45@gmail.com

Version 001: Updates at http://www.AtmaDharma.com & http://www.AtmaDharma.org

सोनगिर तीर्थक्षेत्र

मंदिरों से भरपूर सोनगिर पर्वत स्मरणीय सुशोभित है। पूरे पहाड़ की रचना मंदिरों से भरपूर शोभित है।

सोनगिर हमारी अंतिम सिद्धक्षेत्र की यात्रा थी। विदिशा शीतलनाथ भगवान के जन्मधाम से यात्रा शुरु हुई और अंतिम सोनगिर अनेक मुनिश्वरों की नंग–अनंग मुनिराज के निर्वाणधाम की यात्रा आनंद से की, सोनगिर के अनेक भव्य जिनमंदिर, पद–पद पर जिन भगवान के दर्शन आनंदपूर्वक हुए। भव्यता से हुए। चंद्रप्रभु भगवान के, नंग–अनंग मुनिश्वर के साथ विशालकाय श्री बाहुबली भगवान के दर्शन बहुत आनंद से किये और यात्रा यहाँ पूर्ण हुई। पूज्य श्री कहान गुरु को बहुत याद किया जिन्होंने कि ऐसे सिद्धिधाम की महिमा और सिद्धों के स्वरूप की पहिचान कराई।

वि.सं. २०४३ (ई.स. १९८७) में जब शाश्वत तीर्थधाम सम्मेदशिखरजी की यात्रा के लिये जाना था तब शरीर कमजोर होने पर भी मनोबल इतना था कि पूज्य बेन बोली कि भले शरीर कमजोर है, परंतु मेरे भावों में कमजोरी नहीं, ऐसी यात्रा की भावना थी, फिर भी फागुन वद तीज के दिन शाश्वत धाम शिखरजी में पहुँचे, पूज्य बेन को बहुत ही उल्लास और सिद्ध भगवान के प्रति की भक्ति देखकर मुमुक्षुओं को ऐसा हुआ कि मानो सिद्ध भगवान अभी साक्षात् दर्शन देंगे! ऐसे उत्साह के वातावरणम सहित १३ दिन शिखरजी में रहे और सिद्ध भगवान तथा मुनिराजों के प्रति खूब ही भक्तिभाव तथा आराधना की थी, पूज्य बेन को वहाँ से वापिस आना अच्छा नहीं लगता था, वहाँ बहुत शांति लगती थी।

सावधान!

यह जीव भोगों के निमित्त तो बहुत अल्प पाप करता है, परन्तु तन्दुल मत्स्य की भाँति प्रयोजन बिना ही अपने दुर्विचारों से घोर पाप करता है।

—आचार्य जयसेन

Please report errors to Ramaben Parekh: WhatsApp +91 90115 91078 or email ramabenparekh45@gmail.com

Version 001: Updates at http://www.AtmaDharma.com & http://www.AtmaDharma.org

पूज्य बेन द्वारा
शिखरजी में मुमुक्षुओं के साथ की गई तत्त्वचर्चा

प्रश्न :—उपयोग की स्थिरता कैसे हो?

उत्तर :—उपयोग को स्थिर रखना वह धन्य प्रसंग है, वह चैतन्य की कुशलता है, वह कुशल महाकुशल है, उस कुशलता में कुछ कमी नहीं, मुनिराज ध्यान में कैसे कुशल हैं। व्यवहार में महान पुरुषों का बहुमान–विनय करने से अपने आत्मा का बहुमान होता है।

प्रश्न :—मोक्षमार्ग की यात्रा किसप्रकार हो?

उत्तर :—पंचपरमेष्ठी के पास सम्यग्दर्शन–ज्ञानरूपी धन देकर मोक्षमार्ग की टिकट बुक करा लो, उसकी तैयारी करने लग जाओ और प्रमाद छोड़ दो।

प्रश्न :—सिद्धपद प्राप्त करने के लिये क्या करना?

उत्तर :—इस जीव ने यह अनित्य शरीर तो अनंत बार धारण किया है, उसका त्याग (छुटना) तो होना ही है, परंतु चैतन्यदेव की आराधना पूर्वक देह छूटे यह मनुष्य भव की सफलता है।

ऐसी यात्रा के प्रसंग में सबको आत्मप्राप्ति की रुचि अधिक जगाने योग्य है। आत्मा की प्राप्ति हो और पूर्ण दशा को प्राप्त करके/आत्मा की शरीररहित दशा को प्राप्त करके, अविनाशी आनंद को भोगना यही करने लायक है।

हे मूढ़ जीव! तू यहाँ अल्प दुःख को भी सहन नहीं कर सकता, तब विचार तो सही कि चार गतियों के भयंकर दुःखों के कारणभूत कर्मों को तू किसलिए करता है?

—श्री परमात्मप्रकाश

Please report errors to Ramaben Parekh: WhatsApp +91 90115 91078 or email ramabenparekh45@gmail.com

Version 001: Updates at http://www.AtmaDharma.com & http://www.AtmaDharma.org

शाश्वत तीर्थधाम सम्मेदशिखरजी में लिखे गये पूज्य बेन के हस्ताक्षर

जब ज्ञायकदेव आत्मा की तरफ उपयोग आरूढ़ होता है, तब ज्ञायक तरफ उपयोग लीन होते ही एकदम पर से उपयोग खिंचकर अपने ज्ञायक में लीन होता है, तब अनंत गुण उछलते हैं, चैतन्यदेव चमत्कारी है, वह साक्षात् अनुभव में आता है/वेदन होता है, साक्षात् सिद्धस्वरूप को अंश का अनुभव होता है, अकेला ही चैतन्यदेव का अनुभव होता है, रागादि कोई भी परभाव तब दिखाई नहीं देता, शरीरादि कोई भी पर पदार्थ तब दिखता नहीं, अकेला चैतन्य देव ही अद्भुत अनंत गुण स्वरूप वेदन में आता है। आत्मा और शरीर दोनों एकदम भिन्न–भिन्न ही हैं, आत्मा तो जानने वाला ज्ञायक देव है। जाननार–जाननार तत्त्व का हमेशा रटन करनेयोग्य है। आत्मतत्त्व की खूब जिज्ञासा वृद्धि को प्राप्त हो तो आत्मप्राप्ति के सन्मुख होता है, क्योंकि इस भव में आत्मतत्त्व के संस्कार अति गाढ़ होते हैं, जैसे धर्मचक्र मुख्य आगे चलता है, वैसे बाहर में देव–शास्त्र–गुरु को मुख्य आगे–आगे रखे तो आत्मा की सन्मुखता आगे बढ़ सकती है।

समयसार यह भरतक्षेत्र में मोक्षरूप, मंगल शास्त्र है। समयसार, मोक्षमार्ग की तैयारी कराता है, समयसार मिला और श्री गुरुदेव के मुख से सुनने मिला यही शुकुन हो गया। पूर्णानंद पद माने की विधि मिल गई और कर्मों का वमन कर डाला, जिसने आत्मा को जाना उसे सरलता से विधि हाथ में आ गई। जिसने समयसार का पक्ष लिया उसे इसके पक्षरूपी पंख मिल गये वह आकाश में उड़कर आगे मोक्ष में जा रहा है।

अनुभव यह मोक्ष का कारण है, अनुभव से ही मोक्ष की धारा बहती है।

आत्मा, आत्मा को पहचानने के लिये रुचि खूब जोरदार प्राप्त करे तो आत्मदेव अन्दर से जगे बिना रहे ही नहीं। रुचि आत्मदेव को खूब आदर देती है। तो आत्मदेव, अन्दर से जागृत होगा ही, इसलिए सभी मुमुक्षु जीवों को आत्मा की रुचि खूब बढ़ाना जैसी है।

Please report errors to Ramaben Parekh: WhatsApp +91 90115 91078 or email ramabenparekh45@gmail.com

Version 001: Updates at http://www.AtmaDharma.com & http://www.AtmaDharma.org

आत्मदेव जागृत हो अर्थात् उसे उनके आनंद का पार नहीं रहता, भव का अंत आ जाय ऐसा आत्मदेव जागृत ही रहता है, पर से भिन्न ही अपनी ज्ञान ज्योति का अनुभव करने वाले के आत्मदेव की पूर्ण प्रतीति निकट में ही है, इसमें संशय नहीं है।

शुद्ध उपयोग प्राप्त हो तो शुद्ध उपयोग में बारंबार लीनता करने का प्रयत्न होता है, तब शुद्ध उपयोग का कोई हरण कर सकता नहीं।

इसप्रकार आनंद से–उमंगपूर्वक वहाँ के दिन पूर्ण करके जब सोनगढ के लिये प्रयाण किया तब नीचे लिखे प्रमाण भाव पूज्य बेन ने व्यक्त किये।

पूज्य बेन को आश्चर्य हुआ कि ओहो, ऐसे कमजोर शरीर से भी मेरी जो शिखरजी की यात्रा करने की भावना बहुत समय से थी वह आज पूर्ण हुई तथा मुझे अति ही संतोष हुआ, ऐसी भावना सहित पू. बेन सोनगढ़ पधारे।

इस संसार में विषयांध जीवों द्वारा कौतूहलपूर्वक भोग–भोगकर जिन्हें छोड़ दिया है अथवा स्वयं ने ही जिन्हें अनेक बार भोगकर छोड़ दिया है–ऐसे छोड़े हुए पदार्थों की तू मोहमूढ़ होकर पुनः पुनः इच्छा करता है। तून उन परवस्तुरूप भोगादि में इतना तीव्र रागी हुआ है कि उनको तू बारम्बार आश्चर्ययुक्त और महत्त्वपूर्ण दृष्टि से देख रहा है कि मानो इस क्षण से पूर्व उन भोगादि पदार्थों को तूने पहले कभी देखा नहीं है और न उनका अनुभव किया है। परन्तु भाई! वे भोगादि पदार्थ तूने अनन्त बार भोगे हैं। अरे! तू अकेले ने ही नहीं, परन्तु अनन्त जीवों ने तेरे ही वर्तमान अभिलषित भोगादि पदार्थ भोगे हैं और छोड़े हैं। परंतु भाई! तुझे उसकी की सुध नहीं रही है, इसीलिये तेरे तथा अनन्त जीवों द्वारा बारम्बार छोड़ी हुई उच्छिष्ट (जूठन) को तू बारम्बार पुनः पुनः आदरणीय भाव से तथा आश्चर्ययुक्त रूप से ग्रहण करता है। **—श्री आत्मानुशासन**

Please report errors to Ramaben Parekh: WhatsApp +91 90115 91078 or email ramabenparekh45@gmail.com

Version 001: Updates at http://www.AtmaDharma.com & http://www.AtmaDharma.org

साक्षात् भगवान ने भेंटने का आनंद

वि.सं. २०४४ (ई.स. १९८७) के कार्तिक सुद ८ वीं के दिन दक्षिण की यात्रा में भगवान श्री बाहुबली के धाम में संघ सहित पहुँचे तथा यात्रा के दिन भगवान श्री बाहुबली के सन्मुख बैठकर भाई हुई भावना उसे पू. बेन के हस्तांक्षरों में वांचो—

ता. १-११-८९ श्रवणबेलगोला—श्री परम पूज्य बाहुबली भगवान के आज साक्षात् दर्शन हुए, अहा! वीतरागी दर्शन से वीतरागता की आराधना की भावनापूर्वक बाहुबली भगवान के दर्शन हुए, अति–अति आनंद हुआ, रोमांच उछला मानो कि साक्षात् भगवान की भेंट हुई, बहुत महिनों की भावना प्रभुजी के प्रताप से पूर्ण हुई, ये प्रभु अद्भुत मुद्राधारी, धन्य अवतार। बाहुबली भगवान का! बाहुबली भगवान की जय हो!

बाहुबली भगवान की खूब ही उल्लासपूर्वक भक्ति–पूजा कराई तो सभी मुमुक्षु उल्लासपूर्वक अनंद से नाच उठे, तब पू. बेन बाहुबली भगवान के समक्ष बोली कि हे नाथ! आप के चरणों में मस्तक झुकाने में मेरी बहुत काल की भावना आज फलीभूत हुई। वहाँ से आगे चलकर मूडबिद्रि–धर्मस्थली, कारकल आदि तीर्थों की यात्रा करते हुए पोन्नूर हिल तीर्थधाम में पहुँचे, वह कार्तिक वदी सप्तमी का दिन अर्थात् अपने तारणहार पूज्य गुरुदेव के वैराग्य का दिन उस दिन कुदरत में गुरुवार था, इसलिए पू. बेन ने संघ को कहा कि देखो! आज तीन गुरुओं का कैसा कुदरत में सुन्दर मेल बना है कि—

(१) अपने 'गुरुदेव का' समाधिदिन।

(२) पू. कुंदकुंद आचार्यदेव अपने गुरु के गुरु।

(३) कुदरत में आज आया भी गुरुवार।

इस यात्रा में इस प्रकार मेल किया तथा पू. गुरुदेव के विरह की बात करी कि आज अपने बीच से पू. गुरुदेव चले गये, तब मुमुक्षुओं के नेत्र सजल हो गये। कुंदकुंद प्रभु ने यहाँ शास्त्र रचे और कहान गुरु ने उनका हार्द/रहस्य समझाया, अपने को जो 'आत्मा' शब्द सिखाया है तो पू. गुरुदेव हैं, उनका तो अपने ऊपर महान–महान उपकार है, उसके बाद पूजा एवं वैराग्यमय भक्ति कराई।

Please report errors to Ramaben Parekh: WhatsApp +91 90115 91078 or email ramabenparekh45@gmail.com

Version 001: Updates at http://www.AtmaDharma.com & http://www.AtmaDharma.org

पूज्य बेन का बनाया हुआ गीत

गुरुजी मेरे जरूर आना, दर्शन सेवक को जरूर देना।
अंकुरारोपन करके नाथ कहाँ गये, उसे सींचन करने जरूर आना।।

हम बालकों को छोड़ स्वर्ग में गये, दृष्टि हम पर जरूर रखना।
दर्शन देने जरूर आना, नहीं तो प्रभु हमको वहाँ बुला लेना।।

गुरुजी आपकी शक्ति है अति, दर्शन सेवक को जरूर देना।
सुवर्णपुरी के भक्त प्रभु तरसते हैं, शिरछत्र हमारे अदृश्य हो गये।।

तीर्थ की प्रभु रचना बहुत करी, उसे देखने जरूर आना।
शक्ति आपकी जरूर अधिक है, दीनानाथ तू पुनः जरूर आना।।

आप का विरह सहनीय नहीं, समाधान की शक्ति दीजिये।
सीमंधरनाथ की वाणी सुनी होगी, उसकी सुगंध हमको दीजिये।।

गुरुजी मेरे जरूर आना, दर्शन सेवक को जरूर देना।

पूज्य शान्ताबेन की ७८ वाँ जन्मदिन शत्रुंजय तीर्थधाम में

वि.सं. २०४४ (ई.स. १९८७) के फागुनसुद ११ के दिन संघ सहित सोनगढ़ से शत्रुंजय सिद्धिधाम में पू. बेन पधारी और तलहटी में पांडव महामुनिराजों को बहुत ही याद करके तथा कब ऐसा मुनिपद प्राप्त होगा– ऐसी भावना सहित भक्ति–पूजन किया।

धन्य पांडव मुनि आतमहित में छोड़ दिया परिवार

कि तुमने छोड़ा सब संसार.....

एक ही वर्ष में पू. बेन ने तीन यात्रायें कीं।

Please report errors to Ramaben Parekh: WhatsApp +91 90115 91078 or email ramabenparekh45@gmail.com

Version 001: Updates at http://www.AtmaDharma.com & http://www.AtmaDharma.org

शत्रुंजय तीर्थधाम में आत्मकल्याण के लिये लिखे हुए पूज्य बेन के हस्ताक्षर

आत्मा आत्मा को परखने के लिये खूब जोरदार रुचि होती होगी तो आत्मदेव अंदर से जागे बिना रहेगा ही नहीं। रुचि आत्मदेव को खूब आदर देती है तो अन्दर से आत्मदेव जागृत होगा ही। इसलिए सभी मुमुक्षु जीवों को आत्मा की रुचि अति अति बढ़ाना योग्य है।

आत्मदेव जागृत हो अर्थात् फिर तो इसके आनंद का पार ही नहीं रहा। भव का अंत आ जाता है तथा आत्मदेव तो जागृत ही जागृत रहता है पर से भिन्न ही अपनी ज्ञानज्योति को अनुभवता है, उसे आत्मदेव की पूर्ण प्राप्ति अवश्य निकट में है, इसमें संशय ही नहीं।

पूज्य गुरुदेव की ९९ वीं जन्मजयंति राजकोट के आंगन में पूज्य बेन ने उस दिन चौसठ ऋद्धि मंडल विधान की पूजा अति ही प्रमोद भाव से कराई तथा प्रत्येक ऋद्धि धारी मुनिराजों का महात्म्य भी साथ में अपूर्व रूप से समझातीं गई, पू. बेन की ऐसी भक्ति तथा पूजा का उल्लास भाव देखकर राजकोट के मुमुक्षु मंडल पूजा–भक्ति के रंग में रंग गये।

जो विषयजन्य दोष देवों को दुःख देते हैं उनके रहने पर भला साधारण मनुष्य कैसे सुख प्राप्त कर सकते हैं? नहीं प्राप्त कर सकते। ठीक है–जिस सिंह के द्वारा झरते हुए मद से मलिन गंडस्थलवाला अर्थात् मदोन्मत्त हाथी भी कष्ट को प्राप्त होता है वह पैरों के नीचे पड़े हुए मृग को छोड़ेगा क्या? अर्थात् नहीं छोड़ेगा? **—श्री सुभाषितरत्नसंदोह**

Please report errors to Ramaben Parekh: WhatsApp +91 90115 91078 or email ramabenparekh45@gmail.com

Version 001: Updates at http://www.AtmaDharma.com & http://www.AtmaDharma.org

कहान गुरुदेव की ९६ वीं जन्मजयंति के अवसर पर उनके अनन्य भक्त पूज्य शाताबेन द्वारा भावभीनी श्रद्धांजली

इस समय श्री कहान गुरुदेव अलौकिक, परम युगपुरुष थे, ऐसे पुरुष के जन्म होते ही मानो सूर्य भी जगमगाकर चमचमाहट करता हुआ ऊगा होगा, इन गुरुदेव का जन्म चैतन्य आत्मा का चमत्कार बताने के लिये ही हुआ तथा हम सब भक्तों के महाभाग्य से ऐसे महापुरुष का जन्म हुआ।

उनकी तत्त्व से भरपूर भरी हुई वाणी सुनने मिली यह भी महाभाग्य है तथा अपन ने उनकी वाणी में प्रतिपादित तत्त्व को ग्रहण किया यह महा–महाभाग्य है। अहो! गुरुदेव ने तो हम सभी के ऊपर परम–परम उपकार किया है।

श्री जिनेश्वर देव का अद्‌भुत स्वरूप समझाया, इतना ही नहीं, परंतु साक्षात् श्री जिनेश्वर की भेंट कराई, बनारसीदासजी भी कहते हैं न.....

कहत बनारसी अल्पभव स्थिति जाकी,

सोई जिनप्रतिमा प्रमाणी जिन सारखी।।

ऐसे साक्षात् जिनेश्वर के दर्शन कराये, अपने को तो ऐसा ही लगता है कि अपन साक्षात् जिनेश्वर के चरणों में आ गये, दिव्यध्वनि में आये हुए भावों से शास्त्र भरे थे, उन चारों अनुयोगों के सूक्ष्म भाव अनोखी रीत से, अपूर्व तरीके से समझाये। निर्ग्रन्थ दिगम्बर गुरुओं का स्वरूप समझाया, अपने को देव–शास्त्र–गुरु का स्वरूप, पू. गुरुदेव ने अति–अति करुणा करके हृदय के भावों को खोलकर बताये। ऐसे गुरुदेव का धन्य उपकार कभी भी भुलाया नहीं जाता।

पूज्य गुरुदेव का भेदज्ञान इतना अधिक तीक्ष्ण था कि जिसे वह तीक्ष्णधारा लग जाय तो उसके मिथ्यात्व का तो चकनाचूर हो जाय। अंधे को नेत्रवान कर दिया, सोये हुए को जागृत कर दिया तथा सम्पूर्ण भारतभर में ढोल पीटकर बुलंद नाद से भेदज्ञान का नगाड़ा बजाया। पू. गुरुदेव ने भेदज्ञान

Please report errors to Ramaben Parekh: WhatsApp +91 90115 91078 or email ramabenparekh45@gmail.com

Version 001: Updates at http://www.AtmaDharma.com & http://www.AtmaDharma.org

द्वारा आत्मा के अमृत सरोवर को उछाला। अमृतरस पिया तथा हम सभी को भी अमृतरस पिलाया। पू. गुरुदेव का आत्मानुभव उनकी वाणी में झलकता था। आत्मार्थी जीव गुरुदेव का निर्विकल्प अनुभव देख सकते थे। आत्मानुभव उनकी आँखों में तरवरता था। वे प्रखर आत्मानुभवी पुरुष थे। पू. गुरुदेव की वाणी में ऐसी कोई अनुपमता झलकती थी कि ज्ञायकदेव को हथेली में आँवले के समान प्रत्यक्ष वताया है, वह ज्ञायक देव स्वयं ही है, हाजरा हजूर है, ऐसे ज्ञायकदेव का स्वरूप गुरुदेव ने अपूर्व रीत से समझाया तथा सत्य के पथ पर लगाकर भवसमुद्र से तार लिया।

सारी दुनिया में चैतन्य का गुंजार

अभी सारी दुनियाँ में चैतन्य का अभी हो रहा है, यह श्री कहान गुरुदेव का परम–परम प्रताप वर्त रहा है। गुरुदेव ने तो अध्यात्म की रेलमछेल मचाई है।

अहो! धन्य घड़ी! धन्य काल! कि इस काल में ऐसे शूरवीर सिंह केसरी गुरुदेव अपने को मिले तथा अपने ऊपर अनंत–अनंत उपकार किया।

आचार्य भगवान शास्त्रों में चेतन आत्मा के स्वरूप का वर्णन वहुत कर गये हैं। परंतु गुरुदेव अपना अचिंत्य श्रुतज्ञानरूपी लब्धि द्वारा अपने को साक्षात् चैतन्य का स्वरूप हाथ में देते गये हैं कि ले भाई! तू देख तेरा आत्मा ऐसा अद्‌भुत चैतन्य चिंतामणी स्वरूप है उसका अनुभव कर जिससे तेरे जन्म–मरण का चक्कर टल जायेंगे। जगत (के जीवों) का धार्मिक सुख (रुचि) जो दक्षिण दिशा में था, उसे गुरुदेव पूर्व दिशा तरफ कराते गये अर्थात् सारे जगत के जीव खोटे/मिथ्या मार्ग में थे, उन सब को सत्य मार्ग तरफ कर गये।

गुरु दीवो गुरु देवता, गुरुवर गुण की खान।

गुरु बसे जो अंतर में, तो पामें भव नो पार॥

गुरु वसे अंतर मां, इसका अर्थ यह है कि सम्यग्दर्शन–सम्यग्ज्ञान हो वही गुरु कहलाते हैं, उन गुरु को जो पहचाने उसने ही सम्यग्दर्शन को

Please report errors to Ramaben Parekh: WhatsApp +91 90115 91078 or email ramabenparekh45@gmail.com

Version 001: Updates at http://www.AtmaDharma.com & http://www.AtmaDharma.org

पहचाना, इससे उस सेवक को सम्यग्दर्शन–सम्यग्ज्ञान होगा उससे वह भव के अंत को पा लेगा।

ऐसा अपूर्व सत्य पंथ प्रकाशक, परम तारणहार पूज्य उपकारी गुरुदेव के चरणकमल में, अति विनयपूर्वक नमस्कार हो.....नमस्कार हो.....

सद्गुरु सेवक शांताबेन ऐसी भाववाही श्रद्धांजली कहान गुरुदेव जन्म शताब्दी वर्ष के समय सभी के समक्ष प्रगट करते उन्हें ऐसा लगता है कि मानो पू. बेन अपने बीच में ही रहकर आपके साथ ही गुरुदेव ने श्रद्धांजली समर्पित कर रहीं हो।

राजकोट में पू. गुरुदेव का स्मारक भवन तो होने वाला था ही, परंतु पू. बेन की प्रेरणा से भरतजी तथा बाहुबलीजी भगवान के पंचकल्याणक कराने का निश्चय हुआ तथा पू. बेन ने रतिभाई घीया को कहा कि अपने पड़ोस में गिरनार के वासी बालब्रह्मचारी श्री नेमिनाथ भगवान विराजते हैं, इसलिए उनका पंचकल्याणक करो, ऐसी प्रेरणा देते हुए साथ में यह कहा कि विधिनायक नेमिनाथ प्रभु हमारे तरफ से विराजमान करना।

पंचकल्याणक होने की पू. बेन शीघ्रतापूर्वक राह देख रहीं थीं, परंतु उस बीच देह की स्थिति का परिवर्तन होने लगा तथा स्वास्थ्य एक माह से भी अधिक से ठीक नहीं था, उसके पहले से 'भगवती आराधना' का स्वाध्याय किया था। इससे निरंतर समाधिमरण की आराधना चालू थी सदा मुनिराज के समाधिमरण का चिंतवन रहता था, समाधि की भावना भाते–भाते यह गीत रच गया।

धन्य अवतार मुनिराज नो रे लाल
जेने समाधिस्वरूप ग्रहण कर्युं रे लाल
जेने निर्यापक आचार्य ने शोधिया रे लाल
धन्य अवतार मुनिराज नो रे लाल
धन्य भावो मुनिराज नो रे लाल

Please report errors to Ramaben Parekh: WhatsApp +91 90115 91078 or email ramabenparekh45@gmail.com

धन्य समाधि मुनिराज नो रे लाल
करुणानिधि आचार्यदेव हैं रे लाल
वात्सल्यभावे देखे मुनिराज ने रे लाल
धन्य अवतार मुनिराज नो रे लाल
गुरु शिष्य नी अपूर्वता रे लाल
वात्सल्यभावे रहें संघ मां रे लाल
धन्य अवतार मुनिराज नो रे लाल
कृपानिधि आचार्यदेव हैं रे लाल
जिनके चरणों में समाधि करें भाव से रे लाल
धन्य अवतार मुनिराज नो रे लाल
आचार्य को वंदन करूं भाव से रे लाल
मुनिराज को नमन करूं भाव से रे लाल
धन्य भावो मुनिराज नो रे लाल
धन्य अवतार मुनिराज नो रे लाल

इस संसार में परम सुख क्या है? तो वह एक इच्छारहितपना है तथा परम दुःख क्या है? तो वह इच्छाओं का दास हो जाना है। ऐसा मन में समझकर जो पुरुष सर्व से ममता त्यागकर जिनधर्म को सेवन करता है, वही पुण्यात्मा पवित्र है। शरीर व शरीर के संबंधियों के संबंध में चिंता करना इच्छाओं को पैदा करने का बीज है और इनसे मोह त्यागना ही इच्छाओं के मिटाने का बीज है।

—श्री सुभाषितरत्नसंदोह

Please report errors to Ramaben Parekh: WhatsApp +91 90115 91078 or email ramabenparekh45@gmail.com

Version 001: Updates at http://www.AtmaDharma.com & http://www.AtmaDharma.org

पूज्य बेन शान्ताबेन की समाधिमरण की भावना

समाधिमरण के लिये सभी सामग्री मेरे पास तैयार है। मेरा ज्ञान मेरे सन्मुख तरवरता है, उसे मलीन करने के लिये कोई समर्थ नहीं, मेरे भाव को मैं जानती हूँ।

मैं तो भगवान की ''दास'' हूँ, मेरे उज्ज्वल स्वरूप को भगवान ने स्वीकारा है, सभी केवलज्ञानियों के ज्ञान में मेरा स्वीकार हुआ है। पर में कहीं सुख नहीं, तो पर में क्यों रुचि जाने देना चाहिए, नहीं जाने देनी।

मेरे ज्ञायक में अनंत शक्ति पड़ी है, इसलिए सम्यग्दर्शनपूर्वक देह छोड़ना है, मुझे मेरा रत्न साथ लेकर जाना है। मैं आराधना में परिपूर्ण रूप से लगकर सभी गुणों की आराधना करके पूर्ण दशा प्राप्त करूँ।

मुनिराज उपसर्ग आने पर समता में आरूढ़/लीन होकर केवलज्ञान प्राप्त करते हैं।

अभी से मोक्षमार्ग की यात्रा करने की तैयारी कर रखी है।

हम को छोड़कर चले सब पंथी

जाते अपने 'गाम' हम भी सबको

छोड़कर चलेंगे अपने ''ध्रुवधाम'' में।

पूज्य शान्ताबेन के मुख से सुने हुए निश्चय और व्यवहार पंचकल्याणकों के स्वरूप

शुद्ध चिद्रूप मेरे हृदय में सदा विराजमान हो, प्रगट हो, मौजूद हो, ''अति मीठा शब्द लगता है।''

आत्मा के पंचकल्याणक की विधि

प्रश्न :—विराजमान किसप्रकार करना ?

उत्तर :—भगवान की जैसे सभी विधि होती है वैसे ही आत्मा में भी सब विधि होती है।

Please report errors to Ramaben Parekh: WhatsApp +91 90115 91078 or email ramabenparekh45@gmail.com

Version 001: Updates at http://www.AtmaDharma.com & http://www.AtmaDharma.org

प्रश्न :—कैसा पंचकल्याणक व उसकी विधि कैसी होती है?

उत्तर :—हाँ, आत्मा के पंचकल्याणक–ज्ञानकल्याणक, दर्शनकल्याणक, बलकल्याणक, तपकल्याणक, चारित्रकल्याणक ऐसे कल्याणक करे तो बाद में विराजमान हो जाते हैं।

गर्भ और जन्म तो शरीर का कल्याणक है और यह तो आत्मा के कल्याणक हैं कि ज्ञानकल्याणक करना, दर्शनकल्याणक करना, चारित्रकल्याणक करना, मुनिदशा में तप कल्याणक करना तभी कल्याणक किये अर्थात् विराजमान हो जाते, ये निश्चय कल्याणक हैं और तो ये सब व्यवहार कल्याणक हैं, भगवान गर्भ में आये तो शरीर गर्भ में आया जो शरीर का कल्याणक हुआ–भगवान ने जन्म लिया तो शरीर का कल्याणक हुआ, ये तो आत्मा के कल्याणक करने जैसे हैं। सम्यग्दर्शन प्राप्त करो अर्थात् ज्ञानकल्याणक हुआ, तब से शुरुवात हो गई यह गर्भकल्याणक है। भगवान का शरीर गर्भ में आया, उसी तरह सम्यग्दर्शन प्राप्त किया अर्थात् ज्ञानकल्याणक हुआ। सम्यग्दर्शन और ज्ञान प्रगट किया अर्थात् जन्मकल्याणक हुआ, 'यह चेतना का जन्म हो गया।'' चारित्र अंगीकार–चारित्रभाव–स्वरूप की रमणता/स्थिरता अर्थात् चारित्रकल्याणक हुआ, यह तपकल्याणक हुआ, बस ये तीन कल्याणक हुए अर्थात् भगवान विराजमान हो जाते हैं। केवलज्ञान प्रगट हो अर्थात् साक्षात् भगवान हो जाने के बाद यह चैतन्यदल पूरी वेदी है। पूरा पिंड है यह उनकी वेदी है, उसमें ज्ञान–दर्शन–चारित्ररूप विराजमान कर–स्थिर कर दिये, वेदी अर्थात् चैतन्यकंद में वह दशा स्थिर हो, उसने वेदी में आत्मदेव विराजमान किये

प्रश्न :—आत्मा की विधि कराने वाले प्रतिष्ठाचार्य कौन हैं?

उत्तर :—प्रतिष्ठाचार्य सर्वज्ञ भगवान, केवली भगवान, आचार्य भगवान हैं। ये प्रतिष्ठाचार्य हैं। वे आचार्यदेव सभी सम्यग्दर्शन–ज्ञान–चारित्र प्रगट कराते हैं, उनकी विजयध्वजा से माहकर्म का नाश ह ओ जाय और चैतन्य की विजय प्राप्त हो तभी विजयध्वजा फरकती है। तब कलश–रत्नत्रय के चढ़ गये,

Please report errors to Ramaben Parekh: WhatsApp +91 90115 91078 or email ramabenparekh45@gmail.com

यथाख्यात चारित्र पूर्ण हो गया अर्थात् कलश चढ़ गया, बड़ा कलश चढ़ गया, ऐसे भगवान विराजमान करो जो अपने पास हंमेशा रहें, ये विधिपूर्वक विराजमान हुए। यजमान स्वयं आत्मा। यजमान अर्थात् सेठिया, प्रतिष्ठा कराने वाला ऐसा यजमान यह आत्मा। रत्न की राशि ये धन, पुरुषार्थरूपी धन से– रत्नराशि से रत्नत्रयरूपी धन प्रगट हो जाय, इस धन से आत्मा में काम हो, यही ज्ञायकदेव आत्मा की प्रतिष्ठा हो गई। इस प्रतिष्ठा की बाहर में बहुत महिमा है और इस चैतन्यप्रभु के पंचकल्याणक की भी अति ही महिमा है। वह पूर्ण हुई केवलज्ञान प्राप्त होकर सिद्धालय में विराजमान होकर, ऐसी इसकी महिमा है। जैसे भगवान का जन्म होते ही इन्द्र हजार नेत्र करके निहारते हैं। वैसे ही इस चैतन्य का जन्म होते ही सम्यग्दर्शनरूपी इन्द्र चैतन्य भगवान को हजार नेत्रों से नहीं परंतु अनंत ज्ञानचक्षु से देखते हैं/निहारते हैं कि अहो! मैं ऐसा चैतन्य हूँ! ऐसा मेरा स्वरूप है!!

चेतनस्वभावी तुं तो देव छो, अनंत गुणो उछले झगमगाट रे।

चेतन जी प्यारा चेतनता तारी तुं निहाल जे.....

अनंतगुणो धारी तुं देव छो, ज्ञानदृष्टि थी देखाय प्रत्यक्ष देव रे... चेतनजी प्यारा
चैतन्यरस से तुं तरबोड़ छो, आतमरस की ऊठे रेलमछेल रे..... चेतनजी प्यारा
आनंदना धाम ने तुं तो पा जे, पूर्ण करजे त्यां वसवाट रे..... चेतनजी प्यारा
सर्वे कार्यो तारा सिद्ध थशे, पूर्णानंदी देवने देखजे नाथ रे..... चेतनजी प्यारा
स्व स्वरूप में तारो वास छे, अलौकिक अनुपम चैतन्यदेव रे.....चेतनजी प्यारा
तारा चैतन्य ने निहालता, भव ना कांई आवे छै अंत रे..... चेतनजी प्यारा
सिद्धस्वरूपी तुं तो देव है, सिद्धस्वरूपे झट थावुं नाथ रे..... चेतनजी प्यारा
आ देह मां बैठो अदेही देव छो, पर नो लागे न कांई वडगाड रे.. चेतनजी प्यारा
गुरुजी सत्य समजावीयुं, उपकार गुरु नो धरजे रह माही रे..... चेतनजी प्यारा
मुक्तिपुरी ने तुं प्राप्त था, त्यां सुधी राख जे देव–गुरु नो साथ रे.....
चेतनजी प्यारा चेतनता तारी तुं निहाल जे.....

Please report errors to Ramaben Parekh: WhatsApp +91 90115 91078 or email ramabenparekh45@gmail.com

Version 001: Updates at http://www.AtmaDharma.com & http://www.AtmaDharma.org

ता. २३-८-८८ को शनिवार पूज्य बेन के शरीर में कमजोरी के कारण निकले उद्‌गार

''समाधि प्राप्त करने में सर्वप्रथम उपयोग की शुद्धि बाद में मन–वचन–काय की शुद्धि रखना यही वास्तव में सच्ची समाधि है।''

इतना स्वास्थ्य कमजोर होने पर भी नित्य अपने क्रम रूप से प्रतिदिन भाव पूजा, स्वाध्याय तथा शाम को सामायिक पाठ करती थीं।

प्रतिदिन डॉक्टर तबियत देखने आते तब पूज्य बेन के साथ धार्मिक चर्चा करते।

पूज्य बेन की सुबह प्रसन्न मुद्रा को देखकर डॉक्टरों को ऐसा हो गया कि बेन अपने आप में मस्त हैं तथा असाता के उदय के प्रति किसनी उदासीता है, यह उनकी मुख मुद्रा पर स्पष्ट जानने में आ रहा था।

कुछ दिन पहले बुखार नहीं उतर रहा था, तब निदान कराने के लिये डॉक्टरों ने पू. बेन से बात की कि बाजु में ही नर्सिंग होम है, वहाँ से आपकी ट्रीटमेन्ट कराना है। यह सुनकर तुरंत ही पू. बेन बोली कि इस रूप में बाहर जाने का नौ नौ कोटी से त्याग है। आप लोगों को जो करना हो वह इस रूम में करो। तब चंदुभाई डॉक्टर बोले कि बेन हमें आप शरीर सोंप दो, हम आपके शरीर के डॉक्टर हैं, आप तो अपने ज्ञायक को संभालो और ज्ञायक के डॉक्टर बन जाओ, तब पू. बेन हँसे। उसके कुछ दिनों बाद डॉक्टरों ने उपयोग की सावधानी रखने के लिये पू. बेन से कहा कि बेन! आपके शरीर की स्थिति दिन–प्रतिदिन कमजोर होती जा रही है। तब पू. बेन बोलीं कि शरीर की स्थिति कमजोर होती जा रही है न? परंतु मेरा ज्ञायक देव तो दिन–प्रतिदिन पुष्ट होता जाता है, ऐसा जोरदार जवाब डॉक्टरो को दिया, यह देखकर यहाँ बैठे हुए प्रत्येक मुमुक्षुओं को बड़ा आश्चर्य तथा प्रसन्नता हुई।

Please report errors to Ramaben Parekh: WhatsApp +91 90115 91078 or email ramabenparekh45@gmail.com

प्रश्न :—इतनी शरीर में वेदना होने पर भी निर्विकल्प दशा आ सकती है ?

उत्तर :—क्यों नहीं आ सकती ? जरूर आ सकती है, मेरे उपयोग में सभी के प्रति उदासीनता वर्त रही है तथा ज्ञायकदेव में उपयोग बारंबार केली करता है।

अंतिम पाँच दिन पहले श्री कुंदकुंद ज्ञानचक्र राजकोट में आया तब पू. बेन ने अपने घर के आँगन में हीरा, मोती और चांदी के पुष्पों से उल्लासपूर्वक श्री समयसार जिनवाणी को बधाया (बधाई की) और तभी मांगलिक सुनाया।

श्रुत पंचमी

आज के दिन आचार्य श्री धरसेन देव द्वारा दिया हुआ ज्ञान को पुष्पदंत मुनिराज और भूतबली मुनिराज ने अच्छी तरह अवधारण/ग्रहण करके शास्त्रों की रचना की, आज के दिन अंकलेश्वर में उत्सव किया था, इससे आज के दिन का ''श्रुतपंचमी'' नाम रखा गया है।

धन्य हैं वे धरसेन आचार्यदेव, पुष्पदंत मुनिराज, जिनने आत्मज्ञान की आराधना करते हुए साथ ही साथ श्रुतज्ञान का भी इतना प्रचार किया।

धन्य हैं वे कुंदकुंद आचार्यदेव और अमृतचंद्रदेव जिनने आत्मस्वरूप की कैसी मस्ती/धुन लगाई और कितने मार्मिक भाव समयसार, प्रवचनसार, पंचास्तिकाय इत्यादि शास्त्रों से भरे हैं, जिन्हें वांचने से आत्मा अनंत गुण स्वरूप उछलते हैं, असंख्यात प्रदेशों में आनंद होता है।

—पूज्य बेन

Please report errors to Ramaben Parekh: WhatsApp +91 90115 91078 or email ramabenparekh45@gmail.com

Version 001: Updates at http://www.AtmaDharma.com & http://www.AtmaDharma.org

पूज्य बेन द्वारा रची गई श्रुतपंचमी की भक्ति

वीर वाणी आज जैन शासनमां,
झलक्या महिमावंत आज भविया आवो ने सुनवा।।१।।
धरसेन आचार्यदेव वीर वाणीना, रहस्य दीधा मुनिराज.....भविया आवो।।२।।
पुष्पदंत भूतबली महामुनिराजे, शास्त्र रचना करी आज.....भविया आवो।।३।।
षट्खंडागमनी अपूर्व रचना, पूर्णथई छै आज.....भविया आवो।।४।।
अंकलेश्वर देश मां महोत्सव थाय, शास्त्र पूर्णाहुती दिन.....भविया आवो।।५।।
देवदेवेन्द्रो आज अंकलेश्वर उतर्या, जिनवाणी नो महिमा गाय...भविया आवो।।६।।
देवदेवेन्द्रो मुनिराज पूजता, गजावे जय जयकार.....भविया आवो।।७।।
कहानगुरुयुग ना शासनकाल मा, शास्त्रो मल्या थोके थोक.....भविया आवो।।८।।
षट्खंडागम ना महान शास्त्र मां, बार अंगों नो छे सार.....भविया आवो
चौद पूर्व नो छे सार.....भविया आवो।।९।।
कहानगुरुदेव नो छे परम प्रतापे, ठेर ठेर स्वाध्याय थाय
घेर घेर स्वाध्याय थाय.....भविया आवो।।१०।।
देव, शास्त्र, गुरुनी महिमा अपार छे, चेतना ना दर्शन थाय.....भविया आवो।।११।।

उस ज्ञानचक्र की खुशयाली में जिनमंदिर में पू. बेन की तरफ से पंचपरमेष्ठी मंडल विधान रचाया था। इन पाँच दिनों के प्रोग्राम में भक्तों एकत्रित हुआ देखकर पू. बेन बोलीं कि इन सबको ज्ञानरूपी नेत्र के स्तंभ में बांध लिया है।

ज्ञान आत्मा में एकाग्र हुआ वहाँ लक्ष–लक्षण भेद का विकल्प भी नहीं रहा और द्रव्य–पर्याय अभेद हो गये; इसलिये ज्ञान लक्षण से पृथक् कोई लक्ष्य नहीं है। लक्ष्य–लक्षण अभेद हैं। प्रसिद्धत्व और प्रसाध्यमानत्व के कारण लक्ष्य–लक्षण का विभाग किया गया है।

—प्रवचन रत्नाकर पीयूष, पृष्ठ–८८

Please report errors to Ramaben Parekh: WhatsApp +91 90115 91078 or email ramabenparekh45@gmail.com

श्री कुंदकुंद ज्ञानचक्र को बधातीं हुई पूज्य बेन द्वारा रचा हुआ गीत कुंदकुंद ज्ञानचक्र की बधाई

धन्य अवतार कुंदकुंद नो रे लाल
कुंदकुंद ने वंदन करूं भाव थी रे लाल.....धन्य
वीरना वारस प्रभु जागीया रे लाल
रत्नों ना थाल भरी वधावीये रे लाल.....धन्य
दैवी वाजिंत्रो गाजता रे लाल
राजपुरी शहेर ना प्रांगणे रे लाल.....धन्य
गुरु कहाने ते कुंदकुंद शोधीया रे लाल
जिनवाणीना रहस्य समजाव्या रे लाल....धन्य
भव्य जीवो ना अहो भाग्य छे रे लाल
कुंदवाणी पंच परमागमे रे लाल.....धन्य
शासन स्थंभ प्रभु जागीया रे लाल
श्रुतकेवली कुंदकुंददेव छो रे लाल....धन्य
धन्य वनवासी कुंदकुंद मुनिवरा रे लाल
स्वागत करूं हूं भाव थी रे लाल.....धन्य

जहाँ सत्य का श्रवण नहीं है वहाँ ग्रहण नहीं है, जहाँ ग्रहण नहीं है वहाँ धारणा नहीं है, जहाँ धारणा नहीं है वहाँ रुचि नहीं है और जहाँ रूचि नहीं है वहाँ परिणमन नहीं होता।

—प्रवचन रत्नाकर पीयूष, पृष्ठ–८९

Please report errors to Ramaben Parekh: WhatsApp +91 90115 91078 or email ramabenparekh45@gmail.com

Version 001: Updates at http://www.AtmaDharma.com & http://www.AtmaDharma.org

पूज्य बेन की समाधिपूर्वक चिरविदाई

अंतिम तीन दिन के पहले दिन बेन ने मौनव्रत लिया और उस दिन एक बार ही आहार लिया। दूसरे दिन एक बार ही मात्र दूध लिया था और तीसरे दिन अर्थात् अंतिम दिन मात्र पानी लिया था। बाद में शाम को ४ बजे संघ की हाजरी में प्रत्याख्यान (सल्लेखना व्रत) ले लिया था, इसप्रकार क्रम, क्रम से आहार–पानी का त्याग किया। जब मौनव्रत लिया था तब बोलीं कि अब ''मुझे सभी के प्रति उदासीनता हो गई है।'' उसके बाद पू. बेन जेठ सुद १० शुक्रवार ता. २४-६-८८ की रात को १० बजे के ५ मिनिट के बाद समाधि मरण सहित इस नश्वरदेह को छोड़कर स्वर्ग में सिधारे। अंतिम समय में उनको शांति, समता, समाधि तथा एकाग्रता ऐसी थी कि मृत्यु महोत्सव बन गया, धन्य वह समाधि।

शांत स्वरूप मां लीन थई, समताधारी महान,
धन्य समाधि ये मातनी, वंदन बारंबार।
वे वे महिनानी भावना, भावी समाधि नी मात,
ज्ञायक ज्ञायक घोल्यो, रह्या स्वरूप ये मांही।
सर्व संघ नी साक्षीये, लीधा प्रत्याख्यान,
जेष्ठ सुदी दशमी दिने, रात्रिये दश ने पाँच,
चिरकाल नी विदाय लई, भेट्या सीमंधर नाथ।

अनन्त गुणों से अभेद आत्मा को दृष्टि में लिया गया वहाँ अनन्त ही शक्तियाँ एकसाथ निर्मल स्वरूप में परिणमित होने लगती हैं। जहाँ ज्ञान अभेद आत्मा को लक्ष्य में लेकर परिणमित हुआ वहाँ उस ज्ञप्तिमात्र भाव के साथ अनन्त शक्तियाँ भी निर्मलस्वरूप में उछलती हैं। —प्रवचन रत्नाकर पीयूष, पृष्ठ–९१

Please report errors to Ramaben Parekh: WhatsApp +91 90115 91078 or email ramabenparekh45@gmail.com

चेतना को जागृत करने को संबोधनरूप

चेतना ने जागृत करवा सौ जगावे आतमराम
तमे जागता सोहो.....॥१॥
जागृत चेतना पूर्ण करवा, प्रयत्न करजो आज
तमे तो जागता सोहो.....॥२॥
अनंत जिनेश्वर मुक्ति ने वरीया जाग्या निरंतर नाथ
तमे तो जागता सोहो.....॥३॥
अनंत मुनिश्वर सिद्धि पाम्या साध्युं निज नुं काम
तमे तो जागता सोहो.....॥४॥
ज्ञान दर्शन रमणता मां, रमजो हर हमेश
तमो तो जागता साहो.....॥५॥
देव–गुरु जिनवाणी नी सेवा करजो दिन ने रात
तमे तो जागता सोहो.....॥६॥
जागवानो प्रयत्न करीने, करजो आत्मकल्याण
तमे त जागता सोहो.....॥७॥
बाह्य अभ्यंतर परमात्माने, लेजो साथो–साथ
तमे तो जागता सोहो.....॥८॥
द्रव्य स्वरूप मां दृष्टि करीने, थाजो आरूढ़ नाथ
तमे तो जागता सोहो.....॥९॥
करी करीने करवानुं छे, तारो एक ज काम
तमे तो जागता सोहो.....॥१०॥
चेतनराम ने जागृत राखवा एक ज तारूं काम
तमे तो जागता सोहो.....॥११॥
जड़ चेतन ने जुदे–जुदा नजरे निहारी नाथ
तमे तो जागता सोहो.....॥१२॥
बेन बे–चार चोख्खी दीवा जेवी वात
तमे तो जागता सोहो.....॥१३॥
गुरुदेवे चेतना बताव्यो, आखो आतमराम
तमे तो जागता सोहो.....॥१४॥
गुरु उपकार कदी न भूलाय भवो भवनी मांय
तमे तो जागता सोहो.....॥१५॥

Please report errors to Ramaben Parekh: WhatsApp +91 90115 91078 or email ramabenparekh45@gmail.com

Version 001: Updates at http://www.AtmaDharma.com & http://www.AtmaDharma.org

पूज्य बेन ने पूज्य बेनश्री को लिखा पत्र

चैतन्य रत्नाकर ज्ञाता पूज्य गुरुदेव को अत्यंत भक्ति से नमस्कार

१९९२ चैत्र वदी १२ शनिवार

कृपालु पूज्य बेनश्री

आपको मैंने कल पत्र लिखा है वह आज सुबह मिल गया होगा, आप का गुरुवार का लिखा पत्र आज मिला है। आप का शरीर सुखाकृत वर्त रहा है यह जानकर शांति हुई। इस शरीर में सीने में अब कुछ विशेष उदय (दर्द) नहीं परंतु कमजोरी का उदय तो अभी रहता है, बोलने में विशेष कमजोरी अब नहीं लगती परंतु चलने में थोड़ा थोड़ा दहलान में से घर में धीरे–धीरे चल सकते हैं, धीरे–धीरे शक्ति आ जायेगी ऐसा संभव लगता है, देखते हैं उदय कैसा प्रवर्तता है, बांकी तो क्या है?

आज से थोड़ी भोजन की शुरूआत हुई है। अधिकतर यह शरीर धीरे धीरे ठीक होता जायेगा ऐसी योग्यता जानने में आती है, बांकी तो सब उदयाधीन है उसमें क्या? स्वयं तो जाननार होने से ज्ञायक में स्थिर रहकर उदय को जाना करता है।

आप लिखते हो वह सत्य ही है कि परमाणु की स्वतंत्र योग्यता अनुसार वह परिणमता है, वह असाता के उदय में आत्मा स्वयं जितना सहज स्वरूप में समभावरूप प्रगट परिणमता है वही आनंद है तथा विशेष–विशेष समभाव रूप में स्थित होकर परिणमे ऐसी भावना रहती है।

अहा! इस जीवन में जितनी सफलता प्राप्त करने योग्य है उसे प्राप्त करना इसमें श्री सद्गुरुओं का ही प्रताप है, उन श्री गुरुओं को बहुमानपूर्वक बारंबार वंदन/नमस्कार हो।

धन्य हैं वे आत्मायें जिनका विशेषरूप से बाह्य लक्ष्य छूट गया है, मुख्य रूप से विशेषतापूर्वक स्वरूप में उपयोग परिणमता है अथवा तो बाह्य उपयोग

Please report errors to Ramaben Parekh: WhatsApp +91 90115 91078 or email ramabenparekh45@gmail.com

Version 001: Updates at http://www.AtmaDharma.com & http://www.AtmaDharma.org

सर्वथा पलटकर वह सर्वथा प्रगट सहज स्वरूप से परिणमे वह ''महा'' आनंद को भोगता है, ऐसी आत्मायें धन्य हैं बारंबार धन्य हैं।

ऐसी आत्माओं का जिन्हें दर्शन हुआ है उन्हें भी धन्यवाद, सहज स्वरूपस्थित दशा के आनंद को धन्य है।

अहो अहो हूँ मुझने नमुं नमो मुझ नमो मुझ रे

अमीत फल दान दातार नी जेथी थई तुझ भेंट रे

श्री सद्गुरुदेव के प्रताप को धन्य है!

जिन्दगी की सफलता करायें ऐसे सद्गुरुओं को बारंबार वंदन है। हे गुरुदेव! इस पामर पर अनहद कृपा की है। अद्वितीय श्री गुरुदेव के जैसा इस जगत में कोई मिले ऐसा नहीं। अपने महाभाग्य यह रत्न गुरुदेव अपने को मिले हैं। अब तो निरंतर उनके चरणो में बास रहे यही भावना है।

आप श्री वांचन विचार करके विशेष ज्ञान परिणाम का लाभ लेते होंगे। अपने श्री सद्गुरुदेव को बहुमानपूर्वक बारंबार नमस्कार हो, वे सर्व सुखशांति में विराजमान होंगे। तबियत अच्छी होगी।

आपने पत्र में गायन भेजा है वह बहुत ही अच्छा है वह वर्तमान में आत्मा को लाभ होने में निमित्तरूप है।

एज ली. सद्गुरु सेवक ना परम भक्तिभावे वंदन

आत्मा सदैव अपनी जीवत्वशक्ति से ही जी रहा है; इसलिये यह जीवत्वशक्ति आत्मद्रव्य को कारणभूत है। शरीर, आयु, रोटी आदि परवस्तुएँ आत्मा के जीवन का कारण नहीं हैं। वास्तव में कारण–कार्य पृथक् नहीं हैं।

—प्रवचन रत्नाकर पीयूष, पृष्ठ–९३

Please report errors to Ramaben Parekh: WhatsApp +91 90115 91078 or email ramabenparekh45@gmail.com

Version 001: Updates at http://www.AtmaDharma.com & http://www.AtmaDharma.org

परम उपकारी श्री गुरुदेव को परम भक्ति से नमस्कार

१९९३ कार्तिक बुधवार

कृपालु पूज्य वेनश्री

आपके हस्ताक्षरों के पत्र की राह देखती हूँ।

पूज्य गुरुदेव सुखशांति में विराजते हैं, यह जानकर आनंद हुआ। आप भी सुखशांति में होंगे। आपको कोई प्रकार से भी कुछ भी वाह्य परेशानी न हो, आपको सभी प्रकार से सुखशांति हो ऐसा समाचार जानने की भावना है, वह आपकी कृपा से जानने में आयेगा।

यहाँ स्वाध्याय में समयसार चल रहा है। मोक्षमार्गप्रकाशक अभी जरा भी नहीं पढ़ा गया। कारण कि समयसार ऊहापोहापूर्वक वांचने से उसमें वहुत रंग आता है इससे उसके प्रति का लक्ष्य छूटकर मोक्षमार्ग प्रकाशक पढ़ने कीई दृष्टि का झुकाव नहीं होता। समयसार के एक एक शब्द के रहस्य ऊपर दृष्टि करते उसमें अति अति रहस्य–आशय हैं ऐसा भासित हुआ करते हैं। परंतु उसमें सद्गुरु प्रताप से जितनी शक्ति उघड़ी उसके अनुसार खोल सकते हैं। वाकी तो ज्ञान अनंत शक्ति वाला है अर्थात् वह परिपूर्ण उखड़े विना पूर्ण तो कहाँ से हो?

कृपालु गुरु ने इस प्रकार से स्वाध्याय करने की आज्ञा दी यह एक महान उपकार किया है। उपकारी सद्गुरु वे तो प्रथम से अंत त उपकार ही कर रहे हैं। ''गुरुकृपा से होंगे वही स्वरूप जो'' यही वस्तु का नियम है। सहज स्थिति अनुसार वांचन विचार ध्यान वगैरह हुआ करता है, उसे आपश्री सव जानती हो फिर भी भावना होने से लिखने में आ जाता है।

यहाँ जिस वेष की वदलाहट करने का है उसकी आज्ञा मिल गई है, अव कल गुरुवार को अथवा परसों शुक्रवार के दिन इन दो में से एक दिन जरूर परिवर्तन हो जायेगा ऐसा जानने में आता है। परिवर्तन होगा तव समाचार देंगे, उसके वाद सोनगढ़ जाने की मेरी मां की इच्छा है, फिर भी शीघ्र आने का प्रयास भावना है। अभी अभी आप के हस्ताक्षरों का पत्र मिला पढ़कर आनंद हुआ।

पूज्य गुरुदेव साहव सुखशांति में विराजमान होंगे, उन्हें परम भक्तिभाव वंदन पहुँचे। उदय के कारण पूज्य गुरुदेव के समयसार नाटक के व्याख्यान सुनने का भी खंड पड़ा है। उदय हो वहाँ क्या हो? आप सभी को महान लाभ हो रहा है धन्य है उस नगरी को।

एज ली. संत शिष्य ना भक्तिभावे बारंबार वंदन हो।

Please report errors to Ramaben Parekh: WhatsApp +91 90115 91078 or email ramabenparekh45@gmail.com

Version 001: Updates at http://www.AtmaDharma.com & http://www.AtmaDharma.org

परम उपकारी आत्मशांति दाता परम कृपावंत गुणसमूह श्री सद्गुरुदेव के चरणों में निरंतर वास हो, उनके चरणों में भक्तिभाव से नमस्कार।

१९९३ कार्तिक सुदी ७ शनिवार–अमरेली

पूज्य कृपालु बेनश्री

वहाँ से काल सुबह रवाना होने के बाद यहाँ निर्विघ्न पहुँच गये हैं। आप वे शरीर में सुखाकृति रहती होगी। परम पूज्य कृपालु गुरु साहब परम सुखशांति में विराजमान होंगे।

आपका समयसार आदि का स्वाध्याय चल रहा होगा, यहाँ भी स्वाध्याय आदि यथाशक्ति होता है। 'संयोग–वियोग' वियोग वगैरह उदय की विचित्रता दिख रही है। गुरुश्री के प्रताप से जानकर/देखनार शांति में है। वही आनंद है, बाकी क्या कहना?

दो दिन हो गये, छह–सात दिन बाद लगभग जरूर वहाँ आयेंगे ऐसा दिखता है।

राग के उदय को यहाँ का संयोग पुसाता नहीं। उदयानुसार वर्तता जो राग वह वहाँ के संयोग को ही चाहता है।

यहाँ शरीर अच्छी तरह ठीक है बस यही—

ली. संत शिष्य ना भक्तिभावे वंदन।

आनन्दधाम ऐसे स्वतत्त्व की महिमा को छोड़कर पर की महिमा की, वही दुःख है। वाह्य प्रतिकूलता का होना वह कहीं दुःख का लक्षण नहीं है। दुःख अर्थात् आकुलता; आकुलता कहो अथवा मोह कहो। जितना मोह उतना ही दुःख है।

—प्रवचन रत्नाकर पीयूष, पृष्ठ–९५

Please report errors to Ramaben Parekh: WhatsApp +91 90115 91078 or email ramabenparekh45@gmail.com

Version 001: Updates at http://www.AtmaDharma.com & http://www.AtmaDharma.org

अपने आत्म आधार श्री गुरुदेव को अत्यंत भक्ति से नमस्कार

१९९३ कार्तिक शनिवार–अमरेली

उपकारी स्वरूप स्थित कृपालु श्री,

आज अभी अभी आपका अद्‌भुत न्यायों से भरा कृपा पत्र पढ़कर अति ही आनंद हुआ।

आपने लिखा है कि अभ्यंतर से दुरंगीपना उतारकर परिपूर्ण निर्मलता धारण करेंगे वह दिन धन्य है।

तो कृपालु श्री यह बात सर्वप्रकार से सत्य है। आपकी दी हुई आशीष फलीभूत हो यही भावना है। श्री सद्‌गुरु प्रताप से ज्ञान पूर्ण हो यही बारंबार भावना है। निरूपाधी के इच्छुक को निरूपाधी ही मिलती है।

वस्तु का जो जैसा स्वभाव है वैसा ही उस स्वभाव के वेदन को जो इच्छता है अर्थात् स्वभाव तरफ झुके वह उस स्वभावमय परिणाम जाता है। यह बात निःसंशय–निःशंक है। पर संयोग से जो छूटना चाहता है वह छूटता है और वो बंधना चाहता है वह बंधता ही है। यह बात सर्व ज्ञानिओं की सर्वप्रकार सत्य है, वास्तविक सत्य है। अनंत शक्तिवान चैतन्य के जागने के बाद विचारे जड़ की तो कितनी शक्ति होगी?

पूज्य अद्वितीय रत्न श्री कुपालु गुरुसाहब सुखशांति में है यह जानकर आनंद है व्याख्या में अमृत वर्षा रहे होंगे। धन्य हैं आप सबको वहाँ दिव्य अमृत वाणी सुनकर आत्मा पवित्र कर रहे होंगे।

परसों के दि सोमवार को वहाँ आने का निश्चय किया है। मेरे पिताश्री ने मेरे भाव जानने के बाद कुछ विशेष आग्रह नहीं रखा।

शान्ता का मन जैसे राजी/खुशी रहे वैसा करना, ऐसा भाव दिखता है।

श्री सद्‌गुरु के प्रताप से सब ठीक है कुछ तकलीफ नहीं।

एज. श्री सद्‌गुरु शिष्य का परम भक्तिभाव से वंदन हो।

Please report errors to Ramaben Parekh: WhatsApp +91 90115 91078 or email ramabenparekh45@gmail.com

Version 001: Updates at http://www.AtmaDharma.com & http://www.AtmaDharma.org

भव का अंत कराने वाले श्री गुरुदेव को परम भक्ति से नमस्कार

१९९३ पोष वदी ८ बुधवार–अमरेली

स्वरूप में स्थित कृपालु वेन श्री

वहाँ से रवाना होने के बाद यहाँ शांति से पहुँच गये हैं। शरीर में खास कोई विशेष परेशानी नहीं आई, आपके शरीर में सुखशांति होगी।

कृपालु पूज्य गुरुसाहब सुखशांति में बिराजमान होंगे। अनुभवप्रकाशग्रन्थ के व्याख्यान पूर्ण होए आये होंगे। पीछे से क्या आता है वह मुझसे पढ़ा भी नहीं जा सकता। दूसरा नया ग्रन्थ व्याख्यान में क्या शुरु होता है, वह योग्य लगा हो बताने की कृपा करना।

अनुभवप्रकाश में अनुभव का रहस्य बहुत ही अच्छा आया है, जैसा है वैसी ही व्याख्या अति सरस आई है। ''अनेक संत समाधि धारण करके पार हुए हैं।'' यह शब्द सुनते ही अनुभवियों को प्रशस्त उल्लास आ जाता है और उपयोग का झुकाव अनुभव तरफ विशेष रूप से परिणमन करने लगतता है। उसी में कोई बार उपयोग एकदम निर्विकल्प रूप परिणमित हो जाता है तो कोई बार सविकल्प स्थिरता विशेष होती है, जो कि अनुभवी आत्माओं की सहज स्थिति ही इसप्रकार की होती है, फिर भी ऐसे ग्रन्थ कितनी ही बार विशेष लाभ के कारण बन जाते हैं।

परिपूर्ण समाधिस्थ रूप परिणाम गये आत्माओं को धन्य है, बारंबार नमस्कार है तथा एकदम एकांत वासी सर्वसंग परित्यागी स्वरूप में महासमाधिस्थ हुए आत्माओं को भी बारंबार धन्य है। परम उपकारी गुरुदेव को बारंबार वंदन हो।

गाड़ी के हिलने डुलने से सहज दर्द जैसा हो गया है। विशेष कुछ नहीं, एक दो दिन में शांति हो जायेगी अर्थात् अच्छा हो जायेगाआ।

एज ली. सद्गुरु शिष्य का परम भक्तिभाव से बारंबार वंदन हो।

Please report errors to Ramaben Parekh: WhatsApp +91 90115 91078 or email ramabenparekh45@gmail.com

Version 001: Updates at http://www.AtmaDharma.com & http://www.AtmaDharma.org

पूज्य श्री गुरुदेव की चरण सेवा निरंतर एकदम समीप रहे यही भावना

१९९३ पोष वदी १० शनिवार

पूज्य बेनश्री,

कल आप का कृपा पत्र मिला, आप के लिखे सभी समाचार जाने। यह वास्तविक ही है कि ज्ञाता स्वरूप में सहज परिणमित कुछ अंशों में जहाँ खड़ी है उसे उदय के निमित्त से कुछ अंशों में अस्थिर रूप परिणम रही है वह अस्थिरता सहज स्थिरता पर कुछ असर ही नहीं कर सकती यह बात सत्य है और वह वैसी ही है।

मुझे सीने में दबाव नहीं आया, दर्द हो जाता है, उसीप्रकार का दर्द हो गया था, वह गाड़ी के दचकों के कारण दो दिन रहा, अभी अंतिम दो दिन से एकदम अच्छा है।

वहाँ पू. गुरुदेव श्री दोपहर में श्रीमद् राजचंद्र का वांचन करेंगे यह ज्ञात किया। कहाँ वहाँ का शांत वातावरण और कहाँ यहाँ का कोलाहल रूप वातावरण। सम्पूर्ण रूप से आत्मा, आत्मा को आत्मा ही चाहिए है, अन्य कुछ नहीं तथा अन्यत्र दृष्टि डालनी अच्छी भी नहीं लगती, फिर भी उदय के कारण सभी क्रियायें होती हैं।

सर्वांश समाधि हो तब ही सर्वप्रकार से शांति होने योग्य है। कुछ अंशो में समाधि होने पर भी जहाँ तक पूर्ण समाधि न हो तब तक किसी प्रकार से संतोष हो ऐसा नहीं है।

पूज्य कृपालु गुरुराज परम सुखशांति में विराजने होंगे, उन्हें हमारा भक्तिभाव से वंदन हो, उनकी शारीरिक प्रकृति अच्छी होगी ऐसी अन्तर में इच्छा होती है।

द. वीतराग आदि सत् पुरुषों के सेवक का भक्तिभाव से वंदन।

Please report errors to Ramaben Parekh: WhatsApp +91 90115 91078 or email ramabenparekh45@gmail.com

Version 001: Updates at http://www.AtmaDharma.com & http://www.AtmaDharma.org

यथार्थ मोक्षमार्गदाता गुरुदेव को भक्ति से नमस्कार

१९९३ पोष वदी बुधवार अमरेली

सहज स्वरूप में स्थित वेन श्री,

आपको पत्र लिखकर भेजा था वह मिल गया होगा। आज सुवह मंजुलावेन यहाँ से गई है वह समज में।

मेरा आना लगभग रविवार–सोमवार को होगा। अभी आज वहाँ आने संवंधी मेरे पिताश्री ने कुछ भी नहीं कहा, एक दो दिन में निश्चय हो जायेगा। मौसी जी कल वहाँ आने की कह रहीं है जो हो वह ठीक। मेरी शारीरिक प्रकृति अच्छी है, वहाँ की अपेक्षा यहाँ आने के वाद शक्ति अच्छी दिखती है।

श्रीमद् राजचंद्र पुस्तक पर अच्छे विस्तारपूर्वक पू. गुरुदेव व्याख्यान कर रहें हैं यह जाना। उसप्रकार से सुनने का अंतराय का उदय पूरा होगा तव उस प्रकार का/विस्तार से सुनने का योग बनेगा।

परम कृपालु श्री सद्गुरुदेव सुखशांति में विराजते होंगे। वाह्य उदय के कारण चाहे जितनी गड़वड़ हो और अभ्यंतर उदय में भी चाहे जितनी गड़वड़ होने पर भी श्री सद्गुरु प्रताप से ज्ञाता परिणति में जो शांति तथा सुख का वेदन है वही सच्चा सुख है, शेष सभी तो उपाधि ही है।

धन्य हैं महात्मा वाह्य–अभ्यंतर सर्व उपाधि से छूटकर सर्वप्रकार से ज्ञाता की सुख–शांति के मौज में विराजते होंगे उन्हें वारंवार धन्य हैं।

आपकी शारीरिक प्रकृति अच्छी जानकर आनंद हुआ। ऐसा ही पत्र लिखने की कृपा करना। अव विरही का उदय जल्दी पूरा हो और शीघ्र वहाँ आना हो तो ठीक है, ऐसी भावना हो जाती है। सद्गुरु का विरह दुःसह लगता है, क्योंकि आत्मस्थिति को इन कुटुंवियों का समागम अप्रयोजनभूत है तथा प्रशस्त साधन प्रयोजनभूत हैं अर्थात् राग भी प्रशस्त साधनों की ओर झुकता/ढ़लता है।

एज. ली. संत सेविका ना परमभक्ति भाव से वंदन।

Please report errors to Ramaben Parekh: WhatsApp +91 90115 91078 or email ramabenparekh45@gmail.com

Version 001: Updates at http://www.AtmaDharma.com & http://www.AtmaDharma.org

अपूर्व श्रुतधारी श्री सद्गुरु को परम भक्ति से नमस्कार।

अमरेली १९९३ माघ सुदी १ शुक्रवार

स्वरूप में स्थिर कृपालु वेन श्री,

आपका कृपा पत्र आज अभी मिला। आपके द्वारा लिखे सभी समाचार ज्ञात किये, वनीचंदभाई वहाँ आये थे यह जाना। फिलहाल से अभी वहाँ पूज्य गुरुदेव के व्याख्यान में श्रीमद् राजचंद्र चल रहा होगा। परम कृपालु पूज्य अपने गुरुराज परम सुखशांति में विराजते होंगे।

आपकी शारीरिक प्रकृति अच्छी होगी। यहाँ शारीरिक प्रकृति अच्छी तरह है, शक्ति भी अच्छी लगती है, अब यहाँ चार–पाँच दिन में आयेंगे ऐसा दिखता है, तब तक आप श्री का एकाद पत्र आये तो अति कृपा होगी।

इस बार यहाँ अधिक समय हो गया है, संयोग वश ऐसा ही बना है। सभी प्रकार का उदय भिन्न–भिन्न प्रकार के भजते रहते हैं और ज्ञाता सभी प्रकार के उदय को जानता ही है। जितनी विभाव परिणति शेष है वह भिन्न–भिन्न अवस्था स्वरूप से अस्थिररूप से परिणमती है, परंतु ज्ञाता का स्थिर स्वभाव होने से स्वयं जितने अंशों में सहज स्थिर हुआ है उतने अंशों में वह स्थिर रूप परिणमता हुआ स्थिर–अस्थिर सभी को जानता ही रहता है। पुरुषार्थ करके स्वयं ने जितनी स्थिरता रूप पर्याय प्रगट की है और पुरुषार्थ करके जितना–जितना स्थिर होता जायेगा वहीं स्वयं को सुख रूप है, शेष सब उपाधि ही है।

वहाँ आने का भाव जल्दी हो जाता है, परंतु ऊपर लिखे अनुसार वहाँ आना होगा ऐसा लगता है।

परम उपकारी पूज्य कृपालु ज्ञाननिधि अपने गुरुराज को परम भक्तिभाव से वंदन–नमस्कार हो।

एज. ली. सद्गुरु सेवक ना परम भक्तिभाव से वंदन

Please report errors to Ramaben Parekh: WhatsApp +91 90115 91078 or email ramabenparekh45@gmail.com

Version 001: Updates at http://www.AtmaDharma.com & http://www.AtmaDharma.org

स्व–पर चैतन्य की वृद्धि करानेवाले प्यारे गुरुदेव को परमभक्ति से नमस्कार

१९९३ माघ वदी ४, अमरेली

कृपालु बेनश्री

आपका कृपा पत्र आज अभी मिला।

अपने परम कृपालु गुरुदेव सुखशांति में विराजते होंगे उन्हें हमारा भक्ति भाव से वंदन हो।

वहाँ आजकल में आने का मैंने पिताश्री को बहुत कहा परंतु उनने कहा कि मैं अधिक कह नहीं सकता, परंतु गुरुवार या शुक्रवार तक उनका अति आग्रह था अर्थात् उनकी इच्छा के अनुसार ही रखा है। यदि शुक्रवार को ही वहाँ आयेंगे तो दोपहर की ट्रेन में आने का विचार है। मेरे पिताश्री मुझे वहाँ तक छोड़ने आयेंगे। ऐसा उनने निश्चय किया है। आने की भावना तो तुरंत ही होती है परंतु उदय अनुसार सब बना करता है।

यहाँ भी यथाशक्ति वाचन विचार वगैरह हुआ करता है। ज्ञाता परिणति सहज होने से कितना ही ज्ञान–ध्यान सहज–सहज होता है। ज्ञाता का वह स्वभाव होने से पुरुषार्थ की धारा जिसप्रकार से उठे उसप्रकार से होता रहता है तथा जहाँ ज्ञाता धारा सहज उत्पन्न होती है वहाँ उस प्रकार का पुरुषार्थ भी होता है और उसके द्वारा वह ज्ञान–ध्यान की श्रेणी द्वारा बारंबार अपने स्वरूप को अनुभवता हुआ आगे जाता है।

इसप्रकार आगे बढ़ते–बढ़ते ज्ञाता अखंड रूप से उछलकर वह स्वरूप को अनुभवेगा वह दिन ''धन्य होगा'' ''कृतार्थ होगा।''

धन्य हैं वे महात्मा जो सर्वांशरू से ज्ञाता को उछलकर वेदन कर रहे हैं। अनुभव कर रहे हैं।

सर्व लोकालोक के भाव ज्ञान में झलकते होने पर भी अपने निजभाव को सर्वांश अखंड एक स्वरूप से वेदन कर आस्वाद कर रहे हैं।

उन महात्माओं को बारंबार धन्यवाद के साथ नमस्कार हो।

Please report errors to Ramaben Parekh: WhatsApp +91 90115 91078 or email ramabenparekh45@gmail.com

स्वरूप के सर्व अंश सुखदाता हैं, कार्मण का कोई भी अंश सुखदाता नहीं। इस स्वरूप को सभी अनुभवी आत्मायें ही यथार्थ रूप से समझ सकते हैं।

आप श्री सद्गुरुदेव विरह में इस शरीर की प्रकृति में साधारण सिवाय विशेष खराब होकर कमजोर न हो मेरे लिये यही अच्छा है, श्री सद्गुरु श्री महिमा कोई अपार है।

एज. ली. सद्गुरु सेवक ना भक्तिभाव वंदन।

पूज्य कृपालु ज्ञाननिधि गुरुदेव को नमस्कार

१९९३ फागुन वदी ४ गुरुवार सोनगढ़

सहज स्थिति वेनश्री,

आपका कृपा पत्र आज सुबह मिला, पढ़कर आनंद हुआ। आपश्री यहाँ सोमवार को आयेगी वह जानकर आनंद हुआ।

पूज्य कृपालु श्री सद्गुरुदेव परम सुखशांति में विराजते हैं। पूज्य गुरुदेव के व्याख्यान में अभी भी श्रीमद् वाचना चल रहा है। आज तैतीसवें वर्ष का उपयोग लक्षण सनातन स्फुरित आ जो पत्र है उसका ऊपर का भाग व्याख्यान में वांचा है। स्पष्टीकरण बहुत अच्छा हो रहा था। तीव्र असाता के उदय समय वीर्य/पुरुषार्थ विशेषरूप से जागृत होता है, यह ज्ञानी की स्थिति है। उस असाता का न्याय अपन जिसप्रकार से कहते थे उसीप्रकार से श्रीमद् में आया है तथा स्पष्टीकरण भी उसीप्रकार से पूज्य साहब करते थे।

आप सोमवार को आयेंगी यह जानकर परिणामों में शांति हुई, आप का शरीर ठीक होगा।

एज. ली. सद्गुरु सेवक।

Please report errors to Ramaben Parekh: WhatsApp +91 90115 91078 or email ramabenparekh45@gmail.com

Version 001: Updates at http://www.AtmaDharma.com & http://www.AtmaDharma.org

पूज्य उपकारी श्री गुरुदेव को परम भक्ति से नमस्कार हो

१९९६ पौष वदी ५ अमरेली

उपकारी पूज्य वेनश्री,

हम वहाँ से खाना होने के बाद यहाँ रात्रि में पहुँच गये थे, रस्ते में विशेष परेशानी नहीं हुई।

पूज्य श्री कृपालु गुरुराज के व्याख्यान का सार ज्ञात कराने की कृपा करना जी। व्याख्यन में वहुत व्यक्ति आते होंगे तथा समवशरण जैसा अद्‌भुत दृश्य लगता होगा।

आप वहाँ से पाँच ता. को निकलकर राजकोट गये होंगे। आपके शरीर में सुखाकृति होगी यह वताने की कृपा करना जी। यह शरीर अभी ठीक है।

सम्पूर्ण रूप से स्वरूपस्थिति को प्रगट करके उसी में लीन/मग्न हुए उन पुरुषों को अनंत भक्ति से नमस्कार हो। उस परिपूर्ण स्वरूप में पूर्णरूप से स्थित हो उस दिन को धन्य है, उस स्थिरता को धन्य है।

भगवान श्री सीमंधर प्रभु के दर्शन करनेवाले श्री कुंदकुंदप्रभु स्वरूप में कैसे स्थिर थे उस स्थिरता को नमस्कार, उन परम पुरुषों को अत्यंत, अत्यंत भक्ति से नमस्कार।

वहाँ शुक्रवार को आने का निश्चय किया है उस दिन वहाँ आना बनेगा ऐसा लगता है, अपने उपकारी कृपालु गुरुराज आज के दिन वहाँ पधार गये होंगे या पधारेंगे तथा वहाँ सुख शांति में विचरते होंगे, अति उपकार, अति उपकार गुरुराज, आपके उपकार विना इस जीव का क्या होता?

आप सभी महापुरुषों के प्रताप से आत्मा आत्मानंद में रहता है, पर्याय में की कमी अपने गुरु के प्रताप से जल्दी टल जायेगी। आप वहाँ बाह्य–अभ्यंतर सर्वप्रकार से आनंद में होंगे, यही पत्र लिखना ऐसी इच्छा है।

एज. ली. सर्वज्ञानी ना दास ना भक्तिभाव से वंदन

Please report errors to Ramaben Parekh: WhatsApp +91 90115 91078 or email ramabenparekh45@gmail.com

Version 001: Updates at http://www.AtmaDharma.com & http://www.AtmaDharma.org

ज्ञानगंगा बहानेवाले श्री गुरुदेव के चरणों में अत्यंत भक्ति से नमस्कार

२००३ पौष सुदी ७ सोमवार–अमरेली

पूज्य आत्मारामी प्यारी वेनश्री,

आपका कृपापत्र कल मिला, पढ़कर अति आनंद/संतोष हुआ। अपने परम उपकारी अद्वितीय गुरुदेव सुखशांति में विराजते होंगे, उन्हें हमारा अत्यंत भक्ति से नमस्कार हो।

सेठ वनीचंदभाई के समाचार सुनकर खेद हुआ, उसका सहायता अपने को कुछ जुदी ही था, उनका भक्ति का रंग कोई जुदा ही था, उन वनीचंदसेठ के देह त्याग से एक अच्छे मुमुक्षु भक्तिवंत आत्मा की कमी हो गई।

यहाँ चार दिन वहुत मुश्किल से निकाले हैं। अव तो ऐसा कारण जिंदगी भर तक न बने तो अच्छा, क्योंकि आपके तथा गुरुदेव के विरह में मुझे कहीं जरा भी अच्छा नहीं लगता। अन्तर में जैसी इच्छा है वैसी ही बनेगा, अव आप से और गुरुदेव से भिन्न पड़कर कहीं जाना बनेगा ही नहीं।

सर्वथा राग का अभाव होकर पूर्ण वीतरागता प्रगट हो उससे ही पूर्ण सुख होता है। ऐसा अवसर शीघ्र प्राप्त हो यही अन्तर की भावना है। स्वरूप में परिपूर्ण लीन हो वह दिन धन्य होगा। आंशिक लीनता तो होती है, परंतु अव तो पूर्ण लीनता चाहिए। मुनिपना प्रगट कर आत्मलीनता में वृद्धि होकर पूर्णता प्राप्त हो यही भावना बारंबार हुआ करती है। देव–गुरु के पास भी बारंबार प्रार्थना यह है कि हे प्रभु! आपके प्रताप से अव मुनि वन कर वनवासी बनकर आत्मलीनता करके, निस्पृह होकर रहें तथा सर्व विकल्प छूट कर एकमात्र आत्मस्वरूप की ही श्रेणि में रहीये तथा पूर्णानंद प्राप्त हो यही प्राप्त हो, आप सभी महापुरुषों के प्रताप से जरूर प्राप्त होगा। परंतु विलंव रहित शीघ्र वह दशा प्रगट हो ऐसा समय कव देखेंगे।

आज सोमवार की शाम को वहाँ आने का निश्चय किया है। रात्रि की चार वजे की गाड़ी से वहाँ पहुँचते, परंतु कल से ठंड अधिक पड़ती है, इसलिए कल मंगलवार को आने का निर्णय किया है, वह कल मंगलवार को दो वजे की ट्रेन से जरूर वहाँ पहुँचना होगा।

पूज्य गुरुदेव की तथा आपकी तवियत ठीक जानकर शांति हुई।

एज. ली. आपनो सेवक शाता ना भक्ति से नमस्कार

Please report errors to Ramaben Parekh: WhatsApp +91 90115 91078 or email ramabenparekh45@gmail.com

Version 001: Updates at http://www.AtmaDharma.com & http://www.AtmaDharma.org

श्रुतानंदी प्यारे गुरुदेव के चरणों में परम भक्ति से नमस्कार

२००३ पौष सुदी ५ शनिवार–अमरेली

स्वरूपारामी प्यारी बेनश्री,

अमरेली से लिखी आपके सेवक, आप वहाँ सुखशांति में होगी, तबियत भी अच्छी होगी।

अपने उपकारी जगत वल्लभ, अध्यात्मप्रेमी पूज्य गुरुदेव सुखशांति में होंगे, तबियत भी उनकी एकदम अच्छी होगी।

बहन! मेरे आत्मा के लिये तो ऐसा है कि पूज्य गुरुदेव और आपके चरणों में रहने से जितनी शांति चित्त में रहती है उतनी अन्यत्र नहीं रहती। यह तो स्वाभाविक है, क्योंकि धर्मात्मा पुरुषों के समागम के अलावा दूसरा समागम नहीं रुचता, इसलिए आत्मसमाधि वृद्धि हो जाय और बाहर से महापुरुषों का समागम रहो। इस भव में आप की और गुरुदेव की छत्रछाया में और भवांतर में भी महापुरुषों की छत्रछाया में आत्मलाभ पूर्ण प्राप्त हो जाय बस यही भावना।

हम वहाँ से रवाना हुए, परंतु गाड़ी तो बहुत लेट थी। इसलिए खीजडीया से चल पड़ी है–ऐसा समाचार ढसा में हमें मिले, इसलिए लाठी से मोटर करके हम अमरेली ढ़ाई बजे पहुँचे। यहाँ जिस दिन से हम आये उसी दिन से मेरी मातश्री की तबियत सुधरने लग गई, कल की अपेक्षा आज अधिक ठीक है।

पूज्य उपकारी गुरुदेव का मेरा अगणित वंदन हो। अब तो यह आत्मा उनके चरणों की सेवा ही निरंतर मांगता है, वह सफल होओ।

सोमवार को आने का कहा है, परंतु ये लोग मंगलवार कको बहुत आग्रह कर रहे हैं, जो हो सो ठीक है। मंगलवार को आना तो नहीं होगा, सोमवार का प्रयत्न करती हूँ। मेरा मन तो सोमवार का ही है, निर्णय होने पर तार से खबर देंगे।

एज ली. आपना शांता ना बारंबार वंदन हो

Please report errors to Ramaben Parekh: WhatsApp +91 90115 91078 or email ramabenparekh45@gmail.com

Version 001: Updates at http://www.AtmaDharma.com & http://www.AtmaDharma.org

पूज्य बेन की कृपादृष्टि से लिखे कुटुंबी जनों पर पत्र

सोनगढ़

चि. भाई मुकुंदराय,

पूज्य गुरुदेव के प्रताप से मेरे आत्मा में जो सम्यग्दर्शन और सम्यग्ज्ञान की शुद्ध/धर्मरूप पर्याय प्रगट हुई है वह निरंतर धर्म का कार्य करती है, रागादि रूप विकल्प आते हैं, परंतु ऊपर–ऊपर रहते हैं। जैसे तेल की बिन्दु शुद्ध पानी में ऊपर ही ऊपर तैरती है, वैसे ही शुद्ध धर्म प्रगट हुआ है, उसमें वे रागादि के विकल्प प्रवेश करते ही नहीं। कुटुंब के प्रति अभी राग है इससे विकल्प आ जाते हैं, बांकी तो खाते–पीते, बोलते–चालते या सभी बाह्य की प्रवृत्ति से मेरा प्रगट हुआ शुद्ध धर्म तो निरंतर परिणम रहा है और वह शांति–समाधि रूप से ही निरंतर परिणमता है। मेरी आत्मा में जो धर्म प्रगट हुआ है वह निरंतर वृद्धिंगत है तथा प्रगट हुई उस परिणति को कोई रोक सकता नहीं तथा जो कुछ कुटुंब के प्रति के रागादि विकल्प आते हैं वे भी रस के विना तुच्छ आते हैं, अन्य को तो उसका ख्याल आना भी मुश्किल पड़ता है।

यह तो मात्र आप समझ सकते हो कि सम्यग्दृष्टि के आत्मा में कैसा धर्म होता है, इतने मात्र के लिये हेतु से ही लिखा है, यह बराबर समझना ओ अन्य कुछ कारण नहीं।

द. बेन शान्ता

कोई कहे कि अरे! देश परतन्त्र है, नेता जेलों में पड़े हैं, और कहते हैं कि आत्मा स्वाधीन है, यह कैसे? तो कहते हैं कि अरे भाई! आत्मा को बाह्य पराधीनता है ही कहाँ? आत्मा को अन्य कोई पराधीन नहीं कर सकता। महँगाई से आत्मा पराधीन नहीं होता। राजा भले ही जेल में बन्द कर दे, परंतु जेल में बैठा–बैठा आत्मा के ध्यान की श्रेणी लगाये तो कौन रोकनेवाला है?

—प्रवचन रत्नाकर पीयूष, पृष्ठ–९७

Please report errors to Ramaben Parekh: WhatsApp +91 90115 91078 or email ramabenparekh45@gmail.com

Version 001: Updates at http://www.AtmaDharma.com & http://www.AtmaDharma.org

ता. २१-१-५९

चिरंजीव भाई मुकुंदराय,

पूज्य गुरुदेव के साथ में मुक्तागिरी की अपूर्व यात्रा करके नीचे आ गये हैं, यहाँ मुक्तागिरी से साढ़े तीन करोड़ मुनि मुक्ति गये हैं, इतना अच्छा तीर्थ है, यह सिद्ध धाम बहुत ही सुहावना है। पहाड़ ऊपर बावन श्री जिनमंदिर हैं, ऐसा अपूर्व यह मुक्तागिरी धाम है।

पूज्य गुरुदेव के प्रताप से यात्रा बहुत ही आनंद से हुई, बहुत सारे भगवंतो के दर्शन किये तथा बहुत अधिक घूमे। पूज्य गुरुदेव को भी इस बार यात्रा की बहुत याद आती है। बारंबार सभी तीर्थों को याद करते रहते हैं। पूज्य गुरुदेव के कारण धर्म–प्रभावना भी बहुत हुई। पूज्य गुरुदेव कोई महाप्रभावी पुरुष हैं। भारत के अद्वितीय परुष हैं, अजोड़ संत हैं। इस समय उनके समान दुनियाभरमें नहीं, अपने सभी का महान सद्भाग्य है कि अपने को ऐसे महाप्रतापी पुरुष का योग मिला है, जिसे आत्मा का कल्याण करना हो उसे इस महापुरुष के निमित्त से ही होगा।

इस काल तीर्थंकर जैसा अवतार है, भावी तीर्थंकर है यह तो निशंक बात है। धर्म प्रभावना बहुत ही अच्छी भारत में हुई है। बस यही!

द. बेन शान्ता

देखो, आँख–कान आदि इन्द्रियों को बन्द करके भी अन्तर में "मैं ज्ञान हूँ, मैं सहज आनन्द हूँ"—ऐसा विचार होता है न! वह विचार कौन करता है? किस सामग्री से वह विचार करता है? विचार अर्थात् ज्ञान करनेवाला आत्मा स्वयं ही है; बाह्य सामग्री का अभाव होने पर भी अन्तर में अखण्ड स्वभाव सामग्री विद्यमान है; उसके अवलम्बन से स्वयं विचार करता है।

—प्रवचन रत्नाकर पीयूष, पृष्ट–९७

Please report errors to Ramaben Parekh: WhatsApp +91 90115 91078 or email ramabenparekh45@gmail.com

Version 001: Updates at http://www.AtmaDharma.com & http://www.AtmaDharma.org

ता. १२-६-६२

चिरंजीव भाई मुकुंदराय,

आपका ता. ८ का पत्र मिला, हम ता. १० की रात्रि को अहमदाबाद से यहाँ आ गये हैं। पूज्य कृपालु गुरुदेव कल ता. ११ के सुबह ८ बजे पधारे थे। पूज्य गुरुदेव का स्वागत भी अति आनंद से हुआ था। पूज्य गुरुदेव की तबियत अच्छी है। पूज्य गुरुदेव के प्रभावना के उदय से नगर–नगर में बहुत प्रभावना हुई। पूज्य गुरुदेव के परम पुनीत हस्ते बहुत जगह श्री जिनमंदिर और स्वाध्याय मंदिर का शिलान्यास भी हुए। सत्यधर्म की नींव गाँवों–गाँवों में पूज्य गुरुदेव रोपते आये हैं। ऐसा पुरुष इस पंचम काल में बहुत समय में कोई ही पकते हैं। यह बात निःशंक है, अपन सभी का सद्‌भाग्य है कि ऐसे समय में आ गये हैं। पूज्य गुरुदेव के साथ में सिद्धवरकूट–पावागिर, बड़वानी इन तीन तीर्थोंकी यात्रा भी अति आनंद और शांतिपूर्वक हुई थी, वहाँ गर्भी भी नहीं लगती थी। **द. बेन शान्ता**

ता. ८-७-६३, सोमवार, सोनगढ़

चि. भाई मुकुंदराय,

तुम्हारा पत्र शुक्रवार को मिला, यहाँ पूज्य गुरुदेव सुखशांति में विराजते हैं। वाणी परम कल्याणकारी बरस रही है।

यहाँ अषाढ़ माह की अष्टाह्निका में श्री सिद्धचक्र मंडल विधान किया था, हमारे सेठ वछराज जी की और से कराया गया था। पूनम के दिन स्वाध्याय नहीं हुई थी, एक हजार और चौवीस अर्घ्य थे, इसलिए पूजा ही की थी, सुबह सात बजे से शुरु की थी तो पूरी की। पूज्य गुरुदेव भी डेढ़ घंटे तक पूजा में पधारे थे उस सिद्धचक्र मंडल की पूजा के अर्घ्य भी अति भाववाही हैं, बहुत रस आता था, सिद्ध भगवान के बहुत गुण अति ही अच्छे आते हैं, पूजा होती थी तब अनंत सिद्ध पधारे हों ऐसा दृश्य लगता था। वहाँ बारिश शुरु हो गई होगी, यहाँ तो सिद्ध भगवंतों के गुण की वर्षा हो रही है, सिद्धों का बहुमान आता है, वाह!

वहाँ भी सब रात में इकट्ठे बैठकर, निवृत्ति हो तब यहाँ की धार्मिक चर्चा करना, धार्मिक चर्चा बारंबार होगी, जिससे धार्मिक रुचि अधिक बढ़े।

द. बेन शान्ता

Please report errors to Ramaben Parekh: WhatsApp +91 90115 91078 or email ramabenparekh45@gmail.com

Version 001: Updates at http://www.AtmaDharma.com & http://www.AtmaDharma.org

पूज्य बेन के पिताश्री का स्वर्गवास हुआ तब मुकुंदभाई को पत्र लिखा

चि. भाई मुकुंदराय,

बापूजी की आयु का उदय जब पूरा हो गया, वहाँ क्या हो, जिस समय जो होना वह फिरता नहीं, सब समझते हैं कि आयु का उदय पूरा हो गया वहाँ कोई कुछ काम नहीं आता, फिर भी राग के कारण दुःख हो जाता है। तुम धीरज और शांति रखना।

बापूजी के परिणाम सदा शांत, सरल और समभावी थे तथा देव–गुरु का कोई प्रसंग हो उन्हें अति उत्साह आ जाता था, इससे उनका आत्मा तो अच्छा पुण्य बांधकर अच्छी गति को ही प्राप्त हुए हैं, परंतु अपने को राग के कारण वियोग का दुःख हो जाता है। ऐसे प्रसंग आने पर संसार की असारता एकदम नजर में तैरती है, बाकी सदा संसार का स्वरूप तो असार ही है, ऐसे मनुष्य भव में जो कुछ सच्चे देव–गुरु के प्रति का भक्ति के भाव या आत्मा को समझने के सच्चे संस्कार आत्मा में डाले होंगे वही आत्मा को लाभरूप होते हैं। ऐसे प्रसंगों से आत्मा में दृढ़ निश्चय करना कि अपने जीवन में आत्मा के अच्छे संस्कार जरूर डालना।

द. बेन

जैसे देह छूटने में एक समय लगता है, उसी तरह सम्यग्दर्शन होने में भी एक ही समय लगता है। पर्याय में राग का अभाव व चैतन्य का सद्भाव ही सद्भाव है। जैसा स्वभाव है, वैसा ही परिणमन होने का नाम सद्भाव है; क्योंकि जो स्वतः होता है, वह सत्स्वरूप ही होता है। ज्ञान है, वह आत्मा है और आत्मा है, वह ज्ञान है। आत्मा के सब गुणों में ज्ञानगुण की यह विशेषता है कि ज्ञान स्वयं अपने को जानता है और पर को भी जानता है।

—प्रवचन रत्नाकर पीयूष, पृष्ठ–२०७

Please report errors to Ramaben Parekh: WhatsApp +91 90115 91078 or email ramabenparekh45@gmail.com

Version 001: Updates at http://www.AtmaDharma.com & http://www.AtmaDharma.org

पिता श्री के प्रसंग में पूज्य बेनश्री ने भी पत्र लिखे

चि. भाई बाबू

बापूजी का ऐसा प्रसंग बनने से सभी दुःखी होना स्वाभाविक है, जितना राग हो उतना दुःख होना यह तो स्वाभाविक है, परंतु शांति और हिम्मत रखना यही श्रेयरूप है। अनंत काल में जीव ने अनंत देह धारण किये और अनंत देह छोड़े, जिस मनुष्य भव में आत्मा का कल्याण हो वह मनुष्य जन्म सफल है, इसलिए शांति रखना यही हितरूप है। दुःख होता है तो भी विचार करना कि इस संसार का स्वरूप ही ऐसा है, ऐसा जानकर समाधान रखना ही सुखरूप है। ऐसे प्रसंगों पर आत्मा ही ऐसा है, ऐसा जानकर समाधान रखना वही सुखरूप है। ऐसे प्रसंगों पर आत्मा की जिज्ञासा और रुचि बढ़ाना वही कल्याणरूप है। बेन शान्तावेन शांति में हैं, उनकी कुछ फिकर/चिंता नहीं करना।

बापूजी सरल और शांत स्वभावी थे। उन्होने बहुत अच्छे भाव रखे, इससे उनका भविष्य भी अच्छा ही है अर्थात् गति भी अच्छी ही हुई है, ऐसा जानकर शांति रखना, बापूजी अति उल्लासभाव वाले थे तथा देव–गुरु–शास्त्र के प्रति उनको बहुत ही उल्लास था और याद भी बहुत अच्छी रखते थे। इससे उनके आत्मा का भविष्य अच्छा ही है, ऐसा जानकर शांति रखना तथा यह जानकर आप सभी को आत्मा की रुचि बढ़ाने जैसी है, यही मनुष्य जीवन का सफलता है। परम कृपालु गुरुदेव के प्रताप से ज्ञायकरूप आत्मा का स्वरूप समझना यही जीवन का साफल्यपना है।

यही.....द. देव–गुरुदेव के चरणों में नमस्कार

ये सब रागादि परिणाम तो कृत्रिम हैं, मूलवस्तु में नहीं होते। जो अपनी मूल वस्तु में नहीं होते, वे निज का आश्रय लेते ही निकल जाते हैं।

—प्रवचन रत्नाकर पीयूष, पृष्ठ–२०९

Please report errors to Ramaben Parekh: WhatsApp +91 90115 91078 or email ramabenparekh45@gmail.com

Version 001: Updates at http://www.AtmaDharma.com & http://www.AtmaDharma.org

ता. ४-८-६३ बुधवार
सोनगढ़

चि. भाई मुकुंदराय,

आज आपका पत्र शाम को मिला।

परम कृपालु गुरुदेव सुख–शांति में विराजते हैं, वाणी परम/उत्कृष्ट वरस रही है, उनका प्रताप कोई अद्‌भुत वर्त रहा है।

तुम्हारे मुमुक्षु मंडल का वहाँ उत्साह बहुत अच्छा है, वहाँ रकम भी अच्छी हो गई और लोन भी आ गई यह अच्छा हुआ, बहुत अच्छा उत्साह सभी को है, अब पंचकल्याणक के समय तुम सभी लोगों के विचार अनुसार हो ही जायेगा। पूज्य गुरुदेव का प्रभाव ऐसा है और आप सभी लोगों का उत्साह भी ऐसा है, इसलिए पंचकल्याणक के समय जरूर हो जायेगा उसकी जरा भी चिंता करना नहीं।

तुमने अच्छा खर्चा और लोन भी दिये यह बहुत अच्छा किया। श्री जिनमंदिर में तो जितना रुपिया दिया जाय वह महान लाभ का कारण है। श्री जिनेश्वरदेव की महिमा शास्त्रों में अद्‌भुत आती है, उन श्री जिनेन्द्र देव की अद्‌भुत महिमा भी सच्ची है, इसलिए उस प्रसंग में जितना उत्साह आवे वह लाभ का ही कारण है। घर में तो बहुत खर्च होता है वह सब तो व्यर्थ है, परंतु जिनालय में जितना दिया जाए वह हितरूप है, तुम्हारा स्वभाव उत्साही है यह अच्छा है अर्थात् उस समय उत्साह आ जाय वह अच्छा है।

यहाँ भी पर्यूषण पर्व अति आनंद से पूज्य गुरुदेव के प्रताप से निकल गये, आज अति ही आनंद से महा अभिषेक था, वहाँ भी पर्यूषण आनंद से मनाये होंगे और भगवान की रथयात्रा भी निकाली थी वह रथयात्रा भी भव्य थी यह एक नवीन बात है कि बारिश में भी निकली, विशेष बात तो प्रत्यक्ष में करेंगे।

भगवान की सेवा करनेवाले भक्तों को भी सभी अनुकूलता हो जाती है, तुम भगवान की सेवा अच्छी करते हो तो उसका अच्छा फल मिल जायेगा।

द. शान्ताबेन

Please report errors to Ramaben Parekh: WhatsApp +91 90115 91078 or email ramabenparekh45@gmail.com

Version 001: Updates at http://www.AtmaDharma.com & http://www.AtmaDharma.org

ता. २८-१०-६३, सोमवार
सोनगढ़

चि. भाई मुकुंदराय,

तुम्हारा गुरुवार का लिखा पत्र शुक्रवार को यहाँ मिला था, वहाँ सभी आनंद में होंगे।

परम प्रतापी पूज्य सद्गुरुदेव सुखशांति में विराजते हैं, वाणी परम अमृतमय बरस रही है।

जयपुर (खानियाँ) शहर में पंडितों की चर्चा चल रही है, उसमें अपनी तरफ से पंडित फूलचन्दजी लिखित जवाब दे रहे हैं, साथ में पंडित नेमीचंदजी पाटनी हैं, जगन्मोहनलालजी पंडित भी अपने में हैं, सामने वाले पक्ष में बहुत पंडित हैं, परंतु जय अपना ही है। प्रतिदिन जयपुर से तार और पत्र आते हैं।

परम पूज्य गुरुदेव का प्रभाव वास्तव में कोई अद्भुत है। भविष्य के तीर्थंकर का वास्तव में अभी प्रभाव वर्त रहा है वहाँ जयपुर की समाज में अपनी बहुत ही अच्छी छाप पड़ती है। पंडित जी ने अच्छा साहस किया है, बहुत हिम्मत की है।

धन्य है। पूज्य गुरुदेव के अमूल्य प्रभाव को! जयपुर से पत्र आते हैं, उन्हें पढ़कर रोम–रोम उल्लसित हो जाता है।

मेरी भाभी तथा बच्चे छुट्टियों में आये हैं, इससे मुझे आनंद हुआ कि उनमें यहाँ के धार्मिक संस्कार अच्छे पड़े हैं तथा पूज्य गुरुदेव के पास से भी अच्छा लाभ लेते हैं।

द. बेन शान्ता

''मैं तो ज्ञान हूँ'' —ऐसी श्रद्धा से ज्ञानी वज्रपात होने पर भी डिगते नहीं है और निज स्वरूप की श्रद्धा को छोड़ते नहीं है।
—पूज्य स्वामी जी

Please report errors to Ramaben Parekh: WhatsApp +91 90115 91078 or email ramabenparekh45@gmail.com

Version 001: Updates at http://www.AtmaDharma.com & http://www.AtmaDharma.org

ता. २८-१२-६३

चि. भाई मुकुंदराय,

तुम्हारा पत्र कल सुबह मिला, यात्रा का प्रोग्राम की कॉपी वहाँ आ गई यह अच्छा हुआ, मेरी भाभी को यात्रा का उल्लास जगा जो कि योग्य ही है। उनने कभी यात्रा नहीं की तो जरूर होंश आयेगी। हम ने बहुत यात्रा की है तो भी उत्साह आ जाता है तो फिर तुम्हें तो आयेगा ही, भाई बन सके तो तुम हमारे साथ मूडबद्री, बाहुबली और पोन्नूर की यात्रा जरूर करना, बाहर का तो सब अनुकूल हो जायेगा।

पूज्य कृपालु गुरुदेव सुखशांति में विराजते हैं। वाणी भी परम कल्याणरूप बरस है, इस बार की यात्रा अपूर्व है।

द. बेन शान्ता

ता. १४-३-६४, बांकानेर

चि. भाई मुकुंदराय,

तुम्हारा ११ वीं का लिखा पत्र आज मिला। तुमने लिखा की प्रतिष्ठा का काम आनंद से जोरदार चल ही रहा है यह पढ़कर खुशी हुई। श्री जिनेन्द्र भगवान के पंचकल्याणक का काम वह भी एक श्री जिनेन्द्र भगवान की महान सेवा है। वह सेवा आनंदपूर्वक उत्साह से करने में आत्मा को बहुत ही लाभ होता इसलिए आत्मा के लाभ हेतु इन जिनेन्द्रदेव के महा–महोत्सव का काम जैसे विशेष शोभे उसप्रकार करने के लिये उत्साहित रहना।

अपने को तो श्री जिनेन्द्र का महात्म्य विशेष हो। श्री जिनेन्द्र महोत्सव खूब आनंद से मनाया जाय ऐसी भावना से राग–द्वेष की मंदतापूर्वक और श्री जिनेन्द्र की महिमा की मुख्यतापूर्वक यह काम इस हेतु से करना, यह बराबर ध्यान रखना।

ऐसा उत्तम मनुष्य भव अति पुण्य से प्राप्त हुआ, उसमें भी ऐसा वीतरागी देव द्वारा प्ररूपित सत्य धर्म का योग मिला तथा बड़े पुण्य से ऐसे सच्चे देव–शास्त्र–गुरु की सेवा का योग मिला, इसलिए मंद कषाय से वीतरागी

Please report errors to Ramaben Parekh: WhatsApp +91 90115 91078 or email ramabenparekh45@gmail.com

Version 001: Updates at http://www.AtmaDharma.com & http://www.AtmaDharma.org

देव–शास्त्र–गुरु की जितनी सेवा हो वही आत्मा को हितरूप है, इसलिए सबके साथ अति प्रेम से काम करके प्रसंग जैसे विशेष शोभे वैसा करना यह मेरी अंतरंग की तुम्हारे प्रति हार्दिक भावना से लिख रही हूँ, यह लगभग होगा ही–ऐसा मैं मानती हूँ।

हम लोग कल जैतपुर गये ते। वहाँ से पूज्य गुरुदेव गिरनार की तलेटी के श्री नेमिनाथ भगवान के दर्शनार्थ गये थे।

परम कृपालु तारणहार पूज्य गुरुदेव सुखशांति में विराजते हैं, हम ता. १७ को पोरबंदर पहुँचेंगे और वहाँ पर भूराभाई के यहाँ हम लोगों का उतारा है। जवाब पोरबंदर लिखना। **द. बेन शान्ता**

ता. २९-५-६४ शुक्रवार, सोनगढ़

चि. भाई मुकुंदराय,

हम वहाँ पहुँचे थे कि तुरंत मंगलवार को तुम्हें पोस्टकार्ड लिखा था वह मिला होगा, उसके बाद तुम्हारा पत्र नहीं आया सो लिखना।

परम पूज्य कृपालु गुरुदेव वहाँ सुख शांति में विराजते होंगे, ये पत्र तुम्हें मिलेगा कि उसी दिन पूज्य गुरुदेव वहाँ से रवाना होंगे।

श्री जिनेन्द्र देव के प्रताप से और पूज्य गुरुदेव के प्रताप से वहाँ का पंचकल्याणक उत्सव अति उत्तम और सवाया मनाया गया। नेहरूजी का चार दिन बाद स्वर्गवास हो गया, अच्छा हुआ कि अपना प्रसंग पूर्ण हो गया था, श्री जिनेन्द्र देव का और पूज्य गुरुदेव का प्रभाव जबरदस्त है।

यहाँ सोनगढ़ में तो खूब शांति है, कहाँ वहाँ का कोलाहल वाला जीवन और कहाँ यहाँ का शांतिपूर्वक जीवन। हमारे लिखे तो ऐसा शांतिमय धाम ही योग्य है। इस कारण मुम्बई आना पड़ता है। बाकी हम जैसे के लिये मुम्बई योग्य नहीं।

नेहरुजी के चले जाने से शोक का वातावरण फैल गया है। हमें भी सुनते ही वैराग्य आता है। **यही—द. बेन शान्ता**

Please report errors to Ramaben Parekh: WhatsApp +91 90115 91078 or email ramabenparekh45@gmail.com

Version 001: Updates at http://www.AtmaDharma.com & http://www.AtmaDharma.org

ता. ३-६-६४, बुधवार

सोनगढ़

चि. भाई मुकुंदराय,

तुम्हारा पत्र कल मिल गया।

पूज्य कृपालु गुरुदेव आज सुबह आठ बजे यहाँ पधार गये है। पूज्य गुरुदेव की तबियत ठीक नहीं लगती। कल नींद नहीं आयी थी, खांसी बहुत आती है, यहाँ के अच्छे हवा पानी से तबियत ठीक हो जायेगी।

त्रिलोक के नाथ का जिनालय की और पंचकल्याणक के उत्सव की सेवा की है और पूज्य गुरुदेव के प्रति तुम्हारा भक्तिभाव चाहिए, तुम्हारे ऐसे कार्य देखकर मुझे अति आनंद हुआ।

आप वापी तक साथ में आये वह ठीक किया, तुम्हें भी पूज्य गुरुदेव के साथ बातचीत करने का लाभ अच्छा मिला होगा। तुमने इस बार अच्छी सेवा की थी, यह देखकर हमें आनंद हुआ। **द. बेन शान्ता**

ज्ञानी शब्द मुख्यतया तीन अपेक्षाओं को लेकर प्रयुक्त होता है—

१. प्रथम तो, जिसे ज्ञान हो वह ज्ञानी कहलाता है; इस प्रकार सामान्य ज्ञान की अपेक्षा से सभी जीव ज्ञानी हैं, शेष पाँच द्रव्य अज्ञानी हैं।

२. यदि सम्यग्ज्ञानी और मिथ्याज्ञानी की अपेक्षा से विचार किया जाये तो सम्यग्दृष्टि को सम्यग्ज्ञान होता है, इसलिए उस अपेक्षा से वह ज्ञानी है, और मिथ्यादृष्टि अज्ञानी है।

३. संपूर्णज्ञान और अपूर्णज्ञान की अपेक्षा से विचार किया जाये तो केवली भगवान ज्ञानी हैं और छद्मस्थ अज्ञानी हैं, क्योंकि सिद्धांत में पाँच भावों का कथन करने पर बारहवें गुणस्थान तक अज्ञानभाव कहा है। **—प्रवचन रत्नाकर पीयूष, पृष्ठ–२२६**

Please report errors to Ramaben Parekh: WhatsApp +91 90115 91078 or email ramabenparekh45@gmail.com

Version 001: Updates at http://www.AtmaDharma.com & http://www.AtmaDharma.org

ता. ८-६-६४, सोमवार
सोनगढ़

चि. भाई मुकुंदराय,

तुम्हारा पत्र परसों के दिन शनिवार के शाम को मिला था। पूज्य कृपालु गुरुदेव सुख शांति में विराजते हैं। यहाँ पूज्य श्री पधारे और दूसरे ही दिन से कफ और खांसी कम होने लगी, अब तो लगभग रुपया में १५ आना सुधार है, मात्र एक आना जितनी सर्दी लगती है, परंतु वह भी दो दिन में मिट जायेगी, यहाँ का सूखा हवा–पानी से सुधार हो गया। पूज्य गुरुदेव हँसते–हँसते कहते थे कि मुम्बई की हवा शीत वाली है।

बाकी तो इस बार के उत्सव को पूज्य गुरुदेव लगभग प्रतिदिन याद करते हैं कि आजाद मैदान अर्थात् स्वतंत्रता प्राप्त कराने वाला मैदान, वह मैदान दूर था अर्थात् खास भक्ति भाव वाले आते थे, फिर भी बहुत मनुष्य आते थे, पंडाल तो कितना बड़ा था नजर डालते थे तो पूरी नजर भी नहीं पड़ती थी इत्यादि सभी आनंद से याद करते हैं, जुलूस तो कितना बड़ा लम्बा था। साथ में ही सच्चा हाथी और सात सूंढवाला हाथी। मुकुंदभाई के घर के सामने वाला ख्रिस्ती कहता था कि ऐसा महोत्सव और ऐसा जुलूस तो ६० वर्ष में मुम्बई में कभी निकला ही नहीं।

मुम्बई के आँगन में श्री लाल बहादुर शास्त्रीजी ने पूज्य गुरुदेव को अभिनन्दन ग्रन्थ अर्पण किया तब लाल बहादुर शास्त्रीजी को थोड़े समय हुआ था प्रधानमंत्री बने, वो आये थे, इससे प्रभावना का एक बड़ा कारण बना, काँग्रेस तक अपनी प्रभावना की प्रभा पहुँच गई। बहुत ही अच्छा काम हुआ। मुम्बई का उत्सव बहुत अच्छा हुआ, आप ऐसे काम में पूरे पूरे निमित्त हो इसलिए वास्तव में अवश्य भाग्यशाली हुए हो, तथा अपने सच्चे हृदय से तन–मन–धन से आप सभी ने काम किया है इससे सच्चे भाग्यशाली तथा आत्मा को लाभ रूप यह प्रसंग बना है।

द. बेन शान्ता

Please report errors to Ramaben Parekh: WhatsApp +91 90115 91078 or email ramabenparekh45@gmail.com

Version 001: Updates at http://www.AtmaDharma.com & http://www.AtmaDharma.org

ता. ११-६-६४, गुरुवार
सोनगढ़

चि. भाई मुकुंदराय,

तुम्हें सोमवार को एक पत्र लिखा था वह मिला होगा।

पूज्य गुरुदेव सुख शांति में विराजते हैं अब पूज्य श्री की तबियत एकदम ठीक है।

पूज्य श्री मुम्बई के महोत्सव को बहुत ही याद करते हैं। श्री समयसार के प्रभावना अंग की चर्चा आई तो पूज्यश्री बोले कि मुम्बई वालों ने इस बार अच्छी प्रभावना की है, छोटे–बड़े सभी में एकता बहुत, काम करने वालों ने प्रेमपूर्वक एकतापूर्वक अपना समझकर काम किया है, उसीप्रकार व्याख्यान में कहते थे और कहा कि इन लोगों ने पाँच लाख खर्च करने का निर्णय किया था तथा पानी के जैसा रुपया खर्च किया। मुम्बई वालों ने वास्तविक प्रभावना की ऐसा अति प्रमोदपूर्वक बोले थे, इस बार समझने वाले व्यक्ति बहुत थे।

यहाँ एकदम शांति है तथा पूज्य गुरुदेव धीरे–धीरे घोलन करके वांचते हैं, इससे सूक्ष्म न्याय बहुत अच्छे निकलते हैं, इससे रामजीभाई वगैरह सभी कहते हैं कि गुरुदेव ऐसा सूक्ष्म न्याय सोनगढ़ सिवाय कही निकलता ही नहीं, इसलिए सोनगढ़ छोड़कर कहीं नहीं जाना।

वहाँ सभी खुशी में होंगे, मेरी भाभी आनंद में होंगे।

द. बेन शान्ता

अपना एकरूप ज्ञायकभाव अपने ही ज्ञान का विषय होने से ज्ञेय भी कहा जाता है। उसी अपने ज्ञेय में ही उपयोग का स्थिर होना ज्ञान का धारावाहीपना है।

—प्रवचन रत्नाकर पीयूष, पृष्ठ–२३३

Please report errors to Ramaben Parekh: WhatsApp +91 90115 91078 or email ramabenparekh45@gmail.com

Version 001: Updates at http://www.AtmaDharma.com & http://www.AtmaDharma.org

ता. २३-६-६४, बुधवार
सोनगढ़

चि. भाई मुकुंदराय,

तुम्हारा तथा मेरी भाभी का क्षमावाणी पत्र मिला और तार भी मिला। यहाँ भी मेहमान बहुत थे।

पूज्य गुरुदेव के प्रताप से पर्यूषण पर्व आनंदपूर्वक पूर्ण हुए, पूज्य गुरुदेव की अपार महिमा और प्रभाव है। वहाँ आप सभी ने अच्छा उत्साह रखा तथा रकम भी अच्छी इकट्ठी हो गई है।

दशलक्षण पर्व में प्रतिबंध (त्यागादि) तो आचार्यदेव ने श्रावकों के लिये किया है कि प्रवृत्ति से निवृत्ति लेकर इतने दिन विशेष आत्मसाधना, दान, पूजादि करें, बाकी मुनिवर तो निरंतर साधना करते हैं और आंशिक रूप में क्षमा–निर्मानता, सरलता, निर्लोभता आदि दशधर्म श्रावकों को भी सेवन करना योग्य है, यथाशक्ति दशधर्म की आराधना श्रावकों को भी निरंतर करने योग्य है, ऐसा आचार्यों का कथन है। इतना ही बस, वहाँ सभी खुशी में होंगे।

द. बेन शान्ता

वस्तुतः तो ज्ञानी या अज्ञानी कोई भी जीव परद्रव्य को भोगता ही नहीं है, वह केवल राग के वेदन को भोगता है। तथा शुद्धनिश्चय से तो राग भी परद्रव्य है। राग का भी आत्मा में प्रवेश नहीं है, वह भी पानी में तेल की तरह ऊपर–ऊपर ही तैरता है। मिथ्यादृष्टि को राग की रुचि है, प्रेम है। उसे राग–द्वेष–मोह का परिणाम है, इस कारण कर्म के उदय के निमित्त से जो भोग का भाव होता है, सुख–दुःख का परिणाम होता है, वह आगामी बन्ध करके निर्जरता है।

—प्रवचन रत्नाकर पीयूष, पृष्ठ–२३९

Please report errors to Ramaben Parekh: WhatsApp +91 90115 91078 or email ramabenparekh45@gmail.com

Version 001: Updates at http://www.AtmaDharma.com & http://www.AtmaDharma.org

ता. २३-१२-६४, बुधवार
सोनगढ़

चि. भाई मुकुंदराय तथा भाभी,

तुम्हारा पत्र शनिवार के शाम को मिला था, परम पूज्य कृपालु गुरुदेव सुख–शांति में विराज रहे हैं, अमृतमय वाणी बरस रही है।

आपने लिखा कि सोनगढ़ आने से सभी को बहुत ही आनंद हुआ तथा आप लिखते हैं, यह पढ़कर मुझे बहुत आनंद हुआ। यह भावना बहुत अच्छी है और आपकी यह भावना आत्म–कल्याण के संस्कार तो इस मनुष्य भवमें ही पड़ते हैं, यह मनुष्य भव आत्म–कल्याण करने के लिये उत्तम साधन है।

इस पंचम काल में ऐसे सद्गुरु का योग्य आत्म–कल्याण के लिये मिला है, ऐसा महान पुण्य का उदय महा दुर्लभ योग से अभी सुलभ हो गया है। आप दोनों जन को धर्म की रुचि तथा प्रेम है इससे बच्चों में भी अच्छे संस्कार पड़ते हैं। वर्षा ने कहा कि मुझे सोनगढ़ में पढ़ाओ यहाँ क्यों पढ़ाते हो, यह पढ़कर भी खुशी हुई।

मेरी भाभी तुम भी कहती थी कि मुझे यात्रा करना बहुत अच्छा लगता है। घूमने जाना अच्छा नहीं लगता अर्थात् सभी को दुनिया का/वर्तमान समय का हवा–वातावरण नहीं रुचता वह सदा धार्मिक रुचि बढ़ाता रहता है।

द. बेन शान्ता

अहो! जीव का स्फटिक मणि के समान निर्मल स्वभाव है तथा पुण्य–पाप का मलिनभाव कर्मप्रकृति का स्वभाव है, जीव का नहीं। भाई! निश्चय से राग पुद्गल का स्वभाव है, क्योंकि राग कर्मप्रकृति के संग में उत्पन्न हुआ औपाधिकभाव है और कर्मप्रकृति के अभाव होते ही निकल जाता है। भगवान सिद्ध परमात्मा के राग होता ही नहीं है। **—प्रवचन रत्नाकर पीयूष, पृष्ठ–३२१**

Please report errors to Ramaben Parekh: WhatsApp +91 90115 91078 or email ramabenparekh45@gmail.com

Version 001: Updates at http://www.AtmaDharma.com & http://www.AtmaDharma.org

ता. ३१-१२-६४, गुरुवार, सोनगढ़

चि. भाई मुकुंदराय,

कल सुवह पत्र लिखा है, वह मिला होगा। पूज्य कृपालु गुरुदेव सुखशांति में विराज रहे हैं, वाणी परम कल्याणकारी बरस रही है।

श्री समयसार कलश टीका ग्रन्थ आ गये हैं, परंतु यहाँ सबको दे दिये गये थे, पच्चीस बचे थे, पूज्य गुरुदेव जिसे देने की कहते हैं उन्हें ही देते हैं, इसलिए पूज्य गुरुदेव से पूंछाया कि मुकुंदभाई ने मंगाया है, तब गुरुदेवश्री ने उल्लासपूर्वक उत्तर दिया कि हाँ! दे दो–दे दो! मुकुंदभाई यहाँ से क्यों नहीं ले गये? तब चंदुभाई ने कहा कि मुकुंदभाई के चले जाने के बाद श्री कलश टीका ग्रन्थ आये तब पूज्य श्री ने मुकुंदभाई के लिये ॐ करके ग्रन्थ भिजवाया, इसप्रकार महापुरुषों की कृपा से तुम्हें ग्रन्थ मिला है, इसलिए आप जरूर श्री समयसार कलश टीका का स्वाध्याय करना। बहुत अच्छे भाव उसमें भरे हैं। समयसार कलश टीका का पूज्य श्री को बहुत प्रेम है। अभी थोड़े आये हैं इसलिए पूज्य श्री से पूंछकर सभी को देते हैं।

स्वाध्याय नियमित जरूर करना। **द. बेन शान्ता**

समयसार गाथा ११ के भावार्थ में कहा है कि—

१. प्राणियों को भेदरूप व्यवहार का पक्ष तो अनादिकाल से ही रहा है।
२. इसका उपदेश बहुधा सर्व प्राणी परस्पर करते हैं।
३. जिनवाणी में व्यवहार का उपदेश शुद्धनय का हस्तावलम्ब जानकर बहुत किया है; परन्तु इसका फल संसार ही है।

तथा वहीं कहा है—

१. शुद्धनय का पक्ष तो कभी आया नहीं।
२. इसका उपदेश भी विरल है, कहीं–कहीं पाया जाता है।
३. इसलिये उपकारी श्रीगुरु ने शुद्धनय से ग्रहण का फल मोक्ष जानकर इसका उपदेश प्रधानता से दिया है।

—प्रवचन रत्नाकर पीयूष, पृष्ठ–३३२

Please report errors to Ramaben Parekh: WhatsApp +91 90115 91078 or email ramabenparekh45@gmail.com

Version 001: Updates at http://www.AtmaDharma.com & http://www.AtmaDharma.org

ता. २६-६-६५
शनिवार

चि. भाई मुकुंदराय,

तुम्हारा पत्र कल शाम को मिला पढ़कर आनंद हुआ, पूज्य कृपालु गुरुदेव सुख–शांति में विराजते हैं। वाणी परम कल्याणकारी बरस रही है।

प्रौढ़ शिक्षण वर्ग की कक्षा चालू होने का समय आ गया है, इससे हिन्दी मेहमान अभी से आने लगे हैं। पूज्य गुरुदेव के प्रभावना का उदय जबरदस्त वर्त रहा है। सम्पूर्ण हिंद में जोरदार फैल रहा है, दूर–दूर से इतने भविक आते हैं कि अपने को तो देखते ही ऐसा हो जाता है कि वाह! लोगों को कितना सत्यधर्म के प्रति कितनी जिज्ञासा है।

आप श्री इस श्रवण माह के शिविर में हिन्दी भाईयों के साथ लाभ लो तो अच्छा है। व्यापार तो चलता ही रहता है चार–छह दिन का समय निकालो तो निकाल सकते हो। ऐसे उत्तम मनुष्य भव में इस सत्यधर्म की रुचि बढ़ाने जैसी है, आप सत् स्वभाव की रुचि खूब बढ़ाओ। तथा सद्गुरुदेव का समागम बारंबार करो ऐसी हमारी इच्छा है। सद्गुरुदेव के समागम में आत्म–जिज्ञासा, आत्मकल्याण सहज–सहज में वृद्धिंगत होता है। ऐसा (समागम) बारंबार करो ऐसी हमारी भावना है। पूज्य सद्गुरुदेव के समागम में आत्मजिज्ञासा आत्मकल्याण सहजता से वृद्धि को पाते हैं।

द. शान्ता बेन

जीवों का सच्चा स्वार्थ अपने स्वरूप में स्थिर होने में है, क्षणभंगुर भोग भोगने में नहीं। भोग भोगने से तो तृष्णा बढ़ जाती है, संताप की शान्ति नहीं होती। हे सुपार्श्वनाथ! भगवान आपने ऐसा उपदेश दिया है। **श्री स्वयंभू स्तोत्र**

Please report errors to Ramaben Parekh: WhatsApp +91 90115 91078 or email ramabenparekh45@gmail.com

Version 001: Updates at http://www.AtmaDharma.com & http://www.AtmaDharma.org

ता. १३-११-६५, शनिवार
सोनगढ़

चि. भाई मुकुंदराय,

तुम्हारा पत्र परसों के दिन ता. ११ का मिला, इसीप्रकार बराबर लिखते रहना।

पूज्य कृपालु गुरुदेव सुख–शांति में विराज रहे हैं। वाणी परम कल्याणकारी बरस रही है।

मणिभाई की तबियत में अब कुछ सुधार होगा, हमारे तरफ से उनकी तबियत खबर पूंछना और कहना कि शरीर का तो स्वभाव ही ऐसा है। इसलिए आत्मकल्याण तरफ विशेष ध्यान देने योग्य है, यदि उन्हें सावधानी हो तो हमारे तरफ से कहना।

आत्मा तो नित्य है, शाश्वत ही है, एक शरीर को छोड़कर दूसरे शरीर को ग्रहण करता ही रहता है, उसमें यदि आत्मस्वरूप की पहचान हो जाय कि ''मैं तो साक्षात् चैतन्य स्वरूप आत्मा हूँ।'' इस शरीर से एकदम भिन्न ही है। राग–द्वेष आदि भाव होते हैं मेरी पर्याय में, परंतु ये पर के निमित्त के होनेवाले भाव हैं। ये मेरे स्वभाव नहीं, ऐस भान हो तब भव का अंत आ जाता है और आत्मा की शुद्ध दशा वृद्धिंगत होते–होते पूर्ण स्वरूप को प्राप्त हो तब भव और शरीर तथा रागादि अशुद्धता का सम्पूर्ण अभाव होता जाता है।

चि. अतुल, नीरू, पंकज, वर्षा, नरेंद्र सभी मजा में होंगे, पत्र लिखना।

द. बेन शान्ता

जैसे कोई पुरुष रत्नद्वीप को प्राप्त होने पर भी रत्नद्वीप में से रत्नों को छोड़कर काष्ठ ग्रहण करता है, वैसे ही मनुष्य भव में धर्म–भावना का त्याग करके अज्ञानी भोग अभिलाषा करते हैं।

—श्री भगवती आराधना

Please report errors to Ramaben Parekh: WhatsApp +91 90115 91078 or email ramabenparekh45@gmail.com

Version 001: Updates at http://www.AtmaDharma.com & http://www.AtmaDharma.org

ता. ४-७-६७, गुरुवार
सोनगढ़

चि. भाई मुकुंदराय,

तुम्हारा १ ता. का लिखा पत्र मिला है। पूज्य कृपालु गुरुदेव सुख शांति में विराजते हैं। वाणी अमृतरसमय बरस रही है। अभी तो श्री समयसार में से ४७ शक्तियों पर व्याख्यान चल रहे हैं, इससे व्याख्यान बहुत अच्छे आते हैं, अनंत शक्तियों का धनी यह आत्मा ऐसा है।

पू. गुरुदेव की ८० वीं जन्मजयंति बम्बई करना है तथा साथ ही साथ श्री जिनेन्द्रदेव का दस वर्षीय महोत्सव भी तभी मानने की भावना है तो विनंती करने तुरंत आना, पू. गुरुदेव भी अंदर में बालते हैं कि बम्बई वाले ८० वी जयंती नहीं छोड़ेंगे, इससे पू. गुरुदेवश्री का भी भाव है।

द : बेन

चि. भाई मुकुंदराय,

पू. गुरुदेव सुख शांति में विराजते हैं।

बापू जी को कहना कि पू. गुरुदेव के नाम का और सीमंधर भगवान के नाम का रटन मन ही मन करा करें, उन प्रतापी प्रभु के प्रताप से सब अच्छा हो जायेगा, वीतरागी पुरुषों का तथा पू. गुरुदेव के गुणों का खूब मन में चिंतवन करना। उनके गुणों का बारंबार याद करना, उनके प्रताप से सब अच्छा हो जायेगा। आत्मा चैतन्य स्वरूप है यह शरीर जड़ है, आत्मा जाननार ज्ञानस्वरूप है वही मैं हूँ। आत्मा हूँ, ऐसा बारंबार विचारना। आत्मा ज्ञान–दर्शन–सुख वगैरह अनंत गुणों का पिंड है तथा शरीर जड़ता का पिंड है ऐसा बारंबार विचारना। आत्मा में अनंती शांति है, शांत स्वरूप ही आत्मा का गुण है इसलिए खूब शांति रखना।

द. बेन

Please report errors to Ramaben Parekh: WhatsApp +91 90115 91078 or email ramabenparekh45@gmail.com

Version 001: Updates at http://www.AtmaDharma.com & http://www.AtmaDharma.org

ता. १९-५-६९, सोमवार
सोनगढ़

चि. भाई मुकुंदराय,

तुम्हारा ता. १३ का लिखा पत्र मिल गया है, पढ़कर आनंद हुआ।

परम पूज्य कृपालु गुरुदेव सुख–शांति में विराजते हैं। वाणी अमृतमय बरस रही है।

कक्षा में दो सौ बच्चे आये हैं, अभी भी जाना चालू है, बड़े–बड़े हिन्दी भाई भी बहुत आये हैं, पूज्य श्री व्याख्यान हिन्दी में करते हैं।

यहाँ परमागम मंदिर बनने वाला है ऐसा पूज्य श्री बम्बई में व्याख्यान में अति प्रमोद से कई बार याद करते थे, कोई ने ८० की रकम जाहिर की तो पू. श्री कह देते थे कि बम्बई वाले परमागम के लिए दे देना वह यहाँ नहीं रखना, तुम बम्बई वालों ने ७५ वीं और ८० वीं जन्मजयंति का उत्सव करके अति ही अलभ्य लाभ लिया है। साथ ही साथ श्री जिनेन्द्र भगवान के पंचकल्याणक अर्थात् अति ही अमूल्य लाभ लिया है, ऐसा उत्सव तो बम्बई वाले तुम लोग ही कर सकते, टाईम अधिक हो जायेगा परन्तु पहले से इतनी हिम्मत और जोरदार भावना रखना यह सत्य है, हमें श्री बम्बई का प्रसंग याद आता है तब ऐसा लगता है कि वाह! बहुत अच्छा प्रसंग भज गया।

तुम सभी कठिन मेहनत और हिम्मत रखते हो यह तुम्हारे आत्मा को वास्तविक लाभ का कारण है तथा शांतिपूर्वक सब कुछ करते हो यह बहुत अच्छी बात है, इससे मुझे भी पूर्ण संतोष है। **द. बेन**

कायविकार को छोड़कर जो पुनः पुनः शुद्धात्मा की सम्भावना (सम्यक् भावना) करता है उसी का जन्म संसार में सफल है। **—श्री नियमसार टीका**

Please report errors to Ramaben Parekh: WhatsApp +91 90115 91078 or email ramabenparekh45@gmail.com

Version 001: Updates at http://www.AtmaDharma.com & http://www.AtmaDharma.org

ता. १८-७-७०, शनिवार
सोनगढ़

चि. भाई मुकुन्दराय,

तुम्हारा पत्र गुरुवार के शाम को मिल गया है। परम पूज्य कृपालु गुरुदेव सुख शांति में विराज रहे हैं, वाणी परम कल्याणकारी बरस रही है।

आपने लिखा कि वहाँ के नवीन समाचार जरूर लिखना तो नवीन में तो पूज्य गुरुदेव सुबह–दोपहर उपदेश दे रहे हैं। उसमें सुबह अष्टपाहुड में आता है कि जीव ने बाह्य चारित्र अनेकबार/अनंतबार अंगीकार किया परन्तु सम्यग्दर्शन प्राप्त नही किया तो उसके फलरूप में सिद्धि प्राप्त नहीं हुई। ''आत्मा जागती ज्योत'' ''चैतन्य स्वरूप है'' उसका अनुभव करना तो मोक्षरूपी फलकी प्राप्ति होगी ही। दोपहर में श्री समयसार का सर्वविशुद्ध अधिकार चल रह है, उसमें आत्मा स्वयं अपने भाव का कर्त्ता है, पर पदार्थ का आत्मा कुछ भी कर नहीं सकता, अज्ञानता से कर्त्ता मानता है। सम्यग्ज्ञान होते ही कर्त्तापना छूट जाता है, इस प्रकार पू. गुरुदेव श्री के उपदेश में बहुत आता है, यह तो एक न्याय लिखा।

दूसरा कल रविवार को दिव्यध्वनि के दिन परमागम मंदिर का वार्षिक मुहूर्त है। बम्बई मण्डल का तार पाँच गाथा का आनंद व्यक्त का आया है, जो कल के प्रसंग पर जाहिर होंगे। **द. बेन**

हे असंतोषी आत्मा! सर्व जगत की माया को अंगीकार करने की अभिलाषारूप परिणाम से तो तूने इस जगत में कुछ भी नहीं छोड़ा है। उसमें जो कुछ बच पाया है वह तो तेरी भोग करने की अशक्ति से ही बचा है। जिसप्रकार राहु से ग्रसित चन्द्र–सूर्य यदि बच पाये हैं तो वे मात्र राहु की अशक्ति से ही बचे हैं। **—श्री आत्मानुशासन**

Please report errors to Ramaben Parekh: WhatsApp +91 90115 91078 or email ramabenparekh45@gmail.com

Version 001: Updates at http://www.AtmaDharma.com & http://www.AtmaDharma.org

ता. २३-७-७०, गुरुवार
सोनगढ़

चि. भाई मुकुंदराय,

तुम्हारा पत्र मंगलवार के दिन मिला, पढ़कर समाचार ज्ञात किये।

परम पूज्य कृपालु गुरुदेव सुख शांति में विराजते हैं। वाणी परम कल्याणकारी बरस रही है।

अभी अष्टपाहुड़ में सम्यग्दर्शन के महात्म्य की बात व्याख्यान में बहुत अच्छी आ रही है।

सम्यक्त्वी जीव के चैतन्य की परिणति में दो धारा निरंतर वर्तती हैं, एक ज्ञानधारा और दूसरी उदयधारा। ज्ञानधारा में सम्यक्त्वी को शुद्ध चैतन्य का वेदन निरंतर रहता है तथा वह ज्ञानधारा शुभाशुभ रूप उदयधारा से एकदम भिन्न ही रहती है। उदयधारा अर्थात् शुभाशुभ परिणामरूप धारा भी होती है। कोई–कोई बार समकिती जीव की उस शुभाशुभ धारा से ''भिन्न अकेली शुद्ध परिणति रूप चैतन्य का अनुभव भी करता है।'' पूर्ण वीतराग दशा प्राप्त न हो तब तक ऐसी दो धारा समकिती जीव को निरंतर चलती है। यह एक संक्षिप्त न्याय लिखा। बाकी तो पू. गुरुदेव की वाणी में बहुत–बहुत आता है।

दो दिन से सर्दी मिट गई है, इसलिए जरा भी चिन्ता नहीं करना। परमागम मंदिर का काम ठीक चल रहा है। आरस की पटियों का ५०० फुट आडर दिया है। वहाँ भाभी अतुल आदि मजे में होंगे। **द. बेन**

संयमी जीवों के मन में असंयमी (अज्ञानी) जनों को देखकर बड़ा संताप होता है कि अरेरे! देखो तो सही, संसाररूपी कुएँ में डूबने पर भी यह जीव क्यों नाच रहे हैं।

—श्री उपदेश सिद्धान्त रत्नमाला

Please report errors to Ramaben Parekh: WhatsApp +91 90115 91078 or email ramabenparekh45@gmail.com

Version 001: Updates at http://www.AtmaDharma.com & http://www.AtmaDharma.org

ता. २७-७-७०, सोमवार
सोनगढ़

चि. भाई मुकुंदराय,

तुम्हारा २३ ता. का लिखा तथा २५ ता. का लिखा–इस प्रकार दोनों पत्र कल मिले हैं, पढ़कर आनंद हुआ।

परम पूज्य कृपालु गुरुदेव सुख शांति में विराजते हैं। वाणी परम कल्याणकारी बरस रही है।

पू. गुरुदेव फरमाते हैं कि आत्मा द्रव्य से शुद्ध है और पर्याय में अशुद्धता है, जैसे स्फटिक मणि स्वभाव से शुद्ध है परन्तु लाल–पीले फूल के निमित्त से उसकी पर्याय में लाल–पीली अवस्था होती है। वैसे ही प्रत्येक संसारी जीव निगोद में भी द्रव्यस्वभाव से तो शुद्ध है परन्तु पर्याय में मलिनता है। द्रव्य से शुद्ध है, फिर भी पर्याय की मलिनता से जीव चार गति में परिभ्रमण किया करता है। सम्यग्दर्शन होते पर्याय में शुद्धता होती और तभी इसके भवभ्रमण का अंत आ जाता है। सम्यग्दर्शन हुआ उसको चारित्र अवश्य आयेगा ही बाद में वह जीव केवलज्ञान पायेगा और उसको मोक्ष होगा। यह एक न्याय पू. श्री के व्याख्यान में से लिखा है। बांकी तो पू.श्री की वाणी में बहुत अधिक आता है।

द. बेन

जो मोही जीव है वह इस संसार को आधि–मानसिक क्लेश, व्याधि–शारीरिक कष्टप्रद रोग, जन्म, जरा, मरण और शोकादि उपद्रवों से युक्त भयंकर रूप में देखता होने पर भी उससे विरक्त नहीं होता! यह मोह का कैसा माहात्म्य?

—श्री योगसार प्राभृत

Please report errors to Ramaben Parekh: WhatsApp +91 90115 91078 or email ramabenparekh45@gmail.com

Version 001: Updates at http://www.AtmaDharma.com & http://www.AtmaDharma.org

ता. १-८-७०, शनिवार
सोनगढ़

चि. भाई मुकुंदराय,

तुम्हारा पत्र मिला पढ़कर समाचार जाने। परम पूज्य कृपालु गुरुदेव सुखशांति में विराजते हैं। वाणी परम मंगलकारी बरस रही है।

आत्मा द्रव्य से नित्य है और पर्याय से अनित्य है, अभी यह कथन समयसार में चल रहा है। बौद्धमति कहता है कि आत्मा क्षणिक है, उसे जैनों का जवाव आता है कि यदि आत्मा क्षणिक ही हो अर्थात् क्षणमात्र में नष्ट होता हो तो कल की बनी बात आत्मा याद रखता है, माह की, वर्षो की बात आत्मा याद रखता है वह याद नहीं कर सकता परन्तु आत्मा तो द्रव्य से तीनों काल रहने वाल शाश्वत है, इसलिए आत्मा और भी अधिक समय की बात याद रख सकता है, इसलिए बौद्ध का सिद्धान्त बिल्कुल झूठ है, जैन कहते हैं कि आत्मा द्रव्य से नित्य है और पर्याय से परिवर्तन होता है। यह सिद्धान्त एकदम सत्य है।

वहाँ सर्व खुशी में होंगे, पत्र लिखना। **द. बेन**

जिसप्रकार चन्द्रमा आकाश में निरन्तर चक्कर लगाता रहता है, उसीप्रकार यह प्राणी संसार में सदा परिभ्रमण करता रहता है। जैसे चन्द्रमा उदय–अस्त एवं कलाओ की हानि–वृद्धि को प्राप्त होता रहता है, उसीप्रकार संसारी प्राणी भी जन्म–मरण तथा सम्पत्ति की हानि–वृद्धि को प्राप्त होता रहता है; जैसे चन्द्रमा मध्य में कलुषित (काला) रहता है, उसी प्रकार संसारी प्राणी का हृदय भी पाप से कलुषित रहता है तथा जिसप्रकार चन्द्रमा एक राशि (मीन–मेष आदि) से दूसरी राशि को प्राप्त होता है तदनुसार संसारी प्राणी भी एक शरीर छोड़कर दूसरे शरीर को ग्रहण करता रहता है। ऐसी स्थिति होनेए पर भी सम्पत्ति और विपत्ति की प्राप्ति में जीव को हर्ष और विषाद किसलिये करना चाहिये? अर्थात् नहीं करना चाहिये। **—श्री पद्मनन्दि पंचविंशतिका**

Please report errors to Ramaben Parekh: WhatsApp +91 90115 91078 or email ramabenparekh45@gmail.com

Version 001: Updates at http://www.AtmaDharma.com & http://www.AtmaDharma.org

ता. ६-८-७०

चि. भाई मुकुंदराय,

परम पूज्य कृपालु गुरुदेव सुख–शांति में विराजते हैं। वाणी परम कल्याणकारी बरस रही है।

पू. गुरुदेव फरमाते हैं कि संसार–कुटुंब–घरबार–लक्ष्मी में लोग संसार मानते हैं और उसे छोड़ने से संसार छूट गया मानते हैं, परन्तु उन बाह्य पदार्थो में संसार नहीं परंतु चैतन्य आत्मा की पर्याय में जो मिथ्यात्व के, राग–द्वेष के परिणाम है वही संसार है। शरीरादि परपदार्थों को अपना मानना वह मान्यता मिथ्यात्व है वही संसार है। वह संसार अनादि काल से द्रव्यलिंगी मुनि हुआ तो भी जीव की परिणति में से छूटा नहीं परन्तु जब जीव सच्चे देव–गुरु के उपदेश से और अपने सत्य पुरुषार्थ से अपने शुद्ध चैतन्य स्वरूप को अपना माने, ज्ञान आदि अनंत गुणों का पिंड वही मैं हूँ, आत्मा है ऐसा अपनी चैतन्य सत्ता में से ज्ञान होकर श्रद्धा हो तथा आत्मानुभव हो तभी चैतन्य की परिणति में से संसार छूटता है, वह जीव मोक्ष जाने के लायक हो जाता है, मुक्ति के द्वार उसके लिये खुल जाते हैं, वगैरह–वगैरह पू. श्री की वाणी में बहुत आता है, यह तो एक न्याय लिखा।

आज में पू. श्री का व्याख्यान प्रवचन मंडप में रखा गया है। हिन्दी भाई–बहिन बहुत आये हैं और अभी आते जाते हैं। पू. गुरुदेव का प्रभाव अद्‌भुत है।

पंडित फूलचंदजी को गुरुदेव के प्रति भक्तिभाव अच्छा है, वो एक बार कहते थे कि स्वामीजी सम्पूर्ण दिगम्बर समाज आपको सिर पर लेकर नाँचे तो भी आपके उपकार का बदला नहीं चुका सकती इत्यादि अति उमंग में अनेक बार आ जाता था। **द. बेन**

अब तो चेत जा!

हे आत्मन्! तू निगोद के वास में एक अन्तर्मुहूर्त में छ्यासठ हजार तीन सौ छत्तीस बार मरण को प्राप्त हुआ। —श्री भावपाहुड

Please report errors to Ramaben Parekh: WhatsApp +91 90115 91078 or email ramabenparekh45@gmail.com

Version 001: Updates at http://www.AtmaDharma.com & http://www.AtmaDharma.org

शनिवार ता. २०-१-७३

आत्मार्थी ब्र. भाई हरिभाई,

तुम्हारा पत्र मिला, पढ़कर आनंद हुआ। परम पूज्य कृपालु गुरुदेएव सुख शांति में विराज रहे हैं। परम अमृत परोस रहे हैं। श्री सद्गुरुदेव की छत्र–छाया में उनकी कृपा के सिंचन द्वारा यह आत्मा, आत्मा की स्वभाव दशा को साध रहा है। आत्मा की शुद्धता तरफ उपयोग का झुकाव होते ही आत्म–आनंद आत्मसमाधि तथा आत्मशांति झरती है। आत्मा के शुद्ध स्वभाव के वेदन में, अनुभव में जैसा आनंद वेदन में आता है वैसा आनंद दुनिया के कोई पदार्थ में नहीं है, हो ही नहीं सकता।

जाज्वल्यमान ज्योति स्वरूप ज्ञायक आत्मा ज्ञायकपने निरंतर वेदन में आता है, तव उदयधारा गौणरूप से वर्त रही है, उसे ज्ञाता जानता है। ज्ञायक स्वभाव में पूर्णरूप से लीन हो जायें यही भावना निरंतर वर्तती है। यथाशक्ति वह प्रयत्न चालू है।

आप भी आत्मस्वभाव की दशा साधने में विशेष प्रयत्न में होंगे, पू. बेन श्री की शीतल छाया में आनंदपूर्वक साधकदशा साध रहे हैं। हम दोनों बहिनें चैतन्य आत्मा की चर्चा–वार्ता करते हुए आनंदपूर्वक रहते हैं।

साक्षात् तीर्थंकर केवली भगवान के समागम–दर्शन की तीव्र भावना भाते हुए हम दोनों बहिनें समय व्यतीत कर रहे हैं।

पत्र लिखने की प्रवृत्ति अधिक नहीं रूचती, ऐसा ही है।

द. बेन का आशीष

आचार्य महाराज कहते हैं कि यह बड़ा आश्चर्य है जो जीवों का अज्ञान से उत्पन्न हुआ यह आग्रह (हठ) सेंकड़ों उपदेश देने पर भी दूर नहीं होता। हम नहीं जानते कि इसमें क्या भेद है!

—-श्री ज्ञानार्णव

Please report errors to Ramaben Parekh: WhatsApp +91 90115 91078 or email ramabenparekh45@gmail.com

Version 001: Updates at http://www.AtmaDharma.com & http://www.AtmaDharma.org

ता. २९-८-८३

पूज्य शान्तावेन के हस्ताक्षर का हिन्दी

बेटा रमा!

आत्मा का स्वरूप ज्ञान–आनन्द है उसे बारंबार याद करना, मैं शरीर से और राग से एकदम भिन्न हूँ उसका स्मरण किया करना। पू. गुरुदेव के जो वाक्य प्रिय हों तो उन्हें बारंबार याद करना, अरहंत जी का स्वरूप विचारना। महामुनियों के शरीर पर उपसर्ग आते हैं फिर भी आत्मा में कैसे लीन रहते हैं तो महामुनिराज की दशा का चिंतवन करना।

जब जल्दी अशरीरी पद की प्राप्ति हो इसलिए आराधना नित्य आराधनी, ऐसी भावना बारंबार करना। **द. मौसी**

हे मित्र! यदि तुम यहाँ सौभाआग्य की इच्छा रखते हो, सुन्दर स्त्री की इच्छा रखते हो, पुत्रों की इच्छा रखते हो, लक्ष्मी की इच्छाआ रखते हो, महल की इच्छा रखते हो, सुख की इच्छा ररखते हो, सुन्दररूप की इच्छा रखते हो, प्रीति की इच्छा रखते हो अथवा यदि अनन्त सुखरूप अमृत के सागर समान उत्तम स्थान (मोक्ष) की इच्छा रखते हो तो निश्चय से समस्त दुःखदायक आपत्तियों का नाश करनेवाले धर्म में अपनी बुद्धि को लगाओ।

—श्री पद्मनन्दि पंचविंशतिका

जिसका चिंतवन करने से, ध्यान करने से ऋषिगण परम पद को प्राप्त करते हैं, जिसकी स्तुति इन्द्र, धरणेन्द्र, नरेन्द्र तथा गणधरदेव सर्वमद को त्यागकर करते हैं, वेद–पुराण जिसको बतलाते हैं, यमराज के दुःख के प्रवाह को जो हरती है–ऐसी जिनवाणी, उसे हे भव्य जीवो! द्यानतरायजी कहते हैं कि तुम अनेक विकल्परूप नदी का त्याग करके अपने हृदय में नित्य धारण करो!

—श्री द्यानत–विलास

Please report errors to Ramaben Parekh: WhatsApp +91 90115 91078 or email ramabenparekh45@gmail.com

Version 001: Updates at http://www.AtmaDharma.com & http://www.AtmaDharma.org

२०२७ आसाढ़ माह

चि. बेन रमा,

तुम आत्मा की जिज्ञासा बढ़ाओ, चलते–फिरते उन कार्यों की प्रवृत्ति में थी यह लक्ष्य रखना कि यदि बाहर का कार्य शरीर से होता है, मैं तो उसका जानने वाला हूँ, जो सबको जानता है वह जानने वाला तत्त्व मैं हूँ, ऐसा बारंबार विचार करना।

पूज्य गुरुदेवने श्रीमद् में कितने अच्छे बोल अपने को सुनाये थे ''स्वद्रव्य का रक्षक शीघ्र हो'' इत्यादि १० बोल बहुत अच्छे हैं, उन्हें बारंबार याद करना। भले शरीर काम–काज की प्रवृत्ति में हो उस समय भी आत्मा तो ऐसे विचार कर सकता है। ऐसे–ऐसे तत्त्व के सूत्र याद कर लेना कि शास्त्र हाथ में न हो तो भी उन तत्त्वों के सूत्रों का स्मरण हुआ करे। पूज्य गुरुदेव के व्याख्यान में से भी अपना हित हो ऐसी बात याद रख लेना और उसका चिंतवन किया करना। पूज्य गुरुदेव तो चैतन्य आत्मा की बात बहुत स्पष्ट रूप से बतला रहे हैं।

समयसार नाटक में भी पू. गुरुदेव श्री कहते थे कि—

''समता रमता उर्ध्वता ज्ञायकता सुखभास।
वेदकता चैतन्यता ये सब जीव विलास॥''

ऐसे सूत्र याद कर रखना जिससे जब चाहे तब उनका चिंतवन कर सको, जैसे म्यान से तलवार भिन्न है, वैसे ही देह से आत्मा प्रत्यक्ष भिन्न है, जैसे नारियल की काचरी से अन्दर का गोला भिन्न है, वैसे ही देहरूपी काचरी से यह चैतन्य गोला भिन्न है।

ज्ञानी उस चैतन्य गोले का निरंतर अनुभव कर रहे हैं। ज्ञानी को देह से एकदम भिन्न आत्मा आत्मरूप से स्पष्ट प्रगट जाज्वल्यमान ज्योति का अनुभव वर्तता ही रहता है, ज्ञानी को उदयधारा/कर्मधारा और ज्ञानधारा निरंतर भिन्न ही वहती है/वर्तती है। यही करना है।

द. मौसी

Please report errors to Ramaben Parekh: WhatsApp +91 90115 91078 or email ramabenparekh45@gmail.com

Version 001: Updates at http://www.AtmaDharma.com & http://www.AtmaDharma.org

ता. १२-८-७४

चि. बेन रमा बेटी।

तुम्हारा पत्र शनिवार को मिला, खुशी से पहुँच जाने के समाचार जाने। तेरी तबियत अच्छी रहती होगी। डॉक्टर की गोलियाँ नहीं खाना, देशी दवा चालू रखना।

पूज्य कृपालु गुरुदेव सुख–शांति में विराजे रहे हैं, वाणी परम अमृतमय बरस रही है।

पू. बेन श्री तथा मेरी तबियत अच्छी है, यहाँ की कुछ भी चिंता किये बिना शांति से वहाँ रहना।

तू वहाँ स्वाध्याय प्रतिदिन करती होगी, शास्त्रों में आचार्य भगवंतों ने आत्मा का स्वरूप अनुभव कर करके कितनी अच्छी रीत से वर्णन किया है कि स्वाध्यायी आत्मार्थी होकर पढ़े तो जरूर आत्म–लाभ होवे ही।

पूज्य गुरुदेव ने भी आत्मा का स्वरूप खूब स्पष्ट करके मुमुक्षु जीवों को बताया है। आत्मा चैतन्य चमत्कार स्वरूप ही है, सुख का, ज्ञान का तो समुद्र भरा है। सच्चा सुख आत्मा में से ही मिलता है। स्वयं चैतन्य द्रव्य के सन्मुख देखता है, तो सुख ही दिखता है एवं सुख का ही वेदन होता है। ऐसा अचिंत्य स्वरूपी आत्मा को निहारने की भावना विशेष रूप से बढ़ाना।

वहाँ सभी खुशी में होंगे, तुम्हारी माँ का पत्र मिला, तुम्हारे काका, तुम्हारी माँ, भरत, अशोक, उषा, इन्दु, सुधा सभी को इसकी रुचि बढ़ाने योग्य है। अफ्रिका से भगवान के विरह में यहाँ आये और महाभाग्य से श्री जिनेन्द्रदेव के पडौस में बस रहे हो। अतः प्रतिदिन देवदर्शन, पूजा, भक्ति वगैरह का सभी को लाभ लेने योग्य है। बस यही, पत्र लिखना।

द. मौसी

Please report errors to Ramaben Parekh: WhatsApp +91 90115 91078 or email ramabenparekh45@gmail.com

Version 001: Updates at http://www.AtmaDharma.com & http://www.AtmaDharma.org

ता. ३-८-६५

चि. बेन कान्ता,

तुम्हारा पत्र कल मिला, वांचकर आनंद हुआ, मुझे प्रवृत्ति लगती है इसलिए तुम्हारे पत्र का जवाब देर से लिखा, परन्तु तुम्हें तो मेरे पत्र का जवाब तुरंत लिखना चाहिए।

पूज्य कृपालु गुरुदेव सुख–शांति में बिराज रहे हैं, वाणी परम कल्याणकारी बरस रही है।

रमा यहाँ आयेगी उसके साथ तुम भी आओ तो अच्छा है, अधिक न रह सको तो पंद्रह दिन रहोगी तो भी ठीक है। रमा के साथ आओगी तो आनंद होगा और संतोष भी होगा। रमा को तो यहाँ कोई परेशानी नहीं, हम सभी हैं अर्थात् उसकी रूम तो बराबर चालू हो जायगी।

दूसरी बात रमा पर्यूषण पर्व में आने का लिख रही है तो पर्यूषण पहले आओ तो उसकी रूम वगैरह सब व्यवस्थित हो जाय और दसधर्म आराधना के दिनों में आराधना करके उसके भी आत्मा की आराधना हो, यहाँ रहने का मुख्य ध्येय एक आत्मा का है। उत्सव जैसा होता है, मेहमान भी आते हैं, इसलिए लाभ मिलता है और संस्कार पड़ते हैं।

इसलिए अब विचार करके जवाब लिखना। रमा के लिए भी हम दोनों ने रूम तैयार करवा दी है, रूम तैयार है।

वहाँ मोतीलाल, भरत, अशोक आदि सभी के अच्छी रुचि हो गई है, सुधा वगैरह सभी छुट्टियों में आने का लिख रहे हैं तो खुशी से जरूर आना, सुधा भी आनंद में होगी, मोतीलाल भी मजे में होंगे। पत्र लिखना।

द. बेन शान्ता

Please report errors to Ramaben Parekh: WhatsApp +91 90115 91078 or email ramabenparekh45@gmail.com

Version 001: Updates at http://www.AtmaDharma.com & http://www.AtmaDharma.org

ता. १६-१२-६७, शनिवार
सोनगढ़

चि. कान्ता तथा मोतीलाल,

तुम्हारा पत्र गुरुवार को मिला, वहाँ सभी खुशी में होंगे, हमारी तबियत अच्छी है। परम पूज्य गुरुदेव सुख–शांति में विराज रहे हैं। वाणी परम मंगलकारी बरस रही है।

वहाँ भूकंप सम्बन्धी शांति हो गई होगी। वहाँ आप सभी प्रत्येक व्यक्ति प्रतिदिन सुबह नहा–धोकर मंदिर में पूजा करने के बाद शांति से बैठकर १०८ बार णमोकार मंत्र का जाप करना, पंच परमेष्ठी भगवान के स्मरण से सब अच्छा हो जाता है। धन्य हैं अरहंत–सिद्ध परमेष्ठी भगवान को कि जो अपनी पूर्ण शुद्धता प्राप्त करके कृतकृत्य हुए हैं, उन्हें बारम्बार नमस्कार हो। आचार्य, उपाध्याय, साधु भगवन्त भी अपनी पूर्ण शुद्धता के नजदीक पहुँच गये हैं, उन्हें भी बारम्बार नमस्कार हो।

देव, शास्त्र, गुरु प्रत्येक की रुचि भक्ति बढ़ाने जैसी है, विगत बार पत्र लिखना। **द. बेन**

कोई निन्दा करता है तो करो, स्तुति करता है तो स्तुति करो, लक्ष्मी आओ या जाओ, तथा मरण आज ही होओ या युगान्तर में होओ। परन्तु नीति में निपुण पुरुष न्यायमार्ग से एक डग भी डिगते नहीं है। ऐसे न्याय का विचार करके, निन्दा–प्रशंसादि के भय से अथवा लोभादिक से भी अन्यायरूप मिथ्याप्रवृत्ति करना योग्य नहीं है। अहो! देव–गुरु–धर्म तो सर्वोत्कृष्ट पदार्थ हैं। उसके आधार से तो धर्म है, उसमें शिथिलता रखे तो अन्य धर्म किस प्रकार हो?

—श्री मोक्षमार्गप्रकाशक

Please report errors to Ramaben Parekh: WhatsApp +91 90115 91078 or email ramabenparekh45@gmail.com

Version 001: Updates at http://www.AtmaDharma.com & http://www.AtmaDharma.org

चि. मोतीलाल, वेन कान्ता, भाई भरत, अशोक, उषा और कल्पना!

तुम सभी परदेश में हो, वहाँ सभी कुशल होंगे, यहाँ सभी कुशल हैं।

तुम सभी को धर्म के संस्कार और रुचि बढ़ाना चाहिए। पू. गुरुदेव के टेप–प्रवचन प्रतिदिन सुनना साथ ही स्वाध्याय भी करना। ''धर्म अर्थात् सुख है।'' धर्म की रुचि दिन–प्रतिदिन अधिक करना, भले परदेश में हो या हिन्दुस्तान हो कोई भी स्थान में हो धर्म सर्वत्र हो सकता है, प्रत्येक आत्मा स्वतंत्र है।

आत्मा ज्ञानस्वभावी है, आत्मा का स्वभाव जानने का है, आत्मा जानकर है। ज्ञान–शरीरी है, रागादि एकदम भिन्न है, आत्मा ज्ञायक चैतन्य मूर्ति है, इस देह के अन्दर यह आत्मा कौन है? यह मैं–मैं करनेवाला कौन है? उसे जानने की रुचि बढ़ाना, उसकी भावना बढ़ाना, उसके संस्कार बढ़ाना, ऐसे गहरे संस्कार डालो जो भव–भव तक साथ में आवें। धर्म के गहरे पड़े बीज से अच्छे फल आवें। मनुष्य भव में ही ऐसे गहरे संस्कार पड़ते हैं। सत् धर्म के संस्कार सत् तत्त्व यह आत्मा ही है। देव–शास्त्र–गुरु के प्रति रुचि बढ़ाना, श्री अरहंतजी, श्री सिद्धजी भगवान के प्रति का बहुमान, भक्ति, पूजा जितनी अधिक होगी उतने ही भाव बढ़ेंगे, जितना समय मिले उतनी स्वाध्याय की रुचि रखना। प्रमाद करना नहीं, बाहर का देखने में समय खराब करना नहीं, वह तो पुद्गल का ठाठ है, अतः आत्मा तरफ देखे से आत्मा का सच्चा आनंद आता है।

द. बेन

जैसे दृढ़ नौका में बैठे हुए मनुष्य को विस्तीर्ण नदी में जल बढ़ने पर भी यात्रा करने में डर नहीं लगता, वैसे ही जो पुरुष शरीर के क्षणिक तथा अपवित्र स्वभाव को यथावत् समझा है, तथा वास्तविक आत्मशान्ति का किसी अंश में अनुभव हुआ है, उस पुरुष को रोगादि की वृद्धि में भी खेद प्राप्त नहीं होता।

—श्री आत्मानुशासन

Please report errors to Ramaben Parekh: WhatsApp +91 90115 91078 or email ramabenparekh45@gmail.com

Version 001: Updates at http://www.AtmaDharma.com & http://www.AtmaDharma.org

सोनगढ़

चि. बेन सविता,

आप लोगों को आत्मा की जिज्ञासा बढ़ाना, मेरा आत्म–कल्याण कैसे हो उसके विचार बारम्बार करना, पूज्य श्री गुरुदेव के व्याख्यान में से अपने हित रूप वाक्य ग्रहण कर लेना तथा पू. गुरुदेव श्री के मोक्षमार्गप्रकाशक आदि शास्त्रों के प्रवचन पढ़ना उसमें से हितरूप वाक्य ग्रहण करके उस पर विचार करना, चलते–फिरते आदि कामों की प्रवृत्ति में भी लक्ष यह रखना कि मैं जाननार तत्त्व हूँ, इन सब को जानता हूँ, ''यह जाननार तत्त्व मैं ही हूँ।''

बाहर के सभी कार्य उदयाधीन होते हैं, शरीर से जो कार्य होते हैं उनका कर्त्ता में नहीं, शरीर ही उनका कर्त्ता है। शरीररूपी पुद्गल का कार्य शरीर रूप ही कर्त्ता है, आत्मा चेतन स्वभावी, जड़स्वभावरूप शरीर का कुछ नहीं कर सकता। जैसे म्यान से तलवार भिन्न है, वैसे ही शरीर रूपी म्यान से आत्मा चैतन्य ज्योति बिल्कुल भिन्न है, प्रत्यक्ष रूप से भिन्न है।

जैसे नारियल काचरी से नारियल और मीठास भिन्न है। वैसे ही शरीररूपी काचरी से ''चैतन्य गोला जागती ज्योति'' एकदम भिन्न है, ज्ञानी तो चैतन्य गोले का ही अनुभव कर रहे हैं, ज्ञानी को देह से एकदम भिन्न आत्मा, आत्मरूप से स्पष्ट जाज्वल्यमान ज्योति का निरंतर अनुभव वर्तता ही रहता है, ज्ञानी की उदयधारा/कर्मधारा और ज्ञानधारा भिन्न ही निरंतर वहती है, दोनों धाराओं का भिन्न अनुभव ही निरंतर होता है।

साक्षात् तीर्थंकरदेव तो साक्षात् केवलज्ञान देने वाले हैं। महाविदेह में तो साक्षात् श्री तीर्थंकरदेव विराज रहे हैं, उन्हें अनंत अनंत भक्तिपूर्वक नमस्कार हो नमस्कार हो।

अपना चैतन्य स्वरूप पूज्य गुरुदेव के पास साक्षात् अनुभव से समझ में आया, यह परम कृपालु गुरुदेव का अत्यंत उपकार है।

आत्मा तो ज्ञायक स्वरूप है, ज्ञायक स्वयं समता–साम्य स्वरूप है। समयसार नाटक में से भी पूज्य गुरुदेव कहते हैं कि

Please report errors to Ramaben Parekh: WhatsApp +91 90115 91078 or email ramabenparekh45@gmail.com

Version 001: Updates at http://www.AtmaDharma.com & http://www.AtmaDharma.org

''समता रमता ऊर्ध्वता ज्ञायकता सुख भास।
वेदकता चैतन्यता ये सब जीव विलास।।''

चाहे जैसे प्रतिकूल संयोगों में भी आत्मा समता रख सकता है, वह समता आत्मा का मूल ज्ञायक स्वभाव है।

ऐसे ऐसे पूज्य गुरुदेव द्वारा कहे मूल सूत्रों का चिंतवन करना, मनन करना, बारंबार उसका मनन करना यही इस मनुष्य भव में आत्मा को हित रूप है, इसलिए यही विचार बारंबार करने योग्य है।

द. बेन शान्ता

चि. बहिन मंजुला,

पू. गुरुदेव सुख–शांति में बिराज रहे हैं। वाणी अमृतमयी बरस रही है। आप मन को बहुत ही मजबूत/पक्का रखना आत्मा ज्ञान स्वरूप है, जाननहार है। जानने वाले में कुछ होता ही नहीं/पीड़ा/दर्द सब जड़ शरीर में होता है, मैं आत्मा तो ज्ञान–आनंदादि अनंत गुणों का पिंड हूँ ऐसा विचार कर मन को अति पक्का करना।

पू. गुरुदेव का खूब स्मरण रखना, रटन रखना, इस प्रकार मन को अति आनंदित रखना। बम्बई में भी कुछ स्वाध्याय रखना तथा भक्ति–स्तवन भी किया करना इस तरफ मन को पक्का बनाना। ऐसा विचारना कि मैं कितना समझा हूँ उसकी यह परीक्षा है इसलिए मैं ही मेरी परीक्षा करूँ, ऐसा विचारना।

द. बेन

Please report errors to Ramaben Parekh: WhatsApp +91 90115 91078 or email ramabenparekh45@gmail.com

Version 001: Updates at http://www.AtmaDharma.com & http://www.AtmaDharma.org

ॐ नमः

चि. वहन लाभु,

तुम्हें अभी पत्र नहीं लिखा, पूज्य कृपालु गुरुसाहब राजकोट से विहार करने के बाद गोंडल, जेतपुर होते हुए झूनागढ़ यात्रा के लिए पधारे थे, झूनागढ़ की यात्रा तो कोई अद्‌भुत तथा अपूर्व प्रकार ही हुई थी। पालीताणा की यात्रा की थी उसकी अपेक्षा यह यात्रा तो कोई अनोखी ही हुई है उसका वर्णन भी नहीं हो सकता जो वहाँ थे उनने उसका रस लिया था। लगभग चार सौ व्यक्ति झूनागढ़ की यात्रा में आये थे, मोतीलाल, कान्ता, मातुश्री–पिताश्री आदि सभी झूनागढ़ आये थे। मातुश्री तथा पिताश्र ने इस बार अपने देश में एक वर्ष में अच्छा लाभ लिया। अमरेली पू. साहब पधारे तब वहाँ भी स्वागत बहुत अच्छा हुआ था, अमरेली के व्यक्तियों में उत्साह बहुत अच्छा था।

अमरेली में पूज्य साहब को साठ दिन रहना था परन्तु बाद में अठारह दिन हो गये, वहाँ पूज्य साहब की तबियत नरम हो गई इसलिए विहार किया था। अभी तो पू. गुरुदेव की तबियत अच्छी है। पू. कृपालु गुरुदेव गाँव–गाँव विचरकर जगत के जीवों को धर्म का अद्‌भुत लाभ देकर धर्म की प्रभावना करके यहाँ सुख–शांति में एक माह हुए पधारे गये हैं। यहाँ वैशाख वदी अष्टमी अच्छी तरह से मनाई गई। पू. पिताश्री वगैरह बंबई जाते समय अष्टमी पर यहाँ आये थे और नवमी के दिन बम्बई गये हैं।

आप प्रतिदिन वहाँ धार्मिक स्वाध्याय हमेशा करते होंगे, कहीं भी रहो, स्वाध्याय प्रतिदिन करना, पूरे दिन में इस समय स्वाध्याय और इस समय भक्ति ऐसा कुछ नियम तो हमेशा रखना। दूसरी बात यह लिखना कि जब वहाँ दिगम्बर मंदिर में बड़े/पर्व आदि के दिनों में भक्ति–पूजा करते हैं तब ढोल नगाड़ा बजाते हैं तो ढोल में चमड़ा लगा रहता है तो वहाँ चमड़ा वाला रखते हैं या दूसरा कुछ रखते हैं? यह आप

Please report errors to Ramaben Parekh: WhatsApp +91 90115 91078 or email ramabenparekh45@gmail.com

Version 001: Updates at http://www.AtmaDharma.com & http://www.AtmaDharma.org

अथवा जगजीवनदास को कहन कि बारबार जानकारी करके लिखना, क्योंकि दिगम्बर लोग चमड़े का प्रयोग नहीं करते ढोल में कपड़ा आदि दूसरी चीज लगाते हैं। भावनगर के दिगम्बर मंदिर में चमड़ा नहीं रखते, दूसरा कोई कपड़ा नगाड़े में लगाते हैं तो आप उसकी पक्की जानकारी करके हमें जानकारी देना कि नगाड़े में किस जाति का कपड़ा लगाते हैं अथवा तो अन्य किसी ग्राम में मिले या दिल्ली में मिले तो खोज करके जरूर जानकारी देना। हमें खास जानना है इसलिए जरूर जानकारी देना, बस इतना ही। पू. बेनश्री की तबियत अच्छी है, शरीर मैं ठीक है। जगजीवनदास भी कुछ धार्मिक स्वाध्याय हंमेशा करें तो अच्छा होगा। पूरे दिनभर मैं कुछ समय आत्महित में बिताना यही हितकर है।

द. वीतराग स्वरूप को चाहनार बेन शान्ता

इन्द्रियों के भोगों से होनेवाला सुख सुखसा दिखता है, परंतु वह सच्चा सुख नहीं है। वह तो कर्मों का विशेष बंध करानेवाला है तथा दुःखों के देने में एक पंडित है अर्थात् महान दुःखदायक है।

तृष्णा की आग से पीड़ित मन अतिशय करके जला करता है। संतोषरूपी जल के बिना उस जलन का शमन नहीं किया जा सकता।

ममतारहित होना परम तत्त्व है, ममतारहित होना परमसुख है, ममतारहित भाव मोक्ष का श्रेष्ठ बीज है ऐसा बुद्धिमानों ने कहा है। **—श्री सारसमुच्चय**

Please report errors to Ramaben Parekh: WhatsApp +91 90115 91078 or email ramabenparekh45@gmail.com

Version 001: Updates at http://www.AtmaDharma.com & http://www.AtmaDharma.org

मंगलवार–सोनगढ़

चि. बेन लाभु,

यहाँ से जाने के बाद तुम्हारा पत्र नहीं आय सो लिखना, तुम तथा जगजीवनदास वहाँ पूज्य गुरुदेव के व्याख्यान की पुस्तकें वांचते होंगे। इस उत्तम जीवन में आत्मा के स्वधर्म बढ़ाने जैसी है। आत्मरुचि, आत्मजिज्ञासा, आत्मभावना बढ़ाने जैसी है। मात्र शरीर की ही या कुटुंब की ही संभाल करना और खा–पीकर यह जीवन पूरा करने जैसा नहीं, इस प्रकार तो कौआ–कुत्ता भी जीवन व्यतीत करते हैं। कौए–कुत्ते के जीवन में और इस मनुष्य जीवन में भिन्नता वहाँ ही पड़ती है कि जब आत्मधर्म साधकर जन्म–मरण का अंत करे तभी अन्य की अपेक्षा इस जीवन की महानता है, नहीं तो कुछ महानता नहीं, इसलिए प्रवचन की पुस्तकें पढ़ना, उन पर विचार करना आत्मधर्म की भावना बढ़ाना, ऐसे उत्तम संस्कार जीवन में दृढ़ करना। अन्दर की भावना–रुचि बढ़ाने में बाहर के कोई संयोग रोक सकते नहीं, क्योंकि बाह्य संयोग भी भिन्न पदार्थ हैं, यह शरीर भी भिन्न वस्तु है तथा आत्मा भी भिन्न वस्तु है। कोई किसी के अधीन नहीं, जीव ने भ्रमबुद्धि से ऐसा मान लिया है कि मैं शरीर और सभी पर पदार्थों का कर सकता हूँ। शरीर में रोग आये तब आत्मा को तो अनेक प्रकार की इच्छा होती है फिर भी आत्मा इच्छा के अनुसार शरीर का काम करता नहीं इसलिए आत्मा और शरीर दोनों वस्तुएँ एकदम भिन्न हैं, इसलिए आत्मविचारणा बढ़ाना और आत्म–संस्कार दृढ़ करना।

परम पूज्य गुरुदेव सुख–शांति में विराज रहे हैं, अपूर्व और अमृतरस बरसा रहे हैं। भाग्यवंत और आत्मजिज्ञासु जीव लाभ ले रहे हैं। दिगम्बर लोग यहाँ बहुत आते हैं परन्तु ऐसा तत्त्वज्ञान सारे हिन्दुस्तान में कहीं नहीं, बस यहीं।

पिताश्री के पत्र बम्बई से आते हैं।

द. बेन शान्ता

Please report errors to Ramaben Parekh: WhatsApp +91 90115 91078 or email ramabenparekh45@gmail.com

Version 001: Updates at http://www.AtmaDharma.com & http://www.AtmaDharma.org

श्री देव–शास्त्र–गुरु को नमस्कार हो।

ता. ५-८-१९८६

चि. बेन सुधा,

मंद कषाय रूप से शांतिपूर्वक आत्मा के कल्याण के लिए सच्चे देव–शास्त्र–गुरु के प्रति अत्यन्त भक्ति रखना और सदा श्री अरहंतदेव का भक्तिपूर्वक स्मरण करना और आत्मकल्याण के लिए सच्चे शास्त्रों का स्वाध्याय सदा जरूर करना। श्री गुरुदेव द्वारा फरमाये गये जड़ से भिन्न ऐसे अपने चैतन्य तत्त्व को प्राप्त करने हेतु सुवर्ण वाक्यों का चिंतवन करना। यह उत्तम मनुष्य भव प्राप्त हुआ है, इसमें सत्यधर्म के, आत्मधर्म के गहरे संस्कार जरूर डालना।

चाहे जैसे अनुकूल–प्रतिकूल संयोगो में पू. गुरुदेव की उत्तम वाणी को याद करके एकदम शांति रखना तथा कल्याण की ओर झुकाव रखना।

शांति तो आत्मा का स्वभाव है। **द. मौसी**

ता. ३-८-८७, राजकोट

आत्मार्थी भव्य ब्रह्मचारी बहिनें,

तुम सभी का उल्लास भरा पत्र पढ़कर वात्सल्य भाव आये बिना रहता नहीं। प्रत्यक्ष नजरें निहारते जानते हैं तथा यथाशक्ति आनंद पा रहे हैं, उस रत्नों के पिटारे को मुख्यरूप से मुनिराज निहार–निहारकर प्रचुर आनंद पाते हैं और उस रत्नों के करंड को पूर्णरूप से अरहंत–सिद्ध परमात्मा निहारकर पूर्ण आनंद पा रहे हैं, उन परमात्मा को बारंबार नमस्कार हो। इन महात्माओं को धनयवाद, वैसी दशा शीघ्र प्राप्त हो ऐसी भावना रहती है। आप लोग भी अन्दर की जिज्ञासा से तत्त्वरुचि बढ़ाते हैं और भाव मिथ्यात्व को काटते हो तो तुम्हारा भी ऐसा सुकल आ जायेगा और आत्मरत्न को निहारेंगे। कोई जल्दी सिद्धपद पाये कोई थोड़े काल बाद सिद्धपद पाये, बीच के काल का अन्तर निकाल दो तो सभी सिद्ध भगवान बनकर साथ में रहेंगे, वहाँ किसी का विरह नहीं रहेगा।

परम पूज्य गुरुदेव का परम प्रताप है, सबकी भावना सफल होगी है।

द. बेन

Please report errors to Ramaben Parekh: WhatsApp +91 90115 91078 or email ramabenparekh45@gmail.com

पूज्य बेन के हस्ताक्षर का हिन्दी

देह और आत्मा एकदम भिन्न वस्तु है, आत्मा चैतन्य चमत्कार ज्ञान–आनंद का पिंड है।

शरीर में पीड़ होती है परन्तु आत्मा में शांति भरी है तो शांति तरफ दृष्टि करना एवं शांति समाधि में रहने का प्रयत्न करना।

देह तो बिल्कुल जड़ है वह तो कुछ जानता ही नहीं। जानकार का पिंड खोजना। चेतने वाले आत्मा में आनंद–ज्ञान वगैरह अनंत गुण भरे हैं।

उस चेतन आत्मा का ही विचार किया करो. परम पूज्य देव–गुरु की महिमा को याद करना, पूज्य गुरुदेव का उपकार याद करना।

शरीर में दर्द हो तो शरीर तरफ लक्ष नहीं रखना।

देव गुरु की भक्ति को याद करना। आत्मा के विचार करना, जिसमें रस परिपाक हो तथा परिणाम वेदना की ओर न जायें ऐसे विचारों में लग जाना।

आत्मा के विचार में लग जाना यह तो अधिक लाभरूप है। आत्मा राग–द्वेष आदि विभाव भावों से बिल्कुल भिन्न शुद्ध स्फटिक समान है।

Please report errors to Ramaben Parekh: WhatsApp +91 90115 91078 or email ramabenparekh45@gmail.com

Version 001: Updates at http://www.AtmaDharma.com & http://www.AtmaDharma.org

पूज्य शांताबेन को दी गई
श्रद्धांजलि तथा गुणानुवाद

जीवन घडने वाली प्यारी मौसीजी

परम पवित्र ऐसी भारतभूमि पर अनंत तीर्थंकर केवली, श्रुतकेवली, अनेक अनेक महान आचार्य, मुनिराज तथा कुन्दकुन्दाचार्य जैसे महामुनिराज विचरण कर चुके हैं।

अपने भरत क्षेत्र में भी चौवीस भगवान आदि अनंत तीर्थंकरों ने शाश्वत भूमि श्री सम्मेदशिखरजी, राजगृही, चंपापुरी, पावापरी, गिरनारजी, शत्रुंजय आदि अनेक भूमियों से सिद्धपद प्राप्त किया, इससे अपनी भूमि परम पवित्र है।

श्री शत्रुंजय के निकट में भी सोनगढ़ पू. गुरुदेव श्री कानजी स्वामी के परम प्रताप से प्रचलित तीर्थधाम सुवर्णपुरी बना है, यह अपना अहो भाग्य है कि जहाँ तत्त्वज्ञान का सिंहनाद गूँज रहा है। इस शासनयुग में काठियावाड के उमराला ग्राम में धर्मधुरंधर संत ऐसे गुरुदेव का जन्म हुआ।

इस शासन में श्री श्रुतअंशवंत विरल तथा हीरे समान तेजस्वी रत्न हुए हैं, उनके शासनयुग में ऐसे रत्नों से आज भी यह भूमि जगमगा रही है। श्री कहानगुरु जैसा तेजस्वी रत्न सम्पूर्ण भारतभर में चमक रहा है, जो कि शासन में सुप्रसिद्ध हैं और देश–विदेश में धर्म का डंका बजाया है एवं सारे देशोदेश में समयसार की भेरी बजाई है। जिनने दिव्यज्ञान द्वारा आध्यात्मिक जीवन जीने का भेदज्ञान रूप महामंत्र दिया है, अपूर्व बोधपाठ दिया है कि सभी ''भगवान आत्मा हो।''

पू. श्री गुरुदेव ने परमपूज्य श्री जिनेन्द्रदेव के दर्शन, पूजन, भक्ति भी अपूर्व बताई है। नगर–नगर में पंचकल्याणक प्रतिष्ठा कराई है और भगवान का स्वरूप समझाया है।

Please report errors to Ramaben Parekh: WhatsApp +91 90115 91078 or email ramabenparekh45@gmail.com

Version 001: Updates at http://www.AtmaDharma.com & http://www.AtmaDharma.org

इस शासन के रत्नों में महिला शिरोमणि ''पू. बेनश्री बेन'' (चंपाबेन–शान्ताबेन) नाम से प्रसिद्ध हैं, जिनने देव–शास्त्र–गुरु के प्रति सम्पूर्ण जीवन समर्पित कर दिया था। इस प्रकार सुवर्णपुरी की शोभा इन त्रिवेणी रत्नों से शोभायमान थी। सोनगढ़ में ब्रह्मचर्य बहिनों के लिए श्री गोगीदेवी ब्रह्मचर्य आश्रम है, उस आश्रम में पू. बेनश्री बेन की छत्रछाया में प्रत्येक बहिन आध्यात्मिक जीवन से जाती हैं, उन ब्र. बहिनों को व्रत–तप–नियम के लिए आत्म–कल्याण का आदेश देती थीं।

सरोवर में सुशोभित कमलो को देखकर लोगों का मन वहाँ खिच जाता है और एक दिन खिलकर दूसरे दिन मुरझा जाने वाले कमलों को लोग याद करते हैं किसलिये? 'कमल' अपने सौंदर्य से, सुकोमलता एवं सुवासितता रूप त्रिवेणी के संगम से मनुष्यों को आकर्षित कर लेता है, जिससे उसे लेने के लिए सभी उत्सुक हो जाते हैं। कमल की सुवास से भ्रमर भी कमल के पराग चूसने को उसके आसपास सारे दिन गुंजार करते हुए घूमता है तथा उसका रस चूसने में इतना अधिक मशगूल हो जाता है कि सूर्यास्त होते ही कमल बंध हो जाने से किसी दिन उसमें कैदी बनकर जीवन भी हौम कर देता है।

इस संसार के उपवन में भी कितने जीव जन्म लेते हैं और आयु पूर्ण होते ही विदाई ले लेते हैं, परंतु जिन जिन आत्माओं का जीवन कमल के समान प्रशंसनीय और अभिनंदनीय बनता है। वे आत्माएँ धन्य हैं। पू. शान्ताबेन ने भी आत्मीय साधना के साथ स्वयं को परमार्थ के लिए श्री देव–शास्त्र–गुरु की भक्ति में तन–मन–धन से जीवन, जिन शासन के चरणों में समर्पित किया, जिनके अणुअणु में भी अरहंत की भक्ति का गुंजन, श्री कुंदकुंदाचार्य देव के मार्ग का मंथन अपार था।

वात्सल्यमूर्ति माता! श्री देव–शास्त्र–गुरु की प्रभावना में स्तंभ के समान खड़े रहते कि जिसमें रात–दिन का भान भी भूल जाती थी तथा शरीरादि की परवाह भी नहीं करते, बुद्धि अति तीक्ष्ण थी अर्थात् चारों तरफ का सभी को ज्ञान देते। पंचकल्याणक प्रतिष्ठा के प्रसंग में सभी को सलाह–सूचना देते और जिनेन्द्र विधान की उपासना करती। लोगों के प्रति वात्सल्य प्रेम रखती, जिससे सभी आपके पास आते। धार्मिक संस्थाओं में विशेष रूप से योगदान

Please report errors to Ramaben Parekh: WhatsApp +91 90115 91078 or email ramabenparekh45@gmail.com

Version 001: Updates at http://www.AtmaDharma.com & http://www.AtmaDharma.org

देती थीं तथा गरीबों के प्रति भी करुणा करके मदद करती थीं।

पू. गुरुदेव की आज्ञा के प्रति अजब–गजब का समर्पण भाव था जिससे मान–प्रतिष्ठा को भी नहीं गिनती थीं तथा कहती थी कि छोटे रहने में गुण हैं पूज्य गुरुदेव की आज्ञा में प्रथम दिन से ही रहकर भेदज्ञान की डोर साध ली थी। पू. बेनश्री भी पहले कहती कि 'बेन' का द्रव्य ऐसा है कि जैसा कहते हैं उसके अनुसार परिणाम होता है।

ऐसी 'आत्मा' जगत में सभी को वंदनीय–स्मरणीय बन जाती है। ऐसी एक महान वात्सल्यमूर्ति शिरोमणि थी। जैसा नाम वैसे ही गुण प्रत्यक्ष दिखाई पड़ते, आज श्री हँसमुख–शांत चेहरा नजरों के समक्ष दिख रहा है। आज भी उनके नाम से कोई अपरिचित नहीं है।

आराधना के मार्ग में हंमेशा गौरववान एक अजोड़ रत्न था, जो कुटुम्बी जनों के प्रति भी करुणावान और प्रत्येक व्यक्ति सत्धर्म कैसे समझे ऐसी भावना थी, प्रत्येक को प्रेम देती थीं।

हे आनंददायी माता! बालक से लेककर सबको श्री जिनेन्द्रदेव के दर्शन–पूजन–भक्ति के प्रधानमार्ग पर लगाकर आध्यात्मिक साधना सिखाती थी इससे कुटुम्बीजनों के 'शिरछत्र माता' तुल्य थी तथा आनंद करती थी।

हम तो कहाँ यह अनार्य देश/अफ्रीका में थे इससे पू. बेन पत्रों द्वारा भी उपदेश बोध देती थी, हम थोड़े–थोड़े समय में पू. गुरुदेव की वाणी से तत्त्वबोध का लाभ लेने सोनगढ़ आते, तब १२ महिना तक रहते तब पू. बेन का भी निकट का लाभ मिलता, तभी से ऐसा वातावरण देखकर मैने दृढ़ निश्चय किया कि मुझे तो 'मेरी मौसीजी' के सान्निध्य में जीवन की सफलता प्राप्त करना है।

हे उपकारी माता! जब मैं सोनगढ़ आई तब दो वर्ष मेरी परीक्षा ली, उनके साथ ब्रह्मचर्य की प्रतिज्ञा पू. गुरुदेवश्री के पास से नौ बहिनों के साथ ली। पूज्य मौसीजी! लौकिक तथा अलौकिक सभी प्रकार की विद्या का ज्ञान मुझे दिया था तथा बारंबार कहती कि प्रत्येक कामकाज की प्रवृत्ति मे आत्मा का विचार साथ–साथ में करना तथा ऐसे श्लोक कंठस्थ कतर लेना कामकाज की प्रवृत्ति में भी उनका रटन चालू रहे, इस प्रकार बारंबार भेदज्ञान के मंत्र

Please report errors to Ramaben Parekh: WhatsApp +91 90115 91078 or email ramabenparekh45@gmail.com

Version 001: Updates at http://www.AtmaDharma.com & http://www.AtmaDharma.org

देती थी। अंत में शरीर बहुत कमजोर हो जाने से बारंबार आराम लेना पड़ता था तब भी सोते–सोते कहती थी कि आत्मा का ध्यान होता है, शरीर भले लेटा हो। शरीर, शरीर का काम करता है; आत्मा, आत्मा का काम करता है। पू. बेन के निकट समागम से, सेवा से मुझे बहुत लाभ हुआ है तथा उनके मधुर वचनों से रमा, बेटा कहकर बुलाती उनका वह प्यार आज भी हृदय में से जाता नहीं है मानो बुला रही हों, ऐसा भास हुआ करता है, अंतिम २५ वर्षों से पू. बेन के सान्निध्य में रहकर जो सेवा का लाभ लिया वह भी एक अमूल्य अंतर–बाह्य में लाभ मिला था।

माता–पिता का उपकार तो इस भव जितना ही होता है परंतु इन धर्ममाता का उपकार अब भव–भव तक भूला नहीं जा सकता। जन्म देने वाली माता और जन्मों का नाश करके जन्म दशा को प्राप्त करानेवाली ही सच्ची 'गुरुमाता' है।

हे माता! आपका स्मरण करते ही शीतलतादायक शरण मिलती है, यह जन्म सफलता को प्राप्त होगा ही ऐसा अन्दर से गुंजार उठता है। इन माता का गुणगान करते–करते जी नहीं भरता अंत तो आता नहीं है, ऐसा लगता है कि क्या लिखूँ, क्या न लिखूँ? सहनशीलता रखी, समतापूर्वक साधना की, आत्मलक्षपूर्वक की शरणागति स्वीकारी, आत्मदशा की विशुद्धि करके, वीतराग भाव की पूर्णता हेतु हमारे जीवन के प्राणधारी मौसीजी चरित्र पालने में आप समान चतुराई रूपी गुण हमारे में विशेष रूप से प्रगट हों।

और उपकार है वह मेरी मौसीजी का कि जिन्होंने परम वात्सल्यता से मुझे आत्मिक उत्साह दिया तथा धर्म का अमृतपान कराके मुझे तृप्त किया।

हे माता! आपकी थोड़ी सेवा का फल महान वीतरागीरूप बदले में मुझे सदा देती रही हो, मेरे पास में जैनधर्म का जो कुछ वैभव है, वह सब उनका ही दिया हुआ, ''तू मेरी माता.....'' मैं आपकी पुत्री, हे माँ! इससे विशेष आपका उपकार क्या मानूँ? आपके आदर्शरूपी बोध से मेरे आत्मा का शीघ्र हित हो इसी भावना के साथ आपको श्रद्धांजली समर्पित करती हूँ।

आपकी बेटी रमा

Please report errors to Ramaben Parekh: WhatsApp +91 90115 91078 or email ramabenparekh45@gmail.com

Version 001: Updates at http://www.AtmaDharma.com & http://www.AtmaDharma.org

कल्पवृक्ष समान धर्ममाता मेरी बहन

इस भरतवर्ष में अढ़ाई हजार वर्ष पूर्व भगवान महावीर ने तथा वर्तमान में विदेहक्षेत्र में श्री सीमंधर आदि तीर्थंकर भगवंतों ने ऐसा स्वतंत्रता का ढिंढोरा दिव्यध्वनि के नाद से जगत में प्रसिद्ध किया है, श्री कुन्दकुन्दादि महान संतों ने ढिंढोरा झोलकर प्रसारित किया है, वही स्वतंत्रता का ढिंढोरा का पावन संदेश आज अपने कहान गुरु द्वारा सुन रहे हैं।

भारत के जीवों को भी यही मार्ग में आने का पुकार कराओ अध्यात्म की जो महान क्रान्ति गुरुदेव ने सर्जन की है वह जैन शास्त्र के सुवर्णपर पर हीरों के अक्षरों से लिख गई है। यह वीरवाणी सुनकर भारत के कोने–कोने से जागे हुए हजारों जीवों ने पराधीनदृष्टि के बंधनों की बेड़ियाँ तोड़ डाली हैं।

इस अध्यात्मक्रान्ति की विजय के महान प्रताप से, गुरु कहान का जन्म शताब्दी महोत्सव भारत के सभी अनुयायी मना रहे हैं, यह इस युग का एक अनोखा ऐतिहासिक प्रसंग है। ऐसे कहानगुरु के युग में दो धर्म माताओं का उदय हुआ है, उनमें पूज्य शान्ताबेन वे मेरी बहन, हमारे खारा कुटुम्ब में बालवय से ही वैराग्य वीरांगना जैसी वीर्यवान थी तथा उनकी सूझबूझ तो बालपन से ही ऐसी थी कि उनसे पूछे बिना मेरे माता–पिता भी कोई काम नहीं करते थे, ऐसी महान सुप्रसिद्ध व्यक्ति थी।

पू. बेन ने बालवय से ही भौतिक लालसाओं से विरक्त हो आत्मार्थ साधने की ओर वृत्ति ढाल ली थी, आत्मार्थ साधने के लिये तीक्ष्ण ज्ञानोपयोगपूर्वक तत्त्व अभ्यास सुदृढ़ किया। स्वानुभवमूलक आत्मसाक्षात्कार अर्थात् सम्यग्दर्शनज्ञान महान रत्न की प्राप्ति की, हमें स्वानुभूति की महान अचिंत्य महिमा बताकर आत्म–आराधनाआ के मार्ग में लगाया।

इस पंचमकाल में ऐसे सद्गुरुदेव का योग आत्मकल्याण के लिए मिला है यह महान पुण्य का उदय है, अति दुर्लभ योग अभी सुलभरूप हो गया है, ऐसे पू. बेन का मिलाप हमारी बहन ने अपने खारा कुटुम्ब को कराया

Please report errors to Ramaben Parekh: WhatsApp +91 90115 91078 or email ramabenparekh45@gmail.com

Version 001: Updates at http://www.AtmaDharma.com & http://www.AtmaDharma.org

तथा सत्य दिगम्बर जैनधर्म की महिमा बतायी कि देव–गुरु–शास्त्र के दर्शन करने की नित्य भावना रखना और देव–शास्त्र–गुरु की भक्ति सदा वृद्धिंगत रखना, ऐसे संस्कार इस मनुष्य भव में ही पड़ते हैं, यह मनुष्यभव आत्मकल्याण करने के लिये उत्तम साधन है ऐसा हमेशा आदेश दे हमारे ऊपर असीम उपकार किया है, उसे जीवन में कभी भुलाया नहीं जा सकता एवं यह उपकार सदा सुवर्ण अक्षरों में अंकित रहेगा। अहा! यह तो अपने कुटुम्ब में कल्पवृक्ष फला है। इन माता के परिचय से आत्मकल्याण तक का लाभ लेने जैसा है। विलंब या प्रमाद करने जैसा नहीं है यही श्रेयस्कर है।

सतत रूप से शास्त्र स्वाध्याय–चिन्तन–मनन में वर्तता उनका उपयोगमात्र आत्मा की आराधना के लिये ही बीता, उनक जीवन अपने को अप्रमादपने आत्मआराधना करने का उत्साह जगाता है।

मैं घर में सबसे छोटा भाई होने से मेरे ऊपर बचपन से ही पू. बेन का अथाह प्रेम था तथा मैं भी पू. बेन को माता से भी विशेष मानता था कारण कि माता तो जन्म को देने वाली है परंतु यह माता तो मुझे जन्म–मरण रहित होने का उपाय बताने वाली हैं।

मुझे कोई भी प्रकार के सुख–दुःख के प्रसंग भजते तो उस समय घबडाहट मिटाने के लिये इन धर्म माता का ही आश्रय लेते।

हमारे घर में धर्म के गहरे संस्कार देने के प्रेरणा पू. बेन की ही थी। इसलिए हम कुटुम्ब सहित दीपावली तथा गर्मी की छुट्टीयों में सब सोनगढ़ आते और अपने सबके धर्मपिता–तारणहार पू. गुरुदेव श्री के प्रवचनों का तथा सत्समागम का लाभ लेते थे, हमने लगभग १६ दीपावली सोनगढ़ में मनाई तथा प्रत्येक दीपावली के दिन ही पू. गुरुदेव का हमारे घर/आंगन में आहारदान का लाभ मिलता तथा पू. भगवती दोनों माताओं का लाभ मिलता।

पू. गुरुदेव जब बम्बई पधारते तब दोनों माताओं का लाभ हमें हमारे घर में ही मिलता।

हे सहनशीलता की देवी! आपके ऊपर अनेक प्रकार की प्रतिकूलता आने पर भी आपने जो निडरता से सत्य में प्रयाण किया है तथा हमें ऐसी

Please report errors to Ramaben Parekh: WhatsApp +91 90115 91078 or email ramabenparekh45@gmail.com

Version 001: Updates at http://www.AtmaDharma.com & http://www.AtmaDharma.org

प्रेरणा दी है कि अपना आत्महित करना हो तो जगत के नासमझ लोग चाहे जैसे हृदयविदारक आक्षेप लगाये कि निंदा की बौंछारें लगाये तो भी तू डरना नहीं.....तेरा मार्ग तू छोड़ना नहीं.....निडरपने तेरे आत्महित के पथ पर चलते जाना।

आपकी निडरता और सहनशीलता भी जबरदस्त थी, अनेक विद्यार्थ विचार वाले जीवों की तरफ से उकसाने के प्रसंग उपस्थित होने पर भी उस समय घबडाये बिना शांत चित्त से आपने धैर्य तथा गंभीरता द्वारा ही उन प्रसंगों को जीत लिया। आपकी ऐसी रीति देखकर अनेक मुमुक्षु मुग्ध हो गये थे। इस तरफ आपका जीवन हमें चाहे जैए कटोकटी के प्रसंगों में भी सहनशीलता तथा धैर्य का पाठ सिखाते हैं।

''यह जीवन तुझसा जीवन हो।''

पू. गुरुदेव की जन्मशताब्दी के अंतर्गत देवलाली में पंचकल्याणक प्रतिष्ठा महोत्सव अभी हाल में आ रहा है तब पू. बेन का (१९९४ ई.सं.) जो मेरे ऊपर पत्र आया उसमें सभी उपयोगी सूचना देता कि श्री जिनेन्द्र भगवान के पंचकल्याणक का काम वह एक श्री जिनेन्द्रदेव की महान सेवा है। वह सेवा आनंद सहित उत्साहपूर्वक करने से आत्मा को बहुत लाभ होता है, इसलिए आत्मलाभ खातिर यह श्री जिनेन्द्रदेव का महामहोत्सव का काम जैसे विशेष शोभे इस प्रकार उत्साहित रखना।

अपने तो श्री जिनेन्द्र महात्म्य विशेष हो तथा श्री जिनेन्द्र महोत्सव खूब आनंद से मनाने की भावना से राग–द्वेष की मंदतापूर्वक तथा श्री जिनेन्द्रदेव की महिमा की मुख्यतापूर्वक यह काम, इस हेतु से करना।

ऐसा उत्तम मनुष्यभव अति पुण्य से प्राप्त हुआ है। उसमें भी ऐसे वीतरागी देव द्वारा प्ररूपित सत्यधर्म का योग मिला तथा अतिपुण्य से ऐसे देव–शास्त्र–गुरु की सेवा का योग मिला इसलिए मंदकषायपने वीतरागी देव–शास्त्र–गुरु की जितनी सेवा हो वही आत्मा को हितरूप है, इसलिए सबके साथ प्रेम से काम करके प्रसंग जैसे विशेष शोभे वैसा करना यह मेरे अंतरंग की तुम्हारे प्रति प्रीति–भावना है। वह लाभरूप होगी ही, ऐसा मैं मानती हूँ।

Please report errors to Ramaben Parekh: WhatsApp +91 90115 91078 or email ramabenparekh45@gmail.com

Version 001: Updates at http://www.AtmaDharma.com & http://www.AtmaDharma.org

आज भी इस पत्र को याद करते ही मानो पू. बेन साक्षात् पधारकर हमारे प्रसंग में प्रोत्साहन दे रही हैं। ऐसा अनुभव होता है।

देवलाली में भी पू. बेन की उपस्थिति में शिलान्यास का प्रसंग अति ही उत्साहपूर्वक हुआ था तब भी हमें अनेक प्रकार की सूचनायें दी थी, अभी भी पंचकल्याणक प्रतिष्ठ महोत्सव के कार्य में पू. बेन का मार्गदर्शन क्षण–क्षण में याद आता है तथा हमारे देवलाली के ट्रस्टीओं तथा कार्यकर्त्ताओं को पू. बेन का खूब विरह लगता है। तो आप स्वर्ग से हमारी विरह वेदना सुनकर कृपादृष्टि करना।

पू. गुरुदेव तथा पू. बेनश्री के साथ उत्तर–दक्षिण की सभी यात्रायें तो की ही थी परंतु अंत में पू. बेन के साथ संघ सहित दक्षिण की यात्रा लगभग २२ दिन की, तब आपकी बाहुबली के पास जिनेन्द्रदेव और मुनिवरों के प्रति भक्ति रोमरोम में बसी थी वह वहाँ देखने मिली। ऐसा यात्रा का उल्लास जीवन में कभी भूल सकते नहीं।

बालपने से लेकर आपका वैराग्यमय जीवन का जोड़ समाधि–मरणरूप अंतिमक्षण मुमुक्षुओं के समक्ष चितार खड़ा कर दिया।

ऐस धन्य जीवन को क्षण–क्षण में याद करते ही हमारा भी ऐसा जीवन बने ऐसी भावनापूर्वक नतमस्तक से भावभीनी भक्ति से श्रद्धांजलि अर्पण करते हैं।

भाई मुकुंद तथा
भाभी वसुमती
पुत्र–बहुयें, अतुल–चारू, प्रदीप–शीला, नीरुपम–झरणा, पंकज–अलका
पुत्री–वर्षा-किरणभाई

।। हूँ ज्ञायक छूँ।।

"

Please report errors to Ramaben Parekh: WhatsApp +91 90115 91078 or email ramabenparekh45@gmail.com

Version 001: Updates at http://www.AtmaDharma.com & http://www.AtmaDharma.org

जीवन शिल्पी धर्म भगिनी पूज्य शान्ताबेन

स्नेह झरता वात्सल्यमूर्ति पू. बेन हमारे जीवन में धर्म बहिन यानि धर्म भगिनी के रूप में अनोखा स्थान था। रक्षाबंधन तथा भाई दोज जैसे सामाजिक त्यौंहारों का आध्यात्मिक मूल्य इनने अति ही सहज भाव से समझाया था। यह जब लिखा जा रहा है तब रक्षाबंधन का त्यौहार नजदीक में ही आ रहा है तब अश्रुभीनी आँखों पू. बेन को हृदय से श्रद्धांजलि अर्पित हो जाती है।

हमारे जीवन को सुधार कर देव–शास्त्र–गुरु की अनन्य भक्ति से जगमगाहट कर दिया, पद–पद पर पर्याय को आत्मा तरफ कैसे झुकान उसका रहस्य खूब ही निकट से अति सूक्ष्मदृष्टि रखकर सरलता से समझाया है।

जीवन के अंतिम क्षणों में भी जीवन तथा मृत्यु दोनों का रहस्य प्रत्यक्ष प्रयोग द्वारा प्रज्ञाछैनी कैसे चलाना यह सिखाती थी। भगवान के प्रति की अनन्य भक्ति से रोम–रोम उछलता देखने का अमूल्य समय हमारे जीवन में मिला था यह भी अहोभाग्य ही कहलायेगा न। जिनमंदिर की प्रत्येक प्रवृत्ति में प्रत्येक मुमुक्षुओं को उत्साहित करके अपूर्व मार्गदर्शन देने वाली पू. बेन एक बड़े व्यक्ति तरीके साहस देती थी। धर्म का निश्चय क्या है और व्यवहार क्या है? उसकी संधि कराके तथा प्रसंगों के अनुरूप प्रेरणा देती थी। पुरुषार्थ की पगदंडी पर चलने की प्रेरणा देकर पू. बेन को हम क्या अर्पण करें? श्रद्धांजलि के पुष्प किस प्रकार अर्पण करें?

आत्मसाधना में स्थिरता करके निज पद की प्राप्ति के लिये अपूर्व पुरुषार्थ करके ही विराम!!

—रतिलाल मोहनलाल धिया

—शारदाबेन रतिलाल धिया, राजकोट

संसार, शरीर और भोगों से जिसका मन विरक्त हुआ है उस जीव द्वारा आत्मा को ध्याने से, उसकी महा विस्तृत संसाररूपी बेल छिन्न–भिन्न हो जाती है। **—श्री परमात्मप्रकाश**

Please report errors to Ramaben Parekh: WhatsApp +91 90115 91078 or email ramabenparekh45@gmail.com

Version 001: Updates at http://www.AtmaDharma.com & http://www.AtmaDharma.org

पूज्य बहिन श्री शान्ताबहिन के प्रति सादर समर्पित श्रद्धांजलि

पूज्य बहिन एक पवित्र आत्मा थी, अभी से लगभग ४५ वर्ष पूर्व जब मैं प्रथम बार सोनगढ़ गया था, तब से ही मेरे ऊपर पू. बहिन की पूर्ण कृपा रही है। वीछीया के पंचकल्याणक महोत्सव के पावन अवसर से तो पू. बहिनश्री चंपाबेन एवं श्री बहिन शान्ताबहिन दोनों से उक्त विधि–विधान की व्यवस्था को लेकर विशेष समीपता हुई, तब से अंतिम क्षण तक पू. बहिन का मेरे प्रति सगे भाई से भी ज्यादा अगाध स्नेह रहा। उसी के फलस्वरूप दोनों पूज्य बहिनों के साथ ३ बार सारे भारत के तीर्थक्षेत्रों की पावन यात्रा करने का अवसर प्राप्त हुआ। तींनों यात्राओं के अवसर पर दोनों पू. बहिनों के साथ मेरा परिवार एक ही मोटर वाहन में साथ–साथ ही रहता था। एक परिवार के जैसे रहकर यात्रा की थी। पूज्य गुरुदेवश्री के कृपापात्र बनने का अवसर भी पू. बहिनों की कृपा का ही फल था। जिसके कारण पू. गुरुदेव की मोटरकार में रहकर पूरी यात्रा में पू. गुरुदेवश्री के अत्यन्त निकट रहने का सौभाग्य प्राप्त हुआ था। पू. गुरुदेवश्री के स्वर्गारोहण के पश्चात् तो उनका मेरे प्रति स्नेह बहुत ज्यादा बढ़ गया था।

पू. बहिन का पू. गुरुदेवश्री के प्रति अत्यन्त अगाध भक्ति एवं समर्पण भाव था, पू. गुरुदेवश्री के नाम स्मरण मात्र से ही उनकी आँखों से आँसू टपकने लगते थे, पू. गुरुदेव द्वारा प्रकाशित तत्त्वज्ञान के प्रति उनकी अटूट श्रद्धा थी। तत्त्वज्ञान का मर्म उनके जीवन में प्रत्यक्ष प्रस्फुटित हुआ दिखता था, कैसी भी विपरीत परिस्थितियों में वे जरा भी विचलित नहीं होती थी, शारीरिक प्रतिकूलता होने पर भी धर्मप्रचार के कार्यों में उनका उत्साह द्विगुणित हो जाता था। धर्मप्रचार के कार्यों को देखकर अथवा समाचारों को सुनकर वे इतनी उत्साहित एवं प्रसन्न होती थी कि अपनी शारीरिक स्थिति को भी भूल जाती थी। भगवद्भक्ति एवं तीर्थयात्रा एवं तीर्थों पर उमड़ने वाली उनकी भक्ति तो प्रत्यक्षदर्शी ही जानता है। हमारे विद्यालय के छात्र भी अगर कोई भी धर्मप्रचार की बात उनको सुनाता तो उसको वे बहुत प्रोत्साहित करती। उनके स्वर्गारोहण के कुछ ही दिनों पूर्व श्री कुन्दकुन्द ज्ञानचक्र जब राजकोट पहुँचा तो उनका शरीर बहुत क्षीण हो चुका था। उठना–बैठना भी संभव नहीं

Please report errors to Ramaben Parekh: WhatsApp +91 90115 91078 or email ramabenparekh45@gmail.com

Version 001: Updates at http://www.AtmaDharma.com & http://www.AtmaDharma.org

हो पाता था, तो भी ज्ञानचक्र को अपने निवास पर बुलाकर तीन प्रदक्षिणा देकर अर्ध्य चढ़ाकर खूब भक्ति की। सारांश यह है कि भक्ति की तो वे साक्षात् मूर्ति ही थी।

मेरे ऊपर उनके अनन्त–अनन्त उपकार हैं, उनकी ज्ञानी आत्मा के द्वारा मुझे पू. गुरुदेवश्री द्वारा प्रदत्त तत्त्वज्ञान के समझने में भी अनेक उलझनों का उनके द्वारा समाधान मिलने के कारण मेरी परिणति को बहुत–बहुत लाभ प्राप्त हुआ। अंत में मैं उनके उपकार को इस भव में तो क्या अगले भव में भी नहीं भूल सकता।

अतः मैं अंतर्भाव से उनकी आत्मा को भक्तिपूर्वक सादर श्रद्धांजलि समर्पित करता हूँ, भावना करता हूँ कि उनकी आत्मा शीघ्र से शीघ्र चरम लक्ष्य को प्राप्त कर शाश्वत आनंद का उपभोक्ता बने।

—नेमीचंद पाटनी, आगरा

हीरा को परखनार जवेरी : पू. शान्ताबेन

इस काल में, इस क्षेत्र के जीव क्रियाकांड में मान हो रहे थे और वीतरागी मोक्षमार्ग जब प्रायः लुप्त हो गया ऐसे समय में पू. गुरुदेवश्री का वहाँ जन्म हुआ। उन्होंने पूर्व के संस्कार तथा वर्तमान के अति अपूर्व पुरुषार्थ द्वारा कोई भी प्रत्यक्ष गुरुगम बिना तथा वर्तमान में उपलब्ध अल्प द्रव्यश्रुत के योग से शुद्धात्म प्राप्ति का मार्ग खोजक, उसके द्वारा स्वानुभूति की प्राप्ति की और अन्य जीवों पर करुणा करके उन्हें वह मार्ग बताया।

पू. गुरुदेव का द्रव्य अलौकिक था। तीर्थंकर का द्रव्य था। गुरुदेव श्री अल्पकाल में तीर्थंकर होन वाले हैं, उसके पहले उसकी झलक इस भव में स्पष्ट दिखाई देती थी, उन्होंने प्रायः लुप्त हो गये वीतराग मार्ग की स्थापना की, वर्तमान पंचम काल में मानो कि उसका समवशरण आया हो ऐसा दृश्य प्रसिद्ध होता था।

जब मुक्तिमार्ग की स्थापना और प्रचार–प्रसार होने का हो तब साथ में अन्य अनेक जीवों का योगदान भी सहज मिल जाता है ऐसी अनेक विभूतियाँ पू. गुरुदेवश्री की सभा में शोभती थी उनमें से एक थी पू. बेन शान्ताबेन।

Please report errors to Ramaben Parekh: WhatsApp +91 90115 91078 or email ramabenparekh45@gmail.com

Version 001: Updates at http://www.AtmaDharma.com & http://www.AtmaDharma.org

पू. शान्तावेन को वहुत छोटी उम्र से ही अध्यात्म का रस तथा पू. गुरुदेव श्री के सम्पर्क में आने से ही जेवेरी हीरा को परखे उसी प्रकार पू. गुरुदेवश्री को परख लिया, उसके बाद तो उनके सम्पर्क में उनका विशेष–विशेष रहने का प्रसंग बना और गुरुदेवश्री के निमित्त से उनकी आत्मोन्नति भी होती गई।

पू. गुरुदेवश्री द्वारा हुए प्रभावना के कार्यों में पू. शान्तावेन का योगदान विशिष्ट प्रकार का था। पू. गुरुदेवश्री के निमित्त से अनेक मंदिरों का निर्माण हुआ, उनके कार्यों मे भी मंदिर निर्माण कार्य, उनकी प्रतिष्ठा, धार्मिक कार्यों में, तीर्थयात्रा आदि में पू. वेन की सूझ विशिष्ट थी। उनके सान्निध्य में ६४ वहिनों ने ब्रह्मचर्य प्रतिज्ञा अंगीकार की, आत्मार्थ का कार्य करने सोनगढ़ में निवास किया था। पू. गुरुदेव का परिचय होने के वाद पू. वेन को पू. वेनश्री का भी परिचय हुआ और दोनों वहिनें सगी वहिनों की अपेक्षा भी विशेष प्रेम से वर्षों तक साथ में रहीं।

पू. गुरुदेवश्री फरमा गये हैं कि पू. शान्तावेन को सम्यग्ज्ञान प्राप्त हुआ था तथा पूज्य गुरुदेव श्री तथा दोनों वहिनें भूतकाल में साथ थे तथा भविष्य में भी साथ में रहने वाले हैं। जव पू. गुरुदेवश्री तीर्थंकर होंगे तव दोनों वहिनें उनके पुत्र होकर गणधर होकर मोक्ष जाने वाले हैं।

पू. गुरुदेवश्री के श्रीमुख से जो वात सुनी हो तो यथार्थ ही है ऐसा प्रत्येक मुमुक्षु को श्रद्धापूर्वक स्वीकार करना चाहिए।

ऐसे अनेक निकट भव्य जीवों का योग हुआ यह सभी मुमुक्षुओं का सौभाग्य है तथा उनका जीवन सभी के लिए अनुकरणीय है ऐसी भावना के साथ श्रद्धांजलि अर्पित करता हूँ।

—लालचन्द अमरचन्द मोदी, राजकोट

भावमोह आत्मा के गुणों का घात करनेवाला, अपवित्र, रौद्ररूप, दुःख एवं दुःखरूप फल को देनेवाला है, उस भावमोह के विषय में अधिक कहाँ तक कहें? मात्र वह भावमोह ही सम्पूर्ण विपत्तियों का स्थान है। **—श्री पंचाध्यायी**

Please report errors to Ramaben Parekh: WhatsApp +91 90115 91078 or email ramabenparekh45@gmail.com

Version 001: Updates at http://www.AtmaDharma.com & http://www.AtmaDharma.org

निकट भवि पूज्य शान्ताबेन

चैतन्य के रस में निमग्न, महादुविषि, महिलारत्न थी। पूज्य गुरुदेव की दिव्य देशना पाकर वो दिगम्बर धर्म में दीक्षित हुई और अंत समय तक पूज्य गुरुदेव द्वारा बताये गये तत्त्व की उन्हें अड़िग आस्था रही। सत्य ही है कि उन पर सदा पू. गुरुदेव का पुत्री के समान स्नेह तथा करुणा बरसती रही। समग्र मुमुक्षु समुदाय के लिए उनकी एक महान क्षति वर्त रही है।

उनकी व्यवस्था क्षमता अद्‌भुत थी, श्राविकाश्रम, तीर्थयात्रा, पंचकल्याणक तथा शिविर जैसे मांगलिक आयोजन उनकी कुशल व्यवस्था में अति सफलता से सम्पन्न हुआ करते, उनकी अंतरंग क्षमता का यह सजीव प्रमाण है कि व्याधियों के विकट प्रहार भी उनको चैतन्य के चिंतन से डिगा नहीं सके।

स्वरूप में विहार करती उनकी अंतिम परिणति अपने को एक मंगल प्रेरणा तथा संदेश दे गई, पू. गुरुदेव के शब्दों में ''निकट भव्य'' थी।

सन् १९५० के श्रावण माह में जब मैं पहलीबार सुवर्णपुरी गया तो एक दिन पू. गुरुदेव का भोजन पाटनीजी साहब के यहाँ गोगीदेवी ब्रह्मचर्याश्रम में था। भोजन के बाद मैं स्वाध्याय मंदिर में गया, उस समय पू. गुरुदेव के साथ मैं अकेला था, वहाँ स्वाध्याय–मंदिर के बाहर बरंडा में घूम रहे थे उस समय पू. गुरुदेव ने मुझसे कहा कि ''बहिने निकट भव्य'' हैं।

मैं उनका शीघ्र शीद्धत्व के लिये मंगलकामना पूर्वक मेरे अगणित प्रमाण तथा अश्रुपूरित श्रद्धांजलि उन्हें समर्पित करता हूँ।

—'युगल' कोटा

हे योगी! जो तू चिन्ताओं को छोड़ेगा तो संसार का भ्रमण छूट जायेगा, क्योंकि चिंता में लगे हुए छद्मस्थ अवस्थावाले तीर्थंकरदेव भी परमात्मा का आचरणरूप शुद्धभावों को नहीं पाते।

—श्री नियमसार टीका

Please report errors to Ramaben Parekh: WhatsApp +91 90115 91078 or email ramabenparekh45@gmail.com

Version 001: Updates at http://www.AtmaDharma.com & http://www.AtmaDharma.org

निश्छल वात्सल्य की धनी पूज्य शान्ताबेन

आत्मानुभवी, निश्छल वात्सल्य की धनी, तत्त्वज्ञान के प्रचार–प्रसार के लिये समर्पित पू. शान्तावेन का ममतामयी 'माँ' सदृश्य वात्सल्य मुझे आजीवन प्राप्त रहा है। वीतराग तत्त्वज्ञान के प्रचार–प्रसार के समाचार सुनकर उनका हृदय बहुत उछल पड़ता था, वे आपकी स्नेहशक्ति मृदुलवाणी से तत्त्वज्ञान के प्रति समर्पित लोगों को निरंतर उत्साहित करती रहती थी।

आध्यात्मिक सत्पुरुष पूज्य श्री कानजी स्वामी के प्रभावना योग से सम्बन्धित ऐसा कोई व्यक्ति नहीं है जो पूज्य शान्तावेन के परिचित न हो, और जिसने उनसे आत्महित की और वीतरागी तत्त्वज्ञान के प्रचार–प्रसार की प्रेरणा प्राप्त न की है।

उनके आकस्मिक वियोग से मुझे तो व्यक्तिगत क्षति हुई है, मैंने जैसे अपनी ममतामयी माँ ही खो दी है। एक–एक करके वे लोग उठते आ रहे हैं, जिनका प्रवल संवल अव तक प्राप्त रहा है।

वस्तुतः वात तो यह है न, कि एक न एक दिन हम सभी को इस नश्वर पर्याय को छोड़ना ही है। जीवन की सार्थकता तो इस वात में है कि हम सव भी नश्वर पर्याय के विलीन होने से पहले ही पूज्य शान्तावेन के समान ही अविनाशी आत्मतत्त्व को प्राप्त कर लें।

इस पावन भावना के साथ उन्हें अपनी विनम्र श्रद्धांजलि समर्पित करता हूँ।

—डॉ. हुकमचन्द भारिमल्ल, जयपुर

गुरुचरणों के समर्चन से उत्पन्न हुए निज महिमा को जानता हुआ कौन विद्वान् 'यह परद्रव्य मेरा है'—ऐसा कहेगा ?

—श्री नियमसार टीका

Please report errors to Ramaben Parekh: WhatsApp +91 90115 91078 or email ramabenparekh45@gmail.com

Version 001: Updates at http://www.AtmaDharma.com & http://www.AtmaDharma.org

प्रेरक व्यक्तित्व की धनी : पूज्य शान्ताबेन

साधर्मी जनों के साथ ''धर्मी सों गो वच्छ प्रीतिसम'' की उक्ति को चरितार्थ करने वाली मातृतुल्य स्नेहदात्री पूज्य शान्तावेन अत्यन्त सरल स्वभावी, मृदुभाषी, परमहितैषी और तत्त्वप्रचार के लिए पूर्ण समर्पित थी, उनका साधर्मी वात्सल्य अभिनन्दनीय एवं अनुकरणीय था।

आध्यात्मिक सत्पुरुष पूज्य गुरुदेव श्री के कानजीस्वामी के मंगल प्रवचनों का सर्वाधिक लाभ लेने वाले प्रमुख श्रोताओं में आप अग्रगण्य थी गुरुदेवश्री के समयसारादि ग्रन्थों पर हुए मंगल प्रवचनों से प्रभावित होकर आपने अपना शेष सम्पूर्ण जीवन अध्यात्म के अध्ययन–मनन–चिंतन में लगा दिया। आपका आध्यात्मिक जीवन तो गंभीर था ही व्यावहारिक जीवन भी उज्ज्वल था, जब आप जिनालय में सामूहिक जिनेन्द्रदेव की पूजन–भक्ति करती थी तो स्वयं तो भक्तिभाव में भावविभोर हो ही जाती थी, साथ में पूजन भक्ति करने वाले भक्तजन भी झूम उठते थे। प्रतिदिन प्रातः व मध्याह्न पूजन व भक्ति करना आपकी दिनचर्या के अभिन्न अंग थे, तीर्थयात्रायें, नैमित्तिक पूजन विधान के आयोजन एवं धार्मिक पर्वों में आपका धर्म उत्साह देखकर लोग दांतों तले उंगली दबा लेते थे। सत्कार्यों में स्वयं दान देने और दूसरों को प्रेरित करने में आप कभी पीछे नहीं रही।

जीवन के उपान्त में पूज्य बेन ने अपना अधिकांश समय श्री टोडरमल स्मारक भवन, जयपुर में बिताया, क्योंकि वे यहाँ की कार्यपद्धति और तत्त्व प्रचार–प्रसार की गतिविधियों से अत्यधिक प्रभावित थी। इस संस्था की एक–एक गतिविधि में उनकी हार्दिक अनुमोदना और शुभकामनायें थी। पंडित टोडरमलजी स्मारक ट्रस्ट द्वारा आयोजित वीतराग विज्ञान आध्यात्मिक शिक्षण–प्रशिक्षण शिविर की ध्रुवफंड योजना में आपने स्वयं तो १०,००० रुपये प्रदान कर उसकी सदस्या स्वीकार की ही थी, साथ ही अन्य तत्त्वप्रेमियों को भी सदस्यता ग्रहण करने के लिये प्रेरित कर रुपयों का आर्थिक योगदान कराया था।

तत्त्वज्ञान के प्रति विशेष प्रेम होने के कारण पूज्य शान्तावेन को श्री

Please report errors to Ramaben Parekh: WhatsApp +91 90115 91078 or email ramabenparekh45@gmail.com

Version 001: Updates at http://www.AtmaDharma.com & http://www.AtmaDharma.org

टोडरमल दिगम्बर जैन महाविद्यालय में अध्ययनरत और भूतपूर्व छात्रों के प्रति अत्यधिक अनुराग था। वे छात्रों के प्रत्येक धार्मिक एवं शिक्षा सम्बन्धी नित्यनैमित्तिक कार्यक्रमों में स्वयं उपस्थित होकर नजदीकी से देखती थी और हार्दिक प्रसन्नता प्रगट करते हुए उन्हें समय–समय पर प्रोत्साहन व पुरस्कार प्रदान करके उत्साहित करती रहती थी। इस संस्था द्वारा देश–विदेश में हो रहे तत्त्वप्रचार व धर्म प्रचार के समाचार सुनकर उन्हें बहुत–बहुत प्रमोद होता था।

ऐसे प्रेरक व्यक्तित्व की धनी पूज्य शान्तावेन का पवित्र जीव हमारे लिये प्रेरणा का स्त्रोत बनी रहें और वे अत्यल्प काल में ही अपने में पूर्णता व पवित्रता प्राप्त कर परमात्मदशा को प्रगट करें, यहीं उनके प्रति मेरी मंगल कामना व विनम्र श्रद्धांजलि है।

—पण्डित रतनचन्द भारिमल्ल

प्राचार्य, श्री टोडरमल दिगम्बर जैन सिद्धान्त महाविद्यालय, जयपुर

जो जीव अपने स्वरूप से देह को परमार्थतः भिन्न जानकर आत्मस्वरूप का सेवन करता है–ध्याता है, उसे अत्यन्त भावना कार्यकारी है। **—श्री कार्तिकेयानुप्रेक्षा**

यद्यपि इस लोक में मृत्यु है सो जगत को आताप का करनेवाली हैं, तब भी सम्यग्ज्ञानी के अमृतसंग जो निर्वाण उसके अर्थ है। जैसे कच्चे घड़े को अग्नि में पकाना है सो अमृतरूप जल के धारण हेतु है। यदि कच्चा घड़ा अग्नि में नहीं पके तो घड़े में जलधारण नहीं होगा, अग्नि में एकबार पक जाये तो बहुत काल तक जल के संसर्ग को प्राप्त होता है। वैसे ही मृत्यु के अवसर में आताप समभावों से सहन कर ले तो निर्वाण का पात्र हो जाये।

—श्री मृत्यु–महोत्सव

Please report errors to Ramaben Parekh: WhatsApp +91 90115 91078 or email ramabenparekh45@gmail.com

Version 001: Updates at http://www.AtmaDharma.com & http://www.AtmaDharma.org

मोक्षमार्ग के यात्रिक ऐसे पूज्य शान्ताबेन

अनन्य गुरु भक्त रत्न पूज्य शान्तावेन के अति निकट के परिचय में आने का बहुत लम्बे समय से मुझे लाभ मिला था और मैं देखता था कि उन्हें देह के प्रति अति ही अपेक्षा वर्तती थी। इतना ही नहीं परन्तु जब–जब उन्हें बीमारी आती तब–तब वो कहती की ऐसे प्रसंगों में उनकी आत्म–जागृति बढ़ने लगती थी।

उनके अंतिम दिनों में प्रतिदिन डॉक्टर तरीके उनकी सेवा का लाभ मुझे मिला था। इस दिनों में प्रतिदिन उनकी लम्बे समय की भावना अनुसार देह के प्रति उनकी उदासीनता और आत्मजागृति का अति निकट से मुझे दर्शन हुए थे। वर्षो तक उनकी पू. गुरुदेव के प्रति की भक्ति और आत्मसाधना का यह फल उनके अंतिम दिनों में उन्हें प्राप्त हुआ था ऐसा सभी तब देख सके थे।

अंतिम दिनों में पू. बेन ने मौन लेकर आहारादि का क्रमसर त्याग करके अंत में अपूर्व शांति तथा सामाधि दशा में देह छोड़ा था।

वर्षों तक का जो तत्त्वचिंतन था उस रूप आंतरिक परिणमन हुआ है इन दिनों के प्रसंग पर सभी कोई देख सके थे, इस प्रकार इस भव की जीवन साधना सफल हुई तथा उसके फलस्वरूप पू. बेनश्री पू. गुरुदेवश्री की मुक्तियात्रा में शामिल हो अति शीघ्रता से मुक्तदशा को पावें–ऐसी भावना है।

स्व. पू. शान्ताबेन के जीवन से उनका पूज्य गुरुदेव के प्रति का समर्पणभाव तथा उनकी आत्मसाधना से प्रेरणा लेकर अपन सभी अपने साधन के पंथ में आगे चलते रहें यही उनके प्रति सच्ची श्रद्धांजलि है।

—डॉ. चन्दुलाल ताराचंद कामदार, राजकोट

पुण्य से घर में धन होता है, और धन से अभिमान, मान से बुद्धिभ्रम होता है। बुद्धि के भ्रम होने से (अविवेक से) पाप होता है, इसलिये ऐसा पुण्य हमारे न होवे। **—श्री परमात्मप्रकाश**

Please report errors to Ramaben Parekh: WhatsApp +91 90115 91078 or email ramabenparekh45@gmail.com

Version 001: Updates at http://www.AtmaDharma.com & http://www.AtmaDharma.org

तीर्थक्षेत्रों के जीर्णोद्धार और प्रगति के लिये प्रेरणा

पूज्य गुरुदेवश्री कानजी स्वामी के सत्प्रभावना के योग से वीतराग शासन की चतुर्मुखी वृद्धि हुई उसमें स्वर्गीय बहिन शान्ताबेन का सक्रिय सहयोग आद्यांत रहा। आत्म साधना और धर्म प्रभावना से शोभता हुआ उनका जीवन सार्थक गिनाया जायेगा। वो तीर्थवंदना, प्रतिष्ठाओं तथा अन्य धार्मिक प्रसंगों पर आगम सम्मत मार्गदर्शक बनी रहती थी।

मेरा व्यक्तिगत परिचय पूज्य शान्ताबेन से अंतिम चार वर्ष तक बन सका। वो जयपुर पधारती थी तब पवित्र तीर्थक्षेत्रों का जीर्णोद्धार, सुरक्षा तथा प्रगति के लिये प्रेरणा देती थी, उनका वात्सल्ययुक्त मार्गदर्शन तीर्थ सुरक्षा ट्रस्ट की गतिविधियों को चलाने में मदद रूप रहा।

पूज्य शान्ताबेन की अंतिम बीमारी के समाचार मिलते श्री माणिक भाई गाँधी के साथ मैं राजकोट पहुँचा, शरीर की स्थिति प्रतिकूल होने पर भी उनके मुखारविंद पर शांति–सौम्यता तथा वैराग्य के भाव स्पष्ट रूप से प्रगट दिखाई देते थे। दीर्धकालीन साधना का जोड़ सुखद था।

इससे प्रेरित होकर डॉक्टर चन्दुभाई कामदार तथा श्री मुकुन्दभाई खारा व श्री नेमीचन्दजी पाटनी के समक्ष समाधिव्रत के लिए प्रस्ताव रखने की हिम्मत हुई तथा उन्हें जानने में आई कि पूज्य बहिन ने भी ऐसी ही भावना कुछ समय पहले व्यक्त की थी। श्री पाटनीजी द्वारा मंत्रोच्चारपूर्वक संल्लेखना व्रत ग्रहण किया बाद में उनके नश्वर देह का त्याग किया।

ऐसा एक साधक मुमुक्षु का ''पंडित मरण'' देखने का लाभ प्राप्त हुआ, पूज्य बेन सत साधना को आगे वृद्धिगत करके शाश्वत सुख को पावें ऐसी भावना है। उनके अनेक उपकार मुमुक्षु समाज के लिये प्रेरणा स्त्रोत स्मरणरूप में बने रहेंगे।

—वसंतभाई एम. दोशी

मंत्री–श्री कुंदकुंद कहान दि. जैन तीर्थ सुरक्षा ट्रस्ट

Please report errors to Ramaben Parekh: WhatsApp +91 90115 91078 or email ramabenparekh45@gmail.com

Version 001: Updates at http://www.AtmaDharma.com & http://www.AtmaDharma.org

जिनेश्वर के लघुनंदन पूज्य शान्ताबेनन

पूज्य गुरुदेव को गुरु रूप में स्वीकारने के बाद पूज्य वेन शान्तावेन के परिचय में आने से उनमें निखालसता, सरलता, वात्सल्यपना आदि जो गुण थे उनका अनुभव हुआ, उनकी जिनेन्द्र भक्ति अति उल्लासपूर्वक होती थी, पू. वेन दोनों वहनें सोनगढ़ में साथ ही जिनमंदिर में भक्ति कराती तब मंदिर भक्ति से गुंजायमान रहता।

पू. वेन का अपने आत्मबुद्धि की निरंतर भावना होने से स्वाध्याय, चिंतन, मनन आदि में लगी रहती थी।

बाह्य प्रतिकूलता चाहे जैसी भी हो परन्तु वे शांति से सहन करती थी और कहती थी कि बाहर के अनुकूल–प्रतिकूल संयोग मिले उसमें क्या? परंतु जीव जितना उनमें जोड़ान करे वैसी स्थिति बनेगी।

पू. गुरुदे के सान्निध्य में जीवन बिताया है। गुरुभक्ति बहुत थी। वैसी ही जिनेन्द्र भक्ति की उत्कृष्ट भावना रहती थी।

देह की स्थिति बहुत समय से नाजुक थी फिर भी अंत में राजकोट में पूजा कराती या करती अति उल्लास दिखता, शरीर काम नहीं करता फिर भी ज्ञानचक्र आया तो उसका सन्मान करने बाहर आई और भक्ति कराई, कमजोरी बढ़ती गई, अपने आपका प्रत्येक दिन प्रतिदिन वीतरागता की वृद्धि हो ऐसी भावना से जिनेन्द्र भक्ति करती थी और कराती रही। बीमारी में शरीर क्षीण हो जाने पर भी शरीर के प्रति ममता नहीं थी तथा न कुछ फरयाद/कहती कि मुझे ऐसा होता है कि वैसा होता है ऐसी शरीर के प्रति उदासीनता उनमें दिखाई देती थी। आये हुए संयोगों को खूब शांति से सहन किया, खबर पूछने कोई जाय तो उससे कहती ''अच्छा है।'' मनोबल बहुत था, अगले वर्ष यात्रा करने जाती थी तब मैंने कहा कि बेन! आपकी तबियत अच्छी नहीं है बहुत महनत पड़ेगी इसलिए आप नहीं जाओ तो अच्छा है, परंतु वो तो होंश से गई और वापिस आकर कहा कि ''देखो मुझे कुछ नहीं हुआ।'' अन्य स्थानों के भी दर्शन किए, यात्रा की बाहुबली भगवान की यात्रा की होश पूरी हो गई।

Please report errors to Ramaben Parekh: WhatsApp +91 90115 91078 or email ramabenparekh45@gmail.com

Version 001: Updates at http://www.AtmaDharma.com & http://www.AtmaDharma.org

अंतिम चार दिनों में क्रम–क्रम से सब छोड़ती गई और शांति से देह को छोड़ा।

पू. गुरुदेव के शब्द–प्रत्यक्ष तथा टेप में सुने थे कि ''शान्तावेन भी भावी गणधर होने वाली हैं।'' इसके अनुसार पू. वेन अपना कल्याण करके उत्तम गति को प्राप्त होंगी ही। उत्तम गति को प्राप्त करने वाले पू. गुरुदेव को शत–शत वंदन।

—डॉ. नवरंगलाल मोदी राजकोट

प्रसन्न मुद्राधारी पूज्य बेन शान्ताबेन

पूज्य गुरुदेव एक महान ख्यातिप्राप्त महापुरुष थे। उनका प्रवचनरूपी ऑपरेशन इतना सूक्ष्म था कि देश–विदेश के लोग उनका लाभ लेकर आंतरिक निरोगता का अनुभव करते थे।

ऐसे पूज्य गुरुदेवश्री की वाणी सुनने मेरे पिताश्री डॉक्टर छबीलभाई बारंबार सोनगढ़ जाते तथा पू. गुरुदेव राजकोट पधारते तब भी नियमित रूप से लाभ लेते थे, पू. वेन श्री वेन के स्वास्थ्य के निमित्त मेरे पिता श्री डॉक्टर के रूप में सेवा करते अर्थात् हमारे कुटुम्ब में पू. वेनश्री वेन का परिचय तो था ही परन्तु पू. शान्तावेन का विशेष परिचय राजकोट में अंतिम तीन महीने से उनका स्वास्थ्य नाजुक होए से मुझे भी उनका निकट परिचय तथा सेवा का लाभ मिला।

पू. वेन शान्तावेन की वाणी सुनते ही उनके गहरे अध्यात्म ज्ञान की गहरी छाप मेरे मन में पड़ी, आत्मा तथा शरीर के भेद की अपूर्व बाते सुनने को मिली, ऐसे आध्यात्मिक संत पुरुष इस भारत के गौरव है। प्रथम दर्शन हुआ तब इस विभूति के दर्शन से संतप्त हृदय शांत हुआ बस तब से मुझे धर्म की रुचि जागी। उनका दिव्य संदेश जब चाहे सुनने मिलता ''भाई धर्म कहाँ है? आत्मा को पहचानो, अन्यत्र कहीं धर्म नहीं बाह्य क्रिया में रचेपचे रहने से धर्म नहीं होता, परंतु सम्पूर्ण धर्म आत्मा की पहिचान में रहता है।''

Please report errors to Ramaben Parekh: WhatsApp +91 90115 91078 or email ramabenparekh45@gmail.com

Version 001: Updates at http://www.AtmaDharma.com & http://www.AtmaDharma.org

उनका यह अध्यात्म संदेश प्रत्येक पल हृदय में गूंजता रहा है एव जगत के प्रत्येक प्रसंगों में चित्त शांति देता है। तभी मन में हुआ कि दुनिया में यह जीव कोई अनोखा ही है।

अंतिम तीन माह से मैं पू. बेन के पास स्वास्थ्य देखने जाता तब उनका इतना प्रसन्न वदन होता मानो कोई रोग न हो, बाद में जब पू. बेन से पूछता तब प्रसन्न मुद्रा से कहती कि मुझे दूसरा कुछ नहीं मात्र बुखार है।

प्रतिदिन हम तीनों डॉक्टर–डॉ. चन्दुभाई, डॉ. नवरंगभाई तथा मैं पू. बेन के यहाँ जाते उस समय हमारे साथ शरीर की बात ही नहीं करती आत्मा संबंधी चर्चा करने में उनको एकदम उल्लास आ जाता, यह एक सुन्दर दृश्य लगता था।

एक तरफ ब्रह्मचर्य का तेज और दूसरी ओर ज्ञान का तेज मानो एक दूसरे की ईर्ष्या करते हो, ऐसा झलक उठता, यह महान संत का जीवन सर्व प्रकार से खिल उठा, ऐसे संत के दर्शन होना दुर्लभ परंतु महाभाग्य से मुझे ऐसा सुयोग प्राप्त हुआ।

अंत में उनका समाधिमरण देखकर मेरा मस्तक झुक गया कारण कि बहुत से त्यागियों का मरण मेरी नजरों के समक्ष देखा था परंतु इस संत की शांतिपूर्वक का जो समाधि–मरण देखा यह मैंने जिंदगी में प्रथमबार ही देखा है।

हे संत! मेरे अंतर के ज्ञान–प्रकाश प्रगट करो ऐसी भावनापूर्वक यह श्रद्धांजलि अर्पण करता हूँ।

—डॉ. बिनुभाई शाह, राजकोट

जिन देशादि के निमित्त से सम्यग्दर्शन मलिन होता हो और व्रतों का नाश होता हो–ऐसे उन देशों, उन मनुष्यों, वह द्रव्य तथा उन क्रियाओं का भी परित्याग कर देना चाहिये।

—श्री नियमसार टीका

Please report errors to Ramaben Parekh: WhatsApp +91 90115 91078 or email ramabenparekh45@gmail.com

Version 001: Updates at http://www.AtmaDharma.com & http://www.AtmaDharma.org

भक्ति रसिका : पूज्य शान्ताबेन

पूज्य शान्ताबेन अति ज्ञान–वैराग्यवान व्यक्ति थी, उनकी देव–शास्त्र–गुरु के प्रति भक्ति कोई अलौकिक थी। उनका परिणाम अत्यंत सरल था। उनका अति निकट का परिचय जब उनकी अति अस्वस्थ तबियत होने पर एक अक्टूबर के दिन विदिशा से निकली यात्रा ट्रेन जो पूज्य गुरुदेव के स्वर्गवास के निमित्त निकली थी, वहाँ से साथ में आई हुई अनेक ब्रह्मचारी बहिनें थती तब हुई थी। उनका ज्ञान–वैराग्य और देव–शास्त्र–गुरु की भक्ति अपार थी। रास्ते में ट्रेन में भी भक्ति कराती थी और स्टेशन पर जब गाड़ी खडी रहे तब सामूहिक जिनेन्द्र पूजा तथा भक्ति कराती थी। ट्रेन में प्रत्येक यात्री इकट्ठे हो जाते थे कि पूज्य बेन के द्वारा कराई गई भक्ति में उत्साह से सभी रंग चढ़ जाता। पूज्य गुरुदेव की अपार महिमा समझाती थी। परिणाम अत्यन्त मंद वैराग्यमय और सरल थे।

जब राजकोट में उनकी तबियत देखने गये थे तब ऐसे प्रतिकूल संयोगों में भी उन्हें शांति, समता और ज्ञान भक्ति के परिणाम अति उज्वल ही रहते थे तथा मुझे पूज्य गुरुदेव की वाणी का वीतराग धर्म प्रचार ग्राम–ग्राम में जिस प्रकार किया है वह जोरशोर से करना तथा पूजन विधान भी ग्रामोद्योग कराके लोगों को जागृत रखना ऐसा आदेश दिया था।

ऐसी पूज्य शान्ताबेन की जो पूज्य गुरुदेव की सभा में एक धर्मरत्न थी तथा जिनके अन्तर–बाह्य जीवन का सुमेल था। उनके प्रति हार्दिक श्रद्धांजलि है और पूर्णदशा को प्राप्त हों, यही भावना।

—पण्डित ज्ञानचंद, विदिशा

देखो तो सही—यह शरीर, स्नान एवं सुगन्धित वस्तुओं द्वारा सुधारते हैं तथा अनेक प्रकार के भोजनादि भक्ष्यों द्वारा पालन करते हैं फिर भी जल भरे हुए कच्चे घड़े की भाँति क्षणमात्र में नष्ट हो आता है। **—श्री कार्तिकेयानुप्रेक्षा**

Please report errors to Ramaben Parekh: WhatsApp +91 90115 91078 or email ramabenparekh45@gmail.com

Version 001: Updates at http://www.AtmaDharma.com & http://www.AtmaDharma.org

पूज्य शान्ताबेन को भावभरी श्रद्धांजलि

युवावस्था से ही भौतिक जीवन की नीरसता देखी, आत्म–कल्याण के अर्थ प्रयाण करने का संकल्प किया तथा पुण्योदय से आध्यात्मिक सत्पुरुष पूज्य कनजीस्वामी की कल्याणकारी वाणी का परिचय हुआ, जीवन की दिशा बदल गई। मनुष्य जीवन का श्रेय/सफलता आत्महित में ही समाहित है ऐसा मन ही मन निर्णय करके पूज्य गुरुदेव के आध्यात्मिक साम्राज्य में प्रवेश किया। इसप्रकार पूज्य गुरुदेव.....उनके जीवन परिवर्तन में अत्यंत उपकारी हुए।

भूतकाल में लुप्त हुआ वर्षों की स्मृतियों को स्मृतिपट पर लाना है, तब.....तादृश्यरूप से सोनगढ़ के जिनमंदिर में सीमंधर प्रभु की भक्ति करती और कराती, प्रतिभासम्पन्न व्यक्तित्व की धनी पूज्य शान्तावेन के प्रति महान आदरभाव उत्पन्न हुआ। शुभास्रवों में सज्ञ/सावधान, सज्जन, सौम्य, तेजस्वी एवं वैराग्यरस से सुशोभित मुखाकृति वाली तथा बुलंद–मधुर कंठ से जिनेश्वरदेव की भक्ति कराती उनके प्रति अत्यंत अहोभाव आया हृदय द्रवित हो उठा। पूज्य बेनश्री बेन और पूज्य शान्तावेन पूर्वभव में महाविदेहक्षेत्र में मित्र थे और भावी तीर्थंकर देव के गणधर तथा वर्तमान में सोनगढ़ के अनमूल्य रत्न।

जीवनपर्यंत, सोनगढ़ की धार्मिक एवं व्यवहारिक प्रवृत्तियों से रंगी हुई पू. शान्तावेन.....। जैसे कि गोगीदेवी आश्रम की संभाल, ब्र. बहिनों तथा महिलाओं को धार्मिक शिक्षण, पू. गुरुदेव के सान्निध्य में रचाई गई यात्राओं का संचालन, धार्मिक साहित्य प्रकाशन तथा प्रचार के लिये योग्य शिक्षा, जिनमंदिर एवं परमागम मंदिर की योग्य देखरेख वगैरह प्रवृत्तियों में उनकी कुशाग्रबुद्धि, कड़क अनुशासन पालन के दर्शन होते।

इसके उपरांत....नियमित शास्त्र स्वाध्याय, ध्यान तथा जिनेश्वर के मंदिर में भक्ति इत्यादि प्रवृत्तियों से उनकी ज्ञानधारा और कर्मधारा अस्खलित रूप से निरन्तर वहती तथा जीवन के प्रत्येक क्षण में उत्कृष्ट पद की प्राप्ति हेतु जागृत रहती।

बम्बई में, पूज्य गुरुदेव के 'समाधि मरण' के समय उनकी उपस्थिति

Please report errors to Ramaben Parekh: WhatsApp +91 90115 91078 or email ramabenparekh45@gmail.com

Version 001: Updates at http://www.AtmaDharma.com & http://www.AtmaDharma.org

अत्यन्त आदरदायक रही.....अंत समय तक उनका पूज्य गुरुदेव के प्रति का भक्ति भाव ज्वलंत रहा। पूज्य गुरुदेव ने उनके समक्ष.....स्वयं की ''समाधि'' की मनोकामना व्यक्त की।

जिनकी विपरीत देह की परिस्थिति में और अंत समय तक उनकी स्वस्थ परिणति ज्ञायकदेव का ही मात्र रटन.....तथा उपयोग में केवल शुद्धात्मा....हो उसे 'समाधिमरण' ही कहते हैं।

स्वर्ग में पूज्य गुरुदेव के, आचार्य कुन्दकुन्द के तथा महाविदेह में साक्षात् श्री सीमंधर भगवान के दर्शन करते हुए वो कितनी प्रफुल्लित होंगी? उसकी कल्पना किये विना हम और क्या करें?

—द. शांतिलाल जवेरी

देव–शास्त्र–गुरु प्रति भक्ति बतावनार—पूज्य बेन

पूज्य वेन! पूज्य गुरुदेव श्री के साथ में सुप्रसिद्ध थे, आज भी गाँवो गाँव उनका विशेष प्रकार के दानश्री देव–शास्त्र–गुरु के प्रति समर्पित था, और भक्ति से दीप उठती।

हम लोग भी बहुत भाग्यवान श्री कुंदकुंद आचार्यदेव की तपोभूमि पोनूरधाम के पड़ौसी जिससे पूज्य श्री गुरुदेव तथा वेन श्री वेन के साथ में यह यात्रा अनेक बार करते और अंत मैं भी पूज्य की वार्षिक तिथि कार्तिक वदी सातम पोनूर में पूज्य वेन के साथ में सभी मुमुक्षु समाज के साथ में श्री कुंदकुंद आचार्यदेव तथा गुरुदेव के गुण गाते–गाते की वह भी एक अमूल्य घड़ी थी, शरीर वहुत कमजोर फिर भी भक्ति में तो वलवानपना ही दिखाई देता, वहाँ भी ऊपर वहुत प्रेरणा देती थी जो अव जरूर पूर्ण करेंगे।

आप पूर्णदशा को प्राप्त करो यही अभिलाषा के साथ में भक्तिभाव से वंदन।

—श्री दिगंबर जैन मुमुक्षु मंडल, मद्रास

Please report errors to Ramaben Parekh: WhatsApp +91 90115 91078 or email ramabenparekh45@gmail.com

Version 001: Updates at http://www.AtmaDharma.com & http://www.AtmaDharma.org

गुरुमार्ग प्रणेता

हे गुरुदेव! केवलज्ञानी के विरह में अपनी अपूर्व शक्ति द्वारा स्वयं ही वह मार्ग खोज निकाला है यह अपनी आत्मा की अपार महिमा है। आपने सम्यक् पुरुषार्थ द्वारा भव का अंत किया है तथा जो आपकी वाणी का आराधन करे उसके भव का अंत होता है।

आपके प्रताप से जंगल में भी मंगल वर्त रहा है। आपने सुवर्णपुरी को तो साक्षात् जंगल में मंगल बनाया है। सुवर्णपुरी मैं तो आपकी शांति की छाया छाई हुई है।

हे कृपालु गुरुदेव! आपकी ज्ञानशक्ति अगाध है, आपका सम्यक् श्रुतज्ञाआन अगाध है। आपका सम्यग्ज्ञान भारत भर में फैला है, आपकी चैतन्य रस झरती वाणी में इतनी मिठास है कि सुनते तृप्ति नहीं होती, आपकी वाणी में मधुरता एवं दिव्यता है कि जिसका मूल्यांकन नहीं किया जा सकता, आपने सम्यक् रत्नत्रय का मार्ग स्वयं आराधकर दूसरों को चारों ओर से मार्ग स्पष्ट करते बताया है, आपने निडर, निर्भय होकर वीर के मार्ग को निःशंकरूप से प्रकाशित किया है।

आपके शासन में ''पूज्य वेन'' ऐसा संक्षिप्त बहुमानसूचक नाम से जो समस्त मुमुक्षु मंडल में प्रसिद्ध थी।

गुरुजी सत्य समझाया
उपकार गुरु का ही हृदय मांही रे....
चेतनजी प्यारा चेतनता तेरी तू निहारना.....ऐसी गाती।

हे मार्गदर्शक माता! आपके मार्गदर्शन से मैंने पूज्य गुरुदेव १९८० में जब बम्बई पधारे तब ४ दिन साहब को मेरे घर रहने की विनती की और पूज्य गुरुदेव मेरी विनती स्वीकार कर मेरे घर पधारे इससे मुकुन्दभाई की लड़की वर्षा को अति आनंद हुआ, तब पूज्य गुरुदेव ने प्रसन्न चित्त से मुझे कहा कि इसकी फूआ की जन्मगुटी है न? अर्थात् जन्म से ही धर्म के संस्कार हैं इसे!!

उसके बाद दूसरे दिन पूरा मंडल पू. गुरुदेव की चर्चा सुनने घर पर

Please report errors to Ramaben Parekh: WhatsApp +91 90115 91078 or email ramabenparekh45@gmail.com

Version 001: Updates at http://www.AtmaDharma.com & http://www.AtmaDharma.org

आया था तब पू. गुरुदेव ने मुकुन्दभाई के लक्ष्य से दो–तीन बार कहा कि मुकुन्दभाई, तुम्हें तो खबर होगी कि हम तीनों जीव साथ थे और भविष्य में भी साथ ही मोक्ष जानेवाले हैं और दोनों बहिनें चंपाबेन–शांताबेन मेरे गणधर होने वाले हैं, उसी भव से हम मोक्ष जाने वाले हैं।

पू. बेन, आपकी भतीजी हमारे यहाँ आने से आपका परिचय विशिष्ट प्रकार से हुआ, जब हम लोग आपके पास आते थे तब आप जिनेन्द्रदेव की महिमा और नित्य दर्शन करना तथा आत्मा का स्वरूप क्या है? इसे इस प्रकार समझाते कि आत्मा का स्वभाव सदा सिद्ध समान होने पर भी उसके अविश्वास के कारण वह शक्ति रुक गई है। विश्वास के फेर से ही यह संसार खड़ा हुआ है तथा पर्यायमें भी स्वभाव की असावधानी से ही अज्ञानी हुआ है। वह क्षणिक अज्ञानभाव आत्मा के त्रिकाली स्वरूप में नहीं....ऐसा लक्ष रखकर स्वभाव तरफ जोर देना कि स्वभाव के आश्रय से दोष और अपूर्णता नष्ट होकर सिद्धपद प्रगट होता है। इस प्रकार जैसे माँ पुत्र को प्यार से समझाती हो वैसा ही हमें लगता था।

हे माता! आप का विरह तोड़कर आपके बताये मार्ग पर हम भी चलें ऐसी भावनापूर्वक हम श्रद्धांजलि अर्पित करते हैं।

—प्रवीणभाई वोरा परिवार, मुम्बई

अध्यात्म विभूति

जैन संस्थापकों का यह न्यास अध्यात्मविभूति पूज्य शान्ताबेन इस न्यास के साथ पूज्य बेन का पूज्य सद्गुरुदेव कानजी स्वामी के साथ पधारने पर और यात्रा संघ के साथ जाने पर संपर्क में आये।

वे वैराग्यमूर्ति, सद्विचारक और शांत महिला थी। वीतराग मार्ग का अवलंबन कर उनने तत्त्व में रुचिवंत बनकर निज कल्याण का मार्ग प्रशस्त किया वे निकट भव्य हैं, न्यास उन्हें श्रद्धांजलि समर्पित करता है उनकी भावना का आदर करते हुए तत्त्व भावना में सहायक होने का संकल्प करता है।

—विदिशा मुमुक्षु मंडल

Please report errors to Ramaben Parekh: WhatsApp +91 90115 91078 or email ramabenparekh45@gmail.com

Version 001: Updates at http://www.AtmaDharma.com & http://www.AtmaDharma.org

प्रतिष्ठा महोत्सव में पूज्य शान्ताबेन का योगदान

पूज्य श्री शान्तावेन को श्रद्धांजली अर्थात श्री गुरुदेव को श्रद्धांजली उनका जीवन पूज्य गुरुदेवमय था, उनके जीवन दरम्यान अनेक बार मिलता होता और कोई भी बात में पूज्य गुरुदेव और भगवान आत्मा आये विना नहिं रहता। कोई भी प्रसंग हो पंचकण्याणक हो या वैराग्य के प्रसंग हो ऊपर की दो बातों के सिवाय भाग्य ही है कि अन्य बातों में रस लेती हों।

४५ वर्ष तक पूज्य गुरुदेव के सान्निध्य में रहीं, जव से मैं उनसे मिला तव से उनकी व्यवस्थित शक्ति और दृढ संकल्प का मुजे दर्शन हुआ, सभी कोई जानता हैं कि पू गुरुदेवश्री के प्रताप से जितने पंचकल्याणक महोत्सव या वेदी प्रतिष्ठा महोत्सव हुए उनमें मुख्य सलाहकार–मार्गदर्शन देने वाली पू. वेन ही थी, पूज्य गुरुदेवश्री की यात्रा संघ में भी उनका मार्गदर्शन रहता था।

जावल में पूज्य गुरुदेवश्री को पीछे वापिस आना पड़ा तथा जव पुनः पूरे ग्राम के विनती करने आये कि यदि पू. गुरुदेवश्री वापिस ग्राम में नहीं पधारेंगे तो हमेशा के लिये ग्राम वालों को वहुत दुःख होगा। तव भी पू. गुरुदेवश्री ने पाटनीजी को भेजकर दोनों वहिनों से पूछाया और संभव हो तो जाने का कहा, जिसका अमल यह तीनों ने विचार किया और जावल ग्राम में पूज्य गुरुदेव फिर से पधारे, पूज्य गुरुदेवश्री की करुणा का कोई पार नहीं है था।

जिन महापुरुषों ने जीवन में निज भगवान आत्मा के दर्शन किये हों उन्हें प्राणीमात्र पर द्वेष कैसा? ऐसे पूज्य गुरुदेवश्री की छत्रछाया में जिनका जीवन बीता हो ऐसे पू. वेन के जीवन में दूसरा क्या होगा?

वाहर की प्रतिकूलता के प्रसंग में भी साम्यभाव से ज्ञाता–दृष्टा की जैसे परिस्थिति का अवलोकन किया है, धर्म प्रचार–प्रसार में उनका वड़ा भारी हाथ था, कोई भी विद्वज्जनों को प्रोत्साहित करते और पूज्य गुरुदेव की बात घर–घर पहुँचे ऐसी सदा के लिये भावना रहती थी। विद्यार्थीओं को वालकों को भी धर्म के प्रति उत्साहित करने में अति प्रमोद व्यक्त करती थी। कोई भी व्यक्ति भले सामान्य हो परंतु तत्त्व का और पूज्य गुरुदेवश्री का प्रचार–प्रसार

Please report errors to Ramaben Parekh: WhatsApp +91 90115 91078 or email ramabenparekh45@gmail.com

Version 001: Updates at http://www.AtmaDharma.com & http://www.AtmaDharma.org

का कार्य करता हो तो 'बेन' उसे उत्साहित करने में कुछ कसर नहीं रखती थी।

पूज्य चंपाबेन तथा पूज्य शान्ताबेन से तत्त्व संबंधी अमुक पांच प्रश्न पूंछ कर परीक्षा की थी तब से दोनों को सम्यग्दृष्टि जाहिर किया।

पूज्य गुरुदेवश्री के अंतिम दिनों में पू. बेन प्रतिदिन दर्शन करने हॉस्पिटल आती। एक दिन पू. बेन को देखकर अपना अन्तर खोलकर पूज्य गुरुदेवश्रीने कहा ''बेन अब समाधि लेने का विचार है'' पूज्य बेन को स्वाभाविक धक्का और जब कुछ ढ़ीला पड़ा तब सहज भूमिका अनुसार साधर्मी को भी राग तो आता ही, अंतिम समय तक पूज्य गुरुदेवश्री साथ ही रहें तो उन्हें संतोष था, परन्तु पूज्य गुरुदेवश्री इतने जल्दी गये इसका खेद भी था।

जब जब मिलने जाते तब प्रसन्नचित्त से स्वयं के विचार बताते, हमेशा पूज्य गुरुदेवश्री की रटन और उनके बताये गये मार्ग पर प्रयाण करना यही कर्त्तव्य है। भवाटवी में से तबियत में भी ऐसी उत्साहित बातें करना शुरु करती थी।

दो वर्ष पहले कुँवार माह में मम्बई मंडल ने दक्षिण की यात्रा का प्रोग्राम बनाया, यात्रा करने की अति भावना थी, स्वास्थ्य बहुत ही नाजुक फिर भी प्रबल भावना थी तो मुमुक्षु भाई बहिनों के साथ ही ट्रेन में मुसाफिरी की टेक्सी की व्यवस्था होने पर बैंग्लोर से श्रवणबेलगोला तक बस में ही मुसाफिरी की। मूडबद्री में भी पू. गुरुदेव संबंधी पहले से लेकर अंत तक के संस्मरणों की बातें करती थी, उस समय की बातें सुनकर रोमांच हो जाते थे, उस समय बहुत ही खांसी चलती थी साथ में बुखार भी हो जाता था फिर भी पूज्य गुरुदेव की बातें करते समय सब गौण हो जाता था, मेरे पास उन संस्मरणों की कैसिट भी है, जिसे सुनना हो वो जरूर मंगवा ले।

ऐसा यह पवित्र साधक आत्मा जो थोड़े ही समय में सिद्ध होने वाला है, जिसपर पूज्य गुरुदेव ने स्वयं मुहर लगा दी है, उन्हें अन्दर से वंदना करके विराम लेता हूँ। **—कांतिभाई रामजी मोटाणी, मुम्बई**

Please report errors to Ramaben Parekh: WhatsApp +91 90115 91078 or email ramabenparekh45@gmail.com

Version 001: Updates at http://www.AtmaDharma.com & http://www.AtmaDharma.org

जीवन ज्योति जगाने वाली पूज्य शान्ताबेन

धर्मात्माओं का जीवन मुमुक्षु जीवों का आत्महित की अनेक प्रकार की प्रेरणाएँ देता है। पूज्य श्री कहानगुरुदेव जैसे युगपुरुष का इस काल में मिलाप हुआ यह महाभाग्य की बात है। तीर्थंकर, गणधर, मुनिवर, चक्रवर्ती आदि अनेक प्रकार से आगम में भरा हुआ आत्मसाधना का वर्णन बताते हैं। उसे पढ़ते–सुनते भी ज्ञान–वैराग्य की कैसी भावनाएँ स्फुरित होती हैं। तो फिर ऐसे कोई धर्मात्मा का जीवन साक्षात् नजरें निहारने से मुमुक्षु हृदयों में कैसी–कैसी आत्महित की तरंगे उछलती हैं!! यह तो जिसे अनुभव हो वही जान सकता है।

पूज्य बेन शान्तावेन भी स्त्री रत्न थी, जो पूज्य श्री गुरुदेव के श्रीमुख से सुनी हुई बात है कि दोनों बहिनें निकट भव्य हैं।

पूज्य बेन की अर्पणता और वात्सल्यता आत्मिक गुणों से शोभित थी, जो अंतिम समय तक हम लोगों ने नजरों से देखा है। जो अपूर्व समाधि–मरण परिणमित था।

ऐसे धर्मात्माओं का एक के बाद एक का विरह पड़ने लगा यह विरह कठोर है फिर भी धर्मात्मा के पीछे चली आई जीवन ज्योति जगाईए—यही सच्ची श्रद्धांजलि है। **—माणिकलाल रामचंद गांधी, मुम्बई**

जो इस भव में पुत्र है वह अन्य भव में पिता होता है। जो इस भव में माता है वह अन्य भव में पुत्री होती है।

इसप्रकार पुत्र, माता, पिता, बहिन, कन्या, स्त्री इनमें परस्पर से परस्पर की उत्पत्ति होती देखी जाती है। अधिक क्या कहें? यह जीव मरकर स्वयं अपना पुत्र उत्पन्न हो जाता है। इसप्रकार इन संसारी जीवों की सदा दुखमय इस संसार परम्परा को धिक्कार है। **—श्री सुभाषितरत्नसंदोह**

Please report errors to Ramaben Parekh: WhatsApp +91 90115 91078 or email ramabenparekh45@gmail.com

Version 001: Updates at http://www.AtmaDharma.com & http://www.AtmaDharma.org

एक बड़वीर ज्ञानी : पूज्य बेन

पूज्य श्री कहान गुरुदेव सम्पूर्ण भारत भर में प्रख्यात हो गये हैं, उनकी गहन–गंभीरता जगत में देखने पर उनकी होड़ नहीं मिलता, जिस भूमि पर विचरते वह कण–कण पवित्र बन गया है।

ऐसी पवित्र भूमि में जहाँ विचरे वहाँ दोनों बहिनों का भी आने का सुयोग बना था, जैसे सोने में सुगंध मिल गयी। ऐसे पवित्र जीव आयें फिर उसमें क्या कमी रहेगी? सोनगढ़ में आये थे तब यहाँ जंगल था, यहाँ ''जंगल में मंगल कर दिया'' यह त्रिपुटी ज्ञानियों की देन है। जहाँ दिगम्बर सत्य धर्म का फुवारा छूटा था और ज्ञानियों का ढ़िंढ़ोरा पीटा तथा ग्रामग्राम मंदिर बने इससे सभी दर्शन–पूजन–भक्ति करने लगे।

पूज्य शान्तावेन भी त्रिकुटी संतों में एक बड़वीर ज्ञानी थी, उनकी देव–शास्त्र–गुरु के प्रति की भक्ति कोई छिपी नहीं रहती थी। उनकी भक्ति देखने, सुनने तो हमारे धरवाले चाहे जहाँ से भी उस समय पहुँच जाते थे। हमारे घर में पूज्य शान्तावेन का बहुत ही उपकार वर्तता है। हमारे घर से जब उनकी तबियत अच्छी नहीं थी तब स्वयं घर आकर बारंबार शरीर से जीतने के लिए उपदेश देती थी ''ज्ञायक को ग्रहण करना, जाननहार के ऊपर ही इकटक लगनी लगानी विकल्प तो छूट जायेंगे एवं शरीर के प्रति का राग भी छूट जायेगा, शरीर का जो होना होगा हो जायेगा इससे डरना नहीं।'' यहाँ मनोबल मिलता है तो परिणाम भी अच्छे रहते हैं।

हमारे कुटुम्ब के प्रति विशेष प्रेम रखती थी तथा सत्यधर्म में लगाने में पूज्य बेन का परम उपकार है। उनकी जीवनदशा को धन्य है।

ऐसे बड़वीर ज्ञानी जो अपूर्व समाधि को प्राप्त हुए, वह हमें भी प्राप्त हो इसी भावना के साथ श्रद्धांजलि अर्पित हो।

—प्राणभाई गोडा, मुम्बई

Please report errors to Ramaben Parekh: WhatsApp +91 90115 91078 or email ramabenparekh45@gmail.com

Version 001: Updates at http://www.AtmaDharma.com & http://www.AtmaDharma.org

आत्मार्थी के लिये आदर्श जीवन

पूज्य शान्तावेन का जीवन एक आदर्श जीवन था, जिनके अनेक पहलुओं से प्रेरणा लेकर हम आत्मकल्याण की दिशा में अपना पुरुषार्थ जाग्रत कर सकते हैं। जैन सिद्धान्त के प्रति उनकी दृढ़ आस्था तथा जैन आचार से अनुप्राणित उनका जीवन हम सबको आत्महित की प्रेरणा देता रहता है।

पूज्य शान्तावेन के जीवन की सबसे बड़ी विशेषता यह थी कि उनके हृदय में देव–शास्त्र–गुरु के प्रति अपार भक्ति थी। पूज्य गुरुदेव के शासन प्रभावना योग में निर्मित जिनमंदिरों का मनमोहक सौंदर्य एवं उनमें विराजमान जिनबिम्बों की अंतरमुखी छवि पूज्य बेन के आध्यात्मिक जीवन के पूर्वार्ध में किये गये प्रयत्नों का साकार रूप है।

अनेक शारीरिक प्रतिकूलतायें होने पर भी श्री जिनेन्द्र पूजन का अटूट नियम उनकी दिनचर्या का अंग बना रहा। वे केवल परम्परा निर्वाह के लिये जिनपूजन नहीं करती थी, बल्कि वह तो उनके आध्यात्मिक जीवन की खुराक ही बन गया था, जिसके बिना उन्हें चैन नहीं पड़ती थी। श्री जिनेन्द्र भक्ति के समय उनका उछलता हुआ हृदय देखकर अनेक दर्शक भी भक्ति से ओतप्रोत हो जाते थे।

शासन प्रभावना की गतिविधियों को प्रोत्साहित करना उनकी दूसरी महत्त्वपूर्ण विशेषता थी, जो लोग पूज्य गुरुदेवश्री द्वारा प्रचारित तत्त्वज्ञान के प्रचार–प्रसार में जुड़े हुए थे, पूज्य बेन का भरपूर समर्थन, अनुमोदन, प्रोत्साहन पाकर उन लोगों का उत्साह एवं कार्यक्षमता द्विगुणी हो जाती थी, पण्डित टोडरमल स्मारक ट्रस्ट द्वारा संचालित प्रशिक्षण शिविर की गतिविधि तो उन्हें इतनी अधिक प्रिय थी की इसकी स्थायी व्यवस्था के लिए स्वयं भी उन्होंने अपना योगदान दिया तथा अपने परिचितों को योगदान देने हेतु प्रेरित किया, उनकी अनुपस्थिति में ऐसे प्रेरक व्यक्तित्व का अभाव गहराई से महसूस होता है।

प्रचंड प्रतिकूल संयोगों के बीच में भी देव–शास्त्र–गुरु के प्रति दृढ़ आस्था बनाये रखना उनके प्रचंड पौरुष का प्रतीक था, कितनी ही प्रतिकूल

Please report errors to Ramaben Parekh: WhatsApp +91 90115 91078 or email ramabenparekh45@gmail.com

Version 001: Updates at http://www.AtmaDharma.com & http://www.AtmaDharma.org

बाधायें आने पर भी वे अपने मार्ग से नहीं डिगी। जीवन के अंतिम समय में कुंदकुंद ज्ञानचक्र के प्रति प्रमोद, उसके लिये स्वागत गीत का निर्माण, जिनवाणी के बहुमूल्य रत्नों से पूजा आदि क्रियाओं से उनके हृदय में विद्यमान जिनवाणी की भक्ति का परिचय मिलता है।

अंतिम समय में पंचपरमेष्ठी भगवंतो का निरंतर गुण स्मरण करते हुए देह त्याग करना हम सबको मृत्यु का वीरतापूर्वक सामना करने की प्रेरणा देता है।

हमारा जीवन भी अनेक आदर्शों पर चलकर पवित्र बने ऐसी कामना से अपना श्रद्धा सुमन अर्पित करता हूँ। **—अभय कुमार जैन**

पूज्य शान्ताबेन के प्रति भावभीनी श्रद्धांजलि

आध्यात्मिक प्रतिभासम्पन्न वीतरागी शासन की उपासक भावी तीर्थंकर के गणधर सात्विक जीवन की साक्षात् मूर्ति पूज्य शान्ताबेन का परिचय बहुत अल्प समय मात्र का रहा। पूज्य गुरुदेवश्री के साथ में जिनने अपने जीवन का अधिकांश भाग व्यतीत किया है। जहाँ–जहाँ पूज्य गुरुदेव का विहार होता, तीर्थक्षेत्रों की मंगलयात्रा हो, वहाँ बेन के बिना कोई प्रसंग नहीं दिखता था। जिन्होंने पूज्य बेन को भक्ति कराते देखा होगा, वो उनके हृदय की गहराई में से जो तल्लीनता, वे जिन जिन भावों से भक्ति कराती थी, उन अपूर्व प्रसंगों को किसी प्रकार भुलाया नहीं जा सकता। उनकी जैसी सदा नम्रता और एक अद्‌भुत जीवन वाले विरले ही होते हैं, चाहे जब उनके मिलो, सदा सबके साथ उनकी एक ही बात थी कि इस पंचमकाल में मोक्षमार्ग का अनुभव करने को पूज्य गुरुदेव के सान्निध्य में आना, अमृत के घूंट पियो और तृप्त होवो।

भारत के मुमुक्षु समाज में ऐसा कोई व्यक्ति देखने में नहीं मिलेगा कि जो पूज्य शान्ताबेन के निकट परिचय में न आया हो तथा उनका थोड़ा भी मार्मिक बोध प्राप्त न किया हो। जो जो व्यक्ति सोनगढ़ पूज्य गुरुदेव के दर्शन को आये और प्रवचन का लाभ लेने आये वे अवश्य शान्ताबेन के पास थोड़े समय को बैठ उनसे बोध प्राप्त किये बिना नहीं रहता।

Please report errors to Ramaben Parekh: WhatsApp +91 90115 91078 or email ramabenparekh45@gmail.com

Version 001: Updates at http://www.AtmaDharma.com & http://www.AtmaDharma.org

जब परमागम मंदिर बना था तब पूज्य बेन अथाह परिश्रमपूर्वक छोटी से छोटी बातें बताने को प्रतिदिन उत्सुक रहते थे।

पूज्य गुरुदेवश्री को जब बम्बई होस्पिटल में ले जाये तब लगभग प्रतिदिन हॉस्पिटल में आती थी तथा अंतिम दिन तक कीसी से भी मिलने के लिये डॉक्टरने मना किया, तब गदगद कंठ से मेरे पास आई और जो पूज्य गुरुदेव के प्रति अनन्य प्रेम से जो शब्द मिलने के लिये मुझसे कहे वे आज भी याद आते हैं 'बालुभाई गुरुदेव के पास जाने की मनाई है परंतु मैं गुरुदेव के अंतिम दर्शन बिना की रह जाऊँगी मुझे आने दो।'' तब मैं उन्हें पूज्य गुरुदेव की रूम में ले गया और तब इन बेन की बातचीत में जो भावना पूज्य गुरुदेव ने, पूज्य बेन के समक्ष भायी थी वह उनकी पात्रता देखकर ही ''समाधि लेने का भाव है'' ऐसे भाव व्यक्त किये थे।

अब पूज्य रामजीभाई का देह विलय हुआ तब राजकोट के स्वाध्याय हॉल में पूज्य बेन ने पूज्य गुरुदेव के साथ में रामजीभाई कब आये! तब के जीवन के एक–एक प्रसंग क्रमसर कहे, वे सुनकर मैं तो छक्क हो गया।

पूज्य बेन की असाध्य बिमारी के समय भी एक ही रटन एक ज्ञायक भाव का ही था तो अंत में भी ज्ञायक–ज्ञायक बोलीं, ऐसा विरला जीव इस काल में मिलना दुर्लभ है। सद्गत आत्मा को अपूर्व शांति मिले, मुझे अल्पकाल में संसार का अभाव करके सिद्धों की श्रेणी में स्थान प्राप्त हो बस यही भावना।

जहाँ से आया वहाँ ही जाना ये मेरा विश्राम
अमरापुरी से आया मैं तो मेरे ग्राम जाता हूँ अमरधाम।
मैं तो जाता हूँ अमरधाम.....
अमर था और अमर रहा हूँ, लिया अमर नाम
अमृत जिसने पाया–पिया यहाँ आठों योम।
जानकर मैं बना अनजाना पाता हूँ विराम
अनेक में से बनु मैं, पूर्ण किया काम मैं तो जाता हूँ मेरे ग्राम।
ज्योति मैं तो ज्योत मिलती, छूटा चंद्र संग्राम,
मैं तो जाता हूँ मेरे ग्राम। **—बलुभाई शाह, मुम्बई**

Please report errors to Ramaben Parekh: WhatsApp +91 90115 91078 or email ramabenparekh45@gmail.com

Version 001: Updates at http://www.AtmaDharma.com & http://www.AtmaDharma.org

आत्मरसिक पूज्य शान्ताबेन

पूज्य गुरुदेवश्री की छत्रछाया में पूज्य बेन की जीवनशैली आध्यात्मिक, व्यवहारिकता की गहरी सूझबूझ में त्रिवेणी संगमरूप थी।

सोनगढ़ की धार्मिकता, विशालता उनके पाये में और सौराष्ट्र के मंदिरों में उनकी पहले से सूझ/जानकारी तथा छोटे से छोटी कला में सूझ देने वाली वे एक कुशलता प्राप्त व्यक्ति थी।

पूज्य गुरुदेवश्री के परिवर्तन समय से पूज्य बेनश्री बेन दोनों बहिनें पूज्य गुरुदेव के सान्निध्य में धर्म में ओतप्रोत रहती। उनकी भक्ति और पूर्वभव के संस्कारा ऐसे उदित हो उठे कि मानो वे दिगम्बर धर्म का पुनरोद्धार करने वाले संत के एक प्रचारक आये थे।

पूज्य बेन का योगदान अजब था, शास्त्राभ्यास भी ऐसा था कि जिनकी सूक्ष्मदृष्टि से बहुत विचारने योग्य था। उनका ज्ञान के साथ उच्च वर्तन, चित्त पर अंकुश आत्मा के स्वरूप को देखना–जानना–अनुभवना यह उनके मुखारविन्द पर सब प्रत्यक्ष निहारते।

वेदी प्रतिष्ठा, पंचकल्याणक प्रतिष्ठा हो या शिखरजी, गिरनारजी आदि की यात्रायें पूज्य गुरुदेव के साथ–साथ भक्तिरस से भरपूर दोनों बहिनों की हाजरी अनोखी देखने में आती थी।

शिक्षण शिविरों में जिनकी उत्कंठा तथा मुमुक्षु मंडलों के प्रति वात्सल्य प्रेम और शासन प्रभावना में उनका उत्साह अत्यंत था।

पूज्य बेन का सरल तथा शांत स्वभाव, निरभिमानपना एवं सलाह, सूचना के लिये उनका तात्कालिक निर्णय देखकर हो जाता था कि ये महा आध्यात्मिक रत्न ही हैं, अध्यात्म की ये संगिनी थी, निर्भयता की वीरांगना थी, ऐसा उनका जीव हमें आदर्शरूप हो।

जीवन के अंतिम समय तक समभाव, समता, अध्यात्मदृष्टि थी कि रखकर जो निंदा करे उस पर भी स्वभाव और करुणा ऐसा अर्हनिश वर्तन एक विरले व्यक्ति में ही होता है।

Please report errors to Ramaben Parekh: WhatsApp +91 90115 91078 or email ramabenparekh45@gmail.com

Version 001: Updates at http://www.AtmaDharma.com & http://www.AtmaDharma.org

हमारे कुटुम्ब के मार्गदृष्टा, जीवन में धर्म के गहरे संस्कार देने वाली और सनातन दिगम्बर धर्म के पाये (नींव) रखने वाली ऐसी धर्ममाता को हमारा कोटि–कोटि वंदन और शीघ्र सिद्धदशा को पाओ ऐसी भक्तिभीनी श्रद्धांजलि अर्पित करते हैं।

—किरण जयंतिलाल कामदार

विरली विभूति चेतनवंशी पूज्य शान्ताबेन

जन्म–मरण तारा टली जशे,

आवशे कांई भव केरा अंत रे.....

हमारे कुल की विरली विभूति पूज्य शान्तावेन, अंत में जब राजकोट पधारी तब हम उनके पास में बारंबार जाते तब उनकी मुद्रा ऊपर ही चैतन्य की चमक देखने में आती। हमारे कुटुम्बियों को उपदेश देती कि इस मनुष्यभव में अपने को कहान जैसे गुरु मिले तो आत्मा का काम करके जन्म–मरण के फेरे टालना यह मनुष्यभव का कर्तव्य है।

पूज्य शान्तावेन का समाधिमरण देखकर हमें इतना विरह हुआ कि हमारे कुटुम्ब के बीच से रत्नदीप बुझ गया। हमें अभी भी उनका विरह बहुत ही लगता है परन्तु उनके गुणों का स्मरण करके शांति रखते हैं और भावना भाते हैं कि वे शीघ्र सिद्धपद को पावें और हमें भी साथ में रखें ऐसी भावना से अश्रुभरे नयनों से श्रद्धांजलि अर्पित करते हैं।

—प्राणलाल त्रिभोवनदास खारा परिवार–राजकोट

Please report errors to Ramaben Parekh: WhatsApp +91 90115 91078 or email ramabenparekh45@gmail.com

Version 001: Updates at http://www.AtmaDharma.com & http://www.AtmaDharma.org

वात्सल्य की मूर्ति पूज्य शान्ताबेन

हे माता! तुम्हारा अनंत उपकार है। परम वात्सल्यता से आत्मिक उत्साह दिया। धर्म का अमृत पिलाया, तीर्थंकर भगवंतों की परम महिमा बतायी। आज हमारे पास जैन धर्म का कुछ वैभव है वह पूरा आपका ही दिया हुआ है इससे ही हमारे ऊपर अनंत अनंत उपकार है।

आपका सभी जीवों के प्रति समभाव, निरभिमानपना, सरल स्वभाव एवं अध्यात्म के रसबोड़ रहना यह एक महानता का लक्षण था।

हम लोग स्थानकवासी थे परंतु आपके द्वारा पूज्य गुरुदेव से भेंट हुई तथा शाश्वत धर्म बताया, धर्म के संस्कार डाले, पूज्य गुरुदेवश्री का तो अनंत अनंत उपकार है कि जिन्होंने मोक्षमार्ग बताया परन्तु हमारे लिये तो आप सर्व प्रथम वंदनीय हो क्योंकि मोक्षमार्ग बताने वाले पूज्य गुरुदेव से भेंट आपने ही कराई।

हमारे जीवन में अनेक ऐसे अटपटे प्रसंग आये कि जब आपसे सलाह–मशवरा हमारे जीवन का पथ प्रदर्शक बना। पूज्य गुरुदेवश्री की अंतेष्टी में भाग लेना हमारा पूरा कुटुम्ब मोटर से सोनगढ़ जा रहे थे रास्ते में अकस्मात ऐक्सीडेंट हो गया और हमारे दो स्वजनों का देहावसान हो गया वह आघात हमारे लिये असह्य था परन्तु आप हमारे घर पधारी धर्म की चर्चा की, गजपंथा की यात्रा कराई और आघात दूर कराया वह कभी भुलाया नहीं जा सकता तथा यही आपकी हमारे ऊपर परम वात्सल्यता थी।

जब–जब आप दोनों बहिनें जेतपुर पधारती तो हमारे घर पर उतरती जब हमारे लिये महान मंगलकारी प्रसंग बन जाता, आज भी उन दिनों को याद करते ही मन प्रफुल्लित हो जाता है। मेरी मां में भी भक्तिरस आपने ही भरा था, जिससे वे मधुर कंठ से गाती। हे माता! आपने हमारी अंगुली पकड़कर पूज्य गुरुदेवश्री से भेंट कराई तो यह वचन देते हैं कि आपने जिस मार्ग में प्रयाण करके आत्मा का सच्चा स्वरूप प्राप्त किया उसी प्रकार हम हमारे सच्चा स्वरूप को पहचानेंगे तभी सच्ची श्रद्धांजलि कहलायेगी। बारंबार आपको कोटि–कोटि वंदन। **—विक्रम जयंतिलाल कामदार परिवार**

Please report errors to Ramaben Parekh: WhatsApp +91 90115 91078 or email ramabenparekh45@gmail.com

Version 001: Updates at http://www.AtmaDharma.com & http://www.AtmaDharma.org

कुटुम्ब का एक चैतन्य चमत्कारी तारा ऐसी मेरी 'बेन'

पूज्य बेन बचपन से ही तेजस्वी, रूपवान, वीर्यवान थी, मानो हमारे घर का एक चैतन्य चमत्कारी तारा था, जिससे हमारा कुटुम्ब भी धन्य बना, मानो एक सती समान पुण्य चमकता था एवं कुटुम्ब में भी एक श्रेष्ठ व्यक्ति था, उनके वचनों की कींमत करते थे कि जो 'बेन' कहें उसी के अनुसार ही होगा, बालवय से त्याग, वैराग्य, आत्मिक निर्णय था, पूज्य बेन का दीक्षा लेने का भाव था तथा मैं घर में बडी थी इसलिए मुझे पात्र में भोजन देना वह सिखाती थी। इस सम्बन्ध में पूज्य माताजी तथा पिताजी बहुत दुःखी होते थे। इस कारण पूज्य गुरुदेव के दर्शन करने कुटुम्ब सहित पहली बार गये, तब पूज्य गुरुदेव ने दीक्षा का स्वरूप समझाया, तब से उनका भाव फिर गया और पूज्य गुरुदेव के सहवास में रहने लगी तथा पूज्य गुरुदेव के प्रति अपूर्व भक्ति थी। तभी से निश्चय किया कि इस गुरु से ही मेरा कल्याण होगा और भेदज्ञान के मंत्र साधने में तल्लीन हो गई और मंत्र साधकर ही चैन ली।

पूज्य श्री गुरुदेव के सान्निध्य में आई तब से लेकर अंत तक सभी को संबोधन करती कि सभी लोग यह सत्य धर्म क्या है इसे समझना और पूज्य गुरुदेव के प्रवचन का लाभ लेना, बारंबार आने को कहती इससे हम सभी सोनगढ़ भी आते थे।

हमारे कुटुम्ब का भी अहोभाग्य कि ऐसी धर्मात्मा बेन जैसा अमूल्य रत्न का जन्म हुआ।

आबू में पूज्य बेन के पैर में फेक्चर हुआ तब मैं अहमदाबाद हॉस्पिटल में थोड़े दिन रही थी। तब ऑपरेशन से समय भी उनकी समता–शांति देखी कि मानो शरीरादि और आत्मा प्रत्यक्ष भिन्न दिखलाती हों ऐसा दृश्य लगता था, यह देखकर हमें भी प्रेरणा मिली कि धन्य है ऐसी दशा को।

पिताश्री तथा मातुश्री को भी बारंबार सोनगढ़ बुलाते और यात्रा में जाना हो तब खास करके कुटुम्ब के प्रत्येक भाई बहिनों को यात्रा में चलने को कहती थी।

Please report errors to Ramaben Parekh: WhatsApp +91 90115 91078 or email ramabenparekh45@gmail.com

Version 001: Updates at http://www.AtmaDharma.com & http://www.AtmaDharma.org

इसलिए हम लोग उनकी आज्ञा मानते और लगभग अफ्रिका की यात्रा से लेकर प्रत्येक यात्रा में जाते थे वहाँ तीर्थों की महिमा बताती थी।

उनकी देव–शास्त्र–गुरु के प्रति भक्ति देखकर हमारा हृदय भी उछल जाता था तथा देव–शास्त्र–गुरु सम्बन्धी कार्यों में दान देने की प्रेरणा भी करती थी।

हम सभी दूर देश में होने के कारण हमारे पढ़ने योग्य जिनवाणी भी सोनगढ़ से भेजती थी, जिससे स्वाध्याय करने में भी उत्साह रहता कि पूज्य बेन ने ग्रन्थ भेजा है इसलिए जरूर स्वाध्याय करना।

बहुत वर्षों के बाद अफ्रीका से भारत में आये, तब भी पहले यही सूचना भेजी कि घर लेना हो तो जिनमंदिर के पास में लेना जिससे प्रतिदिन जिनेन्द्र भगवान के दर्शन हों और ये संस्कार वृद्धिगत हों इसलिए दादर में श्री कहाननगर सोसायटी में जिनमंदिर के पास ही घर लिया, हम जिनेन्द्र के धाम में आये, तब हमारे परिवार में अधिक उमंग जगी और उत्कृष्ट धर्म के संस्कार पाये, इसमें हमारी पुत्री रमा के परिणाम में भी पलटा हो गया तब सोनगढ़ में पूज्य बेन का सहारा लेकर उनके शरण में रही तब आप माता से भी अधिक अनोखा प्रेम करती यह देखकर मुझे अति संतोष हुआ कि हमारे कुल का नाम उज्वल/रोशन किया।

ऐसे धर्मात्मा की पगडंडी पर साथी ही चलें और सिद्धदशा भी साथ में ही पायें ऐसी तीव्र उत्कंठा के साथ वह श्रद्धांजलि अर्पित करते हैं।

—कान्ताबेन मोतीलाल पारेख परिवार, लंदन

यदि झोंपड़ी में आग लग जाय तो झोंपड़ी में लगी हुई अग्नि झोंपड़ी को ही जलाती है, परन्तु उसमें रहे हुए आकाश को (रिक्त स्थान को) नहीं जलाती; उसीप्रकार शरीर में जो नाना प्रकार के रोग उत्पन्न होतें है वे रोग उस शरीर को नष्ट करते हैं, परन्तु उस शरीर में विद्यमान निर्मल ज्ञानमय आत्मा को नष्ट नहीं करते।

—श्री पद्मनन्दि पंचविंशतिका

Please report errors to Ramaben Parekh: WhatsApp +91 90115 91078 or email ramabenparekh45@gmail.com

Version 001: Updates at http://www.AtmaDharma.com & http://www.AtmaDharma.org

वात्सल्यमूर्ति पूज्य बहिन

पूज्य बेन को हमारी बहिनों के प्रति अगाध प्रेम था तथा सदा के लिए हमारा मस्तक उनके प्रति झुक जाता था, हम पूज्य बेन के कारण सोनगढ़ जब चाहे जाते और महीनों रहने से आत्मधर्म के संस्कार दृढ़ होते, धर्मात्मा का निकट से परिचय में बहुत लाभ था इससे बारंबार सोनगढ़ जाने के लिये हृदय लोहचुंबक के समान खिंचता था।

राजकोट में श्री सिद्धचक्र विधान पूजा करवाने का समर्थन पूज्य बेन ने किया था और मेरी भी बहुत भावना थी कि पूज्य बेन ने जयपुर में श्री सिद्धचक्र विधान अति उत्साह भाव से धामधूमपूर्वक कराया था। तब मुझे भी लाभ लेने बुलाया था मगर संयोगवश मैं नहीं पहुँच सका, इससे ऐसा लगा कि ऐसी महान पूजा मुझे भी करना है इससे राजकोट में सिद्धों के गुणगान गाते–गाते खूब भक्तिभाव से उत्साहपूर्वक पूजा कराई तब भी जयपुर के प्रत्येत पंडित आये थे तथा पूज्य बेन ने भजन मंडली को भी बुलाया था जिससे सिद्धों की भक्तिगुणगान करते–करते मेरी भावना पूर्ण की। कितना कमजोर शरीर होने पर भी पूज्य बेन नियमित रूप से पूजा में प्रारम्भ से ही पधारती और पूजा पूर्ण हो वहाँ तक बैठती थी। यह महान पूजा कराई तबसे हमारे कुटुम्ब को भी सबकी अपेक्षा विशेष प्रकार का लाभ हुआ।

राजकोट शहर अर्थात् पूज्य गुरुदेवश्री का पीहर (मायका) का स्थान कहलाता थाआ, उसी समय पूज्य गुरुदेव चौमासा करने पधारे थे। उसके बात तो हर वर्ष पधारते, राजकोट में पूज्य गुरुदेव से चर्चा–प्रश्न पूछने बाहर ग्राम से बहुत मेहमान आते थे। उसी तरह पूज्य बेन के लिये पीहर था, पूज्य बेन अनेक बार पधारती थी, पूज्य बेन का पुरुषार्थ भी राजकोट में अधिक जाग्रत होता था भेदज्ञान भी (निर्विकल्पदशा) यहाँ प्राप्त हुआ और हमारी भाभु (समरतबेन) भी रहने लगी तब से पूज्य बेन उन्हें गर्मी के दिनों में सोनगढ़ लेने आती थी और कहती कि आपका यह पीहर है और वे पूज्य बेन के प्रति 'माँ' समान प्रेम करती थी तथा राजकोट के मुमुक्षुओं का वात्सल्य–प्रेम देखकर पूज्य बेन खुश होती, पूज्य बेन ने अंत में समाधिमरण भी संघ के

Please report errors to Ramaben Parekh: WhatsApp +91 90115 91078 or email ramabenparekh45@gmail.com

Version 001: Updates at http://www.AtmaDharma.com & http://www.AtmaDharma.org

समक्ष राजकोट में कहाननगर सोसायटी में किया जो कि हमारे जीवन में एक आदर्श दृश्य था।

हमारी भी यही भावना है कि हम भी राजकोट में ऐसा समाधिमरण करेंगे यही सच्ची श्रद्धांजलि है।

—सविताबेन रसिकलाल परिवार, राजकोट

मोक्षगामी की पूज्य बहनी

हमने भी पूर्व में कुछ पुण्य किया होगा कि हमारे कुटुम्ब में शान्तावेन जैसी 'बेन' का उदय हुआ। उनका उदय होने पर ऐसे महान गुरुदेव का योग बना। श्री जिनेन्द्रदेव–शास्त्र–गुरु की महिमा एवं स्वरूप समझाया तथा प्रत्येक को धर्म में रुचि बढ़े ऐसे संस्कार डाले।

जलगाँव में भी मंदिर नहीं था, इसलिए जलगाँव के मुमुक्षुओं को बारंबार जिनमंदिर के लिये जगह लेने की प्रेरणा देती थी, अंत में उनकी तीव्र भावना से हमारे ही घर के सामने श्री जिनमंदिर के लिये जगह ली गई तथा शीघ्र मंदिर बनवाने के लिये खूब सलाह सूचना देती थी, अल्प समय में श्री जिनमंदिर की प्रतिष्ठा पूज्य गुरुदेवश्री तथा दोनों बहिनों के सान्निध्य में अति ही उत्साहपूर्वक हुई, तब सभी को प्रतिदिन देवदर्शन–पूजन की प्रतिज्ञा देती थी, इस प्रकार पूज्य बेन को श्री जिनेन्द्र की ऐसी अनोखी महिमा थी यह देखकर हमें निर्णय हो गया कि यह मोक्षगामी जीव है।

अंतिम चार–पाँच वर्ष से पूज्य बेन गर्मी के कारण राजकोट पधारती थी और वहाँ के मुमुक्षुओं का प्रेम देखकर खूब ही आनंद में रहती थी, इससे मेरा भाव हुआ कि मंदिरजी के बाजू में ही जगह लेना चाहिए इससे पास में ही कहाननगर सोसायटी में नीचे प्लाट किया, जिनमंदिर पास में होने से घर पर से ही शिखर के दर्शन होते थे इससे मुझे अति ही आनंद होता।

Please report errors to Ramaben Parekh: WhatsApp +91 90115 91078 or email ramabenparekh45@gmail.com

Version 001: Updates at http://www.AtmaDharma.com & http://www.AtmaDharma.org

अंतिम दो वर्ष से पूज्य बेन गर्मी में ३–३ माह तक खूब आराधनापूर्वक शांति से रहती थी। अंत में समाधि के पहले मुझे पंद्रह दिन तक वहाँ पूज्य बेन के साथ रहने का अवसर मिला था तथा अंत में समाधि अति आराधनापूर्वक शांति से करी यह भी मुझे एक अलौकिक लाभ मिला कि मेरा मकान भी सदा के लिये समाधि की याददास्त रूप बन गया।

पूज्य गुरुदेवश्री के चौमासा में पूज्य बेन कई बार जाती थी तब मैं भी उनके साथ में जाती और अंतिम चौमासे में भी राजकोट में जहाँ पूज्य बेनश्री बेन उतरती थी उस मकान में मैं भी साथ में रहती थी। कई बार छोटी उम्र में पूज्य बेन ने जो आराधना करके सम्यग्दर्शन प्राप्त किया उस समय में भी मैं हाजिर थी, परन्तु कुछ नहीं समझती। पूज्य बेन का वैराग्य देखकर मुझे भी ऐसा होता था कि पूज्य बेन ऐसी क्यों? इतनी उदासीन रहती हैं, परन्तु वह तो सम्यग्दर्शन प्राप्त करने का समय नजदीक में आ गया था, उसके बाद सम्यग्दर्शन क्या वस्तु है? यह पूज्य बेन ने समझाया, उनकी कृपादृष्टि से हमने भी ऐसी आराधना की, उन्हीं के पथ पर विचरण करिये यही हार्दिक श्रद्धांजलि है।

—मंजुलाबेन नानालाल

यदि परिग्रहयुक्त जीवों का कल्याण सकता हो तो अग्नि भी शीतल हो सकती है, यदि इन्द्रियजन्य सुख वास्तविक सुख हो सकता हो तो तीव्र विष भी अमृत बन सकता है, यदि शरीर स्थिर रह सकता हो तो आकाश में उत्पन्न होनेवाली बिजली उससे अधिक स्थिर हो सकती है तथा इस संसार में यदि रमणीयता हो सकती हो तो वह इन्द्रजाल में भी हो सकती है।

—श्री पद्मनन्दि पंचविंशति

Please report errors to Ramaben Parekh: WhatsApp +91 90115 91078 or email ramabenparekh45@gmail.com

Version 001: Updates at http://www.AtmaDharma.com & http://www.AtmaDharma.org

शुद्धात्मा की आराधक मेरी बहन

हमारी माता भी धन्य है कि जिनकी कुक्षी से ऐसा रत्न पूर्व के संस्कार के बल से हमारे घर में जन्म लिया। पिताजी भी धन्य हुए तथा मेरी 'बहन' होने से हम भी गौरव का अनुभव करते हैं कि अहो! ऐसी बहन हमारे कुटुम्ब में! जिनने धर्म का पाया रोपा तथा धर्म का वस्तु स्वरूप क्या है? यह हमें समझाकर निहाल किया।

हम लोग दिल्ली से वर्ष में एक–दो बार सोनगढ़ आये तब एक माह रहते तो पूज्य बेन पूज्य गुरुदेवश्री की वाणी का लाभ बारंबार लेने आने को प्रोत्साहित करती थी, उनके साथ भी चर्चा–वार्ता का अच्छा लाभ लेते थे, तब बहुत बार कहती थी ''मैं शुद्धात्मा हूँ'' इसकी ही भावना करने जैसी है, शुद्धात्मा की बहुत महिमा है, जिसे आत्मा की अन्दर से सच्ची रुचि लगे, लगन लागे, उसे रात–दिन ''मैं ज्ञायक हूँ, मैं ज्ञायक हूँ'' मुझे बाहर का कुछ नहीं चाहिए। राग मेरा स्वरूप नहीं, मैं तो सिद्ध की जाति का हूँ और सब तो अनंतकाल से किया, एक बार आत्मा की धुन जगाने योग्य है, ऐसा बारंबार समझाती थी तथा जिनेन्द्रदेव के प्रतिदिन दर्शन–पूजन–भक्ति में रुचि बढ़ाना ऐसा आदेश देती थी इस कारण हमारे घर में सभी की रुचि का झुकाव सत्य का है तथा सभी को पूज्य बेन के प्रति अहोभाव आता था।

अंत में भी श्री कुंदकुंद ज्ञानचक्र राजकोट में आया तब पूज्य बेन ने खास करके मुझे कुंदकुंद ज्ञानचक्र का स्वागत के समय तक रुकने का आग्रह किया जिससे मैं रुक गई तथा स्वागत का अच्छा लाभ मिला। स्वागत में पूज्य बेन ने श्री जिनवाणी को हीरा–मोती से सजाकर सम्मानित किया, वह भी एक आश्चर्यकारी दृश्य था, उस समय उनकी तबियत बहुत नरम थी फिर भी उन्होंने गीत रचकर गाया और सबको मांगलिक सुनाया, शरीर बहुत कमजोर परंतु उनका मनोबल मानो आत्म–बल से टिट रहा था।

पूज्य बेन की बेजोड़ भक्ति वह तो हृदय में आज भी गूंज रही है। पूज्य बेन का उपकार तो कैसे भी भुलाया नहीं जा सकता। वास्तव में मैं उनके जैसे परिणाम जाये तभी सच्चा उपकार माना जाएगा और तभी सच्ची श्रद्धांजलि कहलायेगी। पूज्य बेन का आत्मा परिपूर्ण दशा को शीघ्र प्राप्त हो यही भावना।

—लाभुबेन जगजीवनदास परिवार

Please report errors to Ramaben Parekh: WhatsApp +91 90115 91078 or email ramabenparekh45@gmail.com

Version 001: Updates at http://www.AtmaDharma.com & http://www.AtmaDharma.org

अमर प्रकाश स्वरूपी पूज्य मौसीजी

हम पूज्य मौसीजी के सच्चे सहवास में १९६३ में आये, हम उस समय अफ्रीका से पहली वार सोनगढ़ आये। पहली ही वार के सहवास में हमारे ऊपर इतनी अधिक धर्म की प्रीति मन में उत्पन्न कर दी कि आज तक हमें पूज्य मौसीजी याद नहीं भूलती।

पूज्य मौसीजी की धर्म के प्रति रुचि होने से वे पूज्य गुरुदेव की छत्रछाया में आई तथा धर्म का सच्चा ज्ञान उनके पास से प्राप्त किया, उन्होंने अंत तक धर्म का प्रचार किया।

उनकी दीर्घद्रष्टि धर्म के प्रति की जानकारी और सर्व तरफ से लगन भी वेजोड़ थी। हम उनके निकट परिचय में आये तव से सच्चा ख्याल आया कि धर्म क्या है? उन्हें धर्म का अजोड़ ज्ञान था। साथ ही साथ सभी जीवों के प्रति तथा प्राणियों के प्रति करुणा भाव था। हम जव चाहे सोनगढ़ जाते उस समय भी वे गांव के समाज के लिये खूब कहती। साथ ही साथ सभी पशु–पक्षियों के लिये भी विशेष व्यवस्था कराती थी अकाल में गाँव वालों की नजर हमेशा पूज्य मौसी की तरफ जाती और पूज्य मौसीजी उन्हें सहायता देती थी ऐसा देखने पर ख्याल आया कि पूज्य मौसीजी को प्रत्येक जीव के प्रति अति अनुकंपा थी तथा सभी जीवों को धर्म का ज्ञान देती। हमें ऐसा लगता है कि धर्मस्नेही रमावेन ने मानो पूज्य मौसीजी के लिए ही जन्म लिया हो, उसी प्रकार उनने तन–मन–धन से सच्ची सेवा की, रमावेन ने सर्वस्व पूज्य मौसीजी को सौंप दिया है।

पू. मौसीजी के अमुक प्रसंग मेरे जीवन में खुद गये और उन प्रसंगों ने हमारे जीवन में सच्चा मोड दिया है। पूज्य मौसीजी वीमार होने से वम्बई आई उस समय हम प्रतिदिन उनके साथ में घंटो तक धर्म चर्चा करते थे। ऐसे प्रसंगों से हमारे जीवन में धर्म के प्रति सच्ची रुचि हो गई। उन्हें तीर्थयात्रा तथा भक्ति अति ही प्रिय थी।

खारा कुटुम्ब का दीपक बुझ गया परंतु उसका प्रकाश हमेशा चमकता रहेगा। उनका प्रकाश अमर है। उनका प्रकाश हमारे में भी चमके इसी भावना के साथ श्रद्धांजलि अर्पित करते हैं।

—इन्दुबेन नगीनदास सेठ परिवार, घाटकोपर

Please report errors to Ramaben Parekh: WhatsApp +91 90115 91078 or email ramabenparekh45@gmail.com

Version 001: Updates at http://www.AtmaDharma.com & http://www.AtmaDharma.org

सहनशीलता की मूर्ति : ऐसी मौसीजी

पूज्य मौसीजी का जीवन गंभीर एक सुन्दर शान्त सागर समान स्थिर दैदीप्यमान था तथा उनकी मुखमुद्रा पर खानदानी का खजाना दीप्त था। पूज्यश्री का जीवन सर्वत्र सुवासित अमृतरस भरा था, उनका साहस, वे परिश्रम के समय देह की भी सुधवुध भूल जाती थी। उनके आशीर्वाद से हमारा कुटुम्ब का वाग–वगीचा हरा–भरा, सुवासित बना कि जिसकी सुगंध–सुवास आज भी महकती है। उनकी शीतल वटवृक्ष की छाया में हम गौरव का अनुभव करते, ज्ञानी संत के आशीर्वाद पाकर धन्य वनें, वे हमारी शिरछत्र तथा दीपक की मसाल समान थी।

जिनके नैन–वैन तथा चाल में चारित्र की झलक चमक रही थी तथा रोम रोम मे पवित्र का प्रशम रस नितरता था तथा आत्मिक गुण महक उठते थे और अभी भी महक रहे हैं।

सहनशीलता का वेजोड़ संगम, वालवय से ही वहुत सहन करती आई हैं तथा वहुत तीव्र वीमारियों से निकलकर आई थी। फिर भी मुख पर प्रसन्नता ही दिखती। रोग में अखंड समता कव रह सकती है? आत्मीयवल वहुत मजवूत था कि वह देखकर स्तव्ध रह जाते कि ऐसी समता और शांति कव हो? कैसे हो?

वात्सल्य की मीठी वावडी समान थी, उनके हृदय ऐसा जोरदार वात्सल्य वहता था तथा उनके खून की वूंद–वूंद में श्री देव–शास्त्र–गुरु की भक्ति तथा वात्सल्य की सरिता ऐसी वहती कि हरपल, हरसमय सभी को पूरी–पूरी संभाल रखती थी, चाहे सीमंत हो कि चाहे रंक हो, अमीर हो कि गरीव हो सभी के प्रति वात्सल्य भाव रखती थी। हमारे जीवन में धर्म के गहरे वीज डालने वाले हैं तो ''पूज्य ज्ञानी मौसीजी।'' वालपन से ही हम लोगों में जो धार्मिक संस्कार पड़े थे यह हमारा अहोभाग्य है कि हमारा जन्म अफ्रिका में होने पर भी हम लोग वचपन से ही मौसीजी के कारण सोनगढ़ आते, और जो शिक्षा प्राप्त की थी वह अफ्रीका में वड़े होने तक गहरे वीज पड़े रहे वे फलने लगे तथा अफ्रिका हमेशा के लिये छोड़कर भारत में आये कि जहाँ

Please report errors to Ramaben Parekh: WhatsApp +91 90115 91078 or email ramabenparekh45@gmail.com

Version 001: Updates at http://www.AtmaDharma.com & http://www.AtmaDharma.org

जब चाहे पूज्य श्री गुरुदेव तथा पूज्य मौसीजी के दर्शन मिलते।

हमारे जीवन के मूल्यवान दिन तो तब थे कि जब हम लोग अफ्रिका से भारत में आये तब तो अलौकिक प्रसंग थे। पंचकल्याणक महोत्सव तथा पूज्य गुरुदेवश्री की हीरक जयन्ति महोत्सव तथा शाश्वत तीर्थधाम शिखरजी की महान यात्रा का अपूर्व नया प्रसंग मिला सब से अधिक पूज्यश्री मौसीजी के निकट परिचय में भी आये तो हमारा हृदय थनगना उठा कि यह तो हमारे जीवन का एक भिन्न जाति का प्रसंग और मौसीजी का सातिशय प्यार हम लोगों को सोनगढ़ आने के लिये आकर्षित करता तो ग्रीष्मकालीन छुट्टीयाँ आते ही, हमारे घर के सभी जन धार्मिक संस्कार दृढ़ कराते, बालकों को भी धार्मिक कथा सुनाते जिससे पूज्य मौसीजी के पास लाभ लेने का आग्रह करते और खूब आनंद मिलता, हमारे साथ में पालीताणा की यात्रा के लिये भी आती औरर पूजा–भक्ति में उनका उत्साह सबको उस रंग में रंग डालता, थोड़ी देर तो सभी उस रंग में रंग जाते तथा तीर्थों की महिमा समझाती थी।

शारीरिक दर्द में भी अजब–गजब का आत्मविश्वास था कि जो अंत समय तक शांति–समता–समाधि जो कि एक मृत्यु महोत्सव बन गया था, वह जिसने प्रत्यक्ष देखा है उसे आज भी याद आता होगा।

ऐसी ज्ञानी मौसीजी का मनोबल भी हमें जीवनपर्यंत मिले, यही भावना के साथ श्रद्धांजलि अर्पण करती हूँ, ऐसे सहनशीलता के मूर्ति पूज्य मौसीजी के चरणों में बारंबार नमस्कार हो।

—सुधाबेन शांतिलाल मोटाणी परिवार, मुम्बई

हे आत्मा! तूने इच्छित लक्ष्मी प्राप्त कर ली है, समुद्रपर्यंत पृथ्वी का भोग कर लिया है और जो विषय स्वर्ग में भी दुर्लभ है ऐसे अत्यन्त मनोहर विषय भी प्राप्त कर लिये हैं तथापि पश्चात् मृत्यु आना हो तो सब विषयुक्त आहार के समान अत्यन्त रमणीय होने पर भी धिक्कारने योग्य है। इसलिये तू एकमात्र मोक्ष की खोज कर।

—श्री पद्मनन्दि पंचविंशतिका

Please report errors to Ramaben Parekh: WhatsApp +91 90115 91078 or email ramabenparekh45@gmail.com

Version 001: Updates at http://www.AtmaDharma.com & http://www.AtmaDharma.org

पवित्र आत्मज्ञ पूज्य शान्ताबेन

पवित्र शान्तावेन का जीवन एक ऐतिहासिक वन गया है कि पूज्य गुरुदेवश्री के उपदेश से तथा स्वयं के पुरुषार्थ से आत्मज्ञान प्राप्त करके स्वयं का जीवन सार्थक किया।

मेरे पिताश्री नानचंद भगवानजी खारा पूज्य गुरुदेवश्री जब स्थानकवासी सम्प्रदाय में थे तब से पूज्य गुरुदेव के परम भक्त थे। पूज्य शान्तावेन के चाचा थे तथा पूज्य बेन की बहुत सहायता की है, चौमासे में भी कोई–कोई वार साथ में जाते थे, पूज्य गुरुदेवश्री के जब सम्प्रदाय का चिह्न मुहपट्टी का त्याग करना था, तब पहले मेरे पिता श्री नानचंद भगवानजी से राजकोट में बात की थी, कहाँ है शान्ताबेन!! उनको यह सहन नहीं होगा, इसलिए पिताजी ने घर आकर पूजय बेन से बात की तो पूज्य बेन पिताजी के साथ फिर से पूज्य गुरुदेवश्री के पास गई, तब पूज्य गुरुदेव ने कहा बेन मुझे ये चार अंगुल की मुँह पट्टी का त्याग करना है, मैं तो शुद्ध दिगम्बर ब्रह्मचारी हूँ तथा मैं कही जंगल में भी चला जाऊँ तो चिन्ता करोगी क्या? तब पूज्य बेन ने कहा 'साहब' आपके बिना मेरा कल्याण नहीं होगा इसलिए आपकी वाणी ही मेरे लिये हितरूप है, 'साहब' ऐसा नहीं करना, तब पूज्य गुरुदेव ने अति करुणा से कहा कि 'जहाँ हम वहाँ तुम' ऐसे मधुर शब्द सुनते ही अति प्रसन्न हुई और शान्ति हुई।

सोनगढ़ में भी दिगम्बर जैन स्वाध्याय मंदिर का उद्घाटन विक्रम सम्वत् १९९४ में वैशाख वद ८वीं को मेरे पिताश्री के हस्ते हुआ था, तब से मेरे पिताश्री तथा मातुश्री अधिक समय सोनगढ़ में रहकर पूज्य गुरुदेव की वाणी का तथा पूज्य शान्तावेन के समागम का लाभ लेते थे।

ऐसी पवित्र आत्मा शीघ्र ही पूर्णदशा को प्राप्त हो तथा हमें भी उसी रास्ते ले चलें यही सच्ची श्रद्धांजलि है।

—हिम्मतभाई नानचंद भगवानजी खारा

तथा हसुभाई नानचंद भगवानकी खारा

Please report errors to Ramaben Parekh: WhatsApp +91 90115 91078 or email ramabenparekh45@gmail.com

Version 001: Updates at http://www.AtmaDharma.com & http://www.AtmaDharma.org

देव–शास्त्र–गुरु के प्रति योगदान

पूज्य श्री गुरुदेव सम्प्रदय में थे तब से ही मेरे पिताश्री (नानचंद भगवानजी खारा) ने 'गुरु' के रूप में स्वीकार किया था जिससे पूज्य गुरुदेव के परम भक्त थे, उनके साथ में मेरा सर्वप्रथम जाना सन् १९४८ में हुआ, तब पूज्य गुरुदेव का व्याख्यान और पूज्य बेनश्री की भक्ति सुनकर तथा पूज्य शान्ताबेन का भक्ति का उत्साह देखकर मैं तो इकटक देखता ही रहा, तब से जब भी सोनगढ़ आते तो भक्ति की ही उत्सुकता रहती।

पूज्य बेन का आबू में पैर का फैक्चर हुआ तब अहमदाबाद में थी इससे मुझे अच्छाआ लाभ मिला, उस समय पैर का दर्द बहुत फिर भी समताभाव से शांति से सहन किया यह देखकर डॉक्टर तथा नर्सें आश्चर्य का अनुभव करते तब मुमुक्षु कहते कि ''पूज्य बेन देह से भिन्न आत्मा की बात'' पूरी समझकर चारित्र में उत्सुक ही रहती थी।

रोज–रोज खाद्य वस्तुओं में कितनी सारी वस्तुएँ हिंसक होती हैं कि जिसका अपने को ख्याल भी नहीं है। पूज्य बेन को ख्याल आ जावे कि इस वस्तु में दोष है तो वह उनकी आरोग्यता के लिये कितनी जरूरत की हो तो भी उस वस्तु का त्याग कर देती और हमें भी कहती थी।

तत्त्व के सम्बन्ध में कोई शंका हो तो उसका समाधान अच्छी तरह सुगमता से करती तब उनकी वाणी सुनकर ऐसा लगता था कि जो जीव अनादि की यात्रा का अंत करने का पुरुषार्थ करता है, उसे एक कदम भी आगे बढ़ने में पूज्य बेन की एक बात निमित्त बनती है।

पूज्य गुरुदेव के परिवर्तन के समय पूज्य बेन ने सक्रिय सेवा की है। ब्रह्मचारी बहिनों के लिये आश्रम की स्थापना की तब आश्रम की व्यवस्था में उसको बहुत योगदान दिया। उसी प्रकार यात्राओं में, जिनमंदिरों में प्रतिष्ठा आदि में बहुत अधिक योगदान दिया करती, रहन–सहन में भी बहुत स्वच्छता, साथ में उदारता जैसे गुण बहुत ही अनुकरणीय थे। खारा कुटुम्ब की लड़की होने के कारण मुझे अनेक सहवास का तथा तत्त्व सम्बन्धी वार्ता सुनने का बहुत लाभ मिला था।

Please report errors to Ramaben Parekh: WhatsApp +91 90115 91078 or email ramabenparekh45@gmail.com

Version 001: Updates at http://www.AtmaDharma.com & http://www.AtmaDharma.org

अपना जीवन सार्थक किया, उसी प्रकार दूसरे जीवों को भी यह अनुकरणीय करके सच्ची श्रद्धा और सच्चा ज्ञान और सच्चारित्र प्राप्त करने का दुर्लभ मनुष्य भव में जितना बने इतना आगे बढ़ने की उनकी तीव्र भावना सदा रहती है। यही भावना अब अल्पकाल में साकार करें यही सहृदय से श्रद्धांजलि है।

—पुष्पाबेन हरिलाल, अहमदाबाद

जगत को तारणहार माता

देह छतां जेनी दशा वर्ते देहातीत।
ते ज्ञानी ना चरण मां हो वंदन अगणीत।।

वर्तमान इस काल में पूज्य गुरुदेव, पूज्य बेनश्री चंपाबेन तथा पूज्य बेन शान्ताबेन का योग अर्थात् पूर्व का प्रबल पुण्य का योग, जीवन कृतार्थ करने की घड़ी है। उनके समान बन जाने का सुवर्ण अवसर है, जिसकी तुलना में विश्व की समस्त समृद्धि तुच्छ लगती है, ऐसे इस सुवर्णपुरी की त्रिपुटी को विनम्रतापूर्वक सविनय भक्तिभाव से कोटि–कोटि वंदन।

पूज्य बेन शान्ताबेन अर्थात् जीवंत तीर्थ, अति समीपता से अवलोकन करने परउनका पवित्र जीवन समझ में आता है। चिद्रूप आत्मा का सतत् धुन, आत्मा को हाथ में आँवले के समान अत्यन्त स्पष्ट बताने की अत्यन्त सरल रीत। तीर्थवंदना में ऐसा लगता है मानो सिद्ध भगवंतों के साथ बातें करते हों, भगवान व मुनियों की महिमा गाती हों, तब ऐसा लगता है कि इस भव में पुरुष होते तो जंगल में जाकर मुनि बनकर ज्ञानवन में तीव्ररूप से केली करने लगते। जिनेन्द्र भगवान की महिमा यशगान गाते हुए कभी नहीं थकते थे, देव–शास्त्र–गुरु के प्रति अनन्य भक्ति, भक्ति–पूजा की अपूर्वता ऐसी कि चतुर्थ काल याद आता, पूज्य गुरुदेव के जीवन की बात करनी, प्रसंगों की चर्चा, गुरु महिमा गाते, उनके रोम–रोम में गुरुदेव का जयघोष निकलता दिखना, पूज्य बेनश्री का उपकार का वर्णन करती, शुरूआत में बने प्रसंगों

Please report errors to Ramaben Parekh: WhatsApp +91 90115 91078 or email ramabenparekh45@gmail.com

Version 001: Updates at http://www.AtmaDharma.com & http://www.AtmaDharma.org

का वर्णन करती तो भावविभोर हो जाती, ऐसी प्यारी पूज्य बेन अर्थात् भव्य जीवों की तारणहार माता, जगत माता उनका उपकार महिमा किस प्रकार करूँ ?

उनका समस्त जीवन ही एक आदर्श जीवन था, अंदर में आत्मा और बाहर में विशेषरूप से जिनमंदिर में पूजा–भक्ति, स्वाध्याय, चिंतवन, मनन करके अंतर उतर जाना यही आपका वास्तविक जीवन था, जिनमंदिर में सुबह प्रवचन के बाद शाम को भक्ति के बाद ज्ञान–ध्यान में मग्न हो जाती।

पूज्य गुरुदेवश्री के दर्शन और उनकी अमृत झरती वाणी का श्रवण होते मानो कृतकृत्य हो जाते थे। पूज्य गुरुदेव की मंगल तीर्थयात्रा की व्यवस्था में, गाँव–गाँव प्रतिष्ठा महोत्सव की तैयारी में, जिनवाणी का प्रचार–प्रसार में, देव–शास्त्र–गुरु की भक्ति–पूजा में, जिनमंदिर में प्रशम रस झरती भावभीनी भक्ति करती, पूज्य गुरुदेव के आहार वगैरह कार्यों में अत्यन्त उल्लास, उत्साहपूर्वक भाग लेती, बहुत वर्षों तक रात्री में मुमुक्षु बहिनों के समक्ष पूज्य बेनश्री के साथ में प्रवचन देती थी।

ऐसा बालकों को वांचन–श्रवण की रीत, विचार–प्रयोग की रीत, अनुभूति के पहले और बाद चलने वाली धारा स्वरूप, ज्ञानी का, ज्ञान का, आराधना का स्वरूप, ऐसे सुन्दर तरीके समझाती कि पुरुषार्थी जीव सत् मार्ग में चले तो अवश्य निज कल्याण कर लेगा।

पूज्य गुरुदेव के निकट से परिचय में आये और जब अंतरंग में अनुभूति हुई तब समझ में आया कि गुरुदेव वास्तव में कैसे हैं। बेनश्री वास्तव में कैसी हैं, सिद्ध भगवान वास्तव में क्या करते हैं इसलिये अपने को भी सिद्ध भगवंत, पंरपरमेष्ठी, गुरुदेव, बेनश्री और बेन के अन्दर को पहचानने के लिये उनके उपकार की एक ही रीत है कि अपने को अपना आत्मा के स्व संवेदन द्वारा अनुभव करें यही सत्य अर्थ में पूज्य बेन को सच्ची श्रद्धांजलि अर्पित की।

—प्रकाश जेकुंवरबेन परिवार

Please report errors to Ramaben Parekh: WhatsApp +91 90115 91078 or email ramabenparekh45@gmail.com

Version 001: Updates at http://www.AtmaDharma.com & http://www.AtmaDharma.org

सूक्ष्म दृष्टिवंत पूज्य शान्ताबेन के प्रति श्रद्धांजलि

पूज्य अध्यात्म योगी श्री गुरुदेव ने सत्य दिगम्बर धर्म का मूल स्वरूप क्या है यह समझाकर अनंत अनंत उपकार किया है।

ऐसे कलिकाल में पूज्य गुरुदेव का जन्म यह हमारे जन्म–मरण टालने के लिये महामंत्र देने को ही हुआ था। वह मंत्र था कि रागादि से, शरीरादि से एकदम भिन्न ज्ञायकदेव तेरे ही देहमंदिर में विराजता है, उसका दर्शन करे तो जन्म–मरण नष्ट हो जाये।

पूज्य गुरुदेव के अपूर्व संदेश को पूज्य बेन ने भी सुनकर प्रयोग करके अपूर्व मंथन–पुरुषार्थ द्वारा यह महामंत्र साधा और उनके जन्म–मरण का चक्कर नष्ट होना आरम्भ हो गया। जो शान्तमूर्ति, स्वरूपज्ञानधारी, सूक्ष्मदृष्टिग्राहक, वात्सल्ययुत, निखालिस, तीर्थयात्रा, प्रतिष्ठा प्रसंग में तथा देव–शास्त्र–गुरु के प्रति तन–मन–धन से अत्यन्त भक्ति थी तथा प्रत्येक को इसी तरह भक्ति सिखाती थी, उनकी भक्ति तो मुमुक्षुओं को भक्ति का रंग चढ़ाती थी।

हम सभी भी भाग्यवान कि ऐसी 'बेन' जैसी बेन ने हमारे कुटुम्ब में जन्म लिया, जिस जन्म में अनन्ते जन्मों का नाश करके अब तो सिद्धदशा पूर्ण दशा को प्राप्त होंगे, पूज्य बेन भी बोलती कि अब ''हमारा मोक्ष का द्वार खुल गया है।''

उनका वात्सल्य प्रेम ऐसा था कि हमारी ''माता'' तुल्य थी कि सभी की बात प्रेम से सुनती अर्थात् सारांश यह कि धर्म की रुचि बढ़ाने तरफ प्रेरणा देती, जिससे घर में सभी को अच्छी रुचि है।

पूज्य बेन के अंतिम समाचार सुनकर हम सभी रवाना ही हो गये कि उनकी समाधि के पहले पहुँच गये कि वह प्रसंग धन्य था, वह देखे का भी अमूल्य अवसर था, अन्तिम समय उनकी मुखमुद्रा पर बहुत तेज था कि मानो अभी बोलेंगी, महापुरुष के लक्षण बाहर से ही दिख जाते हैं।

हे माता! आपने जो अंतिम तक शांति से आराधना–समाधि की उसका अधिकार हमें भी देना, यही आपके चरणों में नमते हैं।

—रेवाबेन टींबडिया परिवार, कोलकाता

Please report errors to Ramaben Parekh: WhatsApp +91 90115 91078 or email ramabenparekh45@gmail.com

Version 001: Updates at http://www.AtmaDharma.com & http://www.AtmaDharma.org

पूज्य गुरुदेव की अनन्य भक्त पूज्य बेन

हे पूज्य बेन! आपके विरह में हम लोग ने आपकी शीतल छाआ गुमा दी है, परंतु हमारे हृदय में 'आप' ऐसे बस गई हो कि आपको याद करते तो थोड़े समय के लिये विरह भूल जाते हैं। आपके जीवन में से अपूर्व प्रेरणा लेकर एक बात निश्चित रूप से समझे हैं कि आत्मानुभूति–चैतन्यमात्र ही इस जीवन का ध्येय होना चाहिए।

आप तो भवसमुद्र तारणहार नौका थी, आप पूज्य गुरुदेव की समाधि के बाद तुरन्त पावागढ़ तीर्थ की यात्रा करने के पहले बडौदा हमारे घर पधारी थी और वहाँ से मुमुक्षु मंडल सहित सभी के साथ में यात्रा अति ही आनंद से करी तथा उस प्रसंग पर प्रेरणा देती कि जैसा सिद्धों का स्वरूप है वैसा ही तेरा है इसलिए सिद्धों के गुणगान तीर्थों की यात्रा करने का हेतु है। उसके वाद १९८७ में भी आपने शाश्वत तीर्थधाम की यात्रा में १२ दिन रही खूब ही आराधना की, वहाँ से वापिस बरोडा हमारे घर पर पधारीं तव भी सिद्धधाम में आपने जो आराधना की उसका वहुत रंग था, इससे हम लोगों से आराधना की वाते करती, अति ही उल्लास करती उन भावों को सुनकर हम लोगों को भी अति ही आनंद होता। तीर्थों के प्रति तो उछल जाते एवं समर्पित हो जाती।

पूज्य गुरुदेव की अनन्य भक्त शासन की अपूर्व सेवा तन–मन–धनपूर्वक करती। जिनवाणी के प्रसार–प्रचार की सुव्यवस्थित व्यवस्था करी इतना ही नहींम समयसार ग्रन्थ के ऊपर के प्रवचन जो आप दोनों वहिनों ने सुनकर, अति सूक्ष्मतापूर्वक संकलन किया ''कर्ताकर्म अधिकार'' प्रसिद्ध कराया, उसे सुनने में कितनी एकाग्रता होगी?

आप जैसी बेन हमें मिली यह हमारा परम सौभाग्य है कि घर में भी सभी पर आपके संस्कार के छींटे पड़े हैं आपके पुनीत पथ पर चलकर हम भी आत्महित को पायें यही भावनापूर्वक आपको अभिनंदते हैं, अभिवंदते हैं।

—मंछाबेन जयंतिलाल भायाणी परिवार, बडौदा

Please report errors to Ramaben Parekh: WhatsApp +91 90115 91078 or email ramabenparekh45@gmail.com

Version 001: Updates at http://www.AtmaDharma.com & http://www.AtmaDharma.org

मुझे लगे संसार असार : पूज्य बेन

पूज्य बेन तो मेरे चाचा की लड़की थी, इस कारण बचपन से ही मुझे उनका समागम मिला और जब उपाश्रय (स्थानकवासी का मंदिर) जाती तब मैं भी उनके साथ ही साथ जाती। उनके विचार एवं भाषा में वैराग्य ही नितरता था तथा धर्म के प्रति के संस्कार कोई अनोखे थे, कुटुम्बी जनों में सभी को उनके प्रति बहुमान आता है।

कुटुम्बी जनों के प्रति वात्सल्य प्रेम रखती थी, प्रत्येक को धर्म में आगे बढ़ने के लिये प्रोत्साहित करती थी।

बालपन से ही संसार के अनेक दुःखों का सामना करके भी शांति से समय व्यतीत करती तथा संसार का असार स्वरूप जानकर वैराग्य प्राप्त करती, दीक्षा लेने की भावना थी, परन्तु पिताश्री वगैरह सभी के नाराज होए से पूज्य गुरुदेव के दर्शन करने से कुटुम्ब के साथ में गई और पूज्य गुरुदेव का दर्शन करके निर्णय किया कि इन गुरु से ही मेरा कल्याण होगा, पूज्य गुरुदेव ने उपदेश में दीक्षा का स्वरूप समझाया कि दीक्षा लेना यह भिखारीपन है, आत्मस्वरूप को पहचानो यही दीक्षा है, वे महामंगल शब्द आत्मा में प्रवेश कर गये और आत्म–पुरुषार्थ सतत् रूप से प्रारम्भ हो गया, तब गाते थे—

मुझे लगे संसार असार,

ऐसे संसार में नहीं जाना, नहीं जाना.....

खारा कुटुम्ब को पूज्य गुरुदेव के अधिक परिचय में लाने वाली तथा पूरे कुटुम्ब को उज्वल बनाया हो तो पूज्य बेन हैं!!

पूज्य गुरुदेव का चौमासा अमरेली में हुआ तब से पूज्य बेन बहुत लाभ लेती और व्याख्यान लिखा कराती थी तथा चर्चा भी करती।

—बालुबेन कामदार परिवार, मुम्बई

Please report errors to Ramaben Parekh: WhatsApp +91 90115 91078 or email ramabenparekh45@gmail.com

Version 001: Updates at http://www.AtmaDharma.com & http://www.AtmaDharma.org

समाधि स्वरूप परिणमित : पूज्य बेन

पूज्य गुरुदेव का परिवर्तन हुआ और दिगम्बर सत्यधर्म का सूर्य ऊगा कि जहाँ चैतन्य देव का प्रकाश सारे देश–विदेश में फैल गया और लोगों को तत्त्वज्ञान का प्रेम जागा।

पूज्य गुरुदेवश्री के परिवर्तन में बड़ा कारण शान्तावेन का है, कि पूज्य गुरुदेवश्री के परिवर्तन करने से पहले भी पूज्य गुरुदेव के चातुर्मास में साथ में थी अर्थात् पूज्य गुरुदेव के आत्मा को पहचानकर अपने आत्मा का साक्षात्कार करके जीवन सफल बनाया।

पूज्य बेन सोनगढ़ में ४५ वर्षों तक रहीं, उन्हें जो देव–शास्त्र–गुरु के प्रति भक्ति थी वह आज देखने नहीं मिलती, क्या उनकी सरलता, क्या उनकी वात्सल्यता, क्या उनकी नम्रता, क्या उनकी करुणा, क्या उनके गुणों का वर्णन यह अज्ञानी अल्पमति क्या कर सके?

पूज्य बेन बारंबार संबोधती थी कि एक तो जिनमंदिर जाना, दूसरा थोड़ा–थोड़ा स्वाध्याय में मन लगाना और उसकी रुचि बढ़ाना तथा श्री जिनमंदिर में कमी है? वह हमको कहकर तुरन्त कमी की पूरती करना।

अहो भाग्य! कि उनकी अंतिम समाधि देखने का सौभाग्य मिला, मैं एक दिन पहले पहुँच गये, उस अवसर को याद करते हैं तो रोमांच खड़े हो जाते हैं, सबको यही रास्ते जाना निश्चित है, परन्तु ऐसी समाधि हो यह अहोभाग्य है।

ऐसे ज्ञानी के चरण में मस्तक नमाकर श्रद्धांजलि अर्पित करता हूँ।

—मनमोहन गांधी, घाटकोपर

निश्चय से रात्रि–भोजन करने में अधिक रागभाव है और दिन को भोजन करने में अल्प राग भाव है, जैसे अन्न के भोजन में रागभाव अल्प है और मांस के भोजन में रागभाव अधिक है।

—श्री पुरुषार्थसिद्धियुपाय

Please report errors to Ramaben Parekh: WhatsApp +91 90115 91078 or email ramabenparekh45@gmail.com

Version 001: Updates at http://www.AtmaDharma.com & http://www.AtmaDharma.org

अहर्निश ज्ञानीयों का समागम हो

पूज्य बेन बालपन से ही पूज्य गुरुदेवश्री के परिचय में आये थे। पूज्य गुरुदेव का चातुर्मास जहाँ होता वहाँ पूरा लाभ लेने जाते थे। पूज्य गुरुदेव तथा पूज्य बेनश्री के समागम में आये, पूज्य गुरुदेव की वाणी में भेदज्ञान के शब्द सुनते ही स्वयं को स्वानुभव (भेदज्ञान) की धून जागी, अन्तर में उग्र पुरुषार्थ जागा तथा आसो वदी चौथ, संवत १९९० में अपने ज्ञायकदेव का दर्शन किया।

पूज्य बेन का हमारे ऊपर बहुत की करुणा थी, उनकी प्रेरणा से ही हम लोग पूज्य गुरुदेवश्री के समागम में आये और पूज्य गुरुदेव की वाणी का अमूल्य लाभ मिला। पूज्य बेन मुझे बहुत करुणा से कहती थी कि भाई पूज्य गुरुदेवश्री जो तत्त्व समझा रहे हैं, उसे समझकर अपना हित कर लेने जैसा है, इस पंचमकाल में अपने को पूज्य गुरुदेव का अपूर्व योग मिला है तो जब चाहे पूज्य गुरुदेव के सान्निध्य में रहकर तत्त्व को समझकर अपना हित कर लेने का काल है, ऐसी प्रेरणा वो देती ही रहती थी।

सत्य देव–गुरु धर्म के प्रति उन्हें बेहद भक्ति सबके लिये अति ही आदर्शरूप थी। पूज्य गुरुदेवश्री तथा पूज्य बेनश्री के प्रति उन्हें अपार भक्ति थी। वो बारम्बार कहती थी कि जितना बने उतना समय निवृत्ति लेकर ज्ञानीओं के सान्निध्य में रहकर तत्त्व का अभ्यास करना, बाहर में चाहे जैसी परिस्थिति का ऐसा योग हो तो भी धर्मात्मा के प्रति मन में जरा भी अविनयभाव, विरोधभाव या अभक्तिभाव जरा भी उत्पन्न नहीं होता था और समर्पणभाव से उनके सान्निध्य में रहकर अपना हित कर लेने जैसा है, ऐसी प्रेरणा बहुत ही करुणा से देती थी।

पूज्य गुरुदेवश्री का विरह पड़ा तो मुझे ऐसा हो गया कि अब अधिक से अधिक समय सोनगढ़ रहकर अपना हित कर लेने की अन्तर में भावना जागी और वैसा योग भी बन गया कि वहाँ थोड़े ही समय में पूज्य बेन का भी विरह पड़ गया, परन्तु उसके द्वारा दी गई प्रेरणा अन्दर में जागृत है, अब धर्मात्मा के चरणों में सर्वस्वभाव से समर्पण करके अपना आत्महित कर लेना यही पूज्य बेन के प्रति सच्ची श्रद्धांजलि है।

पूज्य बेन के चरणों में कोटि–कोटि वंदन, ज्ञानी धर्मात्मा सदा जयवंत वर्तो!

—ब्रजलाल ताराचंद खारा, कलकत्ता

Please report errors to Ramaben Parekh: WhatsApp +91 90115 91078 or email ramabenparekh45@gmail.com

Version 001: Updates at http://www.AtmaDharma.com & http://www.AtmaDharma.org

वात्सल्यमूर्ति पूज्य बहिन शान्ताबेन

हे पूज्य बहिन वैसे तो मैं परिवार सहित वहुत लम्वे समय से सोनगढ़ परम पूज्य गुरुदेवश्री के सम्पर्क में आया था, पर भी जव से मेरे पुत्र किशोर का विवाह हुआ तव से आपके परिचय में विशेष रूप से आना हुआ, आपकी मेरे ऊपर अति–अति वीतरागी करुणा हुई। हमारी अनेक भूलों को सुधारकर सही मार्ग में आने का आपका अनुग्रहपूर्वक उपदेश मिलता आत्मस्वरूप समझने के लिये मेरे उत्साह में वहुत वृद्धि हुई, यह आपका अनुपम उपकार वर्तता है।

आपकी ६८ वीं जन्म जयंति उत्साहपूर्वक मनाने का प्रसंग हमें प्राप्त हुआ था, उस समय भावनगर मुमुक्षु मण्डल के भाई–वहिन को भी आपकी उत्साहभरी भक्ति, स्वाध्याय का लाभ प्राप्त हुआ तो वहुत प्रभावित हुए थे। ७९ वीं जन्मजयंति पालीताणा में मनाई गई थी उस प्रसंग पर हमने भावना भाई कि ८० वीं जन्म–जयंति भावनगर में हमारे आंगन 'मधुकुंज' में धूमधाम से मनाना है, परन्तु वह प्रसंग प्राप्त होने के पहले तो आप स्वर्ग मे पधार गई, हमारी भावना अधूरी रही है, हम आपके गुणों को संभाल–संभालकर भाव जयंति मनाते हैं।

यह सभी उपकार पूज्य गुरुदेवश्रीका तथा पूज्य वेनश्रीका है, आपका उपकार हमारी भी सत् देव–शास्त्र–गुरु कके प्रति विशेष–विशेष भावना जागती है। आपके स्वर्गवास से हमारा भक्ति–स्वाध्याय का साधन सूना पड़ गया, आपके जाने से हम गरीव हो गये। अंत में राजकोट में आपकी समाधि के समय हाजिर थे। इतनी अधिक वेदना के समय में भी सत् देव–शास्त्र–गुरु के प्रति की अपार भक्ति और शान्त समाधिस्थ दशा प्रत्यक्ष निहार कर हम सभी को दुःख के साथ भी प्रमोद और आनंद हुआ वह अवर्णनीय था।

अंत में पूज्य गुरुदेवश्री तीर्थंकर पद में विराजेंगे तव उनके अनुग्रह से आपने उनकी समाधि में आदर किया हुआ जो आत्मिक सुख प्राप्ति का कार्य, समोशरण के उनके गणधर पद की प्राप्ति करके परिपूर्ण मोक्ष सुख की प्राप्ति शीघ्र शीघ्र करो और हम भी आपके साथ ही साथ स्व–स्वरूप को पायें ऐसी भावना भायी हार्दिक श्रद्धांजलि अर्पण करते हैं।

—नगीनदास हीरालाल भायाणी और परिवार का कोटी–कोटी वंदन।

Please report errors to Ramaben Parekh: WhatsApp +91 90115 91078 or email ramabenparekh45@gmail.com

Version 001: Updates at http://www.AtmaDharma.com & http://www.AtmaDharma.org

असहनीय ये ज्ञानी विदाई

पूज्य श्री गुरुदेव का विरह तो कम हुआ नहीं कि इतने में हे माता! अपने पूज्य गुरुदेव का विरह भुला दिया और पूज्य गुरुदेव के साथ में महाविदेह क्षेत्र में सीमंधर भगवान की साक्षात् वाणी सुनने जाते होंगे, हम लोगों को तो आपका विरह बहुत असहनीय लगता है। मानो कितने ही वर्ष बीत गये हों ऐसा लगता है।

वात्सल्य से भरपूर प्रीतिवंत और तत्त्व–चिंतन में मग्न इस चेहरे के दर्शन हमें कब कहाँ से होंगे? सोनगढ़ गई तब ये सुनसान कमरा वहाँ आप श्री की अनुपस्थिति बहुत खटकती थी, आपका गुंजार लगता था, यह मीठा मधुर बुलंदनाद और सुनने मिलेगा कान में, यह मीठा सुरीला स्वरों का गुंजारव मानो हो रहा हो ऐसा लगता है, परंतु न तो वह आभास है। हे माता! आपका तो दूरातिदूर रहवास हो गया, ये मूर्ति तो दूर दूर हो गई, ज्ञानी की विदाई सहन करना सरल नहीं। आपका जीवन तत्त्वमय ही बना लिया था, ४५ वर्षों तक गुरुदेवश्री की छत्रछाया में रहकर तत्त्व का ही रसपान किया और जीवन को धन्य कर लिया।

अहो! पग–पग पर, शब्द–शब्द में, श्वास–श्वास में ज्ञायक की पुकार "मैं ज्ञायक हूँ" इस वस्तु को जीवन में गूंथकर, अनुभव करके, ज्ञायक का आनंद लूटा और मनुष्यभव को पवित्र किया।

वर्षों पहले जब सोनगढ़ में श्री जिनमंदिर बन रहा था तब मंदिरजी के नीचे से आप दोनों बहिनें सिर पर सीमेन्ट का तसला भरकर अन्दर ले जाती थी छत पर डालती साथ में सभी ब्रह्मचारी बहिनें लेती वह दृश्य याद आते ही आँख में आँसू आ जाते हैं। जो बहिनों ने सहयोग दिया है उसे सोनगढ़ में रहने वाले व्यक्ति कभी नहीं भुला सकते। आपकी कार्यशक्ति की तो पूज्य गुरुदेव ने भी अपने स्वमुख से प्रशंसा की है, आपकी कार्यशक्ति के साथ ही पूज्य गुरुदेव द्वारा दिया गया तत्त्वज्ञान से भरपूर जीवन। ऐसी विभूति हमारे से भिन्न पड़ गई, चाहे जैसे कसौटी के समय में आप श्री का शौर्य और समझदारी से हिम्मत रखकर खड़ी रहीं तो जीवन में अमृत पाया धन्य बना। धन्य है इस विभूति को! धन्य है इस आत्मा को!

—वंदाबेन अरुणभाई तथा जयाबेन रायचंद, लंदन

Please report errors to Ramaben Parekh: WhatsApp +91 90115 91078 or email ramabenparekh45@gmail.com

Version 001: Updates at http://www.AtmaDharma.com & http://www.AtmaDharma.org

अमरेली गाँव का चमकता हीरा : पूज्य बेन

पूज्य शान्तावेन! एक अनोखी महिल रत्न थी, उनका मूल ग्राम अमरेली था, जिससे हमारे ग्राम के प्रति उनको विशेष राग था, जब आंकडीया ग्राम में पंचकल्याणक प्रतिष्ठा का निश्चित हुआ तो तुरंत उनने हम लोगों को भी तैयार चमकाया कि अहा! यह तो अपने ग्राम के पड़ौस में ही पंचकल्याणक होगा तो अपन भी जयपुर से तीन भगवान लाईये और साथ में ही प्रतिष्ठा हो जाय बाद में वेदी प्रतिष्ठा करेंगे, इससे उनकी भावना से ही मूलनायक श्री शांतिनाथ तथा श्री नेमिनाथ और श्री पारसनाथ भगवान की प्रतिष्ठा हुई जिससे जब चाहे पूज्य बेन हमारे ग्राम में पधारती थी और प्रत्येक को सच्चे जैनधर्म के प्रति श्रद्धा जगाकर श्री जिनेन्द्रदेव की महिमा समझाकर, पूजा–भक्ति–स्वाध्याय वगैरह सब सिखाया, हमारे ऊपर उनका बहुत उपकार था।

पूज्य शान्तावेन बहुत वर्षों से पूज्य गुरुदेव के साथ में सोनगढ़ में रही, निर्ग्रन्थ के पथ की गाढ़ श्रद्धा और अपूर्व भक्ति–सेवा करती थी, श्री देव–शास्त्र–गुरु के प्रति उनका उत्कर्ष और प्रभावना के लिये तन तोड़कर परिश्रम और सभी को धर्म के प्रति झुकाने की गजब की शक्ति बताई।

वीतरागी धर्म के प्रति अथाह प्रेम था, वे प्रभावना के लिये स्वास्थ्य कमजोर होने पर भी बाहर गाँव जाती और अपनी वाणी की मधुरता से मुग्ध करती थी।

हे माता! आपका आत्मा वीतरागी देव–शास्त्र–गुरु के आश्रम से प्राप्त हुआ सम्यक् संस्कार वृद्धि पाकर शीघ्र पूर्णदशा को प्राप्त हो–ऐसी भावनाभरी श्रद्धांजलि अर्पण करते हैं।

हे माता! आपकी दशा को धन्य हो।

—श्री दिगम्बर जैन मुमुक्षु मण्डल, अमरेली

Please report errors to Ramaben Parekh: WhatsApp +91 90115 91078 or email ramabenparekh45@gmail.com

Version 001: Updates at http://www.AtmaDharma.com & http://www.AtmaDharma.org

श्री गोगीदेवी ब्रह्मचर्य आश्रम की पूज्य श्रद्धेय आदरणीय माता शान्ताबेनजी के प्रति श्रद्धांजलि

सम्वत् २००७ में हम सोनगढ़ में पहली बार आये तब पूज्य गुरुदेव का परिचय हुआ तब चार दिन सोनगढ़ रहे और स्वामीजी की अमृतरस झरती अद्‌भुत वाणी सुनकर हम बहुत प्रभावित हुए।

पूज्य बेनश्री बेन का भी समागम हुआ, उनका त्याग–वैराग्यमय जीवन देखकर बहुत हृदय प्रसन्न हुआ और उनकी वाणी ने तो हमारा मन हर लिया, उस समय सेठ जी ने दोनों बहिनों और ब्रह्मचर्य बहिनों को देखकर तत्क्षण निर्णय किया कि उन लोगों के आवास के लिये ब्रह्मचर्य आश्रम होना चाहिए। योगानुयोग से जिनमंदिर के सामने ही जगह खाली पड़ी थी वो देखकर सेठजी ने तुरन्त ही ले ली। फिर सेठजी ने पूज्य बेनजी को कहा कि इस आश्रम की आप दोनों अधिष्ठाता ही रहेंगे। तब दोनों बहिनों ने सेठजी की विनंती को बहुत प्रमोद से स्वीकार किया और दोनों बहिनें बोलीं हम तो भगवान के पड़ौसी हो गये, यह बात सुनकर सैठजी और हमको बहुत प्रसन्नता हुई।

सम्वत् २००८ की साल में श्री गोगीदेवी दिगम्बर जैन श्राविकाब्रह्मचर्याश्रम का भव्य उद्‌घाटन सेठजी के हस्ते हुआ और दोनों बहिनों तथा ब्रह्मचारी बहिनों का मन लग गया।

भारत के अनूठे अध्यात्म युगपुरुष श्री कानजी स्वामी इस युग में महान् परम उपकारी हुए हैं। जो जो उपकार आपने अपनी अद्वितीय प्रतिभा द्वारा भौतिक युग के अन्धकारमय जग में विलुप्त प्रायः हो जाने वाली अध्यात्म धारा को पुनः नव जीवन प्रदान करने के लिए किया है। आपका वह महान् उपकार कदापि भुलाया नहीं जा सकता। जिस प्रकार यह अध्यात्मधारा अनादिकाल से तीर्थंकरो द्वारा प्रभावित होकर अन्य ज्ञानी गणधर आदि परुषों द्वारा प्रचारित होती आ रही है, उसी प्रकार आपने इस कलियुग में भी तीर्थंकरों और गणधरों के उसी महान् कार्य को करके जग में भव्यजीवों का उपकार किया है।

हे चैतन्य में आरूढ़ माता!

Please report errors to Ramaben Parekh: WhatsApp +91 90115 91078 or email ramabenparekh45@gmail.com

Version 001: Updates at http://www.AtmaDharma.com & http://www.AtmaDharma.org

आपके गुणों की महिमा क्या करें, आप सत्यमार्ग के प्रकाशक थे, चैतन्य रत्नों के पारखी–जौहरी थे, वस्तुस्वरूप के सम्यक् ज्ञाता थे, परमार्थ पथ में आरूढ़ शाश्वत सुख के मार्ग प्रदर्शक थे, अनेकानेक प्रतिकूल संयोगों के विजयी थी, आपके द्वारा युग युगान्तर तक सत्य–शांति के पथ एवं शाश्वतसुख का प्रसार अधिकाधिक रूप में निरंतर होता रहे–यही भावना के साथ आपके चरणों में श्रद्धा सुमन चढ़ाती हूँ।

—मनफूल देवी गंगवाल परिवार, कोलकाता

समता आदि गुणों की भंडार : पूज्य बेन

पूज्य शान्तावेन का ता. २४-९-८८ जेठ सुदी दशमी का रात्रि में राजकोट मुकाम से समाधि पूर्वक देहत्याग किया के समाचार सुनकर श्री जेतपुर दिगम्बर जैन मुमुक्षु मंडल में सभी के हृदय में गहरी चोट पहुँची, कि ''बस अब संत ज्ञानी धर्मात्माओं का एक के बाद एक का विरह पड़ने लगा।''

हमारे मंडल में पू. बेन का अमूल्य दान है, उनकी कार्यशैली, आत्मीकज्ञान, सम्यक्वंत आध्यात्म की पूर्ण शैली ऐसी उपार्जक थी, जो आज भी भूल सकते नहीं हमारे मंदिर में पूजा विधान की उपासन कराते तथा बालकों के लिये शिविर–क्लास की प्रेरणा देती थी।

आप श्री की सरलता, समता, करुणा, वात्सल्य, भक्ति, अर्पणता वगैरह गुणों के भंडार थी, पूज्य गुरुदेव श्री की अनन्य भक्त थी, वे पूज्य गुरुदेव के साथ ४५ वर्षों तक रही, आपने पूर्ण साधना प्राप्त की, पूज्य गुरुदेव श्री के पथ पर चली।

आपके सर्व गुणों को अनंत–अनंत भक्तिभाव से वंदन हो ओर ये प्रत्येक गुण हमारे हृदय में बिराजें यही अहोनिश भावना।

—श्री दिगम्बर जैन मुमुक्षु मंडल, जेतपुर

Please report errors to Ramaben Parekh: WhatsApp +91 90115 91078 or email ramabenparekh45@gmail.com

Version 001: Updates at http://www.AtmaDharma.com & http://www.AtmaDharma.org

ब्रह्मचर्य के बड़वीर पूज्य धर्ममाता प्रति श्रद्धांजलि

हे परम उपकारी पूज्य अध्यात्मवेत्ता सद्गुरुदेव!

समर्थ पूर्वाचार्यों के वीतरागी वैभव से भरपूर ग्रन्थ रत्नों का अधिकार मिला फिर भी उसके रहस्यवेत्ता के अभाव से, हम अज्ञान अंधकार की गहरी छाया में फँसे थे तब ही आप का जन्म हुआ और हमारे जैसे अज्ञान समुद्र में डूबते जीवों को एक दीपक लेकर मार्गदर्शन समान किनारे पर आने का मार्ग दिखा रहे हो, यह भव्यात्माओं का अहो भाग्य है। आत्मस्वरूप की पहचान कराई यही आप के उपदेश का मुख्य सूत्र है। जैन दर्शन वीतरागी दर्शन है, सम्यग्दर्शन इसका मूल है। उसके बिना धर्म का वृक्ष उग सकता नहीं; वह मोक्षमार्ग का प्रथम सोपान है। ऐसे सम्यग्दर्शन की महिमा तथा उसकी प्राप्ति कैसे हो यही बात अनेक प्रकार से भव्य भविक जीवों को परोस रहे हैं।

पूज्य गुरुदेव का सिंहनाद झेलने वाले सभा में मुख्य पात्र हमारी धर्ममाता थी।

साधक सखी की अनुपम जोड़ी

हमारे अति पुण्योदय से ऐसी धर्ममाताओं की शीतल छाया ब्रह्मचर्य जीवन जीने का सुअवसर प्राप्त हुआ, हम हमारे माता–पिता का विरह भूल जायें ऐसा वात्सल्य प्रेम हमें धर्ममातायें देती थी, कदाच कोई कारणवश घर जाने का होता तो हम लोगों को दुःख होता था कि ऐसी माताओं का संग छोड़कर कहाँ जाना?

आश्रम में आने के बाद हमारे जीवन को घड़ने के लिये नित्य के कार्यक्रम उन्होंने बिना दिये थे। उनकी आज्ञानुसार हमारा नित्य का कार्यक्रम व्यवस्थित प्रकार से चलता था। हम सभी बहनें साथ में मिलकर हमेशा स्वाध्याय करते थे, उसकी परीक्षा लेने धर्ममातायें ८-१० दिन में पधारते और प्रत्येक बहनों ने जो स्वाध्याय की हो उसमें से प्रश्न पुछती थी तो हम लोगों को स्वाध्याय करने का उत्साह विशेष प्रकार का रहता था।

देव–शास्त्र–गुरु के प्रति उनकी कोई अद्भुत भक्ति थी, वह भक्ति

Please report errors to Ramaben Parekh: WhatsApp +91 90115 91078 or email ramabenparekh45@gmail.com

Version 001: Updates at http://www.AtmaDharma.com & http://www.AtmaDharma.org

निश्चय और व्यवहार को बताती थी, आत्मा में सम्यग्दर्शन रूपी परिणति प्रगट करनी यह आत्मा की भक्ति है–निश्चयभक्ति और देव–शास्त्र–गुरु के प्रति बहुमान, विनय और सेवा तन–मन–धन से अर्पणता करना यह व्यवहार भक्ति है।

पूज्य गुरुदेव श्री के प्रति की भक्ति ऐसी थी कि सहज ही हृदयोद्गार निकलते ही अपने जीवन आधार कहो, मोक्षमार्ग दाता कहो, आत्मा देनार कहो कि कुछ भी कहो वे अपने गुरुदेव ही हैं। उनका बहुमान जितना करें उतना कम ही है। उनके गुणगान गाने में शब्द भी काम पड़ते हैं। तब हमें बुलाकर कहती कि ''इस शरीर की खोल भी सिलवाकर (उनके चरणों में पहनाऊँ) तो भी उनका बदला नहीं चुका सकते'' ऐसी शिक्षा आप हम लोगों को पू. गुरुदेव के प्रति अर्पणता के लिये संबोधती थी।

मुक्तिपुरी ने तुं तो प्राप्त था
त्यां सुधी राखजे देव–गुरु नो साथ रे.....
चेतन जी प्यारा चेतनता तारी तुं निहाल जे।

ब्रह्मचर्य जीवन जीने के लिये शिक्षा

हम अखंड ब्रह्मचर्य जीवन कैसे पाल सकें उसकी बारंबार हितकारी शिक्षायें देती कि ब्रह्मचर्यव्रत की रक्षा करना चाहिए, क्योंकि शील ये स्त्रियों का आभूषण है ब्रह्मचर्य का रंग और उसी के साथ स्वभाव की दृष्टि का लक्ष रखना चाहिए, प्रत्येक आत्मा चैतन्यमूर्ति सोने की लगड़ी के समान है। उसी प्रकार ऊपर से स्त्रियों का शरीर है, परंतु आत्मा तो उससे भिन्न चैतन्यमूर्ति है, इसलिये ''मैं तो ज्ञानमूर्ति आत्मा हूँ'' ऐसी समझ करना चाहिए, उसके साथ में पाँच इन्द्रियों का संयम, सत्यता, सरलता, कषाय की मंदता, वैरागीपना और साधा जीवन ऐसे अनेक गुण होते हैं तब ब्रह्मचर्य व्रत शोभता है। मान के लिये या दुनियाँ को दिखाने के लिये कहीं ब्रह्मचर्यव्रत नहीं है। परंतु ब्रह्मचर्य की प्रतिज्ञा तो आत्मा का संसार से निवृत्ति मिले और भव का अभाव हो ऐसा सम्यग्दर्शन प्राप्त करने के हेतु ली है। ऐसा मातृत्व भाव से वात्सल्यता से बोध देकर हमारा जीवन घड़ती और आगे बढ़ने की प्रेरणा देती ऐसी प्रेरणा

Please report errors to Ramaben Parekh: WhatsApp +91 90115 91078 or email ramabenparekh45@gmail.com

Version 001: Updates at http://www.AtmaDharma.com & http://www.AtmaDharma.org

से उनके सान्निध्य में हमारा जीवन दृढ़ बन गया।

यात्रा में या अन्यत्र कहीं बाहर जाने का हो तो एक दिन पहले सभी बहनों को बुलाकर खास शिक्षा देती कि ब्रह्मचर्य की पूर्ण सुरक्षा बनी रहे इसका विशेष ध्यान रखना और कहीं भी जाओ तो दो बहनें तो साथ में जाना ही अकेले नहीं जाना।

हे समाधि प्राप्त माता!

आप जब हमारे बीच विराजती थी तब पू. गुरुदेव श्री की समाधि के बाद आपकी जो समाधि की उग्र भावना जागी, वही भाव ''भगवती आराधना'' में से समाधिमरण का स्वरूप जो आपकी वाणी द्वारा मुनिराज का आदर्श जीवन खड़ा कर देती उससे हमें भी आपकी आराधना देखने का सुअवसर प्राप्त हुआ था, वह भी दृश्य अजबगजब का था, आपकी ऐसी शूरवीरता देखकर हमें भी आराधना का रंग चढ़ जाता।

आपका शरीर कमजोर होने पर भी हे माता! आपकी भावना बलवान थी, एवं चाहे जैसी अन्तर–बाह्य प्रतिकूल संयोग में आपकी निडरता, निर्भयता, सहनशीलता, क्षमा, मार्गदर्शन, वस्तुस्वरूप का दृढ़ विश्वास, आत्मबल यह आपमें ये विशिष्ट गुण देखकर हमारा मस्तक आपके चरणों में बारंबार झुक जाता है।

हे वात्सल्यमूर्ति माता! आपका असीम–परम उपकार हमारे जीवन पर है, हम आपके बालक आपके गुणों का तथा उपकार का क्या गुणगान कर सकते है, हम आपके हमारी जीवन शिल्पी धर्ममाता, आपके पवित्र चरणों में श्रद्धांजलि अर्पण करते हुए आपके चरणों में वास करनेवाली ब्रह्मचारी बहनें।

कलिकाल में आपने जो पवित्र उत्तम रत्नत्रय की आराधना करके मुक्तिपुरी के प्रवासी बन रहे हो और हमें जो आराधना का सत्यपंथ दर्शा रही हो, वही आराधना करके हम भी सत्यपंथ के प्रवासी बनें ऐसा हम बालकों को सत्पात्र बनाओ, यही आशीर्वाद मांगते हैं।

अंतर–बाह्य आत्म उद्धारक, तारा शरणे आया बालक
अमने छोड़ी ने माता चाल्या, लेकर चिर विदाई.....

—मात विरही ब्रह्मचारी बहनें

Please report errors to Ramaben Parekh: WhatsApp +91 90115 91078 or email ramabenparekh45@gmail.com

Version 001: Updates at http://www.AtmaDharma.com & http://www.AtmaDharma.org

श्री देव–शास्त्र–गुरु की अनन्य भक्त : पूज्य शान्ताबेन

पूज्य शान्तावेन की अपूर्व जिनेन्द्र भक्ति वर्षो पूर्वे जिसने देखी होगी उन्हें ख्याल होगी हि कि उनकी अर्पणता तथा भक्ति का उछाला कोई अनोखा था, उनकी भावनापूर्ण भक्ति अजोड़ थी। तीर्थयात्रा में पूज्य गुरुदेव श्री के साथ की भक्ति थी उसे देखकर प्रत्येक मुमुक्षु यात्री झूम उठते, पूज्य वेन का पूज्य गुरुदेव के प्रति अपूर्व भक्ति भाव था।

पूज्य गुरुदेव श्री की कल्याणकारी वाणी के प्रभाव से जहाँ–जहाँ जिन मंदिरों का निर्माण हुआ वहाँ पूज्य शान्तावेन के मार्गदर्शन अनुसार शिलान्यास प्रसंगों पर तथा पंचकल्याणक, वेदी प्रतिष्ठा वगैरह का सूक्ष्मता से निरीक्षण करके सलाह सूचना देती जो वहुत उपयोगी होती थी, उनकी दूरदर्शी सूचना और अनुभव से शुभ प्रसंग ऐसे अत्यंत शोभायमान होते थे, उनको स्वयं स्फूरणा होती और पूजन–विधान आदि के प्रसंगों में उनकी हाजरी रहती थी तथा सलाह सूचना से साक्षात् समवशरण जैसे प्रभावित होता ऐसी वे (सलाह सूचनायें) नोंधनीय हैं।

पूज्य गुरुदेव के सान्निध्य में वहुत लम्वे समय तक रहकर आध्यात्मिक तथा चारों अनुयोगों का श्रवण, मनन, चिंतवन करके सोनगढ़ ब्रह्मचर्याश्रम में ब्र. वहनों को धड़ने वाली के रूप में ब्र. वहनों को धार्मिक शिक्षा दैनिक पूजा–भक्ति–स्वाध्याय के प्रति विशेष ध्यान देकर ब्र. वहनों को भी तैयार किया था और भेदविज्ञान पर विशेष लक्ष देना तथा पू. गुरुदेव श्री के मार्ग पर चलना और उन्हें प्रतिदिन स्वाध्याय करने की प्रेरणा देतीं।

श्री टोडरमल स्मारक ट्रस्ट तरफ से लगने वाले शिक्षण शिविरों में तवियत कमजोर होने पर भी जरूर पधारती थी और अनेकवार जयपुर रहकर महाविद्यालय के विद्यार्थीयों को अध्यात्म प्रधान प्रेरणा देती, शुद्ध दिगम्वर जैनधर्म की सातिशय प्रभावना में असाधारण निमित्त हुई थी, इस प्रकार श्री टोडरमल स्मारक ट्रस्ट को स्वयं वहुत उपयोगी हूई, दिगम्वर वीतराग जैन धर्म की पुनीत प्रभावना में मंगल स्थंभ समान थी, जयपुर विद्यालय में से विद्वान तैयार होकर प्रचार–प्रसार के लिये वाहर जाते तो आशीर्वाद लेने शान्तावेन के पास आते थे। पूज्य गुरुदेवश्री का सम्प्रदाय परिवर्तन का इतिहास कहती थी। सौराष्ट्र में सम्प्रदाय का विरोध, प्रचंड विरोध होने पर भी अड़िग रहने

Please report errors to Ramaben Parekh: WhatsApp +91 90115 91078 or email ramabenparekh45@gmail.com

Version 001: Updates at http://www.AtmaDharma.com & http://www.AtmaDharma.org

वाले इस पुरुष की कहानी पूज्य बेन के मुख से विद्वानों को भी कहकर सुनाती, महिमा बताती थी।

स्व. श्री बाबुभाई फतेपुर वाले जयपुर रहते थे, वे अस्वस्थता के कारण जयपुर लम्बे समय तक रहे उस दरम्यान प्रतिदिन श्री बाबुभाई के पास में जाती और उनकी आत्मबुखारी देखकर अति ही आनंद व्यक्त करती थी और कहती की पूज्य गुरुदेव श्री के अनुयायी ऐसे होना चाहिए। इस प्रकार जब चाहे भक्ति भीने हृदयोद्‌गारों द्वारा पू. गुरुदेव श्री को बारंबार याद करती थी।

अंत–अंत में तो वो राजकोट–सोनगढ़ दोनों जगह रहती थी परंतु अंत में तबियत बहुत बिगड़ गई तब राजकोट में ही स्थिर हो गई उस समय उनकी अंतिम स्थिति समताभाव/अंतरंग में समाधान पूर्वक देह छोड़ी उस समय समस्त राजकोट के मुमुक्षु भाई–बहनें स्तब्ध रह गये थे। पू. बेन ने शांति से वेदना के ऊपर विजय प्राप्त की, सभी को शांति रखने की तथा सर्व जीवों के प्रति समताभाव रखने की अंतिम सलाह दी थी उस समय का दृश्य कोई अनोखा था अंत समय की खुमारी देखर कोई भी कह सकते थे कि पू. बेन ने पू. गुरुदेव श्री का अध्यात्म संदेश पचाया है।

नवरंगपुरा दि. जैन मंदिर प्रति उनका प्रेम तथा लगाव असाधारण था, नवरंगपुरा जिनमंदिर की प्रतिष्ठा भव्य और अनुपम हो इसके लिये जब चाहे पूज्य बेन पत्रों द्वारा हमारा हर्ष तथा उल्लास बढ़ाती रहती थी। उनकी इच्छा के अनुसार नवरंगपुरा जिनमंदिर की प्रतिष्ठा भी बहुत गजब हुई थी, पूज्य बेन ने नवरंगपुरा जिनमंदिर के लिये जो अनुपम सलाह और अमूल्य समय दिया था उन्हें हम शब्दों से नहीं कह सकते। मंदिर की प्रतिष्ठा हो जाने के बाद भी जिनमंदिर में शोभा तथा उपकरण इकट्ठे करवाये अर्थात् आर्थिक सहयोग स्वयं और अन्यों से दिलवाकर जिनमंदिर परिपूर्ण कराया, उसके बाद उन्हें पूर्ण संतोष हुआ तब बहुत संतोषी खुशी व्यक्त करती। इस तरह उन्हें देव–शास्त्र–गुरु के प्रति अत्यंत भक्ति थी। वे पूर्ण निखालिस, शांत, विशाल हृदय, गुरुदेव के प्रति अटूट श्रद्धावान, मान–अपमान जैसा कभी नहीं लगता, श्री जिनेन्द्र भक्ति के समय खुमारी तथा उनकी मुद्रा देखकर सर्वजन को उनके प्रति सन्मान जागता ऐसे हृदयपूर्वक की सच्ची श्रद्धांजलि है।

––प्रभाकर कामदार, अहमदाबाद

Please report errors to Ramaben Parekh: WhatsApp +91 90115 91078 or email ramabenparekh45@gmail.com

Version 001: Updates at http://www.AtmaDharma.com & http://www.AtmaDharma.org

महिला मंडल की स्थापक पूज्य बेन शान्ताबेन

पूज्य वेन के गुणों से ही पहचानिए तो!! धर्म वात्सल्यता, देव–शास्त्र–गुरु के प्रति की अनन्य भक्ति, पूज्य गुरुदेव के प्रति समर्पणता और जिनवाणी के प्रति न्योछावरता ऐसे अनेक गुणों का संगम अर्थात् पूज्य वेन शान्तावेन।

पूज्य वेन की मुख मुद्रा देखते उनकी निश्चलता, धैर्यता, हिम्मत और स्त्री पर्याय को भूला देती ऐसी शांतमूर्ति का स्मरण करते ही सहज वंदना हो जाता है।

भक्ति तथा प्रेरणा देनेवाली हम किस प्रकार आपके अनंत उपकार का ऋण चुकायें। पूज्य धर्म पिता पूज्य गुरुदेव के प्रति आपको बहुत भक्ति भाव था। ऐसे विषम काल में संत महात्माओं का योग हमारे महाभाग्य से हुआ और आपका परिचय हुआ इससे हमारे जीवन की राह ही बदल गई। अब हम सभी पू. गुरुदेवश्र तथा आपके बताये मार्ग पर चलकर अपनी जीवन साधना पूरी करके जीवन सफल बनायेंगे, पूज्य गुरुदेव श्री तथा आपके द्वारा दी गई अध्यात्म रस की वाणी तथा देव–शास्त्र–गुरु की भक्ति से हम हमारा जीवन सार्थक करके आपके साथ में भव का अभाव करके मोक्षपुरी को वरण करें।

पूज्य वेन के भवतापनाशक प्रवचन अपन सबको सर्व प्रकार से ज्ञानोदय करे ऐसी आंतरिक भावना के साथ आपके चरणारविंद में नमस्कार हो। आपसे निरंतर आशीर्वाद मांगती महिमा मंडल की श्रद्धांजलि अर्पण करते हैं।

—महिला मंडल, राजकोट

जिसप्रकार प्रज्वलित दीपक अपने हाथ में रखकर भी कोई कुएँ में गिर पड़े तो उसे दीपक का लेना व्यर्थ है, वैसे ही तत्त्वज्ञान प्राप्त करके भी हेय–उपादेय के विवेकरहित चाहे जैसे प्रवर्तने से तत्त्वज्ञान का प्राप्त होना व्यर्थ जाता है।

—श्री जीवंधर चरित्र

Please report errors to Ramaben Parekh: WhatsApp +91 90115 91078 or email ramabenparekh45@gmail.com

Version 001: Updates at http://www.AtmaDharma.com & http://www.AtmaDharma.org

तत्त्वज्ञान सुबोध

पूज्य गुरुदेव श्री के सान्निध्य में उनकी छत्रछाया में वर्षों तक तत्त्वज्ञान सुबोध अमृत वचनों को शिरोधार्य कर हृदयगत धारण करके पुरुषार्थपूर्वक इस भव में भव का अभाव करने का यह दुर्लभ अवसर के दूसरे नम्बर में पात्रता प्राप्त पूज्य शान्तावेन थी। मृत्युमहोत्सव के समान तथा चेतना की जागृति और देव–शास्त्र–गुरु की अनन्य भक्ति अंतिम श्वासोश्वास तक चालू रही, अपने जीवन को धन्य किया।

पूज्य शान्तावेन, पूज्य गुरुदेव के विहार समय, पंचकल्याणक महोत्सव के वगैरह धर्मप्रभावना के प्रसंग में, पूज्य गुरुदेव की जन्म जयंति आदि प्रसंगों में पूज्य बेनश्री चम्पावेन के साथ में वर्षों तक मंगल कार्यो के समय अन्तिम भक्तिपूर्वक जय–जयकार किया, सत्धर्म का डंका बजाने वाले पूज्य गुरुदेव श्री की अनुमोदना और अनुकरण करती थी, पूज्य गुरुदेव द्वारा दिया गया ज्ञानदान हृदयगत करके दृढ़ संस्कार को प्राप्त हुई, चाहे जैसा शारीरिक स्वास्थ्य की कमजोरी समय में तथा विकट परिस्थिति के समय में भी समाधान करके अपने चैतन्य जीवन की भी भावना दृढ़ता से करती थी, उनको देव–शास्त्र–गुरु के प्रति अत्यंत भक्ति थी।

ब्र. बहनों को जीवन में प्रोत्साहन देती, उनके जीवन को पूज्य गुरुदेव श्री के द्वारा दिया बोध का अमृत वचनों द्वारा स्वरूप के पंथ में जाने के लिये प्रोत्साहन करती थी।

अनेक प्रकार से उनके प्रसंगों में स्वयं को प्राप्त सुवर्ण अवसर को सार्थक करने भावनाशील थी। जहाँ–जहाँ धर्मप्रभावना के कार्य होते हों वहाँ स्वयं की अनुमोदना विशिष्ट प्रकार की रहती थी।

अंतिम हो माह के आस–पास राजकोट में निवास करके स्वास्थ्य की दिन–प्रतिदिन व्याधि बढ़ती जाती थी फिर दृढ़तापूर्वक अपने जीवन में जागृत चेतना द्वारा चेताती रहती थी।

पूज्य शान्तावेन का आत्मा सत् धर्म देव–शास्त्र–गुरु का योग तत्काल पाकर स्वरूप पंथ में विचरकर शीघ्र सिद्धपद पाओ ऐसी भावना के साथ श्रद्धांजलि अर्पित करते हैं। **—श्री दिगम्बर जैन मुमुक्षु मंडल, जामनगर**

Please report errors to Ramaben Parekh: WhatsApp +91 90115 91078 or email ramabenparekh45@gmail.com

Version 001: Updates at http://www.AtmaDharma.com & http://www.AtmaDharma.org

करुणामूर्ति : पूज्य शान्ताबेन

पूज्य श्री शान्तावेन की खैरागढ़ मुमुक्षुमंडल के सभी भाई–वहनों पर विशेष रूप से करुणा थी! आपने अप्रेल में सम्मेदशिखर जी की यात्रा से वापिस आते समय अधिकतम गर्मी होने पर भी खेरागढ़ के लिये पाँच दिन का १६-४-८६ से २०-४-८६ तक का अमूल्य समय दिया था। आप अनेक गुणों की धनी थी। आप की एक विशेषता यह भी थी कि जो भी भाई–बहन कुछ भी शंका/प्रश्न करते थे उनका सुंदर समाधान कर देती थी, प्रश्नकार अच्छी तरह संतुष्ट हो जाता था, आपकी समझाने की शैली अद्‌भुत थी।

आपके हृदय में वीतरागी देव–शास्त्र–गुरु के प्रति अगाध भक्ति थी, आपके द्वारा की जाने वाली पूजा–भक्ति तथा तीर्थयात्रा में आपका अद्‌भुत उत्साह आदि देखने में आता था। आप हमेशा कहा करती थी कि सर्वप्रथम अरहंतदेव का वहुमान, वीतरागी गुरु और जिनवाणी का वहुमान होना चाहिए तभी वह ज्ञायक आत्मा का अनुभव व आनंद दशा प्राप्त करने के लिये पात्र होगा।

आपकी महिमा व गुणगान करने की शक्ति हममें नहीं है। आपके समाधिमरण का समाचार सुनकर सारा हिन्दुस्तान स्तव्ध रह गया था। सोनगढ़ में तो क्या जैन क्या अजैन सभी का हृदय शोकाकुल और नयन अश्रुधारा से व्याप्त थे, सभी को ऐसा महसूस हो रहा था कि हमारी धर्ममाता को नियति ने हमसे अलग कर दिया है.....अव हम छोटे अज्ञानी वालक किसके सहारे जियेंगे और आगे वढ़ेंगे! अहा! जैसा आपका नाम था उसी के अनुरूप आपने अपने जीवन में अनेक प्रतिकूलताओं में भी शांति वरावर वनाये रखी, आपने चौवीस वर्ष की अल्प आयु में ही ''आत्मानुभूति'' प्राप्त कर ली थी, जिसे अंत समय तक दिखाती ही रही और सदैव अपने पुरुषार्थ व साधना में आगे वढ़ती ही रही।

हम सभी आप जैसा पुरुषार्थ कर आत्मानुभूति प्राप्त करें.....यही उनके प्रति सच्ची श्रद्धांजलि होगी।

हम हैं सव आपके चिर ऋणी.....

—श्री दिगम्बर जैन मुमुक्षु मंडल, खैरागढ़

Please report errors to Ramaben Parekh: WhatsApp +91 90115 91078 or email ramabenparekh45@gmail.com

Version 001: Updates at http://www.AtmaDharma.com & http://www.AtmaDharma.org

वैराग्य मूर्ति

पूज्य गुरुदेव श्री कानजी स्वामी के समीप दीर्घकाल तक आत्मार्थिता, तत्त्वनिर्णय, स्वानुभूति और ज्ञानियों के प्रति समर्पित वृत्ति उपलब्ध कर देव–शास्त्र–गुरु के प्रति अगाध भक्ति से प्रेरित होकर वीतराग मार्ग की प्रभावना प्रचार में पूज्य गुरुदेव के साथ तीन–तीन बार तीर्थवंदनार्थ भ्रमणकर सारी व्यवस्था को उत्तम रीति से निभाया। उनके वियोग से आज सारा मुमुक्षु समाज अत्यंत मर्माहत हुआ है।

धीरे–धीरे ज्ञानी धर्मी जीवों का विच्छेद होता जा रहा है। आप छोटी वय से ही संसार–शरीर–भोगों से उदासीन जीवन जी रही थी। पूज्य गुरुदेव श्री कानजी स्वामी के सान्निध्य में रहकर आत्मार्थिता, वैराग्यता व आत्मसाधनामयी जीवन उपलब्ध किया है, आप शांत स्वभावी सरल कोमल परिणामी एवं वीतरागी धर्म की प्रभावना प्रचार में ही सारा जीवन समर्पण किया है, मान–अपमान की वृत्ति से आप सदा दूर रही हैं।

श्री दिगम्बर जैन मुमुक्षु मंडल कलकत्ता यह भावना भाता है कि स्वर्गीय आत्मा निज ज्ञायक स्वभाव की आराधनापूर्वक पूर्णानंद को शीघ्र प्राप्त हो।

—श्री दिगम्बर जैन मुमुक्षु मंडल, कलकत्ता

सौम्यता स्वरूपी : पूज्य बेन

भारतभूमि अर्थात् महात्मा संतो की अजोड़ भूमि में अनेक वीररत्न पके हैं और जैन शासन को उज्वल और प्रभावित बनाया है। यह भूमि संतो की तीर्थ भूमि सुवर्णमय बनी है। सुवर्णमय चैतन्य आत्मिक शब्दों के झणकार से झकझक उठी कि दिगम्बर समाज के अनेक पंडितों तथा त्यागी उसी तरह मुमुक्षु पूज्य गुरुदेव श्री की वाणी का शंखनाद सुनने सुवर्णधाम आते और उनकी वाणी का अमृतपान करते।

पूज्य गुरुदेव श्री की वाणी का वास्तविक पान करने वाली तो पूज्य बेन श्री बेन ही थी, कि जिन्होंने अमृतमय वाणी झेलकर स्वयं ने अमृतमय

Please report errors to Ramaben Parekh: WhatsApp +91 90115 91078 or email ramabenparekh45@gmail.com

Version 001: Updates at http://www.AtmaDharma.com & http://www.AtmaDharma.org

रस का पान किया, इन दोनों बहनों से सभा का एक दृश्य ही अनोखा था।

उनमें पूज्य बेन शान्तावेन का वैराग्यमय जीवन, सौम्यता तथा चारित्र से प्रभावशाली था, उनके जीवन में क्षमा–समता आदि गजब की शान्ति थी जो कि अनुकरणीय थी।

पूज्य श्री गुरुदेव की महिमा जब पूज्य बेन अपनी स्वमुख से गाती थी, वह अजब–गजब विस्तार्णीय थी, तथा मेरे पूज्य पिताश्री को भी पूज्य बेन के प्रति विशेष प्रेम था कि यात्रा के प्रसंग में, पूज्य गुरुदेव की सेवा में, पूज्य बेन अनेक प्रकार से सूचना देती जिससे उनके निकट समागम में रहती और हितशिक्षाओं को जीवन में जड़ लेती, बताई हुई राह पर चलकर आत्मबोध पा।यें यही भव्य भावना।

—रश्मी बृजलाल मोदी का वंदन

ज्ञायकदेव का यत्नपूर्वक जतन करनार : पूज्य बेन

इस पंचमकाल में ऐसे धर्मात्माओं का जो योग मिला यह भी एक महाभाग्य की बात है। ज्ञायक आत्मा की बात तो पूज्य गुरुदेव श्री की प्रवचन शैली की कोई अनोखी देन थी, वह मुमुक्षु श्रोताओं को अन्तर की गहराई में ले जाकर चैतन्य का स्पर्श कराती है, फिर चाहे जिस शास्त्र पर प्रवचन चलता हो परंतु आत्मा को स्पर्श करके उसके भावों को खोलते। वे अद्‌भुत थे। आज भी टेप–प्रवचन सुनते उतना ही आनंद आता है। यह भी एक श्रुतलब्धि थी।

यह श्रुतलब्धि अंश रूप में पूज्य शान्तावेन को भी थी, उनकी बातों में भी ज्ञायक तरवर आता था। देव–शास्त्र–गुरु, नूतन जिनालयों में, यात्राओं के प्रसंग में खूब महत्त्वपूर्ण योगदान दिया है।

अमो ने आत्म–मंत्र अर्पीने दिव्यपंथे गया
तारणहार बनी अमीदृष्टि करी गया।
वात्सल्य–प्रेम वरसावी हृदय जीती गया

Please report errors to Ramaben Parekh: WhatsApp +91 90115 91078 or email ramabenparekh45@gmail.com

Version 001: Updates at http://www.AtmaDharma.com & http://www.AtmaDharma.org

करुणा करी कोमलता आपता गया
तिमिर नो नाश करी प्रकाश प्रगटावी गया।

ऐसा उग्र पुरुषार्थ करके संयमरूपी ज्ञायक देव का यत्नपूर्वक जतन किया है। जो समाधिमहोत्सव सभी को प्रत्यक्ष बताया। ऐसे समाधि के पालक आत्मसिद्धि में सफल हो–इस भावना के साथ श्रद्धांजलि।

—सुरेन्द्र तलाटी, मुम्बई

कहाननगर सोसायटी में पूज्य बेन के आगमन से मेरा जीवन में पलटा

कहाननगर सोसायटी में पूज्य बेन पधारी तब मुझे तो ऐसा ही हुआ कि मेरे आंगन में ही पधारे, जिससे अति आनंद हुआ और उनका निकट से सेवा का लाभ लेने से उसमें भी आत्मा ही मुख रूप से तरवरता था। उनकी दशा देखकर हमारे भाई–बहिनों के जीवन में बहुत ही पलटा हो गया और जीवन में अच्छा लाभ मिला, हमारे ऊपर माता समान कृपा दृष्टि रखती थी।

पूज्य बेन प्रतिदिन रात्रि में वांचन करने बैठती तब हम लोगों ने कई बार उनका वांचन सुना था। बहुत ही सरल भाषा, मीठी वाणी और मधुरता से इतने अच्छे न्यायों से समझाती कि ज्ञान में सचोट बैठ जाते। बहुत बार पूज्य गुरुदेव की पुरानी बातें करती तब बहुत रस ले लेकर ऐसी बातें करती मानो सुनते ही रहें, उनके पास से उठने का मन ही नहीं होता, बहुत कुछ नया–नया जानने को मिलता, पूज्य गुरुदेव के गुणगान करते हुए थकती नहीं थी। उनका सुकोमल हृदय, वात्सल्यप्रेम तथा देव–शास्त्र–गुरु की भक्ति से हमारा हृदय रंग गया और उनकी याद तो जीवन भर भुलायें भी नहीं भूल सकते।

पूज्य बेन की अंतिम समाधि तक सेवा का जो मौका मिला है वह भी एक अमूल्य घड़ी थी कि जो अहोर्निश हमारी आत्मा में बसे और उनके जैसे आराधना में तत्पर रहे इसी भावना के साथ श्रद्धांजलि पुष्प अर्पित करते हैं।

—ब्र. चंदुभाई मेहता तथा पुष्पाबेन, राजकोट

Please report errors to Ramaben Parekh: WhatsApp +91 90115 91078 or email ramabenparekh45@gmail.com

Version 001: Updates at http://www.AtmaDharma.com & http://www.AtmaDharma.org

पूज्य बेन के साथ शिखर जी की यात्रा प्रसंग पर से

पूज्य शान्तावेन का परिचय तो मुझे तथा मेरे कुटुम्बियों को सोनगढ़ से वहुत समय से था ही। परंतु उनके भक्तिभाव का परिचय मुझे शिखर जी यात्रा करने आये तव हुआ। मुझे कलकत्ता खवर पड़ी कि पूज्य शान्तावेन वगैरह मई १९८७ में गर्मी के दिनों में शिखर जी पधारी है। तव मुझे स्वाभाविक आश्चर्य भी हुआ कि पूज्य वेन ऐसी दुवली–पतली काया और कमजोरी भी वहुत ही थी, वे शिखर जी कैसे आई होंगी? दो दिन के लिये पूज्य वेन के दर्शन करने और शिखर जी की यात्रा करने को रवाना हो गया। पूज्य वेन के दर्शन करके कहा कि ऐसी गर्मी में और ऐसी नाजुक शरीर की स्थिति में आप शिखर जी आई यह आपका आत्मवल ही वहुत दिखता है। उनने भी कहा कि मुझे भी आश्चर्य होता है कि मैं किस प्रकार इस शाश्वत तीर्थधाम में आ पहुँची, परंतु मेरी तीव्र भावना यह यात्रा करने की थी वह फल गई।

शिखर जी में हम लोग दो दिन के वदले छह दिन पूज्य वेन और ब्र. वहिनों के साथ में रहे। क्योंकि पूज्य वेन के साथ रोज पूजा–भक्ति करने का लाभ मिलता था। पूज्य वेन भक्ति में तो ऐसी लीन हो जाती कि वो आजू–बाजू का वातावरण भूल जाती और सिद्ध भगवान की, मुनिराज की भक्ति की खुमारी चढ़ जाती। सिद्ध भगवान को मान अभी नीचे उतारेंगी, ऐसा दृश्य देखकर हमारे उल्लास का पार नहीं रहता तथा सिद्ध प्रभु के गुणगान, रात्रि चर्चा तो ऐसी घूंट–घूंट कर करती थी कि दो दिन के वदले छह दिन रहने का मन हो गया फिर भी इतने से संतोष नहीं हुआ अर्थात् कलकत्ता पधारने की विनती की यद्यपि उनका कलकत्ता पधारने का प्रोग्राम नहीं था, परंतु खूब आग्रह किया तव वड़ी मुश्किल से हाँ की और हमारे यहाँ कलकत्ता में पधारी।

कलकत्ता मुमुक्षु मंडल के सभ्यो भी पूज्य वेन के दर्शन करने सुवह, दोपहर, शाम को आने लगे, वाद में सुवह मंदिर में पूजा होती, दोपहर में घर पर ही भक्ति और शाम को पूज्य वेन का वांचन होता था, अनेक भाई–वहिन लाभ लेते थे और मुझे भी वहुत आनंद होता था कि मानो मेरे घर में कोई मांगलिक प्रसंग मनाया जा रहा हो उसमें मैं आनंदविभोर हो जाता था। मेरा हृदय भी भक्ति से तरवोड़ हो जाता था।

Please report errors to Ramaben Parekh: WhatsApp +91 90115 91078 or email ramabenparekh45@gmail.com

Version 001: Updates at http://www.AtmaDharma.com & http://www.AtmaDharma.org

पूज्य वेन शिखर जी से पधारी थी अर्थात् सिद्धिधाम को ही बारंबार याद करके हमें कहती कि शिखर जी शाश्वत धाम है। उसके नीचे सोने का साथिया है इस तरह बहुत समझाती थी। बहुत से जीव इस सिद्धिधाम से सिद्ध हुए हैं। उनको पूज्य कहान गुरुदेव के प्रति बहुत भक्ति थी और कहती थी कि यह रास्ता दिखाने वाले पूज्य गुरुदेव ही हैं। आज पूज्य गुरुदेव और पूज्य शान्तावेन दोनों की छत्रछाया नहीं। दोनों तो स्वयं का काम करके चले गये। अपन सभी को इसी रास्ते पर चलकर अपना हित करना है और इसी प्रकार करें तभी सच्ची श्रद्धांजलि कहलायेगी।

—रमणीक भाई मोटाणी का सद्गुरुवंदन, कोलकात्ता

पूज्य गुरुदेव के शासन युग में : शान्ताबेन

सौराष्ट्र यह तो एक देवभूमि है जिसने अनेक संत महात्मा और महान् विभूतियों को जन्म देकर देश को गौरवान्वित किया है। पूज्य संत श्री कानजी स्वामी जैसे देदीप्यमान, ज्ञानपिपासु जीवों के मार्गदर्शक सत्पुरुष ज्ञान का ओघ बहाने के लिये प्रगट हुए और समयसार की बंसी बजाई, लोकों को निहाल किया।

पूज्य श्री गुरुदेव के समागम में आयी पूज्य शान्तावेन भी एक अनोखी व्यक्ति थी, जिनका वैराग्यमय चेहरा, ज्ञान–ध्यान, पूजा–भक्ति कोई अभूतपूर्व थी, उसे देखकर ही बहुमान आता था कि इस काल में यह जीव कोई निकट मोक्षगामी है, यद्यपि पूर्व से भी संस्कार लेकर आई थी, वह पात्रता झलकती थी। पूज्य बेन पंचकल्याणक प्रतिष्ठा में तथा तीर्थयात्रा के समय जो उछलती यह देखकर सभी उनके सामने समर्पित हो जाते, उनकी वाणी में मधुरता थी तथा सभी से वात्सल्यभाव से बोलती जिससे सामने वाली व्यक्ति को भी आनंद होता।

पूज्य गुरुदेव के शासनयुग में भी पूज्य बेन एक प्रचारक थी, देव–शास्त्र–गुरु के प्रति उनकी तन–मन–धन से अर्पणता एक महत्त्वकांक्षी थी।

ऐसी आत्मा पूर्णदशा को शीघ्रता से प्राप्त हों ऐसी भावभरी श्रद्धांजलि के साथ।

—हिम्मतलाल हरिलाल, दादर

Please report errors to Ramaben Parekh: WhatsApp +91 90115 91078 or email ramabenparekh45@gmail.com

Version 001: Updates at http://www.AtmaDharma.com & http://www.AtmaDharma.org

स्वरूपस्थ श्री भगवती माता : पूज्य शान्ताबेन

जिन्हें शारीरिक, मानसिक और संयोगिक अनेक प्रतिकूलतायें होने पर भी अपने हृदय में निज कारणशुद्ध परमात्मा का लक्ष रखकर, पूज्य गुरुदेव श्री कानजी स्वामी, पूज्य बेन श्री चंपाबेन तथा सत् देव, शास्त्र, गुरु के प्रति संपूर्ण अर्पणता सहित श्रद्धा, विनय, बहुमान अंतिम पल तक सावधानी पूर्वक संभाल रखा, उनका ही स्मरण, चिंतन, मनन करते–करते समाधिमरणपूर्वक इस नश्वर देह का त्याग किया उन्हें कोटी–कोटी वंदन।

आज से ८८ वर्ष पहले जहाँ श्रीमद् राजचंद्र जी समाधिस्थ हुए स्वर्गवास हुआ, मुमुक्षुओं का अहो भाग्य कि उसी राजकोट में पूज्य शान्तावेन का समाधिमरण प्रत्यक्ष निहारकर इस अति दुःषमकाल में भी समाधिस्थ किस प्रकार हो सकते हैं वह प्रसंग प्रत्यक्ष देखकर त्याग–वैराग्य की सच्ची भावना पा सके।

हे पूज्य शान्तावेन, हम लोगों ने आपको अनेकवार पूज्य बेन श्री चंपाबेन के साथ में वीतरागी परमात्मा के सन्मुख उपशम रसभरी भक्ति करते/कराते देखा है। सदा उत्साहित और आनंदित, वात्सल्यभरी आपकी मुखमुद्रा, वीतरागता के प्रति आपकी अंतरंग श्रद्धा, भक्ति, विनय आज भी नजरों के समक्ष तरवरती है, हम सभी को सत् देव–शास्त्र–गुरु की भक्ति में अति उत्साहित करती थी।

आप धर्मप्रभावना में अति उत्साही तथा प्रभावशाली वात्सल्यमूर्ति थी, पूज्य गुरुदेव श्री के तरफ से आप को सम्यक्त्व प्राप्ति की मुहर तो बहुत लम्बे समय से मिल चुकी थी। आपके मार्गदर्शन अनुसार अनेक पंचकल्याणक प्रसंग अति उत्साह से मनाये जाते देखने का आज भी हमें बहुत आनंद आता है, आपके गुण हम तो क्या गा सकते हैं? पूज्य गुरुदेव श्री के नीचे लिखे अनुसार उद्‌गारों में सब समाहित हो जाते हैं।

पूर्व में हम सभी मित्र थे। महाविदेह क्षेत्र में राजकुमार के रूप में मेरा जन्म हुआ थाआ। गाँव के सेठीया के पुत्र दो थे, बेन चंपाबेन और शान्तावेन।

भगवान के श्रीमुख से दिव्यध्वनि में आया है कि यह राजकुमार भविष्य

Please report errors to Ramaben Parekh: WhatsApp +91 90115 91078 or email ramabenparekh45@gmail.com

Version 001: Updates at http://www.AtmaDharma.com & http://www.AtmaDharma.org

में तीर्थंकर होगा साथ में बेन गणधर होने वाले हैं, दोनों बहनें ओ।

तीनों महात्माओं को भक्तिपूर्वक नमस्कार।

अपने पूज्य गुरुदेव श्री तीर्थंकर पद में होंगे तब ये दोनों बहनें पवित्र बहनें गणधर पद की प्राप्ति करके मोक्ष दशा रूप परिणमेंगी, हे भगवंत मैंने भी आप का सत्संग पाया है, हमारे प्रति आपकी वीतरागी करुणा भी वर्तती है। वीतरागी का साथ पाया है, वह सदा रहे और आपके समवशरण में ही अंतिम मोक्षदशा तक रहने की/मोक्षरूप परिणमने की भावना पाकर परम पूज्य शान्तावेन को मेरे हार्दिक श्रद्धा सुमन अर्पण करता हूँ।

—मनसुखलाल जे. कोठारी का कोटी कोटी वंदन

आत्म जागृति स्वरूप परिणमित : पूज्य शान्ताबेन

स्व. पूज्य शान्तावेन का व्यक्तित्व अलौकिक था। अनन्य भक्तिपूर्वक पूज्य गुरुदेव श्री के प्रति संपूर्ण समर्पणभाव यह शान्तावेन के जीवन का सार था। पू. गुरुदेव के पास से प्राप्त तत्त्व अनुसार आंतरिक परिणमन यह उनका ध्येय था। ऐसी भावना से देह के प्रति उपेक्षा और आत्म जागृति सहज ही हो जिसके दर्शन उनके अंतिम दिन दरम्यान सबने होते हुए पाये थे।

आहारादि का त्याग, मौन और आत्मलीनता तथा अपूर्व शांतिपूर्वक देह का त्याग, यह उनकी जीवन साधना का फल था।

पूज्य गुरुदेव के साथ मुक्तियात्रा में जोड़ाकर अति शीघ्रता से अंतिम ध्येय को स्व. पूज्य शान्तावेन प्राप्त करें यही भावना।

उनकी जीवनसाधना अपनी आत्मसाधना में प्रेरणा देती रहे।

—शांतिलाल रायचंद दफ्तरी

Please report errors to Ramaben Parekh: WhatsApp +91 90115 91078 or email ramabenparekh45@gmail.com

Version 001: Updates at http://www.AtmaDharma.com & http://www.AtmaDharma.org

पूज्य शान्ताबेन के प्रति श्रद्धांजलि

आंधी शमे पण धूल शमतां वार लागे, पुष्प करमाई पण सुगंध जता वार लागे.....महापुरुष जाय परंतु उनकी सुवास चिर स्मरणीय बनी रहती है।

पूज्य वेन के संबंध में क्या लिखूँ, क्या न लिखूँ? मन के भाव व्यक्त करने के लिये मानो शव्द भी कम पड़ते है!

पूज्य गुरुदेव तथा पूज्य वेन श्री वेन.....सुवर्णपुरी का यह स्वर्णीम काल था, ज्ञान–वैराग्य और भक्ति का यह त्रिवेणी संगम था।

पूज्य वेन श्री वेन की भक्ति से सुवर्णपुरी की दशों दिशायें गूंज उठती...पूज्य वेन श्री प्रथम से ही मितभाषी थी, उनके विकल्प के अनुसार ही पूज्य वेन का परिणमन होता था, इससे अनेकवार तो पूज्य वेन श्री को आश्चर्य होता! पूज्य वेन का द्रव्य ही कोई ऐसा इस प्रकार का था कि पूज्य वेन श्री का विचार और वेन का परिणमन।

देव–शास्त्र–गुरु के प्रति आपको असीम भक्ति थी, तीर्थयात्रा की उमंग भी आपकी विशिष्ट प्रकार की थी.....तबियत ठीक नहीं होने पर भी संयम की भावना भी प्रबल रूप से रहती.....पूज्य गुरुदेव के जीवन चरित्र के संबंध में पूछे तो तबियत ठीक हो जाती थी और घंटो पूज्य गुरुदेव के जीवन पर प्रकाश डालती रहती.....मुनिराज के नाम मात्र से आप उछल पड़ती थी तथा जब चाहे तब मुनिदशा की भावना भाया करती।

समाधि मरण की आपकी उत्कृष्ट भावना थी तो उन्होंने जगत को बता दिया कि शरीर में वेदना होने पर भी शरीर से भिन्न आत्मा की भावना कर सकते हैं।

चेतनाने जागृत करवा सहु जगाओ आतमराम
तमे तो जागता सोहो.....
करी करीने करवानुं छे एक ज तारे काम
तमे तो जागता सोहो.....

ऐसा दिव्य संदेह देने वाली माताजी अल्पकाल में आराधना करके सिद्ध दशा को पाओ ऐसी भावना है। **—हिम्मतलाल ह. शाह, भावनगर**

Please report errors to Ramaben Parekh: WhatsApp +91 90115 91078 or email ramabenparekh45@gmail.com

Version 001: Updates at http://www.AtmaDharma.com & http://www.AtmaDharma.org

शुद्धात्मा का बुलंदनाद करनार : पूज्य बेन

हम लोगों को स्वप्न में भी कल्पना नहीं थी कि ऐसा वियोग का समय हमारे लिये आयेगा, पूज्य श्री गुरुदेव का तो वर्जपात हुआ अभी उस वियोग को भूल नहीं पाते थे कि इतने में ही इन संत का भी वियोग वहुत अखरा। हमारे जैसा पामर आपके क्या गुणगान कर सकता है?

धन्य है आपका जीवन कि आपने ४५ वर्षों तक पूज्य गुरुदेव के सान्निध्य में रहकर आत्म साधना की। आपने जीवन सफल वना लिया है। साधर्मियों के प्रति आपका वात्सल्यभाव रहता, आपका हमेशा हंसमुख चेहरा नजरों के सामने से हटाता नहीं, हम लोग तो सोनगढ़ में वहुत वर्षों तक आप श्री के निकट परिचय में रहे हैं। जिनमंदिर में आप दोनों वहिनें जव भक्ति की धून मचाती थी तव पूरा जिनमंदिर गूंज उठता था, भारत के प्रत्येक जिनमंदिर की प्रतिष्ठा महोत्सव समय में आपका हर्षोल्लास आज भी नजरों के सामने तैरता है। आप श्री के वांचन के समय शुद्धात्मा का वुलंदनार और प्रमोद भाव जो दिखता था तथा 'शुद्धात्मा का जय हो' ये रणकार अभी/आज भी हमारे कान में गूंजता है।

भगवान सीमंधर नाथ के द्वारा प्ररूपित मार्ग की साक्षात् भेंट कराई और पू. गुरुदेव श्री के पथ पर आप तो चली गयी, हम भी आपके मार्ग पर चले आवें यही शुभ भावना के साथ आपको हृदयपूर्वक वंदन करके श्रद्धांजलि अर्पित करते हैं। **—कांतिभाई हरीलाल भायाणी, भावनगर**

जैसे सूर्य का उदय अस्त होने के लिये होता है, उसीप्रकार निश्चय से समस्त प्राणियों का यह शरीर भी नष्ट होने के लिये उत्पन्न होता है। तो फिर काल आने पर अपने किसी वन्धु आदि का मरण होने से कौन बुद्धिमान मनुष्य उसके लिये शोक करेगा? अर्थात् उसके लिये कोई भी बुद्धिमान शोक नहीं करता।

—श्री पद्मनन्दि पंचविंशतिका

Please report errors to Ramaben Parekh: WhatsApp +91 90115 91078 or email ramabenparekh45@gmail.com

Version 001: Updates at http://www.AtmaDharma.com & http://www.AtmaDharma.org

ज्ञानामृत पाप करावनार और हमारा शिरताज पूज्य शान्ताबेन के प्रति श्रद्धांजलि

'अहो प्रभो वीतरागनाथ!' केवलज्ञान पाकर आपने जो मोक्षमार्ग प्रकाशा वही मार्ग आज भी श्री कहानगुरु प्रताप से जीवंत है। ज्ञान की स्वानुभूति द्वारा आपके मार्ग पर चलने वाले जीवों को आपका विरह नहीं। जैसे रत्नत्रय से मोक्षमार्ग शोभता है वैसे ही इस काल में सुवर्णपुरी भी इस त्रिपुटी से शोभ रही है।

पूज्य गुरुदेव इस पंचमकाल में अनेक भव्य जीवों की आत्मोन्नति के प्रयत्न में निमित्तभूत हुए, हमारे ऊपर तो अपार उपकार किया है, आपने अपूर्व, सरल और रसपूर्ण शैली से अध्यात्म की प्ररूपणा द्वारा संतो का हार्द खोलकर जैन धर्म को पुनः जाज्वल्यमान किया।

आप सब के ऊपर पूज्य गुरुदेव श्री का तो महान् उपकार है और उनके शासन की प्रभावना में पूज्य बेन श्री बेन का अमूल्य भाग है कि जब पूज्य गुरुदेव ने दिगम्बर धर्म अंगीकार करने की घोषणा तब दोनों बहिनों ने अजोड़ हिम्मत, शांति और अर्पणता बताई थी, उनकी कथनी आज भी भक्तों के हृदय में भक्ति का तथा आत्मार्थता का रोमांच जगाती है।

पूज्य गुरुदेव को इन दोनों बहनों ऊपर पुत्री समान अपार वात्सल्य था और दोनों बहनों के रोम–रोम में पूज्य गुरुदेव के प्रति अपार उपकार और भक्ति भरी थी, पूज्य गुरुदेव के आत्मस्पर्शी अध्यात्मोपदेश को यथार्थ रूप से मुख्य श्रोता पूज्य दोनों बहिनें ने आत्मा में झेलकर, पवित्र ज्ञान और वैराग्य से, विनय से, अर्पणता से, भक्ति से और प्रभावना से सर्व प्रकार से पूज्य गुरुदेव की और जिनशासन की शोभा बढ़ाई है। अहा! इस काल में अपना महाभाग्य कि ऐसी धर्ममाता का पवित्र ज्ञान, इनका वैराग्य, इनका अनुभव, इनकी अर्पणता, इनकी निखालसता, इनका वात्सल्यप्रेम दिखने की एक अमूल्य घड़ी मिली।

ऐसी धर्ममाता का योग मिला यह तो महाभाग्य परंतु उससे भी विशेष उनकी शीतल छत्रछाया में निरंतर रहने का सुयोग प्राप्त हुआ यह तो महाभाग्य

Please report errors to Ramaben Parekh: WhatsApp +91 90115 91078 or email ramabenparekh45@gmail.com

की बात। जैसे माँ–पिता की हाजरीमात्र भी बालक को प्रसन्नकारी और हितकारी है, वैसे ही धर्ममाता का योग हमको प्रसन्नकारी और हितकारी है।

हमारी सदा नजर समक्ष धर्ममाता को देख–देखकर हमारे आत्मा का पोषण कराती हों ऐसा लगता, आपकी मीठी नजर और मधुर वाणी, 'ज्ञानावतारी, जाज्वल्यमान ज्योति' जैसे शब्द तो आत्मा को ऐसा आह्लादित करते कि मानो संतो की अतीन्द्रिय आनंद की ही प्रसादी मिली हो! ऐसी आपकी मंगल छत्रछाया वह हमारी रक्षा करने वाली है। और सदा सन्मार्ग में लगाने वाली है, हमें जगत की चिंता सता सकती नहीं क्योंकि संतों के दर्शन मात्र भी संसार संबंधी समस्त चिंताओं को भुलाकर आत्मा को मोक्षमार्ग के प्रति उत्तेजित करता है।

अहा! ऐसे धर्मात्मा जगत में सदा जयवंत वर्तते हैं।

पूज्य बेन के साथ हमारी मातुश्री के साथ रहने का अनेक बार प्रसंग बना था। उनसे एकदम निकट के संबंध की बात वो अनेक बार हमसे करती थी कि जहाँ पूज्य शान्ताबेन पूज्य गुरुदेव का चातुर्मास करने जिस गाँव में जाते वहाँ मैं भी जाती और पूज्य बेन, पूज्य गुरुदेव का प्रवचन सुनकर आती और अक्षरसः घर आकर लिख लेती, ऐसी तीक्ष्णबुद्धि थी, इस बात की पूज्य गुरुदेव को खबर पड़ी तब पूज्य गुरुदेव के श्री मुख से सुना कि ''अच्छी से अच्छी साध्वी भी इनके समान देखनो को नहीं मिलेगी।'' ऐसे पूज्य बेन के प्रति उद्गार निकले। बाद में पूज्य बेन मुम्बई से पधारी तब हमारे घर पर पधारती और श्रीमद् राजचंद्र का वांचन मेरी माँ और पूज्य बेन पाँच छह घंटे करती।

जब पूज्य बेन श्री राजकोट पधारी तब भी मेरी माँ वहाँ स्थानक में थी और पूज्य बेन श्री ने पूछा कि शान्ताबेन है? तो वो तुरंत ही पूज्य बेन को बुला लाईं कि चलो–चलो बेन पू. गुरुदेव ने कहा था वो चंपाबेन आई हैं। पू. बेन तो एकदम आनंदपूर्वक बाहर आई और दोनों बहिनों का मिलन उनने प्रत्यक्ष देखा यह उल्लासपूर्वक हमको कहती।

सोनगढ़ में पू. गुरुदेव के परिवर्तन के बाद मेरी माँ आईं तब समीति

Please report errors to Ramaben Parekh: WhatsApp +91 90115 91078 or email ramabenparekh45@gmail.com

Version 001: Updates at http://www.AtmaDharma.com & http://www.AtmaDharma.org

आदि कुछ नहीं था, तब रहने की भावना थी। भावना कभी विफल नहीं जाती, यह महा पुण्योदय से पू. बेन श्री बेन के साथ २ १/२ महिना रहने का तथा ऐसे संतों की सेवा का लाभ मिला था उसका वर्णन करते तो वो थकती नहीं, आज भी हमारे कुटुम्ब के प्रति पूज्य बेन श्री की बहुत ही कृपा है और पूज्य बेन की भी थी।

पूज्य बेन की जो मुनिपद प्राप्त करेंगे ऐसी निरंतर भावना देखकर कविवर ''श्री दौलतराम जी'' का पद याद आ जाता है कि

सदन निवासी तदपि उदासी तातैं आश्रव छटाछटी।
संयम धर न सकै पे संयम धारण की उर चटाचटी।।

आपका जीवन देखते यह सब वर्णन ज्ञानपटल पर ज्ञेय बन जाता है, जगत से उदास और जिन भगवंतों के दास रूप आपका उत्तम जीवन अन्य जीवों को भी आत्महित की प्रेरणा देता शोभ रहा था। मुनिराज के प्रति तो आपको अपार प्रीति और परमभक्ति थी।

हे समता की धारक माता!

आपको जब अंतर–बाह्य प्रतिकूल संयोग आते तब पूछते कि इतने प्रतिकूल संयोगों में भी इतनी शांति किस प्रकार रख सकती हों।

तब प्रसन्न चित्त से आप कहती कि शांति और समता रूप ही मेरा स्वभाव है (समतारूपी कुलदेवी वह आपका प्रिय शब्द था।) मुझे तो कोई प्रतिकूल संयोग दिखते ही नहीं, क्योंकि ऐसे प्रसंग देखकर बहुत ही वैराग्य हो जाता है और शीघ्र–शीघ्र समता स्वभाव में उपयोग लीन होता है तब कर्म की निर्जरा होती जाती है और प्रतिकूल संयोग मुझे आत्मवृद्धि में निमित्त होते हैं उन्हें भला मैं प्रतिकूल क्यों मानूं?

ऐसा आप का जवाब सुनकर हमें तो ऐसा हो होता कि जैसे सोने को कसोटी पर चढ़ाने पर तेजमय बनता है, वैसे ही प्रतिकूलता की कसौटी पर चढ़ने से अधिक तेजमय दिखती तक मस्तक चरणों में झुक गया और हृदयोद्गार निकाल पड़ा कि धन्य मात तेरी दशा!!! तेरे चरणों में हमारा कोटी–कोटी वंदन।

Please report errors to Ramaben Parekh: WhatsApp +91 90115 91078 or email ramabenparekh45@gmail.com

Version 001: Updates at http://www.AtmaDharma.com & http://www.AtmaDharma.org

हे आत्म जीवन शिल्पी मात!

आप क्षमासागर होने पर भी क्रोधादि शत्रु ऊपर विजय प्राप्त करनार हो, निर्मानी होने पर भी त्रिभुवन का मान जिसे मिले ऐसे अपूर्व सिद्धपद के आराधक हो। निर्लोभी होने पर भी चैतन्य संपदा के संग्राहक हो। कोमल स्वभाव की धारक होने पर भी कषाय के प्रति कठोर हो। निश्चय से विकर के अकर्त्ता होने पर भी शुद्धात्म परिणति के कर्त्ता हो। आप अलौकिक ज्ञान की दातार हो, अखंड प्रतापवंत ऐसी हे माता! आप हमारे ऊपर ऐसी कृपा करो कि जिससे हमारे भव का अंत आ जावे। आपके विरह को शीघ्र आत्मा की आराधना द्वारा तोड़कर आप समान बने, ऐसा हे गुरुओं! हमें आशीर्वाद दो।

हे आत्मजीवन घड़ने वाली माता!

आपने हमारे जीवन को ऐसा आश्चर्यकारी घड़तर घड़ा है कि आत्मिक और आनंद से भरपूर ऐसा आपको घड़तर से हमें शीघ्र सिद्धपद की प्राप्ति हो जाये ऐसी हार्दिक प्रार्थना पूर्वक आपको श्रद्धांजलि अर्पित करते हैं।

—जगदीसभाई लोदरीया परिवार, मुंबई

*

पूज्य भगवती बहन : श्री शान्ताबेन

पूज्य शान्ताबेन के संबंध में जितना कहा जाय उतना कम है। उन्होंने सोनगढ़ को अपनी कर्मभूमि बनाई थी। पूज्य गुरुदेव के सान्निध्य में रहकर पू. चंपाबेन तथा पू. शान्ताबेन मुमुक्षु पद पर रहकर सोनगढ़ ग्राम की जनता को अपने कुटुम्बीजनों के समान अपने जनों जैसे गिनकर वात्सल्य भाव रखती थी।

सौराष्ट्र में अंतिम तीन वर्षों से दुष्काल था तब मूक प्राणियों को घास बिना किलपते देखकर उस समय पूज्य शान्ताबेन को हृदय में अति करुणा उपजी तो स्वयं घर के सामने खड़े रहकर मूक प्राणियों क घांस डालती तथा मंडल में उनके लिये चंदा इकट्ठा हमारी पंचायत में भेजती उसमें सर्वप्रथम उनका दान होता था।

Please report errors to Ramaben Parekh: WhatsApp +91 90115 91078 or email ramabenparekh45@gmail.com

Version 001: Updates at http://www.AtmaDharma.com & http://www.AtmaDharma.org

जिसके फलस्वरूप पूज्य भगवती बेन शान्तावेन के समाधि दिन सोनगढ़ की जनता जात–पात का भेद भुलाकर स्वेच्छा से बाजार बंद करके अधिक संख्या में स्मशान यात्रा में इकट्ठे हुए थे, जो पूज्य बेन श्री शान्तावेन तरफ लोगों की प्रीति और भावना बताती है।

पूज्य बेन श्री शान्तावेन के विचारों को साकार करें तथा उनकी स्मृति के लिये हमेशा के लिये समाधि स्थल बनाकर भविष्य की भावी प्रजा को प्रेरणादायी बने इस प्रीति तथा भावना सहित मैं तथा पंचायत सभा के सभ्य श्रद्धांजलि अर्पित करते हैं।

—रतनसिंह व. गोहिल,
सरपंच तथा पंचायत के सभ्यजन, सोनगढ़

पूज्य भगवती बहन : श्री शान्ताबेन

शान्तावेन ने सोनगढ़ ग्राम की जनता को मातावत् प्रेम देकर प्रत्येक का दिल जीत लिया था। उनके प्रति उनका अंतिम दर्शन के लिये, सोनगढ़ की जबान, वृद्ध तथा स्त्री–पुरुष जाति भेद भूलकर जो श्रद्धांजलि रूप से स्मशान यात्रा में इकट्ठे होकर साथ कराई थी, अपने ही कुटुम्ब के आत्मजन के विरह के भाव से दुःखी हुए थे।

बहन श्री मधुर भाषी–सौम्य तथा समर्थ ब्रह्मचारी मुमुक्षु बहन थी। पूज्य कानजी स्वामी की अनन्य भक्त थी। इससे बहनश्री ने सोनगढ़ को अपना मानकर पूज्य गुरुदेव के सान्निध्य में रहकर पूज्य गुरुदेव श्री का नाम उज्वल किया है।

बहनश्री शान्तावेन खूब ही सरल हृदयी और परोपकारी वृत्ति चाली थी। लोगों की निष्काम भाव से सेवा करती थी।

महात्मा तुलसीदास के शब्दों में कहें तो–मुमुक्षु अथवा संत का हृदय ऐसा होता है कि—

Please report errors to Ramaben Parekh: WhatsApp +91 90115 91078 or email ramabenparekh45@gmail.com

Version 001: Updates at http://www.AtmaDharma.com & http://www.AtmaDharma.org

''संत हृदय नवनीत समाना, कहा कहि पर कहै न जाना,
निज परिताप द्रव ही नवनीता परदुःख द्रव ही संत पुनीता।''

अर्थात्–कवियों ने मुमुक्षु–संत के हृदय को मक्खन की समानता बताई है। परन्तु मक्खन को ताप लगे तब ही पिघलता है और संतों का हृदय दूसरों का दुःख देखकर ही पिघल जाता है/दुःख का अनुभव करता है। उसी प्रकार पू. बहनश्री शान्तावेन अति ही सरल हृदयवाली सेवाभावी मुमुक्षु बहन थी। उनको हम हार्दिक भाव से नत–मस्तक हो श्रद्धांजलि अर्पित करते हैं।

—द. नटवरसिंह के. गोहिल
उप–सरपंच, सोनगढ़ वा ग्राम पंचायत, सोनगढ़

*

पूज्य बेन श्री शान्ताबेन के प्रति श्रद्धांजलि

पूज्य कानजी स्वामी सोनगढ़ पधारे तब से ही पू. शान्तावेन निरंतर सोनगढ़ में ही थी तथा बेन श्री चंपावेन भी साथ में ही रहती थी। आपकी देखरेख में ही ब्र. बहनों का जीवन शोभता था। आपका मिलनसार स्वभाव याद आता है। बालक हो कि वृद्ध सभी के साथ आप वात्सल्यता से ही बोलती थी। ऐसे आपके गुण हमें याद आते हैं।

सत्संग अर्थात् संतों का संग, भक्ति का यह एक मार्ग है। सत्संग और संत सान्निध्य यह प्रभु की प्रसादी है–कृपा है। पूर्वभव के अनेक पुण्य के प्रताप से यह प्राप्त होता है। पानी रूपी कषाय और विकार छोड़कर; हंस के समान दूध रूपी गुण ग्रहण करने की जिसमें योग्यता है उसे ही यह प्राप्त होता है।

सद्गत बहन श्री शान्तावेन का ज्ञान, गुण, चारित्र और अध्यात्म योगी पू. गुरुदेव श्री कानजी स्वामी के सान्निध्य में उनने भरपूर यात्रा का लाभ दीर्घकाल पर्यंत प्राप्त किया है।

सद्गत तपस्वीनी को मेरी वंदना।

—भोथाभाई व. खसिया, सोनगढ़

Please report errors to Ramaben Parekh: WhatsApp +91 90115 91078 or email ramabenparekh45@gmail.com

Version 001: Updates at http://www.AtmaDharma.com & http://www.AtmaDharma.org

स्वानुभूति सम्पन्न वैराग्य मूर्ति

स्वानुभूति सम्पन्न वैराग्य मूर्ति वात्सल्य स्वभावी शांत स्वभावी करुणानिधान पूज्य शान्तावेन!! आपके चरणकमल में भक्तिभाव से वंदन हो। आप लघुवय से ही अपूर्व विशिष्ट संस्कारी थी, इस भव में कुछ नवीन करना है ऐसी आपकी अन्तर से जिज्ञासा थी उसे आपने इस भव में साकार कर ली।

लघुवय में पूज्य कृपालु सद्गुरुदेव मिले 'आत्मा' शब्द सुनते ही सीधे सरसराट आपके हृदय में उत्साह जागता कि यह कोई अपूर्व बात है कि आपकी पहले से ही पात्रता थी।

खूब वांचन विचार चलते, आप कहती थी कि वांचन तो थोड़ा चलता है लेकिन विचार बहुत चलते हैं इतना पहले मंथन था। पू. गुरुदेव श्री के व्याख्यान अक्षरसः अक्षर याद रखती, बाद में गहराई में जाकर ज्ञायक को ग्रहण करने का पुरुषार्थ चलता तब याद रखना बोझा लगता था। अन्दर की दशा बढ़ गई रुचि में से इन्द्रिय विषयों का रस फीका हो गया बाद में सविकल्प ज्ञान में ज्ञायक ग्रहण होते परिणति अन्दर विशेष ढलने लगी। ऐसा धारावंद भेदज्ञान का उग्र पुरुषार्थ होते ही निर्विकल्प–ज्ञान में ज्ञायकदेव अतीन्द्रिय आनंद का वेदन आया, शुद्ध परिणति हुई बस इस भव में भव के अभाव का उपाय हो गया। भेदज्ञान की धारा अप्रतिहत समाधिमरण तक बढ़ती रही, अंदर की दशा बाहर में दिखती। प्रतिकूलता में रोगादि में भी आप श्री की दशा तरवरती ज्ञायक ध्रुव शुद्धात्मा के बल से आपने चाहे जैसे प्रसंगों में अलिप्त रहकर आपने अपूर्व विशिष्ट आराधना की है। आपकी जब पूर्व दशा की बात करती तब हमारे रोमांच खड़े हो जाते।

खरेखर स्वानुभूति से परिणत ज्ञानियों के पास से पानी की दशा पाये और बाद की दशा जो सुनने मिले वह एक अहोभाग्य है। रोगादि के प्रसंगों में आप कैसे भिन्न रहती यह हम जैसे अज्ञानियों को बाहर दिखती थी इतनी अंदर की दशा गाढ़ थी कि बाहर में सब देख सकते थे।

समाधि के अंतिम समय जो आप की दशा प्रत्यक्ष देखी वह एक समाधि

Please report errors to Ramaben Parekh: WhatsApp +91 90115 91078 or email ramabenparekh45@gmail.com

Version 001: Updates at http://www.AtmaDharma.com & http://www.AtmaDharma.org

का महोत्सव था। क्रमसर सब छोड़कर समाधि धारण करी विधिसर समाधि मरण हुआ, सारी जनता ने आपकी दशा देखी सभी भाग्यवंत बने, हम बालकों को आपका विरह हो गया इसका दुःख लगता है। पुनः पुनः सभी प्रसंगों में याद आते हैं।

आप श्री को नियमसार, समयसार आदि अध्यात्म शास्त्रों का वांचन बहुत प्रिय था, जयसेनाचार्य की टीका बारम्बार स्वाध्याय में अध्यात्म से रंगा, अध्यात्म से सराबोर जब मुनिराज का वर्णन आता तब आप मानो मुनिदशा रूप हो ऐसा लगता था आप के कितने गुणों का वर्णन करिए?

बस आप जैसी दशा हो भक्ति भाव से आप श्री के चरणकमल में वंदन।

—सुशीलाश्री, सोनगढ़

स्मरणांजलि

पवित्र आत्मा बहनश्री शान्तावेन ने पूज्य गुरुदेव श्री कानजी स्वामी के सान्निध्य में बहुत वर्षों तक तत्त्व अभ्यास किया था।

आप श्री ने बहनों के ब्रह्मचर्य आश्रम/श्री गोगीदेवी ब्रह्मचर्य आश्रम में स्वेच्छा से रस लेकर ब्रह्मचारी बहनों के योग्यपालन में बहुत ध्यान देती थी, और इस कारण ब्रह्मचारी बहनें भी कठिनता से नियमों का पालन करती।

पर पूज्य गुरुदेव श्री ने एक बार ऐसा कहा था कि ''ये शान्तावेन तीव्र बुद्धिमान है। मंदिरों की स्थापना की कला में इन्जीनियर भी कबूल करे ऐसा मार्गदर्शन वो देती थी।''

श्री शान्तावेन भक्ति और पूजन में सबसे अधिक थी।

—पंडित चिमनभाई ताराचंद कामदार

Please report errors to Ramaben Parekh: WhatsApp +91 90115 91078 or email ramabenparekh45@gmail.com

Version 001: Updates at http://www.AtmaDharma.com & http://www.AtmaDharma.org

वीतरागता की अपूर्व भावनाशाली पू. बेन शान्ताबेनजी को श्रद्धांजलि

आपको अपने पवित्र जीवन की साधना में श्रद्धेय आध्यात्मिक संत पूज्य गुरुदेव श्री के सान्निध्य का महायोग प्राप्त हुआ कि आपक लघुवय से ही जीवन साधना की ओर मुड़ा और तत्त्वज्ञान का अपूर्व लाभ लेकर पुरुषार्थ द्वारा तत्त्वज्ञान को आपने हृदय में अंकित किया।

महान् पुण्योदय से पवित्र आत्मा पू. बेन श्री चंपाबेन का योग ''मणि कांचन का सहयोग जैसा हुआ।'' इस तरह ये त्रिपुटी ने सारे दिगम्बर जैन समाज को आकर्षित कर दिया। पू. बेन श्री बेन!! इन शब्दों की जोड़ी, प्रत्यक्ष गुरु शिष्य और दोनों साखियों की जोड़ी—इनकी त्रिपुटी गुंथी हुई जो सबके मन को मोहित करती थी।

आप दोनों का हमारे ऊपर पुत्रीवत/बहिनवत स्नेह वात्सल्य रहा आध्यात्मिक तत्त्वों का मंथन स्वाध्याय तथा चर्चा आदि का सबको अपूर्व लाभ दिया, वह आपकी ही देन है कि हम सब इसी में जुड़े हुए हैं। आप मुनिराज की महिमा बहुत करती थी और आपको नियमसार शास्त्र बहुत प्रिय था, जिसमें से आध्यात्मिक बोध मिलता; अंतिम समय में भी आप नियमसार का स्वयं स्वाध्याय करती थी और कहती थी कि आचार्य ने पंचास्तिकाय शास्त्र में कहा है! ''शास्त्र स्वाध्याय का तात्पर्य वीतरागता है'' ये वीतरागता ज्ञायक की ही है।

आपकी वह हसमुख मुद्रा, प्रसन्न मूर्ति हमारे हृदय पर टंकोत्कीर्ण है। आपने शारीरिक व्याधि, संयोगों की प्रतिकूलता होने पर भी तत्त्वज्ञान के बल से ही धैर्य और साहस रखा है। आप श्री ने तीर्थयात्रा में, पंचकल्याणक प्रतिष्ठाओं में पूर्ण सहयोग, स्नेह और मार्गदर्शन देकर जनता को आकर्षित किया है।

हे माता! आपने अपने जीवन में किया संकल्प समाधिमरण की भावना की साधना को सार्थक किया, कहा है ''कि जिसकी रही भावना जैसी तिन मूरत देखी प्रभु तैसी।'' आपने आत्मिक बल की साधना का उदाहरण समाज

Please report errors to Ramaben Parekh: WhatsApp +91 90115 91078 or email ramabenparekh45@gmail.com

Version 001: Updates at http://www.AtmaDharma.com & http://www.AtmaDharma.org

के समक्ष सफल किया है। ऐसे अपूर्व पुरुषार्थ की मुहरछाप हमको पुरुषार्थ की प्रेरणा देती हुई हमारे हृदयपटल पर अंकित रहेगी।

पूज्य वेन! आपके गुणों का यशगान जितना हमारे हृदय में है उसे यह अजीव जड़वाणी तथा लेखनी कैसे लिख सकती है? आपके गुणों की स्मृतिपूर्वक अश्रुपूरित हृदय से श्रद्धांजलि अर्पित करते हैं और यह भावना है कि आपकी अपूर्ण साधना शीघ्र पूरी होवे।

—आपकी हीराबेन–विद्याबेन, इंदौर

वैराग्य प्रेरक : पूज्य शान्ताबेन

पूज्य शान्ताबेन हमारे अमरेली ग्राम की होने से बचपन से ही उनका परिचय था उनकी कान्तावेन हमारे कुटुम्ब में आने से मुझे विशेष परिचय हुआ।

हमारे घर में वैराग्य के प्रसंग भजते तब पूज्य वेन बम्बई में होने से उनके पास गये। इस प्रसंग अनुसार श्रीमद् राजचंद्र की पुस्तक वांचने की प्रेरणा दी, तब से हमारे कुटुम्ब में अध्यात्म की रुचि जागी और भावनगर में हम रहते थे। सोनगढ़ नजदीक होने से जब चाहे पूज्य वेन के पास जाने के प्रसंग बनते और मेरे ऊपर उनका अति वात्सल्य भाव था। उनकी भक्ति का रंग देखकर मेरा हृदय भी भक्ति से उछल पड़ता था।

ऐसी वैरागी और वात्सल्यमूर्ति पूज्य शान्ताबेन को भक्ति भाव से श्रद्धांजलि अर्पित करती हूँ।

—लाभुबेन मोहनलाल पारख परिवार, भावनगर

Please report errors to Ramaben Parekh: WhatsApp +91 90115 91078 or email ramabenparekh45@gmail.com

Version 001: Updates at http://www.AtmaDharma.com & http://www.AtmaDharma.org

ज्ञानी संत की जन्म बधाई के मधुर संस्मरण

पूज्य बेन के संबंध में यह पामर क्या लिखे? ये लेखन में नहीं आ सकता परंतु प्रत्यक्ष आप जैसी दशा प्राप्त करके अनुभव करीए तब ही पूज्य बेन की दशा जानी, ज्ञान के सहवास के संस्मरण सदा प्रफुल्लित रखते हैं।

नवरंगपुरा के जिनमंदिर की प्रतिष्ठा महोत्सव के समय आप श्री हमारे यहाँ आठ दिन रही थी और दूसरी बार प्रशिक्षण शिविर के समय में दस दिन रही थी, घर में वो वातावरण कोई भिन्न प्रकार का बन गया था और ज्ञानधारा का धोध वर्षा था, कुछ छोटी–बड़ी बातों में जरा भी उपदेश नहीं परंतु निखालसता से अंतर का आदेश। एक दिन शिविर का समय श्री नेमिचंद पाटनी और पंडित हुकमचंद जी भारिल्ल को भोजन के लिए बुलाया और कहा ये तो अपने जैन समाज के स्तम्भ हैं, जितना आदर किया जाय उतना कम है। कैसा भक्ति वात्सल्य का प्रकार।

कभी शाम को मैं पास में बैठी होऊँ और कुछ उनके जीवन संबंधी बातें पूछती तो उल्लास से कहती। तब उनकी सभी बहनें तथा मुकुंदभाई सबको साथ में देखकर हर्ष होता कि ये सभी पू. बेन की बहनें तथा भाई कैसे भाग्यशाली हैं।

प्रतिष्ठा के समय आप श्री का ७७ वाँ जन्मदिन मेरे घर मनाने का सहज अवसर मिला था। बेन को मिलने भक्तों का समूह आता तो मन अति आनंद विभोर होता, मुझे वास्तव में यहाँ घर जैसा लगता है। यह लिखते समय याद करके मंगलमयी 'माँ' याद आती हैं कि हे मंगलमयी माँ! आपका मंगलमय साथ सदा हो, इसी अहोनिश अभिलाषा के साथ श्रद्धांजलि अर्पित करती हूँ।

—दमयंतीबेन ज. दोशी, अहमदाबाद

जिसे जिवन और धन की आशा है, उसके लिये तो कर्म विधातारूप बनता है, परन्तु जिस महाभाग्य को आशा का ही अभाव वर्तता है, उसे विधाता क्या कर सकेगा?

—श्री आत्मानुशासन

Please report errors to Ramaben Parekh: WhatsApp +91 90115 91078 or email ramabenparekh45@gmail.com

Version 001: Updates at http://www.AtmaDharma.com & http://www.AtmaDharma.org

अनोरवी अडिग व्यक्ति : पूज्य शान्ताबेन

परम उपकारी कृपालु पू. श्री कहान गुरुदेव के प्रभाव से इस काल में चौथे काल जैसा धर्मधारा का धोध वह रहा है। गुजराती और हिन्दी समाज के अति भाग्य के उदय से हजारों वर्षों से जो खुलासा नहीं हुआ था वह पू. गुरुदेव श्री से मोक्षमार्ग की सूक्ष्म तत्त्वचर्चा ४५ वर्षों तक एकधारी सुगम–सरल भाषा में सहेली रीत से अनुभव की कला मुख्य रूप से बताई है इसलिए प्रत्येक ऊपर पू. गुरुदेव श्री का महान उपकार वर्तता है। अपन सभी पू. श्री के द्वारा बताये गये मार्ग पर दृढ़ पुरुषार्थ सहित जागृतिपूर्वक मनुष्य भव के कीमती क्षणों में मति–श्रुतज्ञान को बाहर से पीछे लाकर स्वभाव को ग्रहण करने में रोके और भेदज्ञान द्वारा स्व–पर की भिन्नतापूर्वक स्व का आश्रय लेकर स्वानुभव प्रगट करिए, ऐस भावना प्रत्येक को मुख्य रखकर उग्र पुरुषार्थ प्रगट करने के लिये प्रयत्नशील रहना चाहिए।

पू. गुरुदेव श्री की हाजरी में दोनों बहनों के प्रति पू. गुरुदेव श्री को अति प्रमोद भाव आता था तथा उनकी वाणी में आया था कि स्वयं तीर्थंकर होंगे तव दोनों वहनें उनके गणधर पद में विराजेंगे तथा महाविदेह में भी वे भिन्नपने साथ ही में थे ऐसा कहते थे। दोनों वहनों का आत्मा वलवान् होने से, पूर्व के दृढ़ संस्कार होने से, यहाँ पू. गुरुदेव के समागम में आत्म प्राप्ति करके भव का छेद किया। पू. शान्तावेन आयु पूर्ण होने पर देहत्याग करके पू. गुरुदेव के पास स्वर्ग में चले गये, वहुत ही पुरुषार्थ और अडग जीव था। स्वयं के जीवन की अंतिम घड़ी तक आत्महित में ही लगी रही तथा जीवन देव–शास्त्र–गुरु के शरण में रखकर आत्मवृद्धि के पुरुषार्थ में ही लगी रहती थी।

मान–अपमान की परवाह किये विना स्वयं का पुरुषार्थ सतत! चालू रखा था। आप विरल गम्भीर, शान्त, धीरज वाली थी, इसलिए मन को शान्त रखकर कहीं भी वाद–विवाद में पड़े विना, जैसे हाथी परवाह किये बिना अपने प्रयोजन में जला जाता है, वैसे ही ज्ञानी भी अपने ध्येय में अडगता से चले जाते हैं। पू. शान्तावेन का आत्मा जो संस्कार लेकर गई हैं वे आगे बढ़कर पूर्ण सुख में विराजोगे। ऐसे भव्य आत्मा को भाव भरे वंदनपूर्वक श्रद्धांजलि अर्पते है।

—लक्ष्मीबेन प्रेमचंद भाई, लंदन

Please report errors to Ramaben Parekh: WhatsApp +91 90115 91078 or email ramabenparekh45@gmail.com

Version 001: Updates at http://www.AtmaDharma.com & http://www.AtmaDharma.org

ज्ञानी ज्ञान का दश का दौर कभी चूके नहीं

वीतरागी तत्त्वज्ञान के प्रचार–प्रसारक सारे ही भारतभर में तत्त्वज्ञान का प्रकाश फैलाने वाले एक अलौकिक संत श्री कहान गुरु जागे यह महान–महान भाग्य से सुयोग प्राप्त हुआ है। श्री जिनेन्द्र देव–गुरु तथा सत्य शास्त्र की महिमा वताई और सभी को सत्य पंथ में लगाया। इस पंचम काल में ऐसे गुरु के योग से मानो चौथा काल वर्त रहा है।

हमारे भी महा पुण्योदय से हमारे ही खारा कुटुम्व में पू. वेन शान्तावेन का जन्म हुआ जिससे हमारे कुटुम्वीजनों को सत्य दिगम्वर धर्म का भान हुआ और सच्चे देव–शास्त्र–गुरु का ज्ञान होने से हम सभी भाग्यवंत वने। मेरे पिताजी को पूज्य वेन के प्रति वहुत ही वहुमान था। मातुश्री को भी पुत्रिवत प्रेम था।

मातुश्री तो अधिक समय सोनगढ़ में ही रहती थी, तव पूज्य श्री गुरुदेव तथा पूज्य वेन श्री वेन का लाभ अच्छा लेती थी। पू. वेन को भी मातावत ही वात्सल्य प्रेम था वह भी कोई अनेरा ही था। थोड़े समय मातुश्री राजकोट भी रही, तव पूज्य वेन को हंसते–हंसते कहती कि चलो पीहर (मायके) मैं आपको लेने आई हूँ। इतने रोग की पीड़ा में यहाँ नहीं रहना। उस समय पू. वेन के चेहरे पर हर्पिस खूव ही अधिक निकला था कि उस पीड़ा को देखते ही मेरी आँखों में अश्रु आ गये परंतु पू. वेन तो खूव ही शांति से भोग रही थी, तव मेरी मातुश्री वोली कि—

'ज्ञानी ज्ञान दशा नो दोर कदी चूके नहीं' विध विध व्यवहारो छो करता,
सघडुं करतां छतां अकर्त्ता दोर ऊपर सूरता चूके नहीं
विध–विध व्यवहारो करतां हेल, नजर थी युवती चूके नहीं

इसी प्रकार ज्ञानी की सभी क्रियायें दिखने पर भी अकर्त्ता होने से आत्मा का दोर चूकते नहीं यह प्रत्यक्ष देखी हुई वात है। हमारे लिये पूज्य वेन का उपकार तो भव–भव में भुलाया नहीं जा सकता। पूज्य वेन के साथ चर्चा–प्रश्न भी होते तव एक वार मैंने पूछा कि वेन सम्यक्दर्शन की पर्याय क्या कार्य करती है? तव पू. वेन ने उत्तर दिया :—पूज्य गुरुदेव के प्रताप से, मेरे आत्मा में सम्यग्दर्शन और सम्यग्ज्ञान की जो शुद्ध धर्मरूप पर्याय प्रगटी है वह निरंतर धर्म का कार्य करती है। रागादि विकल्प आते हैं परंतु ऊपर–ऊपर तैरते हैं। जैसे तेल का विन्दु शुद्ध पानी में ऊपर–ऊपर तैरती है, वैसे

Please report errors to Ramaben Parekh: WhatsApp +91 90115 91078 or email ramabenparekh45@gmail.com

Version 001: Updates at http://www.AtmaDharma.com & http://www.AtmaDharma.org

ही शुद्ध धर्म प्रगट हुआ है उसमें रागादि प्रवेश करते नहीं, ऊपर–ऊपर तैरता हैं। कुटुम्ब के प्रति अभी राग है इससे विकल्प आ जाते हैं, बाकी तो खाते–पीते, बोलते–चालते कि बाहर की सभी प्रवृत्तियों में भी मेरा प्रगट हुआ शुद्ध धर्म तो निरंतर परिणम रहा है तथा वह निरंतर वृद्धिगत है तथा कुटुम्ब के प्रति जो रागादि विकल्प आते हैं वे भी रस विना तुच्छ होते हैं। दूसरों को उसका ख्याल आना मुश्किल है।

इस जवाव पर से हमें ख्याल आया कि अहो! सम्यक्दृष्टि की परिणति क्या काम करती है। अहो धन्य है इस दशा को कि जिससे हम अपने को गौरवशाली अनुभवते हैं। ऐसी दशा को प्राप्त करें यह सच्ची श्रद्धांजलि है। ''हे माता धन्य हो आपकी दशा को।''

—मनुभाई मूलजी भाई तथा शशीभाई खारा परिवार

ज्ञानी धर्मात्मा पूज्य शान्ताबेन

इस पंचम काल में श्री कहान गुरुदेव का योग एक आचार्यकल्प समान वन गया। वर्षों से जो समयसारादि शास्त्र भंडार में पड़े थे उनका संशोधन करके भव्य जीवों को समयसार का सार वताकर महान उपकार किया है, अशरीरी दशा प्राप्त करने का मंत्र वताया।

उसमें भी महान पुण्योदय से पूज्य वेन भगवती माताओं का भी योग एक प्रभावना में दाया–वायां हाथ था, ऐसा भी योग मिला। पूज्य शान्तावेन के परिचय में हमें विशेष आने का प्रसंग वनता तव पूज्य वेन की देव–शास्त्र–गुरु के प्रति अजव–गजव की भक्ति देखते ही उन पर न्यौछावर हो जाते। एक बार पर्यूषण पर्व के लिए कहा कि यह पर्यूषण पर्व के नियम तो आचार्य देव ने श्रावकों के लिए कहे हैं, कि प्रवृत्ति में से निवृत्ति लेकर इतने दिनों में विशेष आत्मसाधना, दान, पूजादि करें बाकी तो मुनिवर तो निरंतर दस धर्म की आराधना ही करते हैं। श्रावकों को आंशिक रूप में क्षमा, निर्मानता, सरलता, निर्लोभता आदि दस धर्म का सेवन निरंतर करने योग्य है, ऐसा आचार्यदेव का कथन है, ऐसा कहते समय परिणामों में जोश चढ़ता था। ऐसे ज्ञानी धर्मात्मा के निर्दोष जीवन से भी वहुत लाभ होता है। आप सदा जयवंत वर्तो यही श्रद्धांजलि हो। **—वकील नटुभाई अजमेरा परिवार, पालीताणा**

Please report errors to Ramaben Parekh: WhatsApp +91 90115 91078 or email ramabenparekh45@gmail.com

Version 001: Updates at http://www.AtmaDharma.com & http://www.AtmaDharma.org

पूज्य बेन शान्ताबेन के प्रति श्रद्धांजलि

हे पूज्यनीय वात्सल्यमयी हम बालकों की सत्य जीवन आधार माता! हम बचपन से सोनगढ़ अध्यात्म मूर्ति कल्याणकारी गुरुदेव श्री की वाणी सुनने आये और आपके समागम का योग बन गया। आप श्री की कृपादृष्टि हम बालकों पर बहुत थी उसे किन शब्दों द्वारा बखानु! बालक अपनी टूटी–फूटी भाषा द्वारा अपने माँ–बाप के पास में भाव व्यक्त करते हैं।

हे माताजी! आप हमारे जीवन के शुभचिंतक हो। आप हमारे ऊपर पुत्रवत् प्रेम दर्शाती थी, हमारा जीवन धर्म संस्कारी बने ऐसी शिक्षा बारंबार देती।

देव–शास्त्र–गुरु की अपूर्व भक्ति आपके रगरग में समाई थी। हमें बचपन से ही देखने को मिली थी। आप जब अंतर अनुभव के पूर्वदशा, वर्तमान दशा की बात करती तब हम लोग उत्साहित हो जाते और ऐसा भाव आता कि हमारा कैसा अहोभाग्य कि ज्ञानियों के हृदय की बातें ज्ञानियों के मुख से सुनने मिलती हैं। प्रत्येक प्रसंग में ध्रुव आत्मा का बल मध्यस्थता ज्ञातापना तरबरता दिखाई देता था।

जन्म का नाम शान्ताबेन था। वह नाम सार्थक था, भव का अंत करके समाधि मरण किया जो कि जिन्दगी का निचोड़, जीवनभर की आराधना का ध्येय, उसे नजरों के सामने देखा।

भेदज्ञान द्वारा जीवन जिया जाये वही सच्चा जीवन है। ऐसा हमें सद्बोध देती और कहती कि इस काल में महापुण्योदय से ये गुरुदेव मिले, उनकी वाणी सुनकर निज कल्याण साधना, तथा आपके हृदय में जो वात्सल्य एवं अंतरंग की दशा की खास विशिष्टता कि जो समाज को आकर्षित रूप थी, अंतर का प्रतिबिम्ब बाहर में सभी जीवों पर वात्सल्यता तथा साधर्मी भाव दिखाई देता था।

ज्ञानमार्ग, भक्ति मार्ग, दिखाने वाली, संसार सागर से तारती, आपके संबंध में क्या लिखूँ, महापुरुषो के संबंध में हम जैसे बालक लिखें यह तो सूर्य को दीपक दिखाने जैसी बात है। आप समान साधकदशा हमें भी प्राप्त हो ऐसी भावना से आपके चरणों की सेवा चाहता हूँ।

—रजनीकांत तथा हसमुखराय शाह परिवार, बम्बई

Please report errors to Ramaben Parekh: WhatsApp +91 90115 91078 or email ramabenparekh45@gmail.com

Version 001: Updates at http://www.AtmaDharma.com & http://www.AtmaDharma.org

विरह गीत

सोनगढ़ नो सितारो आजे स्वर्णपुरी मां सोहाय.....
मणिभाईनुं मोती आ तो
दिवालीबा नुं दीपक जगमां..... ..... दीवादांडी थाय.....
राजवंशी स्वभाव एनो
वात्सल्यतानी मूर्ति आ तो..... ..... शासन मंगल थाय.....
जिनवरदेव नां दर्शन पूजन
देव–गुरु की अपूर्व भक्ति..... ..... एना रगेरगमां छलकाय.....
बोधिबीज आ राजपुरीमां
आराधना सर्व गुरुचरण मां..... ....सुवर्णपुरी मां थाय.....
कुंदकुंद देव नी अपार महिमा
ज्ञानचक्र ने वधाव्या भावे..... ..... एमनी भावना पूरी थाय.....
सीमंधर प्रभु नो विरह तोड्यो
कहान गुरु नो साथ ज छोड्यो.... .. .एणे सुवर्णपुरी मँझार.....
क्षमा शान्ति ना संदेशा दीधा
समता रसना पाठ पढाव्या..... आ तो सहनशील शणगार.....
अंतर–बाह्य आत्म उद्धारक
तारा शरणे आव्या बालक. ....मात छोड़ी ने चाल्या जाय...
वैराग्य भावे अंतिम समाधि
ज्ञायकदेव ना उल्लसित वीर्ये..... ..... .आ राजनगरे सोहाय....
मृत्यु महोत्सव क्षमा भावे
सर्वे संघ समक्ष लीधी..... ..... माता चिरकाल नी विदाय.....
सोनगढ़ नो सितारो आजे सुवर्णपुरी मां सोहाय.....

—ब्र. हंसाबेन

Please report errors to Ramaben Parekh: WhatsApp +91 90115 91078 or email ramabenparekh45@gmail.com

Version 001: Updates at http://www.AtmaDharma.com & http://www.AtmaDharma.org

अनमोल विचार

- धन्य हैं अरिहंत सिद्ध भगवान, जो अपनी पूर्ण शुद्धता प्राप्त करके कृतकृत्य हुए, उन्हें बारम्बार नमस्कार हो। आचार्य, उपाध्याय साधु भगवंत भी स्वयं की पूर्ण दशा के नजदीक पहुँच गये हैं, उन्हें भी बारम्बार नमस्कार हो।
- यह आत्मा भी अपने शुद्ध स्वरूप की आराधना करता है। अपने चैतन्यदेव की पूर्ण शुद्धता की तरफ झुक रहा है। अपना ज्ञायकदेव ज्ञान में तरवरता है, झलक रहा है। ज्ञायक स्वयं ही है। स्वयं के सामने मौजूद है। साक्षात् स्वयं झलक रहा है। निरन्तर ज्ञायकदेव का ज्ञायक रूप परिणमन वेदन में आ रहा है यही आनंद है।
- आत्मार्थी जीव को इतना करना योग्य है। श्री सिद्ध भगवान तथा अरिहंत भगवान की भक्ति अंतर में विशेष रूप से करने योग्य है। आचार्य, उपाध्याय, मुनिराज पंच परमेष्ठी भगवंतों की भक्ति आत्मार्थता पूर्वक विशेषपने बढ़ाना योग्य है।
- कषाय की मंदतापूर्वक इन्द्रिय विजेता होकर साधर्मी वात्सल्य भाव बढ़ाना योग्य है।
- आत्मा की रुचि बढ़ाने योग्य है।
- ज्ञान-आनंद आदि अनंत गुणों का पिंड आत्मा है, उस आत्मा को ज्ञान में ग्रहण (जानने) करने के लिए विशेष प्रयत्न करना योग्य है।
- आत्मा ज्ञान का घनपिंड है, इस आत्मा को पर से भिन्न अकेले शुद्ध चैतन्य मात्र ज्ञान में ग्रहण (जानने) करने के लिए विशेष प्रयत्न करना योग्य है।
- ज्ञायक, मन-वचन-काया में, उसकी क्रिया में हर समय उस मन-वचन-काया व उसकी क्रिया से भिन्न ज्ञायकपने परिणमन करता है। राग-द्वेष के भाव विभाव परिणमनरूप आत्मा की अशुद्ध परिणति में हैं; परंतु वे गौणरूप से वेदन में आते हैं, ज्ञायक का परिणमन मुख्यपने वेदन में आता है।

– पूज्य शान्ताबेन

Please report errors to Ramaben Parekh: WhatsApp +91 90115 91078 or email ramabenparekh45@gmail.com